असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

अंकुर

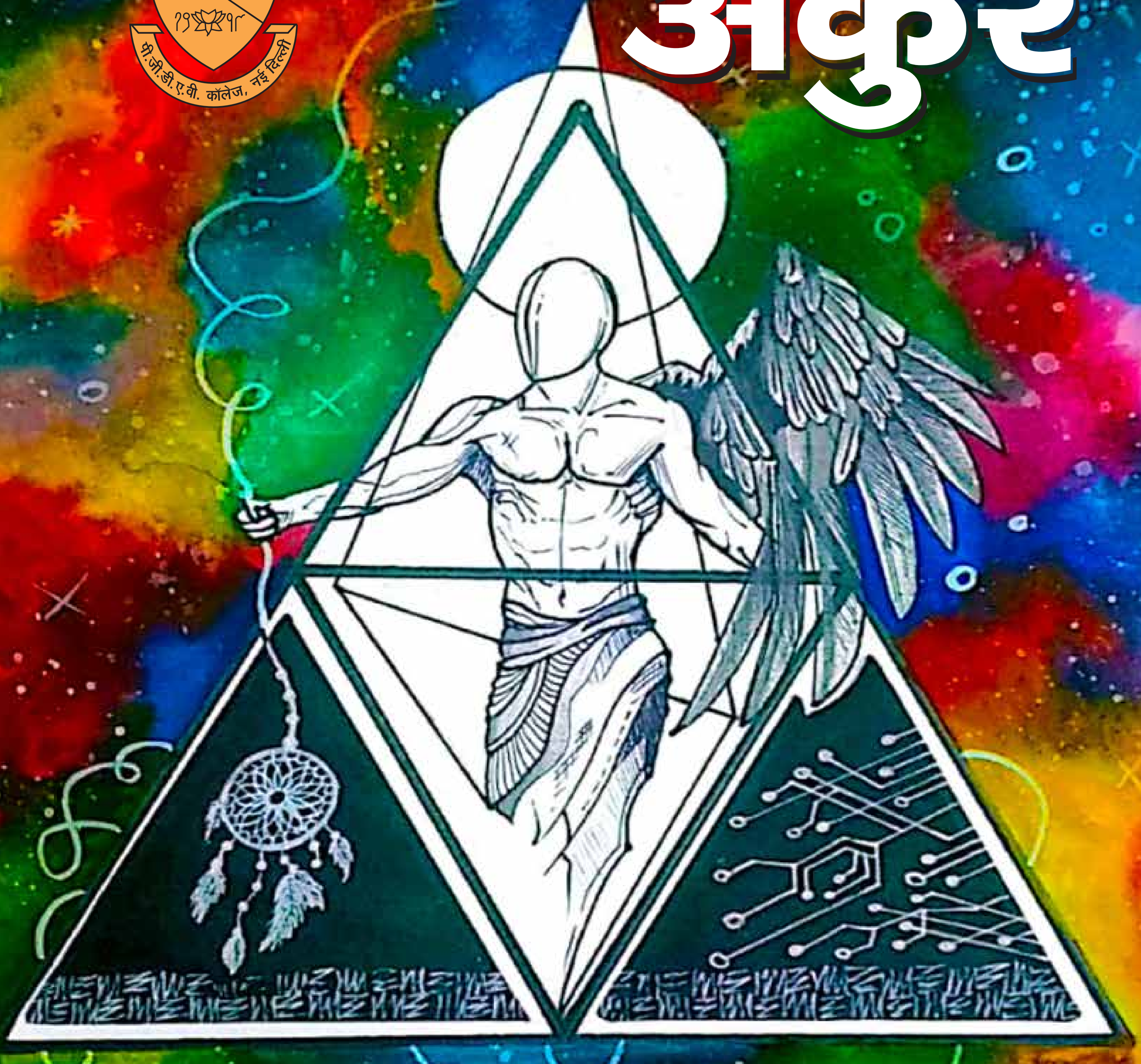

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065

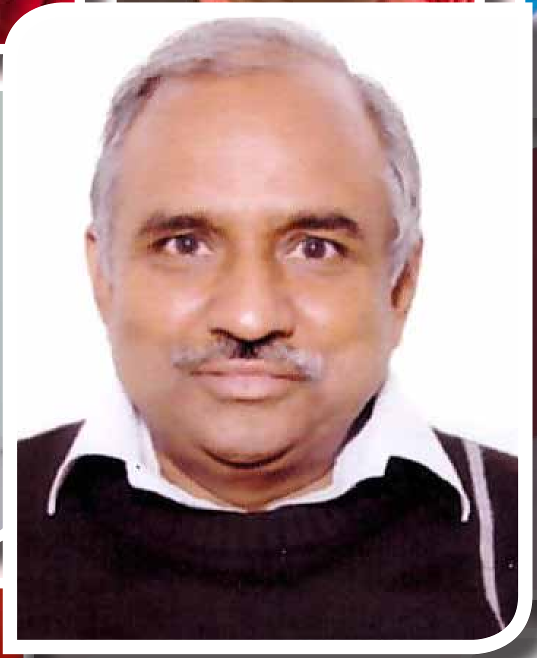

अंकुर

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)
नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065

www.pgdavcollege.edu.in
email: pgdavcollege.edu@gmail.com

वर्ष 2019–20 अंक : 68

Patron	-	Dr. Mukesh Aggarwal
Chief Editor	-	Dr. Veena
Editors	-	Dr. Dilip Kumar Jha (Sanskrit)
		Mr. Rohit Kumar (Sanskrit)
		Dr. Ved Prakash (Hindi)
		Dr. Chain Singh Meena (Hindi)
		Dr. Mukesh Bairva (English)
		Dr. Mona Goel (English)
Student Editors	-	Saurabh Saxena (Sanskrit Section)
		Reema haldar (Sanskrit Section)
		Shashi Chaurasia (Hindi Section)
		Arpit Shakya (Hindi Section)
		Saurabh Kumar (Hindi Section)
		Kartik Gupta (English Section)
		Ananya Saraswat (English Section)
		Sara Haque (English Section)
Publisher	-	Ms. Garima Gaur Srivastava
Printer	-	Jaina Offset Printers

प्राचार्य की कलम से.....

'अंकुर' से मेरा संबंध विद्यार्थी काल से ही रहा है। रचनाकार से लेकर संपादक और अब प्राचार्य के दायित्त्व तक मैंने अंकुर के साथ लगभग चालीस वर्ष तक की यात्रा की है। अंकुर के साथ जो रचनाकार और संपादक के रूप में जुड़े वे कथाकार, आलोचक और भाषा वैज्ञानिक के रूप में साहित्य जगत में समृद्ध हुए और छात्र रचनाकारों में बहुत से विद्यार्थी आज अलग–अलग क्षेत्रों में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। ऐसे में मुझे यह कहते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि 'अंकुर' की इस रचनात्मक यात्रा का मैं इतने लंबे समय तक साक्षी रहा हूँ।

आज समूचा विश्व एक ऐसी महामारी का सामना कर रहा है, जिसने हम सबको घर पर रहने को विवश कर दिया है। घर पर रहकर भी हम विविध माध्यमों से अपने विद्यार्थियों से जुड़े रहे, शिक्षा और सामयिक विमर्शों में सक्रिय रहे और आपदा के काल में सभी ने आत्मविश्वास और अनुशासन के महत्त्व को और भी बेहतर तरीके से समझा है। भौतिक रूप से सबसे दूर होकर विभिन्न माध्यमों से शिक्षक, छात्रों के संपर्क में रहे हैं। यह सब ई–स्रोत के कारण ही संभव हो पाया। शिक्षक और हमारे गैर शिक्षक कर्मचारी वर्ग ने यह यथासंभव प्रयास किया कि छात्रों का समय व्यर्थ न जाए।

अंकुर में रचनाएँ तो महामारी से पहले की हैं लेकिन मुझे यह कहने में बिल्कुल संकोच नहीं है कि साहित्यिक रचनाएँ काल और परिस्थितियों में बंधी नहीं होती। रचनाएँ सार्वभौमिक और सार्वकालिक होती हैं। 'अंकुर' के इस अंक के संपादन और रूपाकार के लिए मैं डॉ. वीणा और समग्र 'अंकुर टीम' को बधाई देता हूँ। प्राचार्य के रूप में 'अंकुर' ई–पत्रिका का यह अंक आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे जिस हर्ष का अनुभव हो रहा है उसे शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। आप सभी को मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएं!

प्राचार्य जी से अंतरंग बातचीत.....

यह हमारा सौभाग्य है कि हमें अपने महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल के साथ निरंतर संपर्क में रहने का अवसर मिला है। डॉ. अग्रवाल पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज के छात्र एवं प्राध्यापक रहे हैं और आज प्राचार्य पद पर आसीन हैं। आप दिल्ली विश्वविद्यालय के **गोल्ड मेडलिस्ट** छात्र हैं। वर्ष 2016 में पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज की अल्युमनाई एसोसिएशन ने आपको **'पी.जी.डी.ए.वी. रत्न'** की उपाधि से सम्मानित किया। वर्ष 2019 में अमृतधारा फाउंडेशन (जलगाँव, महाराष्ट्र) ने आपको **'साहित्य शिखर'** सम्मान प्रदान किया। प्राचार्य महोदय नवम्बर 2020 में दीर्घकालीन अकादमिक सेवा के उपरांत सेवानिवृत्त हो रहे हैं। **'अंकुर'** की छात्र संपादकीय टीम ने डॉ. अग्रवाल से विस्तृत अनौपचारिक बातचीत की जिसका एक प्रतिलेखन हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं:–

अर्पित : सर! हम सब आपसे बहुत प्रभावित हैं। हम आपसे आपकी प्रारंभिक शिक्षा और उसकी पृष्ठभूमि के बारे में जानने के इच्छुक हैं। कृपया सविस्तार साझा करें।

डॉ. मुकेश अग्रवाल : मेरी प्रारंभिक शिक्षा मेरठ शहर में हुई। मैं 9वीं कक्षा की परीक्षा देकर (1969) दिल्ली में शिफ्ट हो गया। मैं कक्षा में सदा सामान्य विद्यार्थी रहा। हमारी 8वीं कक्षा में बोर्ड की परीक्षा होती थी। बोर्ड में टॉप किया हो ऐसा भी कुछ नहीं था। 9वीं कक्षा में मेरे पास साइंस थी। दिल्ली आने के बाद मैंने आर्ट्स में एडमिशन लिया और मेरा एक साल निकल गया। 1970 में रामपुरा क्षेत्र में 9वीं में सरकारी स्कूल में एडमिशन लिया। ये यात्रा धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगी। मैंने 1973 में हायर सेकेण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। तब हायर सेकेण्डरी था अब सीनियर सेकेण्डरी है। आजकल आप लोगों को एक साथ ज्यादा पढ़ना पड़ता है। उस स्कूल में 11वीं क्लास में पहली बार आर्ट्स में किसी की फर्स्ट डिवीजन आयी थी वह मैं ही था। 1975 में पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य) में मैंने हिंदी (ऑनर्स) में एडमिशन लिया। 1978 में बी.ए. करने के बाद 1980 में पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज से एम.ए. किया। कुल मिलाकर यही छोटी–सी कहानी है।

Kartik Gupta : Sir, as we are talking to you about your life, your love for Hindi literature is reflecting in your answers every now and then. You recently told us that you just had 8 students in your BA Hindi hons. Batch, clearly it was a less sought-after course in comparison to other courses. Could you please share what was it that drew you towards the world of Hindi literature?

Dr. Mukesh Aggarwal : It is a big coincidence. I do not have a clue why I chose Hindi literature. In 1973, I had initially taken an admission in B.com hons at Rajdhani College. But since I was an arts student, I did not enjoy

my time in b.com hons. So I left it. I had few friends here in PGDAV evening so I decided to come here. There were not many courses available at that time. I had to choose between Hindi honours and political honours so I decided to sign up for Hindi honours as I was scoring good in the subject of Hindi literature at my school. I believe that once you have taken up something you must give your best. Whatever course you have taken up you must excel in that. So once I took admission in Hindi honours I surrendered to it completely. Had I been in some other course I still would have given my hundred percent. That's what one must do without worrying about how successful he/she will be.

अर्पित : सर! आप इस महाविद्यालय के छात्र रहे हैं और आज प्राचार्य पद पर आसीन हैं। क्या आप प्राचार्य की कुर्सी पर बैठकर अपनी कक्षा की बैंच को याद करते हैं?

डॉ. मुकेश अग्रवाल : हाँ! बहुत ज्यादा याद करता हूँ। कई बार तो लगता है कि मैं बैंच पर बैठा हूँ सामने हमारे प्राध्यापक बैठे हैं। कई बार पढ़ाते–पढ़ाते अपने प्राध्यापकों की याद भी आ जाती थी। हमारी क्लास ज्यादातर स्टाफ रूम के ऊपर वाले कमरे में होती थी या ट्यूट रूम में होती थी। हिंदी ऑनर्स में हम सिर्फ 8 विद्यार्थी थे। सभी प्राध्यापकों के साथ मेरे अच्छे रिलेशन थे और आज भी हैं।

सौरभ सक्सेना : सर! संघर्षों से भरे आपके जीवन में उतार–चढ़ाव का दौर भी आया होगा। जहाँ गलतियाँ भी हुई होंगी और अनुभव भी मिले होंगे। इन्हीं गलतियों और अनुभवों को साझा करने के लिए और समय–समय पर प्रोत्साहित करने के लिए किसी विशेष परिचित ने आपका साथ दिया होगा। हम उस परिचित के विषय में जानना चाहते हैं?

डॉ. मुकेश अग्रवाल : प्राध्यापक बनने के बाद भी कई वर्ष तक संघर्ष ही रहा। जन्म लेने से वर्तमान तक ऐसा कोई काल नहीं रहा होगा जिसमें संघर्ष न हुआ हो। लेकिन हाँ घरवालों ने कभी हमें दुःख और तकलीफों को महसूस नहीं होने दिया। मैं 9–10 वर्ष की आयु से ही पिताजी के साथ काम में लग गया था। जितना समय मेरा पढाई में जाता था उतना ही समय पिताजी के साथ काम में लगता था। और यह क्रम स्नातक तक चला है। स्नातकोत्तर में आने के बाद काम का यह सिलसिला छूटा। आर्थिक संकट भी रहा लेकिन घरवालों के साथ ने कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि हम मुश्किल में हैं। हाँ, पर पिताजी ने यह कहा था कि बी.ए. हम करवा देंगे पर उसके बाद तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। जैसे बाहर विदेशों में बच्चों के साथ होता है उन्हें 12वीं करने के पश्चात् छोड़ दिया जाता है, लेकिन यह होना भी चाहिए। इससे व्यक्ति का अनुभव और आत्मबल बढ़ता है। मन में सदा पढने का भाव रहा कि बस पढना है। उस समय बहुत ज्यादा कुछ सोचा नहीं। बी.ए. का परिणाम आने के बाद यह सोचा कि अब हम पढ़ाने जा सकते हैं। उससे पहले कभी हमने सोचा नहीं। (इस अवसर पर मैं अपने गुरुजनों का आभारी हूँ जिनका स्नेह और आशीर्वाद मुझे सदा मिला। अपने टीचर्स से मेरे बड़े ही आत्मीय संबंध रहे। घर–परिवार के सदस्य की तरह मुझे उन्होंने स्नेह दिया। इसलिए मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ।) कुल मिलाकर अपने से ही प्रतियोगिता रही। जैसे अगर इस बार मेरे 55% अंक हैं तो इसके बाद 60% आने चाहिए। यह नहीं कि दूसरे के 54% हैं तो मुझे 55% लाने चाहिए। मेरा विचार है कि हमें दूसरों से प्रतियोगिता नहीं करनी चाहिए। हमें स्वयं से प्रतियोगिता करनी चाहिए। इसलिए मेरे जितने भी सहपाठी थे चाहे वे स्कूलीय स्तर के रहे हो या कॉलेज स्तर के मैंने कभी उनके साथ प्रतियोगिता नहीं की। मैं कॉलेज की यूनियन से जुड़ा रहा जिसको कॉलेज में नेतागिरी कहते हैं। अपने ही कॉलेज पी.जी.डी.ए.वी. में मैं कल्चर सोसाइटी से भी जुड़ा रहा मगर बी.ए., एम.ए. और एम.फिल में प्रथम डिवीजन कायम रही।

रीमा : सर! सभी के जीवन में कोई ऐसी घटना अवश्य घटित होती है जो उसके जीवन को एक नयी दिशा देती है। ऐसी किसी घटना का स्मरण आपको भी रहा होगा जो आपको हर समय प्रेरित करती है। कृपया साझा करें।

डॉ. मुकेश अग्रवाल : नहीं, मुझे तो ऐसा नहीं लगता। जीवन तो सामान्य और सीधा ही बीता। परिवार में जो आर्थिक स्थितियाँ रही हैं वे अपनी जगह हैं लेकिन बहुत नाटकीय कुछ हुआ हो ऐसा मुझे स्मरण भी नहीं। लेकिन यह नौकरी मुझे संयोग वश मिली। प्राध्यापक के लिए चयन भी संयोग से हुआ। अर्थात फॉर्म भरा था और इंटरव्यू देने चले गए और बाद में चयन भी हो गया। मेरा पहला चयन खालसा कॉलेज में हुआ। न तैयारी थी और ना सोचा था कि चयन होगा परंतु चयन हो गया। लेकिन मन में तो इच्छा पी.जी.डी.ए.वी. की ही थी। हमारे पूर्व प्राचार्य मोहन लाल के साथ हम यहाँ पी.जी.डी.ए.वी. आ गये और मेरा 75% जीवन यहीं रहा है। इसीलिए जीवन में कुछ नाटकीय रहा हो ऐसा कुछ नहीं है लेकिन हाँ आशीर्वाद रहा सभी प्राध्यापकों का। तभी यह संभव भी हुआ।

रीमा : सर! जिस पद पर आप आसीन हैं उसके लिए आपने कड़ी मेहनत को अपना साथी बनाया। लेखन, आचार्य पद को एक साथ आपने कैसे संभाला, उन परिस्थितियों और संघर्षों को हम जानना चाहते हैं?

डॉ. मुकेश अग्रवाल : जो भी आप करते हैं उसकी कीमत तो आपको देनी ही पड़ती है। जहाँ तक परिवार का संबंध है वो तो संभाला है मेरी पत्नी ने। उनका सहयोग ही था जिसके सहारे मैं आगे बढ़ता गया। मैं तो लगभग घर से बाहर ही रहता था। पढ़ते समय भी मैं घर में तो बहुत कम ही पढ़ा हूँ। मेरा ज्यादा समय लायब्रेरी में ही बीतता था। विवाह के पूर्व भी और विवाह के पश्चात् भी। तो लिखना–पढना कभी नहीं रुका। उसी क्रम में प्राचार्य पद संयोग–वश आ गया। लेकिन हाँ, यह है कि पढने के लिए इच्छा लगातार मन में रही और उस इच्छा के कारण से यह सतत पढना और लिखना जारी रहा। एक बात मैं जरुर कहना चाहता हूँ कि लेखन में तो एक स्वाभाविक झिझक पहले आपको होती है। जब

आप लिखना शुरू करते हैं तो पहला शब्द कैसा लिखा जाएगा, पहला वाक्य कैसा लिखा जाएगा, पहला पैराग्राफ कैसा लिखा जाएगा, यह भी एक कठिनाई होती है। चूँकि, अभी आप विद्यार्थी हैं इसलिए भी कह सकता हूँ जो आप लिखते हैं वह छपेगा या नहीं छपेगा यह मन में एक बड़ी झिझक रहती है। हमारा लिखा हुआ कौन छापेगा? इतनी बड़ी–बड़ी मैग्जीन निकल रही हैं और बड़े–बड़े लेखक वहाँ हैं। हमारा कौन छापेगा? अब जब हमारा कोई छापेगा ही नहीं तो हमें लिखना ही नहीं है हम लिखकर क्या करेंगे? यह एक झिझक और चिंता मन में होती है। इस झिझक को आपको निकालना चाहिए। जब हम लिखना शुरू करेंगे तो हो सकता है प्रथम प्रयास ठीक न लगे। उदाहरण के लिए यदि अपनी थीसिस उठाकर देखूँ तो लगेगा कि कितना 'इमैच्योर' लिखा गया है। इससे बेहतर लिखा जाना चाहिए था। अगर आप लिखेंगे तो आपको यह संतोष होगा कि आपने लिखा। आप उसको भेज कर देखिये एक जगह, हो सकता है ना छपे लेकिन वह छपेगा जरुर। धीरे–धीरे लेखन का अभ्यास बढेगा। मान लीजिए नहीं भी छपेगा तो क्या हो गया? लेकिन अगली बार लिखेंगे तो इससे बेहतर लिखेंगे। तो इस झिझक से हम सबको बाहर निकलना चाहिए।

Ananya Saraswat : As the principal of this college, what have been your top priority/priorities towards this institution?

Dr. Mukesh Aggarwal : As the principal of this college, my top priority has been the academic growth of the students. I understand the importance of co- curricular activities as well but academic excellence is what I have always looked up to. For this, building up of healthy teacher-student relationship is necessary. Students should be comfortable with their teachers in sharing both academic and non- academic problems, and the teachers should try to be a strong support, because only when this happens, a student can truly focus on his studies. A strong teacher-student relationship would also help the student develop his interpersonal skills. Apart from this, my other priority has been the beautification of the college infrastructure. I feel that if a student gets a positive vibe right after the entering the college gate, he would feel elated in the surrounding and would be able to focus on his studies in a better way. The infrastructure thus plays an important role in setting a positive mood.

सौरभ कुमार : सर! आप भाषा विज्ञान के विद्यार्थी रहे हैं। सर आपने भाषा विज्ञान पर कई पुस्तकें भी लिखी हैं। हिंदी भाषा के स्वरुप में आप भाषा वैज्ञानिक के तौर पर क्या बदलाव देखते हैं? हम भी भाषा के विद्यार्थी हैं इसलिए यह हमारे लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

डॉ. मुकेश अग्रवाल : इसमें भाषा विज्ञान का कोई रोल नहीं है। मैं भाषा विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूँ ऐसा भी नहीं है। मैं तो हिंदी भाषा और साहित्य का विद्यार्थी रहा हूँ। एम.ए. में भाषा विज्ञान के नाम पर 4 पेपर होते थे। मैंने लिंग्विस्टिक में कोई डिप्लोमा नहीं किया। भाषा हमेशा ही परिवर्तित होती रहती है। परिवर्तन तो भाषा का सर्वोप्रमुख लक्षण है। अगर भाषा विज्ञान की बात आएगी तो मुझे थोड़ी–सी दर्शन के स्तर पर चर्चा करनी होगी। हम हर क्षण बदली हुई भाषा का प्रयोग करते हैं। इस क्षण आपने जो कहा अगले क्षण वह आप नहीं बोल सकते। इसलिए परिवर्तन तो भाषा का शाश्वत नियम है। भाषा के स्वरुप को यदि अखिल भारतीय स्तर पर देखना चाहते हैं तो आप देखेंगे कि इस देश में जितनी भाषाएँ थी वे धीरे–धीरे समाप्त हो रही हैं और कुल मिलाकर यह एक बड़ा खतरा है। आप समझिए कि पिछले 25–30 सालों में लगभग 600 भाषाएँ मर गईं। अभी लगभग 300–350 भाषाएँ समाप्त होने की ओर हैं क्योंकि उनके प्रयोक्ता नहीं हैं। उनके प्रयोग करने वाले कम होते जा रहे हैं। जो भी व्यक्ति समाज में रहता है उसकी एक प्रमुख बोली होती है परंतु उस व्यक्ति को जब आजीविका की खोज में या अन्य कारणों से अपने समाज के बाहर जाना पड़ता है तो उसके लिए नए क्षेत्र की भाषा का प्रयोग करना अनिवार्य हो जाता है। केवल अपनी भाषा से वह ना तो आजीविका ले सकता है ना ही अपने आप को सम्पन्न बना सकता है। जब वह बृहद् समाज में जाता है तब उसी समाज की भाषा का प्रयोग करता है और इस प्रकार धीरे–धीरे उसकी अपनी भाषा समाप्त होती जाती है। दुनिया की तमाम भाषाओं के लिए यह एक बड़ा खतरा है। आज जो स्थिति है उसके बारे में आप कह सकते हैं कि 'हिंदी' पैसे कमाने का तो साधन नहीं है। हिंदी पढने से व्यक्ति का सम्मान बढ़ता है ऐसी एक (फीलिंग) भी समाज में नहीं है। हिंदी पढने से रोजगार के अवसर बढ़ जायेंगे ऐसा भी नहीं है। इस बारे में मेरा मानना है कि आप हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत को पढ़ें। अगर आप उसमें उच्चतम (excellence) को प्राप्त करते हैं यानि उसमें आप अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं तो आपको कठिनाई कभी नहीं होगी। सच तो यह है कि हम एक दुविधा में रहते हैं– हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत की। जब भी हम चर्चा करते हैं तो कहीं न कहीं अंग्रेजी आ जाती है। इस दुविधा में ना हम इधर के रहते हैं ना उधर के रहते हैं। मैं हमेशा मानता हूँ कि हिंदी पढ़ने वालों को अंग्रेजी अवश्य पढनी चाहिए। मैं तो यह भी मानता हूँ कि आज के समय में दो विषय कॉलेज में अनिवार्य होने चाहिए एक अंग्रेजी भाषा और दूसरा कम्प्यूटर साइंस। आप जो भी विषय पढ़ें उसके साथ–साथ दो पेपर इन विषयों पर भी पढ़ें। आज के समय में इनके बिना आप बहुत आगे नहीं जा सकते। पी.जी. में जाना है या और आगे जाना है तो अंग्रेजी की आवश्यकता सदा रहेगी। लेकिन हिंदी पढ़कर हमारा सम्मान कम होता है यह फीलिंग अपने अंदर से हिंदी वालों के लिए निकालना जरुरी है। वरना तो आपके लिए सम्मान से जीना मुश्किल हो जायेगा।

जहाँ तक भाषा में परिवर्तन की बात है तो भाषा तो बदल ही रही है। अब चाहे उसमें अंग्रेजी के शब्द आ रहे हों चाहे अरबी,

फारसी के लेकिन एक तथ्य मैं महसूस करता हूँ कि समाज से जो चीजें खत्म हो रही हैं भाषा से भी खत्म हो रही हैं। जब प्रयोग ही नहीं बचेगा तो आप (प्रयोक्ता) कैसे उसका प्रयोग करेगा? उदाहरण के लिए यज्ञ से संबंधित शब्दावली से हम कितने लोग परिचित हैं? मान लीजिए यज्ञ में घी डालने के लिए जिस चम्मच का प्रयोग करते हैं उसे क्या कहते हैं? हमारे बच्चे उन वस्तुओं से परिचित नहीं हैं। यदि हमारे घरों में इनका प्रयोग होगा तो बच्चे भी जानने लगेंगे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। मान लीजिए संज्ञा की दृष्टि से 'पेजर' आया आप लोगों ने सुना, देखा वह बड़ी तेजी से आया और खत्म हो गया तो नई–नई आवश्यकताएँ है नई–नई वस्तुएँ इन्वेंट हो रही है। नए–नए शब्द आते रहते हैं, पुराने शब्द निकलते रहते हैं यह सब परिवर्तन है। यह परिवर्तन पॉजिटिव ही होता है इसमें नेगेटिविटी के लिए स्थान नहीं है। मेरा मानना है कि बहुत ज्यादा आग्रह इस बात का नहीं रखना चाहिए कि जिसको आप हिंदी की शुद्धता कहते हैं हिंदी की शुद्धता को दो तरह से प्रयोग करते हैं एक तो संस्कृत निष्ठ हिंदी बोलें तो हम कहते हैं बड़ी शुद्ध हिंदी बोल रहा है लेकिन संस्कृत निष्ठ का यह मतलब नहीं है कि वह शुद्ध है हो सकता है व्याकरण की दृष्टि से उसमें गलतियाँ हों। शुद्ध हिंदी होती है व्याकरण की दृष्टि से लेकिन भाषा में बहुत कठिन शब्दों का प्रयोग करने का मुझे नहीं लगता कोई कारण है। ऐसे ही आवश्यक एवं अनिवार्य तौर पर जो शब्द किसी भी भाषा के हिंदी में आ गए हैं उनको जबरदस्ती निकालकर उनकी जगह हिंदी के शब्द प्रयोग करने का भी मुझे नहीं लगता कोई कारण है। हाँ! सहज रूप में जो शब्द आ सकते हैं हिंदी में प्रयोग करके देखना चाहिए, चलता है तो ठीक है नहीं तो बहुत दुराग्रह नहीं है।

अर्पित : सर! आप उस दौर से के छात्रों और आज के दौर के छात्रों के समक्ष आने वाली चुनौतियों में क्या बदलाव देखते हैं?

डॉ. मुकेश अग्रवाल : मुझे लगता है सब समय की बात होती है। उस समय जब मैं विद्यार्थी था कॉम्पिटीशन तो था, लेकिन उतना नहीं था। आज के छात्र के सामने कॉम्पिटीशन बहुत ज्यादा है। हम लोगों के सामने एक लक्ष्य रहता था– बी.ए. और एम.ए. कर लेंगे तो सरकारी नौकरी मिल जायेगी। काफी लोग तो बी.ए. करने के बाद ही नौकरी में लग जाते थे। हमारे माता–पिता की अपेक्षा होती थी कि बी.ए. करने के बाद छोटी–मोटी नौकरी मिल जाएगी। हम लोगों की भी यही अपेक्षा होती थी। सरकारी नौकरी की बड़ी इच्छा रहती थी। प्राइवेट जॉब तब पॉपुलर नहीं थे। आज मुझे लगता है कि प्राइवेट सेक्टर बहुत ज्यादा बढ़ गए हैं सरकारी नौकरियाँ लगभग खत्म होने की स्थिति में हैं। प्राइवेट सेक्टर आपकी योग्यता देखता है, जैसा कि मैंने अभी कहा आजकल फर्स्ट डिवीजन बहुत ज्यादा आते हैं लेकिन इसका उतना महत्त्व नहीं रहा। आज महत्त्व प्रतियोगी परीक्षा का है। आपके मार्क्स 80–90% आ रहे हैं तो अच्छी बात है लेकिन अगर आप कॉम्पिटीशन परीक्षा उत्तीर्ण कर सकते हैं तो आप प्राइवेट में तो क्या कहीं भी जा सकते हैं। आज के विद्यार्थियों के सामने और भी कई चुनौतियाँ हैं। हमारे समय में ध्यान भटकाने वाले साधन कम थे आज आपके पास बहुत ज्यादा हैं। आज हमारा विद्यार्थी मोबाइल हाथ से छोड़ता नहीं। आज हम भी मानते हैं कि विद्यार्थी के लिए मोबाइल रखना आवश्यक है। टी. वी. भी एक साधन है मुझे लगता है पहले भी रहता होगा। फिल्मों का क्रेज भी बहुत हो गया है, मार्केट्स, मॉल हैं उनमें घूमने का शौक बहुत है। सोशल लाइफ में जितने बदलाव हैं उसको विद्यार्थी फेस करता है। आज वह पहले से ज्यादा सजग है, पहले से ज्यादा ध्यान देता है। सोसाइटी में क्या हो रहा है कहीं–न–कहीं उसके दिमाग में चलता रहता है। सोसाइटी के बदलाव भी उसके सामने रहते हैं। वह सब भी पढाई में कहीं न कहीं दखल देते हैं। मैं अपने बारे में कह सकता हूँ कि मैं रात को देर तक नहीं पढ़ा था, लगभग 10 बजे तक अपना काम निपटा लेता था। लेकिन आज के विद्यार्थी के बारे में मैं प्रायः देखता हूँ कि वे 2–3 बजे तक, देर रात तक पढ़ते रहते हैं। सुबह होने पर सो जाते हैं। शायद दिन में कई चीजें रहती होंगी जिसके कारण वे पढाई में ध्यान नहीं लगा पाते।

शिक्षा के क्षेत्र में नए–नए प्रयोग होते रहते हैं। शिक्षा पद्धतियाँ बदलती हैं। जैसे हमारे समय में internal assessment था वह नाम मात्र के लिए ही था। Internal assessment के अंक अंकतालिका में लिखे जाते थे लेकिन assessment में जुड़ते नहीं थे। आज के विद्यार्थियों को पता है कि उसके internal assessment के मार्क्स total marks में जुड़ेंगे इसलिए वे relaxed हैं। पहले internal assessment नहीं दी तो परीक्षा पास कर लेते थे। लेकिन अब अगर आपने एक बार internal assessment नहीं दिये तो अगले साल internal assessment नहीं दे पायेंगे। यह आपके फाइनल रिजल्ट को प्रभावित करेगा। आज मुझे लगता है कि थर्ड ईयर में आते–आते विद्यार्थी का फोकस चेंज हो जाता है। वह थर्ड ईयर की तैयारी करने की जगह किसी न किसी कॉम्पिटीशन की तैयारी करने लगता है। पी.जी. करना है तो उसकी तैयारी करने लगता है। यूनिवर्सिटी का सिस्टम लगातार चेंज होता रहता है कभी तीन साल की ग्रेजुएशन कभी चार साल की ग्रेजुएशन हो रही है। हम बार–बार प्राइवेटाइजेशन की बात करते रहते हैं कि प्राइवेटाइजेशन हो रहा है लेकिन सरकारी कॉलेज भी बहुत हैं जिनमें अच्छे विद्यार्थी भी पढ़ते हैं लेकिन सरकार के पास ऐसी कोई पॉलिसी नहीं है जो विद्यार्थी को बाँध सके। यह सारी कवायद एक्सपेरीमेंटल बेसेस पर हो रही है। मुझे तो कई बार लगता है कि सरकार शिक्षा पर जितना खर्च करती है वह बहुत ही कम है। इस क्षेत्र में अन्य देशों के मुकाबले हम बहुत पीछे हैं। हम कहते हैं कि GDP का 6% खर्च हमारे देश की शिक्षा पर होना चाहिए लेकिन मेरे ख्याल से यह 1 से 1.5% ही है। सरकार शिक्षा पर खर्च को अपना खर्च मानती है जबकि शिक्षा के खर्च को इन्वेस्टमेंट मानना चाहिए।

Kartik Gupta : In what ways has the changing of the syllabus every year impacted the institution? And what is the driving force behind the change?

Dr. Mukesh Aggarwal : According to me, it is the government policies that are responsible for the continuous change of the syllabus. The task of designing the syllabus

is not taken by the government very seriously, which in turn poses a lot of problems both to teachers as well as the students. Low availability of study material and incomplete knowledge of the change to the teachers are the major issues faced. Yet, I think students should not be much affected by these changes in the syllabus as this change provides them with an opportunity to learn something new every year.

सौरभ कुमार : सर! आप शिक्षा के उस दौर से गुजरे हैं जब इंटरनेट जैसी सुविधाएँ नहीं थी। आज के विद्यार्थी के पास सभी सुविधाएँ हैं तो आपके अनुसार ये सुविधाएँ विद्यार्थी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं या नकारात्मक?

डॉ. मुकेश अग्रवाल : इंटरनेट का एक यह फायदा तो है कि आपको कोई भी चीज (रेडीमेड) मिल जाती है लेकिन इंटरनेट से कोई पूरी पढाई कर सकता है ऐसा मुझे लगता तो नहीं। कम से कम मैं तो नहीं पढ़ सकता। मैं अपने बारे में कह सकता हूँ कि मुझे किताब पढ़ना ही अच्छा लगता है। किताब सामने रखी हो तो अच्छा लगता है। आपकी पीढ़ी के बारे में मैं नहीं कह सकता हूँ क्योंकि आजकल ई–बुक्स होती हैं। आपकी लायब्रेरी में लाखों किताबें संग्रहित हैं लेकिन आप इंटरनेट से पढ़ते हैं। लेकिन आप मुझे कहें पढने के लिए तो यह मेरे लिए सबसे मुश्किल कार्य है और इसलिए अगर मुझे कुछ पढना भी होता है तो मैं इंटरनेट से पहले उसका प्रिंट–आउट लेता हूँ उसके बाद पढता हूँ। बचपन से हमने किताबें ही देखी हैं और हम किताबें ही पढ़ते आए हैं।

शशि : सर! आप भाषा के छात्र रहे। भाषा विज्ञान पर आपका शोध कार्य भी रहा। साहित्य के प्रति आपका अनुराग भी हमसे छिपा नहीं, आपके प्रिय लेखक कौन–कौन रहे हैं?

डॉ. मुकेश अग्रवाल : साहित्य की दृष्टि से मुझे निराला पसंद हैं। मुझे निराला के व्यक्तित्व के बारे में और निराला को पढना दोनों ही पसंद हैं। जो गद्य लेखक हैं उनमें से मैंने मुंशी प्रेमचंद को बहुत पढ़ा है। उस समय के लेखकों में से मैंने मैथिलीशरण गुप्त, हरिकृष्ण प्रेमी, कमलेश्वर आदि साहित्यकारों को पूर्ण रूप से पढ़ा है लेकिन जो सप्राणता और जीवंतता मुझे निराला में मिली है वह और कहीं नहीं।

शशि : सर! अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त आपकी अन्य व्यक्तिगत रुचियाँ क्या रही हैं?

डॉ. मुकेश अग्रवाल : अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त मेरी कोई रूचि नहीं रही है। कॉलेज के शुरुआती दिनों में सेमिनार में मेरी रूचि थी तब शायद ही कोई सेमिनार होता था जिसे छोड़ने का मन करता था। उन दिनों खूब सेमिनार में उपस्थित रहे और जैसे–जैसे परिवार बढ़ा, दायित्व भी बढ़ता चला गया। जब ये सेमिनार भी बंद होते चले गए फिर घर बैठकर पढना–लिखना ही रूचि रह गई।

Ananya Saraswat : In today's world it doesn't matter how hard a student studies, how hard he/she concentrates but it is a fact that the number of people that fail in life are far greater than the number of people who succeed. So according to you, what is the best way to deal with failure and to cope up with it?

Dr. Mukesh Aggarwal : When I say that my top priority is academics, I don't mean to say that it is life. Academics is not life, it is just a part of life. So if a student thinks that if they fail in an exam then they fail in life, we must eradicate this mentality. Students should not indulge in negative thinking. I always said this to students and children around me, that, yes you must strive to score high but if you are not able to to get 90 or 95% then you should not lose hope. Just be happy with what you got and try to improve in the next one and even if you do not improve so what? Life does not end. All those students who came first or second are they all successful? And all those who did not top are they all failures? As a matter of fact, Most successful people in the world were actually not good in studies; Mahatma gandhi was an average student but he turned out to be a global political leader, most successful businessmen were also not toppers. Life doesn't end, it goes on...just give your best and leave the rest in the hands of almighty.

शशि : सर! सेवानिवृत्ति के उपरांत भविष्य के प्रति आपकी योजनाओं को जानने के लिए हम उत्सुक हैं।

डॉ. मुकेश अग्रवाल : सेवानिवृत्ति के उपरान्त अभी तो कोई योजना नहीं है लेकिन कोई अच्छा प्रोजेक्ट मिलेगा तो घर नहीं बैठेंगे।

शशि : सर! विद्यार्थियों के लिए आपका क्या संदेश है?

डॉ. मुकेश अग्रवाल : आपका काम इस समय पढ़ना है। अपनी आखें खोलकर रखें। समाज में क्या हो रहा है उससे आप सभी अपनी नजरें मत चुराओ। आप अखबार, पत्रिकाएँ और किताबें पढ़ो। अपने टीचर्स के साथ विचार–विमर्श करो। जो भी स्थिति आपके सामने आती हैं उसका डटकर सामना करो। आपका उत्सुक प्रेक्षक होना बहुत जरुरी है। बहुत सारी चीजें हम देखते हैं और उन्हें नकार देते हैं। हमारे मन में सभी चीजों के प्रति जिज्ञासा होनी चाहिए। आपको अपने टीचर्स से अधिक से अधिक प्रश्न पूछने चाहिए। आपको पूरी ईमानदारी से काम करना चाहिए। भविष्य उज्ज्वल ही होगा। सफलता अवश्य मिलेगी।

आदरणीय प्राचार्य! आपने साक्षात्कार हेतु हमें समय दिया इसके लिए **'अंकुर'** की छात्र संपादकीय टीम की ओर से आपको बहुत–बहुत धन्यवाद! आपका जीवन और लेखन इसी उर्जा के साथ आगे जारी रहे इसी कामना के साथ आपका पुनः आभार!

अभिनंदन...

डॉ. कृष्णा शर्मा ने इंद्रप्रस्थ महाविद्यालय से स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती के कथा साहित्य पर शोध कार्य किया। आपने 1996 में पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के हिंदी विभाग में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। आपने महाविद्यालय में 3 राष्ट्रीय संगोष्ठियों में संयोजिका व सह संयोजिका की भूमिका का निर्वहण किया साथ ही दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सी.पी.डी.एच.ई. द्वारा आयोजित अभिविन्यास पाठ्यक्रम में संयोजिका के दायित्व का निर्वहण किया। कई विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों द्वारा आयोजित संगोष्ठियों में विशेषज्ञ और वक्ता के रूप में आपकी भागीदारी रही। इस दौरान डॉ. कृष्णा शर्मा सृजनात्मक पुस्तकों के लेखन के साथ जनसत्ता, राष्ट्रीय सहारा, शोध दिशा, आधुनिक साहित्य, पाँचवां स्तम्भ, साहित्य अमृत इत्यादि पत्र–पत्रिकाओं में निरंतर रचनात्मक एवं आलोचनात्मक लेखन में सक्रिय रहीं। अपने इस कार्यकाल में डॉ. कृष्णा शर्मा एकाधिक बार विभागीय प्रभारी और महत्त्वपूर्ण समितियों की संयोजिका भी रहीं।

आज आप उप–प्राचार्या पद पर आसीन हैं। इस अवसर पर पी.जी.डी.ए.वी. परिवार की ओर से आपका अभिनंदन और शुभकामनाएँ!

संपादकीय

ऐसा प्रतीत होता है जैसे पूरा विश्व एक विचित्र शून्यता की ओर जा रहा है। वैश्विक प्रकोप ने पूरी मानवता के अंतर्मन को झकझोर दिया है। ज्ञान और विज्ञान भी लगता है शून्य पड़ गए हैं। अब प्रश्न यह नहीं है कि यह विभीषिका कब, कहाँ और कैसे उत्पन्न हुई? अब मुख्य लक्ष्य इस पर विजय प्राप्ति का है। प्रकृति के विधान को समझकर अपने आचरण में सुधार करना शायद समय की सबसे बड़ी माँग है। परिस्थिति की पाठशाला ही व्यक्ति को वास्तविक शिक्षा देती है। कोई भी समस्या स्थायी नहीं होती। सत्य है कि कठिन एवं असामान्य घड़ियों में जो अपने धैर्य और आत्मविश्वास को अविचल रखता है वही विषम से विषम समस्या और परिस्थिति से बाहर निकल सकता है। अंतर्मन में संघर्ष हो और फिर भी मुस्कुराता चेहरा हो– जीवन के रंगमंच पर यही मानव–जीवन का श्रेष्ठ अभिनय है।

इतिहास साक्षी है कि वर्तमान में फैली महामारी से भी अधिक भयंकर महामारियों को मानवता न केवल झेल चुकी है अपितु उन पर विजय भी प्राप्त कर चुकी है। विश्वभर के वैज्ञानिक, चिकित्सक, अनुसंधानकर्त्ता अपनी–अपनी सरकारों के सहयोग से इस प्रकोप का निदान खोजने में सक्रिय हैं। सुखद बात तो यह है कि अच्छे परिणाम आने के संकेत मिलने भी प्रारंभ हो चुके हैं। भारत ने एक विशाल जनसंख्या वाला देश होने के बावजूद प्रभावी कदम उठाए और स्थिति को नियंत्रण में रखने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की है। भारतीय जनमानस ने भी सरकार के साथ–साथ धैर्य और संयम बरतते हुए सहयोग किया। अभी ये विषम परिस्थितियाँ समाप्त नहीं हुई हैं। इसलिए निरंतर सकारात्मक सोच के साथ सब को मिलकर इनका मुकाबला करना होगा। रास्ता अभी लम्बा है।

वर्ष 2019–2020 के **'अंकुर'** की रूपरेखा, सामग्री–संचयन एवं साजसज्जा की प्रक्रिया इस महामारी से पूर्व हो चुकी थी। इसलिए वर्तमान की विकट विभीषिका से जूझने वाला मानसिक द्वंद्व, भय और असमंजस इन रचनाओं को छू भी नहीं पाया। ये रचनाएँ विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी उत्साह से परिपूर्ण होकर रचनात्मकता के विभिन्न पहलुओं को उजागर कर रही हैं।

इस अंक की निर्माण–प्रक्रिया में प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल जी का दिशानिर्देश एवं अमूल्य समय हमें निरंतर मिलता रहा। मैं संपादक मंडल की ओर से उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

इस वर्ष महाविद्यालय के हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. कृष्णा शर्मा ने उपप्राचार्या का पदभार ग्रहण किया। डी.ए.वी. परिवार की ओर से उनका हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएँ। **'अंकुर'** की इस निर्माण–यात्रा में डॉ. कृष्णा शर्मा के मूल्यवान सुझावों एवं सहयोग के लिए संपादक मंडल की ओर से धन्यवाद।

संपादक मंडल के अपने सहयोगियों– डॉ. दिलीप झा, श्री रोहित कुमार, डॉ. मुकेश बैरवा, डॉ. मोना गोयल, डॉ. वेद प्रकाश, डॉ. चैनसिंह मीना का भी मैं धन्यवाद करती हूँ जिनके परिश्रम एवं सहयोग से पत्रिका का रूपाकार संभव हो सका। **''अंकुर''** को **''ई-अंकुर'** बनाने में डॉ. गरिमा गौड़ का उत्साह प्रशंसनीय है। उनके बिना यह कार्य दुष्कर था। अतः उन्हें बहुत–बहुत धन्यवाद।

इस यात्रा में छात्र संपादक मंडल का सहयोग उल्लेखनीय है। उन्हें साधुवाद। पत्रिका के सज्जापक्ष के लिए मैं **'आइरिस'** और **'इम्प्रेशन'** सोसाइटी के छात्र आकर्ष किचलू और नेहा का धन्यवाद करती हूँ।

2019–2020 का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

डॉ. वीणा

संस्कृत खंड

विषय सूची

क्र. सं.	विषय		पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीयम्	— डॉ. दिलीप कुमार झा	15
2.	औपनिषदिक कल्याण मार्ग	— नागेन्द्र कुमार	16
3.	विश्वशान्तिः	— आकांक्षा पाठक	19
4.	मम प्रियकविः कालिदास	— अर्चना मिश्रा	20
5.	ऋतुराज वसन्त	— विकास मिश्रा	22
6.	स्वास्थ्यस्य रहस्यं व्यायाम	— सौरभ सक्सेना	23
7.	भारतीय संस्कारा	— संजना वर्मा	24
8.	शिक्षक	— बृजेश कुमार	25
9.	महर्षि पाणिनि	— विनीत चौहान	26
10.	ज्ञानं भारः क्रियां विना	— निकिता	27
11.	संस्कृत साहित्यस्य लेखिका	— शिवानी मेहरा	28
12.	ऋग्वेद में वर्णित उषा सूक्त	— रीमा हलदर	29
13.	परोपकाराय इदं शरीरम्	— संदीप कुमार	30
14.	यक्षयुधिष्ठिरसंवादः	— हेमन्त कुमार	31
15.	संस्कृत साहित्ये पर्यावरणम्	— ओमनारायण	32
16.	महर्षि दयानन्द	— राजेश कुमार	33
17.	कर्णस्य त्यागः	— राकेश कुमार पाल	34
18.	संस्कृतस्य ध्येय वाक्यानि	— धीरज सिंह	35
19.	अतिलोभो न कर्तव्य	— चेतन	37
20.	मूर्ख के लक्षण	— रंजीत कुमार	38
21.	चत्वारो वेदा	— मीनाक्षी	40
22.	उच्चारण स्थान का वैज्ञानिक आधार	— गौरव यादव	41
23.	संस्कृत में रोजगार की अपार संभावनाएँ : वर्तमान परिप्रेक्ष्य	— रोहित कुमार	42

सम्पादकीयम्

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

जगदिदं सुखदुःखात्मकम्। सुखानन्तरं दुःखम, दुःखानन्तरं च सुखम्। सुख-दुःखयोः परिवृत्त्या भुवनमेतद् विपद्यते। नहि लोके कश्चन् दुःखम् इष्टत्वेन कामयते। जराव्याधिशिर्णगात्रोऽपि दुःखं मृत्युं वा नाभिलष्यति, तर्हि कथमिव दुःखनिरोधः संभाव्यते। दुःखनिरोधस्यैक एवोपायः भुवने शान्तेः सद्धर्मस्य च संस्थापना। अत्रेदं विचार्यं यत् कथं मानव आत्मानं देवं मानवं दानवं वा कर्तुं प्रभवति। ऐहलौकिक-सुख-कामनया सहैव चेत् पारलौकिकी बुद्धिः स्यात्, जीवनान्तरे सुखाभिलाषश्च भवेत्, तर्हि न तथा मानवः पापाचरणे प्रवर्तेत। परहितविनाशनम्, परापकृतिसाधनम्, परार्थनाशनं च न केवलं दोषायैव, अपितु अपकर्तुरपि विनाशं साधयति। दुष्कृतं दुष्कृतं जनयति, सुकृतं च सुकृतम्। विद्वेषो विद्वेषं जनयति, विरोधो विरोधम्, कलहः कलहम्, युद्धं च युद्धान्तरम्। तथैव स्नेहः स्नेहं वर्धयति, प्रेम प्रेमभावनां जागरयति, सहानुभूतिः सहानुभूतिम्, सद्भावः सद्भावम्, ममता ममत्वं च। द्वयोरपि पक्षयोः परिणामः सुलभः। सामाजिकं राष्ट्रियं अन्ताराष्ट्रियं वा कार्यं यदि सहानुभूति-विश्वास-मूलकं स्यात् तर्हि तत् सुखदं समृद्धिकारि लोकहितकारि च सम्पद्यते।

प्राचीन भारतीय ऋषिभिर्महर्षिभिश्च सततमेवोदीरितं यत सर्व-भूत-हित-साधनम् अस्माकं लक्ष्यम्। तत्र राष्ट्रदेशादिभेदो विपज्जनक एव। यदा स्वार्थबुद्धिर्हीयते तदैव देवत्वं जागर्ति। सर्वेऽपि देशीया विदेशीया वा, एकस्यैव परमात्मनः पुत्राः। तत्र किं कारणं भेदप्रथनम्? यदाऽभेददृष्टिः प्रवर्तते, तदा जगदिदं स्वर्गमिव चकास्ति। न तत्र मोहः शोकादेरवसरः, न च तदा विजुगुप्सा विचिकित्सा वा बाधते। एकत्वबुद्धौ न दुःखाग्निलेशोऽपि, क्लेशलवोऽपि च। अतएव यजुर्वेदे उच्यते-

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।।
यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।।

जीवनमेतन्न केवलं भोगार्थमेव, अपित्वात्मोन्नतेः प्रमुखं साधनम्। आध्यात्मिकी भावना मानवं देवत्वं प्रापयति। स सर्वेष्वपि जीवेष्वेकत्वं समीक्षते। सर्वत्रैकत्वदर्शनेन न मानवः शोकाभिभूतो भवति। स प्रतिपदमानन्दमनुभवति। निखिलमपि संस्कृतवाङ्मयं व्याप्तं भावनयाऽनया। भावनैषा चेतः प्रसादयति, आत्मानं मोक्षाधिगमं प्रति प्रेरयति। उपनिषत्सु गीतायां चास्या भावनाया वर्णितं विविधं महत्त्वम्। अध्यात्मप्रवृत्त्या प्रवर्तते मनसि सहृदयता सहानुभूतिरौदार्यादिकं च। मनुष्येण सदाऽनासक्तिभावनया कर्म कार्यमिति। कृतस्य कर्मणः फलावाप्तिः सुनिश्चिता। सत्कर्मणा पुण्यं, दुष्कर्मणा पापं प्राप्नोति। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति पापः पापेनैव। मानवः कर्मानुसारं शुभं वाऽशुभं वा जन्म लभते। सुकृतं क्रियते चेत् सत्फलं लभ्यते, दुष्कृतं क्रियते चेत् कुफलं प्राप्यते। सर्वास्ववस्थासु कर्मणां फलमवश्यमवाप्यते। अतस्तादृशं कार्यं कार्यं यथा जीवने दुःखावाप्तिर्न स्यात्। दुश्चरितं मानवं दानवं विधत्ते, सत्कर्म मानवस्य मानवत्वं पोषयति। परहिताश्रयणं मानवं देवत्वं प्रापयति। जीवने देवत्वप्राप्ति-कामना स्यात् चेत् तर्हि एवमेव सर्वेषां व्यवहरणीयम्-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

- डॉ. दिलीप कुमार झा

नागेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग

औपनिषदिक कल्याण मार्ग

उपनिषद् ब्रह्मविद्या के श्रेष्ठ ग्रन्थ हैं। उपनिषदों का एक नाम वेदान्त भी है। 'वेदास्यान्तः वेदान्तः' वेदों का अन्तिम सिद्धान्त। वेदमन्त्रों का अर्थ दो प्रकार का है लौकिक और आध्यात्मिक लौकिक अर्थ द्वारा संसार के समस्त व्यवहार, सब विद्याएं, शिल्प कला कौशलादि का ज्ञान तथा आध्यात्मिक अर्थ द्वारा सत्यबोधा ब्रह्मज्ञान और ब्रह्मप्राप्ति का वर्णन है।[1] इसी का वर्णन अपरा विद्या तथा पराविद्या नाम से उपनिषदों में है।[2] पराविद्या का वर्णन करने वाली ग्रन्थ राशि ही उपनिषद् पदाभिधेय है।

व्युत्पत्ति के दृष्टिकोण से उपनिषद् शब्द ''उप'' और ''नि'' उपसर्ग विशरण'' ''गति'' और ''अवसादनार्थक'' शद्लृ'' धातु से क्विप् प्रत्यय करके सिद्ध होता है। धात्वर्थ के अनुसार जिसके द्वारा क्लेश और कर्म के बन्धन शिथिल होकर नष्ट हो जाते हैं और तत्त्वबोध के प्रति गति– ज्ञान, गमन और प्राप्ति होती है। उस ग्रंथ राशि को उपनिषद् कहा जाता है।

कठोपनिषद् में प्रेय ओर श्रेय दो मार्गो का वर्णन है जो पुरूष के बन्धनों का कारण हैं। प्रेय लोकोन्नति का मार्ग है तथा श्रेय आत्मोन्नति का मार्ग है। श्रेयमार्ग का ग्रहण करने वाले का कल्याण होता है तथा जो प्रेयमार्ग का संवरण करता है लक्ष्य से भटक जाता है वह मार्गच्युत् हो जाता है।[3] श्रेय और प्रेय दोनों मार्ग एक दूसरे से नितान्त विपरीत है। इनको अविद्या और विद्या नाम से भी उपनिषद् में कहा गया है। जो अविद्या अथवा प्रेयमार्ग का संवरण करते हैं, स्वयं को धीर और पण्डित मानते हैं, वित्त के मोह में नित्य रत रहते है और संसार के मोहजाल में पफंसे रहते हैं। वे जगत् में ऐसे ही चलाये जाते हैं जैसे अन्धे का हाथ पकड़कर कोई अन्धा ले जाता हो।[4] वे ही पुनः पुनः जन्ममृत्यु के बन्धन में पफंसते हैं।[5] यह प्रेयमार्ग जन्म जन्मान्तर का तथा अनेक प्रकार के क्षणिक सुख तथा अनन्त दुःखों का कारण है। श्रेयमार्ग ही श्रेष्ठ संवरणीय व मनुष्यों द्वारा ग्राह्य है।

अनन्त नित्य और पूर्ण सुख की इच्छा प्रत्येक मनुष्य का स्वभाव है यह स्वभाविक है किन्तु वस्तुतः सुख क्या है? छान्दोग्य उपनिषद् में नारद ने सनत्कुमार से पूछा है? सूखं भगवो विजिज्ञासे इति।[6] मैं सुख के स्वरूप को समझना चाहता हूँ। सुख के स्वरूप की अनुभूति का आभास भी विलक्षण ही है। संसारिक मनुष्य धन–ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए व्याकुल रहते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि धनवैभव पाकर वह सुखी और सन्तुष्ट हो जाएगें किन्तु थोड़ी देर में प्राप्त हुए धन वैभव में कोई रूचि नहीं रहती। वस्तुतः सुख है ही नहीं। सत्य यह है कि जगत् की वस्तुओं में सुख नहीं है। जब तक हमें वांछित वस्तु अप्राप्त है तब तक उसको प्राप्त करने के प्रति गुरूतर अभीप्सा एवं तृष्णा है जब वह वस्तु प्राप्त हो जाती है तब हम उसके प्रति वितृष्णा से भर जाते हैं और नवीन वस्तु के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार वस्तुएं बदलती जाती हैं रूचियां बदलती जाती हैं तृष्णा अन्य वस्तुओं में रूपान्तरित हो जाती है और खिन्नता भी बनी रहती है। शान्ति आने नहीं पाती है। यही दुःख है। संसारिक मनुष्य समस्त संसार को प्राप्त करने के बाद भी असन्तुष्ट ही रहता है। मनोकामनाएं उच्च से उच्चतर होती हुई उसे मृगतृष्णा के अनन्त संसार में व्यस्त रखती है। सनत्कुमार ने नारद से कहा यह न्यूनता एक को छोड़कर दूसरे को प्राप्त करने की लालसा ही दुःख है। इस लालसा का समाप्त होना ही सुख है ''भूमा ही सुख है। अल्प में सुख नहीं है। भूमा को ही जानना चाहिए।''[7] नारद ने पूछा, भूमा क्या है? सनतकुमार कहते हैं–

भूमा वह है जिसमें अन्य को देखने का अवकाश नहीं अन्य को सुनने का अवकाश नही देखने सुनने जानने की इच्छा भी शेष नहीं रहती। जब तक अन्य को देखना सुनना और जानना है तब तक अपूर्णता रहती है। भूमा ही अमृत है अल्पता ही मृत्यु है।[8]

संसार में दो प्रकार की मनोवृत्ति वाले लोग रहते हैं– एक तो वे लोग हैं जो संसार के पदार्थों में सुख देखते हैं तथा एक वे हैं जो संसार की वस्तुओं की निस्सारता, परिवर्तनशीलता और क्षणभंगुरता को समझकर सारभूत तत्त्व को खोजने की चेष्टा में संलग्न रहते

हैं। पहले प्रकार के लोग किसी भी प्रकार की प्रतिष्ठा से सन्तुष्ट नहीं होते। ब्रह्माण्ड का राज्य भी उन्हें सन्तुष्ट नहीं कर सकता है।दूसरा ब्रह्माण्ड बनाने की बात भी सोच सकते हैं। किन्तु सन्तुष्टि का सृजन नहीं कर सकते हैं। दूसरे प्रकार के लोग सहजस्वभाव में भी सन्तुष्ट है।[9] महर्षि कणाद खेतों में विखरे पड़े अन्नकणों को बीनकर भोजन प्राप्त करते थे। राजा अन्नादि देते तो कह देते थे गरीबों में बाँट दो। यह भूमा की पराकाष्ठा है। इन्हीं महर्षि कणाद ने 'वैशेषिक' जैसे दर्शन की रचना की है जिसके प्रति बड़े–बड़े बुद्धितर्क विज्ञान विशारद भी नतमस्क हैं। भूमा में पहुँचकर जो सुख होता है वह क्षणिक नहीं होता। वहाँ किसी अन्य वस्तु की प्राप्ति की कामना नहीं रह जाती।[10] वह सुख किसी अन्य वस्तु के द्वारा बाधित नहीं होता है। भूमा में सतत शान्ति है। भूमा ही श्रेय है संपूर्ण है शाश्वत है। सनातन है।

नारद ने सनत्कुमार से पूछा भूमा का आधार क्या है? भूमा किसके आधार पर है? सनत्कुमार कहते हैं– भूमा को आधार की आवश्यकता नहीं है। वह अपनी महिमा से स्थित है। वह किसी के आश्रय से नहीं है। संसार के समस्त पदार्थ दूसरे के आधार से स्थिर हैं। दूसरे के आधार पर आधारित होना ही अल्पता है। भूमा में ऐसा नहीं है भूमा स्वयं अपना आधार है। वह स्वयं में ही प्रतिष्ठित है। वही ऊपर है, वही नीचे है, वही आगे है, वही पीछे है, वही दक्षिण है, वही उत्तर है, वही सबकुछ है। यदि इस भूमा को 'आत्मा' कहा जाय तो आत्मा ही ऊपर हैं, आत्मा ही नीचे है, आत्मा ही आगे है, आत्मा ही पीछे है, आत्मा ही सब कुछ है।

''यदि इस भूमा को चिदात्मा कहा जाये तो वही ऊपर वही नीचे, वही आगे वही पीछे, वही दायें, वही बायें, वही सब कुछ है। जो इस प्रकार जानता है वह अपने में ही रमण करता है अपने ही साथ रहता है अपने ही में आनन्द लेता हैं वही सम्राट है। सब लोकों में उसकी कामना पूरी होती है। जो इसके विपरीत जानता है उसका सब कुछ नष्ट होता है उसकी भावनाएं कहीं भी पूरी नहीं होती वह सदैव अतृप्त अनात्मकाम होता है। कहीं सुख नहीं प्राप्त करता है।

इस प्रकार भूमा, आत्मा, श्रेय, परा, ये सब एक ही हैं, जगत् को जीवन का ध्येय बनाना अल्पता है, प्रेय है, महर्षि याज्ञवल्क्य ने पत्नी मैत्रोयी को संभवतः यही सन्देश दिया था कि जगत् में किसी को कोई प्रिय नहीं होता सब को आत्मा ही प्रिय होता है इस लिए आत्मा को ही चिन्तन का विषय जानना चाहिए इसी को जान लेने पर अन्य सब जाना हुआ हो जाता है।[11]

हमारा स्थूल शरीर और अन्तः करणभूत सहितसूक्ष्म शरीर सब कुछ भौतिक है अचेतन है जड़ है। हम अभौतिक और चेतन हैं। चेतन को अन्न जल, वायु आदि की आवश्यकता नहीं है। भौतिक पदार्थों से अभौतिक को सजाया संवारा और शक्तिशाली नहीं बनाया जा सकता है। भौतिक पदार्थों से भौतिक पदार्थों की तृप्ति हो सकती है। अभौतिक ही नहीं शरीरादि हमारे साध्य नहीं है बल्कि साधन ही हैं। साधन गन्तव्य तक पहुंचाने के लिये हमारे सहयोगी होते हैं। कोई व्यक्ति जाने के उद्देश्य से गाड़ी में बैठे और बैठा ही रहे जाये जो अपना सर्वस्व साधन को माने आप उसे क्या कहेंगे? यही प्रेय का मार्ग है। साधन के द्वारा साध्य को सिद्ध कर साधन को तिलांजलि दे दे यही श्रेय का मार्ग है। साधन से हम पहले तो जहाँ जाना था जाते नहीं शरीर में ही रहते हैं इसे ही सजाते संवारते इसी के सुख की कामना करते रहते हैं जब साधन रूपी देह से बलात् उतार दिया जाता है तो रोते है। साधन कार्यसिद्धि के लिए है। अपना बनाने के लिए नहीं। अतः आत्मोन्नति का मार्ग ही कल्याण का मार्ग है। शारीरिक और मानसिक उन्नति उतनी ही अच्छी है जितनी आत्मोन्नति की साधक है। यदि शरीर और जगत् आत्मोन्नति में बाधक हो जायें तो सपफलता का सोपान बहुत दूर रह जाता है। अनन्त की प्राप्ति के संसाधन में अनन्त अवकाश हो जाता है।

भौतिक मन भौतिकता में ही संलग्न रहना चाहता है। आत्मोन्नति में नहीं यदि इसे आत्मा की ओर लगाना है बाहर से अन्दर बुलाना है, वश में रखना है तो इसके लिए उपनिषद् में मार्ग बताया गया है कि ''आहार की शुद्धि से सत्व की शुद्धि होती है। सत्व की शुद्धि होती है। सत्व की शुद्धि से स्मृति ध्रुव होती है और स्मृति के ध्रुव होने से सब ग्रन्थियां खुल जाती हैं''।[12] अर्थात सर्वप्रथम कर्त्तव्य है आहार की शुद्धि जो भी भोज्यसामग्री हम ग्रहण करते हैं वह धर्मपूर्वक अर्जित हो और उसमें से भी हम माता–पिता अतिथि और अधीनस्थों पत्नी, सन्तान, सेवक, पशु आदि का भाग निकाल कर ही सेवन करें। भोज्य सामग्री में किसी प्रकार की हिंसा की भावना नहीं होनी चाहिए। हमारा अर्थ और काम धर्माश्रित हो इसी कारण से घर पुरूषार्थों में वरीयता क्रम अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष होते हुए भी ऋषियों ने धर्मार्थकाममोक्ष ऐसा कहा है। धर्म आश्रित अर्थ और काम मोक्ष मार्ग के साधक ही होते हैं बाधक नहीं। अतः धर्मपूर्वक अर्जित अर्थ सबका भाग यथोचित निकालने के उपरान्त सेवन किया गया शुद्ध आहार यज्ञशेष बन जाता है। उपनिषदों में धर्म के तीन स्कन्ध कहे गये हैं। यज्ञ, अध्ययन और दान।[13] जो कुछ भी हम अर्जित करते हैं उसमें दैवी कृपा मानकर दैवमुख अग्नि में कुछ भाग समर्पित करना यज्ञ हैं। मुण्कोपनिद् में कहा गया है ''जब अग्नि की लपेट लाओ–लाओ ऐसा कहती हुयी प्रतीत हों तो श्रद्धापूर्वक आहूति देनी चाहिए।''[14]

तैत्तिरीयोपनिषद् में उपदेश देते हुए ऋषि कहते हैं कि जीवन में कुछ भी करना किन्तु अध्ययन और प्रवचन को मत छोड़ना।[15]

असतो मा सद्गमय

स्वाध्याय और प्रवचन जीवन के अभिन्न अंग हैं। मानव जीवन की सम्यक् समुन्नति का अनिवार्यसाधन स्वाध्याय है। तथा च जो हम कमाते हैं उसका दशांश लोकहित में संस्कृति सदाचार धर्म के प्रचार एवं रक्षा के हित व्यय करना 'दान' है। 'जो दान' नहीं करता वही नादान है और वह ना+दान अर्थात् कुछ प्रदान भी नहीं करता। देना लेना एक–दूसरे के पूरक कहे जाते हैं। जो देता नहीं वह ले भी नहीं सकता जो लेता नहीं वह दे भी नहीं सकता। ये तीनों यज्ञ अध्ययन और दान धार्म के स्तम्भ हैं। उसका सेवन करना आहार की शुद्धि होने पर स्मृति अटल होती है। स्मृति होने पर ग्रन्थियां खुल जाती हैं और ग्रन्थि खुल जाने पर श्रेय पथ पर चलकर मोक्षसिद्धि होती है यही औपनिषद कल्याणमार्ग है। इसका वरण करने से अज्ञान का आवरण हट जाता है। और हम मोक्ष का संवरण करने में समर्थ होते हैं। यही उपनिषदों का अमर संदेश है।

संदर्भ सूचीः–

1. द्र. महर्षिदयानन्दसरस्वती कृतऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेद विषय विचार प्रकरण
2. द्र. हवा विधे वेदितव्ये नए चौवापरा च। मुण्डकोपनिषद प्रथम
3. तयो श्रये आददानस्य साधुर्भवति हीयतेऽ्धीर्य उ प्रेयो मृणीते।। कठ 1–2–1
4. अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं मूढाः पण्डिम्मन्यमानाः।
   दन्द्रम्यमाणाः परिमन्ति मूढरा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।। कठ 1–2–5
5. अये लोको नास्ति पर इति मामी पुनः पुनर्वशमापद्यते म।। कठ 1–2–6
6. द्र छान्दोग्य–7–22–1
7. सौवेभूमा तत्सुखम् नाल्ये सुखमस्ति भूमैव सुखं भूमा त्वैव विझि साहित्य इति। छान्दोग्य–7–23–1
8. यो वै भूमा तदमृतभथ यदलपम् तन्मर्त्यम्। छान्दोग्य 7–24–1
9. आत्मन्येवात्मनातुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते। गीता 2/55
10. प्रजहाति यदा कामान् सर्वानपार्थमनोगतान, 2/55
11. द्र. छान्दोग्य 7–25–2
12. अथात आत्मादेश ..... आत्मकीड आत्ममिथुन आत्मानन्दः स स्वराड् भवति तस्य सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति। छान्दोग्य 7–25–2
13. न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति। आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिहयासितत्व्यो मैजोयि आत्मानि खलु अरे दृष्टे, श्रुते, मते, विज्ञाते इदं सर्वं विदितम्। वृहदारण्यक. उ.
14. आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ, ध्रुवा स्मृतिः स्मृतिलम्भे सर्व ग्रन्थीनां विप्रमोक्ष। छान्दोग्य 7–26–2
15. जयो धर्मस्कन्धाः यज्ञोऽ्ध्ययनं दानामिति। छान्दोग्य 2–23–1
16. यदा लेलायते ध्यर्चिः समिद्धे हव्यवाहने।
    तदाजयभागावन्तेरणाहुतीः प्रतिपादयेत्।। मुण्डकोपनिषद्–प्रथम मुण्डक
17. ऋतं च स्नाहयायप्रवचने य....स्वाह मायप्रवचने एवेति नाको मौद्गलयः। तद्विद्ध तयस्तद्धितपः। तैत्तिरीयोपनिषद 1–9–1

विश्वशान्तिः

आकांक्षा पाठकः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्षम्

सम्पूर्णा वसुंधरा एकं कुटुम्बकमिवास्ति, अखिलमपि विश्वस्य जना: पारिवारिका: सन्ति। जनै: महिं विभिन्नेषु भागेषु विभज्य अनेके विभिन्नराष्ट्राणां निर्माणं कृतम्। समस्ता मानवप्रजाति एकस्यैव प्रकृते: पुरुषस्य च सन्तति: सन्ति। भारतीय दर्शनशास्त्रानुसार प्रकृत्या पुरुषेन च सृष्टे: विकास: अभवत्।

विश्वशान्ते अर्थः अस्ति विश्वे सर्वत्र शान्तिः स्यात्। विश्वशान्तिः समेषामाधारः इत्यस्य तात्पर्यः यत् विश्वशान्तिरेव मानवजगतः विकासस्य मूलाधारः अस्ति। अस्मिन् लेखे संसारे वर्तमानस्य अशान्तिवातावरणस्य चित्रणं तत्समाधानोपायश्च निरूपितौ। देशेषु आन्तरिकी बाह्या च अशान्तिः वर्तते। तामुपेक्ष्य न कश्चित् स्वजीवनं नेतुं समर्थः। सेयम् अशान्ति: सार्वभौमिकी वर्तते इति दुःखस्य विषयः। सर्वे जनाः तया अशान्त्या चिन्तिताः सन्ति। संसारे तन्निवारणाय प्रयासाः क्रियन्ते।

वर्तमाने संसारे प्रायशः सर्वेषु देशेषु उपद्रवः अशान्तिर्वा दृश्यते। क्वचिदेव शान्तं वातावरणं वर्तते। क्वचित् देशस्य आन्तरिकी समस्यामाश्रित्य कलहो वर्तते, तेन शत्रुराज्यानि मोदमानानि कलहं वर्धयन्ति। क्वचित् अनेकेषु राज्येषु परस्परं शीतयुद्धं प्रचलति। वस्तुतः संसारः अशान्तिसागरस्य कूलमध्यासीनो दृश्यते। अशान्तिश्च मानवताविनाशाय कल्पते। अद्य विश्वविध्वंसकान्यस्त्राणि बहून्याविष्कृतानि सन्ति। तैरेव मानवतानाशस्य भयम्।

अशान्ते: कारणं तस्याः निवारणोपायश्च सावधानतया चिन्तनीयौ। कारणे ज्ञाते निवारणस्य उपायोऽपि ज्ञायते इति नीतिः। वस्तुतः द्वेषः असहिष्णुता च अशान्तेः कारणद्वयम्। एको देशः अपरस्य उत्कर्षं दृष्ट्वा द्वेष्टि, तस्य देशस्य उत्कर्षनाशाय निरन्तर प्रयतते। द्वेषः एव असहिष्णुतां जनयति। इमौ दोषौ परस्परं वैरमुत्पादयतः। स्वार्थश्च वैरं प्रवर्धयति। स्वार्थप्रेरितो जनः अहंभावेन परस्य धर्मं जातिं सम्पत्तिं क्षेत्रं भाषां वा न सहते। आत्मन एव सर्वमुत्कृष्टमिति मन्यते। राजनीतिज्ञाश्च अत्र विशेषेण प्रेरकाः। सामान्यो जनः न तथा विश्वसन्नपि बलेन प्रेरितो जायते। स्वार्थोपदेशः बलपूर्वकं निवारणीयः। परोपकारं प्रति यदि प्रवृत्तिः उत्पाद्यते तदा सर्वे स्वार्थं त्यजेयुः। अत्र महापुरुषाः विद्वांसः चिन्तकाश्च न विरलाः सन्ति। तेषां कर्तव्यमिदं यत् जने-जने, समाजे-समाजे, राज्ये-राज्ये च परमार्थ वृत्तिं जनयेयुः।

शुष्कः उपदेशश्च न पर्याप्तः, प्रत्युत तस्य कार्यान्वयनञ्च जीवनेऽनिवार्यम्। उक्तञ्च- ज्ञानं भारः क्रियां विना। देशानां मध्ये च विवादान् शमयितुमेव संयुक्तराष्ट्रसंघप्रभृतयः संस्थाः सन्ति। ताश्च काले-काले आशङ्कितमपि विश्वयुद्धं निवारयन्ति। भगवान् बुद्धः पुराकाले एव वैरेण वैरस्य शमनम् असम्भवं प्रोक्तवान्। अवैरेण करुणया मैत्रीभावेन च वैरस्य शान्तिः भवतीति सर्वे मन्यन्ते। भारतीयाः नीतिकाराः सत्यमेव उद्घोषयन्ति-

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

परपीडनम् आत्मनाशाय जायते, परोपकारश्च शान्तिकारणं भवति। अद्यापि परस्य देशस्य संकटकाले अन्ये देशाः सहायताराशिं सामग्रीं च प्रेषयन्ति इति विश्वशान्तेः सूर्योदयो दृश्यते।

पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते।
गुणों के कारण मनुष्य सब जगह पहुंच सकता है।
Position is made worth by merit everywhere
(रघुवंशम्-३.26)

अर्चना मिश्रा
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्षम्

मम प्रियकविः कालिदासः

कालिदासस्य समयः - कालिदासः संस्कृतसाहित्यस्य महाकविः वर्तते। सः विश्वस्य महापुरूषोऽपि विद्यते। तस्य कीर्तिः न केवलं भारतवर्षे अपितु समस्ते संसारे विस्तृता अस्ति। महाकवि कालिदासः संस्कृत साहित्ये अतीव लोकप्रियः अस्ति। संस्कृत साहित्याकाशे कविकुलगुरुः कालिदासः देदीप्यमाननक्षत्रवत् अस्ति। कविताकामिनीविलासः कालिदासः रससिद्धः कवीश्वरः संस्कृतकाव्यक्षेत्रे सर्वश्रेष्ठः अस्ति। तस्य स्थितिकालविषये विदुषां मध्ये मतवैभिन्न्यम् अस्ति। अस्यां स्थितौ अन्यकृतैरुल्लेखैः अनुमानेन च प्राचां कवीनां समयो व्यवस्थापनीयो भवति। अद्यावधि अन्वेषकाः अस्य कविकुलगुरुकालिदासस्य स्थितिकालविषये, जन्मस्थानविषये च अन्वेषणं कुर्वन्ति। अस्मादेव हेतोः कालिदासस्य समयसम्बन्धेऽपि मतभेदाः वर्तन्ते। सर विलियम जोन्स-महोदयः ई. पू. प्रथमशतके विक्रमादित्यस्य सत्तया तत्सभायां स्थितस्य कालिदासस्य स एव समयः संभवति। अतः ई. पू. प्रथमशतके विक्रमादित्यस्य सत्तया तत्सभायां स्थितस्य कालिदासस्य एव समयः संभवति। किञ्च- निश्चितः समयः अश्वघोषस्य, स हि कुणालनरेशकनिष्कसमकालिकतया प्रथमशताब्दीस्थितः। तत्काव्ये कालिदासस्य काव्यमनुक्रियमाणं वीक्ष्यते। रघुवंशे कुमारसम्भवे च विद्यमानं पद्यं बुद्धचरितेऽश्वघोषेण किञ्चिदेव विपर्यस्योपन्यस्तम्, अतः अश्वघोषात्पूर्ववर्ती सम्भवति कालिदासः। तदाभ्यां सम्भवप्रमाणाभ्यां कालिदासस्य ई. पूर्व प्रथमद्वितीयशतकसम्भवत्वं स्वीकर्तुं समर्थयन्ते।

कालिदासस्य देशः - कालिदासस्य को देश इति विषये महान् मतभेदः। केचिद् विद्वांसः अस्य जन्मस्थानं मिथिला मन्यन्ते। केचित् उज्जयिन्यां मन्यन्ते। केचन् काश्मीरान्, अपरे बंगान् च तद्देशमाहुः। वयन्तु पश्यामः - मालवगणमुख्यविक्रमादित्यसभास्थस्य कालिदासस्य मालवमुख्यनगरी उज्जयिनी एव स्थानम्। कालिदासस्य उज्जयिनीवर्णनपक्षपातोऽपि पक्षमिमं समर्थयते। कालिदासेन यया सूक्ष्मेक्षिकयावन्तीनां भौगोलिकी स्थितिर्मेघदूते निबद्धा सा तद्देशवासित्वे एव सम्भवति।

कालिदासस्य जीवनवृत्तम् - किंवदन्तीभिर्ज्ञायते यत् कालिदासो बाल्ये मूर्ख आसीत्। पण्डितानां छलेन प्रबुद्ध्या विद्यावत्या सह अस्य विवाहोऽभूत्। तयाऽपमानितश्च कालिकामाराध्य कविर्बभूव। कालिदेव्याः दासः कालिदासः इति नाम्ना प्रसिद्धो बभूव। पत्नीं द्रष्टुं गृहमागतश्च द्वारं पिहितं दृष्ट्वा 'अनावृतकपाटं द्वारं देहीति जगाद। अस्ति कश्चिद् वाग्विशेष' इति तया पृष्टश्च काव्यत्रयं रचयति स्म। कालिदासः त्यागसमन्वितमार्गस्य समर्थकोऽस्ति। कालिदासः आदर्शप्रियः, भारतीयसंस्कृतेः आराधकः, शाश्वत् सौन्दर्यस्य समर्थकः, सूक्ष्मतत्वानां ज्ञाता, प्रकृतेः पूजकः, श्रेयस्य साधकः, विश्वकविः आसीत्।

कालिदासस्य रचना - कालिदासः सर्वसंस्कृतकवीनामाग्रणीः इति सन्ते अभ्युपगम्यन्ते। सत्यमेव च कालिदासः भारतीय शेक्सपियर इत्याख्यायते। महाकाव्य-गीतिकाव्य-रूपकेतित्रिविधकाव्यस्य कर्ता कालिदासः आसीत्। कालिदासस्य सप्त ग्रन्थाः सन्ति। काव्यचतुष्टयं नाटकत्रयं च कालिदासरचितमिति। काव्यचतुष्टये- रघुवंशम् एकोनविंशतिः सर्गात्मकं महाकाव्यम्। अत्र रघोर्वंशस्य कथा निबद्धा। वायुपुराणे वर्णितरामवंशावल्या सह रघुवंशवर्णितरामवंशावली भूयसा सामञ्जस्य धारयति। न केवलं कालिदासस्य काव्येषु अपितु समग्रसंस्कृतसाहित्ये रघुवंशं उत्कृष्टमहाकाव्यं विद्यते। अस्मिन् काव्ये सर्वरसाणां

रमणीयपरिपाकं परिलक्ष्यते, अग्निवर्णस्य विलासवर्णने श्रृंगाररसस्य, युद्धवर्णने वीररसस्य, अजविलापे करुणरसस्य प्रधानता दरीदृश्यते। कुमारसंभवम् सप्तदशसर्गात्मकं महाकाव्यम्। कुमारसम्भवं कालिदासस्य कलायाः सुन्दरसृष्टिः विद्यते। अत्र शिवपार्वत्याः पाणिग्रहणस्य कुमारकार्तिकेयजन्मवर्णनं तारकासुरवधस्य च कथा वर्तते। मार्मिकभावाभिव्यञ्जनायां उदात्तकोमलकल्पनया प्राञ्जलपदविन्यासेन च एषा कृतिः अद्भुता खलु। बाह्यप्रकृतेः मनोरमचित्रणं कुमारसम्भवस्य महती विशेषता वर्तते।

एष ते राम गङ्गाया विस्तरोऽभिहितो मया।
कुमारसंभवश्चैव धन्यः पुण्यस्तथैव च॥

गीतिकाव्येषु - ऋतुसंहारम् षट्सर्गात्मकं 144 श्लोकात्मकं गीतिकाव्यम् अस्ति। ऋतुसंहारस्य षट्सर्गेषु षड्ऋतवः यथाक्रमेण वर्णिताः। अस्य भाषा प्राञ्जला, परिमार्जिता प्रवाहपूर्णा प्रसादगुणयुता च। द्वितीयः मेघदूतम्- कुबेरकोपभाजनयक्षस्य प्रणयकथा मेघदूतेऽस्ति। मन्दाक्रान्ता छन्दसि प्राकृतिकदृश्यैः सह मानवीया भावाः सूक्ष्मेक्षिकया पूर्वोत्तरनामकभागद्वये वर्णितम् अस्ति। नाटकेषु - मालविकाग्निमित्रम् पञ्च अंकात्मकं रूपकमस्ति। मालविकाग्निमित्रं नाम रूपके शुंगवंशीयस्य राज्ञः अग्निमित्रस्य मालविकया सह कृता प्रेमकथा एव निबद्धा। विक्रमोर्वशीयम् पञ्च अंकात्मकं रूपकमस्ति। विक्रमोर्वशीये पुरुरवस उर्वश्या सह कृता प्रेमकथा एव निबद्धा। माङ्गलिकप्रेमस्वीकृतिरेव लक्ष्यं गृहस्थधर्मस्येति कवेरुपदेशोऽत्र। अभिज्ञानशाकुन्तलम् सप्ताङ्कात्मकं रूपकमस्ति। भारतीयानां मते रूपकेषु तिलकायतेऽभिज्ञानशाकुन्तलम्। 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' इति उक्तम्। अंगुलीयकदर्शनेन समाप्तऋषिशापो दुष्यन्तः शकुन्तलां स्वीकृत्य समोदमास्ते इति कथानकं सप्ताङ्केषूपनिबद्धं कविना।

कालिदासस्य कविताशैली- मानवजीवनस्य सर्वाङ्गसम्पूर्णचित्रमुपस्थापयितुमसौ रघुवंशं प्रणीतवान्, प्रेम्णः परं प्रकर्षं प्रकाशयितुञ्च कुमारसम्भवं प्रणीतवान्। उपमा कालिदासस्येति कथनं तु न प्रमाणमपेक्षते। कालिदासस्य कृतिषु जीवनस्य व्यावहारिकज्ञानपूर्णतथ्यानां प्रकाशनमपि भवति। रसाभिव्यक्तौ कालिदासस्य कृतिषु श्रृंगाररसस्य प्रधानता दरीदृश्यते। करुणरसपरिपाकेऽपि कविः कुशलः। अलङ्काराणां प्रयोगोऽपि सुरुचिपूर्णः। उपमाप्रयोगे तु विश्वविख्यातः। कथितमपि - उपमा कालिदासस्य। तस्य उपमा: अद्वितीया खलु। चरित्रचित्रणेऽपि कविः कुशलः। कालिदासस्य प्रकृतिचित्रणमपि अद्भुतम्। कालिदासविषये प्रसिद्धोक्ति अस्ति-

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठकाधिष्ठितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव।।

विकास मिश्रा
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्षम्

ऋतुराज वसन्तः

भारतवर्षे षड्ऋतवः भवन्ति। तेषां वसन्तः प्रथमः अस्ति। वसंतकालः मनोरमः वर्तते। एतस्मिन् समये न अति ऊष्मा न वा अति शीतलता। वसंतकाले सुखदायकः अनिलः प्रवहति। वृक्षेषु लताषु सुन्दराणि विविधवर्णानि कुसुमानि शोभन्ते। पलाशपुष्पैः वनस्थली आरक्ता जायते। अस्मिन् काले क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि दृश्यन्ते। जनाः नवान्नदर्शनेन प्रमुदिताः भवन्ति। ते फाल्गुनमासे होलिकोत्सव मन्यन्ते। ते सोल्लासपूर्वं परस्परं मिलन्ति रागैः क्रीडन्ति च। एतस्मिन् ऋतौ प्रातः भ्रमणेन स्वास्थ्यं पुष्टं जायते वसंतकालः आनंदोल्लासस्य कालः। अस्माकं देशे प्राकृतिकसुषमायाः साम्राज्यमस्ति अत्रैव प्रकृतिनटी प्रतिक्षणं नव्यं भव्यञ्च नाटति। अत्रैवकस्मिन् वर्षे षड् ऋतवो मनोविनोदाय नवचेतनासंचाराय समायान्ति। तत्र चैत्रवैशाखयोः वसन्तः, ज्येष्ठाषाढयोः ग्रीष्मः, श्रावणभाद्रपदयोः वर्षाः, आश्विनकार्तिकयोः शरत्, मार्गशीर्षपौषयोः शिशिरः, माघफाल्गुनयोः हेमंतश्च ऋतुः। एवम क्रमेण भारते ऋतुणां क्रमः प्रचलति। तत्रापि वसंतः सर्वाधिक महत्वं बिभर्ति। वसन्तः रमणीयः ऋतुः अस्ति। इदानीं शीतकालस्य भीषणा शीतलता न भवति। मन्दं मन्दं वायुः चलती। विहंगाः कूजन्ति। विविधैः कुसुमैः वृक्षाः आच्छादिताः भवन्ति। कुसुमेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति। धान्येन धरणी परिपूर्णा भवति। कृषकाः प्रसन्नाः दृश्यन्ते। कोकिलाः मधुरं गायन्ति। आम्रेषु मञ्जर्यः दृश्यन्ते। मञ्जरीभ्यः मधु स्रवति।

अतृष्यन्तीरपसो यन्त्यच्छा।
अथक परिश्रम करने वाले ही सुख पाते हैं।
Those who toil tirelessly alone shall attain happiness.
(ऋग्वेद- 1.71.3)

सौरभ सक्सेना
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्षम्

स्वास्थ्यस्य रहस्यं व्यायामः

एतत् कथ्यते शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। स्वस्थशरीरेण एव धर्माचरणं कर्तुं प्रभवति नरः। स्वस्थशरीरं कस्मात् प्राप्येत। अस्य स्वास्थ्यस्य अनेकानि साधनानि सन्ति। तेषु 'व्यायाम' इति महत्त्वपूर्ण साधनमस्ति। यदि मनुष्यः दीर्घायुः वाञ्छति, तर्हि तेन नियमित व्यायाम करणीयः। स्वास्थ्य रक्षायै व्यायाम: अतीव आवश्यकः अस्ति। नियमित व्यायामनैव शरीरं नीरोगं जायते। व्यायामस्य अनेके लाभा: सन्ति। अनेन बलं वर्धते, शरीरस्य सर्वेषां अंगानां विकासो भवति, तथा शरीरे रुधिर संचारः सम्यक् भवति। प्रात: काले वायुः प्रदूषणरहितः अस्ति। अतः प्रतिदिनं व्यायामेन शुद्धवायुं लभते। प्रात:काले वातावरणमपि उत्साहवर्धकमस्ति। अतः प्रात:काले एव व्यायाम: करणीयः। व्यायामः गृहे न कर्तव्यः। सदैव क्रीडा स्थाने, उद्याने वा करणीयः। नियमित व्यायामेन शरीरे रोगाः न उद्भवन्ति।

शरीरस्य रोगेभ्यः रक्षणाय व्यायामः आवश्यकः। यथा व्यायाम: आवश्यकः तथा उचित आहार सेवनमपि आवश्यकम्। व्यायामेन क्षुधावर्धनं भवति, किन्तु उचितं भोजनमेव सेवितव्यम्। चरकसंहितायां कथितम् 'न अदेशे, न अकाले, न प्रतिकूलोपहित, न पर्युषितम् अन्नं सेवितव्यम्। यदि आहारः उचितो नास्ति तर्हि व्यायामस्य किम् उपयोग? अतः। मानवेन सर्वान् स्वास्थ्यनियमान पालनीयाः। स्वस्थशरीरस्य द्वे प्रमुखे साधने स्तः उचितः व्यायामः श्रेष्ठ भोजनं च। स्वस्थ शरीरं मानव कार्यकशलः भवति। रुग्णः मानवः किमपि कार्यं कर्तुं असमर्थः। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष एते चत्वाराः पुरुषार्थाः। तेषां प्राप्यर्थं शरीर स्वास्थ्यं आवश्यकम्। स्वस्थे शरीरे स्वस्थ आत्मा निवसति इति मन्यते। आरोग्यशालिनां जीवनम आनन्ददायकं भवति। ये जनाः दीर्घजीवनं, स्वस्थजीवनं वाञ्छन्ति तैः व्यायामः अवश्यमेव करणीयः एतदेव अन्ते कथनम्।

संजना वर्मा
बी. ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

भारतीय संस्काराः

भारतीयसंस्कृतेः अन्यतमं वैशिष्ट्यं विद्यते यत् जीवने इह समये समये संस्कारा अनुष्ठिता भवन्ति। अद्य संस्कारशब्दः सीमितो व्यङ्ग्यरूपः प्रयुज्यते किन्तु संस्कृतेरुपकरणमिदं भारतस्य व्यक्तित्वं रचयति। विदेशे निवसन्तो भारतीयाः संस्कारान् प्रति उन्मुखा जिज्ञासवश्च। लेखेऽस्मिन् तेषां संस्काराणां संक्षिप्त परिचयो महत्वञ्च निरूपितम्।

भारतीयजीवने प्राचीनकालतः संस्काराः महत्त्वमधारयन्। प्राचीनसंस्कृतेरभिज्ञानं संस्कारेभ्यो जायते। अत्र ऋषीणां कल्पनासीत् यत् जीवनस्य सर्वेषु मुख्यावसरेषु वेदमन्त्राणां पाठः, वरिष्ठाणाम् आशीर्वादः, होमः, परिवारसदस्यानां सम्मेलनं च भवेत्। तत् सर्वं संस्काराणामनुष्ठाने संभवति। एवं संस्काराः महत्त्वं धारयन्ति। किञ्च संस्कारस्य मौलिकः अर्थः परिमार्जनरूपः गुणाधानरूपश्च न विस्मर्यते। अत: संस्काराः मानवस्य क्रमशः परिमार्जने दोषापनयने गुणाधाने च योगदानं कुर्वन्ति। संस्काराः प्रायेण पञ्चविधाः सन्ति- जन्मपूर्वास्त्रियः, शैशवाः षट्, शैक्षणिकाः पञ्च, गृहस्थसंस्कारः विवाहरूपः एकः, मरणोत्तरसंस्कारश्चैकः। एवं षोडश संस्काराः भवन्ति। जन्मपूर्वसंस्कारेषु गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोनयनं चेति त्रयो भवन्ति। अत्र गर्भरक्षा, गर्भस्थस्य संस्काराारोपणम्, गर्भवत्याश्च प्रसन्नता चेति प्रयोजनं कल्पितमस्ति। शैशवसंस्कारेषु जातकर्म, नामकरणम्, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनम्, चूडाकर्म, कर्णवेधश्चेति क्रमशो भवन्ति।

शिक्षासंस्कारेषु अक्षरारम्भः, उपनयनम्, वेदारम्भः, केशान्त: समावर्तनञ्चेति संस्काराः प्रकल्पिताः। अक्षरारम्भे अक्षरलेखनम् अङ्कलेखनं च शिशुः प्रारभते। उपनयनसंस्कारस्य अर्थः गुरुणा शिष्यस्य स्व गृहे नयनं भवति। तत्र शिष्यः शिक्षानियमान् पालयन् अध्ययनं करोति। ते नियमाः ब्रह्मचर्यव्रते समाविष्टाः। प्राचीनकाले शिष्यः ब्रह्राचारी इति कथ्यते स्म। गुरुगृहे एव शिष्यः वेदारम्भं करोति स्म। वेदानां महत्त्वं प्राचीनशिक्षायाम् उत्कृष्टं मन्यते स्म। केशान्तसंस्कारे गुरुगृहे एव शिष्यस्य प्रथमं क्षौरकर्म भवति स्म। अत्र गोदानं मुख्यं कर्म। अतः साहित्यग्रन्थेषु अस्य नामान्तरं गोदानसंस्कारोऽपि लभ्यते। समावर्तनसंस्कारस्योद्देश्यं शिष्यस्य गुरुगृहात् गृहस्थजीवने प्रवेशः। शिक्षावसाने गुरुः शिष्यान् उपदिश्य गृहं प्रेषयति। उपदेशेषु प्रायेण जीवनस्य धर्माः प्रतिपाद्यन्ते। यथा- सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः इत्यादि।

विवाहसंस्कारपूर्वकमेव मनुष्यः वस्तुतो गृहस्थजीवनं प्रविशति। विवाहः पवित्रसंस्कारः मतः यत्र नानाविधानि कर्मकाण्डानि भवन्ति। तेषु वाग्दानम्, मण्डपनिर्माणम्, वधूगृहे वरपक्षस्य स्वागतम्, वरवध्वोः परस्परं निरीक्षणम्, कन्यादानम्, अग्निस्थापनम्, पाणिग्रहणम्, लाजाहोमः, सप्तपदी, सिन्दूरदानम् इत्यादि। सर्वत्र समानरूपेण विवाहसंस्कारस्य प्रायेण आयोजनं भवति। तदनन्तरं गर्भाधानादयः संस्काराः पुनरावर्तन्ते जीवनचक्रं च भ्रमति। मरणादनन्तरम् अन्त्येष्टिसंस्कारः अनुष्ठीयते। एवं भारतीयजीवनदर्शनस्य महत्त्वपूर्णमुपादानं संस्कारः इति।

> समय एव करोति बलाबलम्।
> समय के प्रभाव से ही प्राणी बलवान् तथा निर्बल होते हैं।
> It is time which causes strength and weakness.
> (शिशुपालवधम्-6.44)

बृजेश कुमारः
बी.ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्षम्

शिक्षकः

अस्ति शिक्षकः ज्ञानस्य भण्डारः।
अस्ति शिक्षकः ममतायाः उपहारः।
यच्छति सदैव सदाचारस्य भावना।
अस्ति सः उदहारणम् विकासस्य।
यच्छति अस्मभ्यम् गुणो दिव्यम्।
सदैव यच्छति सः ज्ञानम्।
यत्र अस्ति शिक्षकः तत्र अस्ति मनः।
करोति पवित्रम् अस्माकं मनः।
तस्मै शिक्षकाय नमो नमः।

किम् मित्रम्

विद्या मित्रम् अस्ति अविद्या शत्रुः।
धर्मः मित्रम् अस्ति अधर्मः शत्रुः।
पुरुषार्थः मित्रम् अस्ति आलस्यः शत्रुः।
सत्यं मित्रम् अस्ति असत्यं शत्रुः।
गुणः मित्रम् अस्ति अवगुणः शत्रुः।
सुसंगः मित्रम् अस्ति कुसंगः शत्रुः।
ज्ञानं मित्रम् अस्ति अज्ञानं शत्रुः।
क्षमा मित्रम् अस्ति प्रतिशोधः शत्रुः।

वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न, वस्तुनि।
गुण प्रेम में बसते हैं, वस्तु में नहीं।
Virtue lies in fondness not in a thing.
(किरातार्जुनीय- 6.34)

विनीत चौहानः
बी.ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्षम्

महर्षि पाणिनिः

संस्कृत भाषायाः व्याकरणशास्त्रे महर्षि पाणिनिः महान् वैय्याकरणः अभवत्। अस्य पितुर्नाम पाणिनः मातुश्च नाम दाक्षी आसीत्। तस्मादेव दाक्षीपुत्रः महर्षि पाणिनिः कथ्यते। छन्द शास्त्रस्य रचयिता पिंगलः पाणिनेः अनुजः आसीत्। पाणिनिः पूर्वं मन्दबुद्धिः आसीत्। तस्य गुरोर्नाम वर्षः आसीत्। अस्मिन् विषये कथासरित्सागरे उक्तम्- अथ कालेन वर्षस्य शिष्यवर्गो महानभूत्।

तत्रैक पाणिनिर्नाम जड़बुद्धि तरोऽभवत्।।

गुरोः वर्षस्य उपदेशेन भगवतो महेश्वरस्य प्रसन्नतायै विद्याकामः पाणिनिः कठोरतपः अकरोत्। येन महेश्वरः प्रसन्नः जातः। स चतुर्दशवारं डमरूढक्कां अवादयत्। तदुक्तम्-

नृत्तावसाने नटराज राजो ननाद ढक्कां नवपंचवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

तेन डमरूनादेन स चतुर्दश माहेश्वर सूत्राणि प्राप्तवान्। एतानि सूत्राणि आश्रित्य पाणिनिः अष्टाध्यायी नामकं संस्कृत व्याकरणस्य प्रसिद्धं ग्रन्थं अरचयत्। तस्मिन् ग्रन्थे अष्ट अध्यायाः। तेषु प्रायः चतुर्सहस्राणि सूत्राणि सन्ति। तपोवने शिष्यान् अध्यापयतोऽस्य वार्धक्यं जातम्। एकदा तत्र स तपोलीनः आसीत्। तदानीम् एकः क्रुद्धः व्याघ्रः भक्षितवान्। तेन स पञ्चतत्वं गतः। तदुक्तम् पञ्चतन्त्रे-

सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत्प्राणान्प्रियान्पाणिनेः,
मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनीम्।
छन्दोज्ञाननिधिं जघान मकरो वेलातटे पिङ्गलम्,
ह्यज्ञानावृतचेतसामतिरुषां कोऽर्थस्तिरश्चां गुणैः॥

हास्यालापः

आचार्यः - अहं ब्राह्मणाय धनं ददामि, इत्यस्मिन् वाक्ये कस्य कारकस्य प्रयोगः अस्ति?
शिष्यः - हानिकारकस्य।
रुग्णः - वैद्यवर्य! अहम् बहु भयं अनुभवामि, इयं मम प्रथमा एव शल्यक्रिया।
वैद्यः - अत्र भयस्य किमपि कारणं नास्ति। यतोहि मम अपि इयं प्रथमा एव शल्यक्रिया।
न्यायाधीशः - भो! त्वं अस्य दन्तद्वयं कथम् त्रोटितवान्?
अपराधी - यतोहि अस्य मुखे तावन्तः एव दन्ताः आसन्।
कुमारः - धावतः बसयानात् कदा अवतरणं कर्तव्यः?
बसचालकः - यदा चिकित्सालयः अत्यंतसमीपे भवति तदा।
मूर्खः - श्वः अहं भारतस्य राष्ट्रपतिः भविष्यामि।
अन्यमूर्खः - यदा त्वं भारतस्य राष्ट्रपतिः भविष्यसि तदा अहं त्यागपत्रं दास्यामि।
शिक्षकः - स्वर्गः कुत्र उपलब्धम् भवति?
छात्रः - मम मातुः पेटिकायाम्।

निकिता
बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

ज्ञानं भारः क्रियां विना

पंचतंत्रनामकस्य संस्कृत नीतिकथा ग्रन्थस्य अन्तिमे तन्त्रे विद्यमानायाः कथायाः अंशोऽयं लेखः। अस्यां कथायां व्यवहारं विना शुष्कस्य ज्ञानस्य निरर्थकता दर्शिता । उक्तं च- शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः, यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्। अत्रोपदेशो लभ्यते यत् व्यवहारो बुद्धिः क्रिया वा ज्ञानस्य परिणामः भवति। व्यवहारं विना तु पाण्डित्यं व्यर्थं भारभूतं च।

वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्याया बुद्धिरुत्तमा।
बुद्धिहीना विनश्यन्ति यथा ते सिंहकारकाः॥

एकस्मिन् नगरे चत्वारः युवानः परस्परं मित्रभावेन निवसन्ति स्म। तेषां त्रयः शास्त्रपारंगताः, परन्तु बुद्धिरहिताः। एकस्तु बुद्धिमान् केवलं शास्त्रपराङ्मुखः। अथ तैः कदाचिन्मित्रैर्मन्त्रितम्- को गुणो विद्याया: येन देशान्तरं गत्वा भूपतीन् परितोष्य अर्थोपार्जना न क्रियते? तत्पूर्वदेशं गच्छामः। तथानुष्ठिते किञ्चिन्मार्गं गत्वा तेषां ज्येष्ठतर: प्राह- अहो! अस्माकमेकश्चतुर्थो मूढः केवलं बद्धिमान्। न च राजप्रतिग्रहो बुद्धया लभ्यते विद्यां विना। तन्नास्मै स्वोपार्जितं दास्यामः। तद्गच्छतु गृहम्। ततो द्वितीयेनाभिहितम्- भोः सुबुद्धेः! गच्छ त्वं स्वगृहम्, यतस्ते विद्या नास्ति।

ततस्तृतीयेनाभिहितम्- अहो, न युज्यते एवं कर्तुम्। यतो वयं बाल्यात्प्रभृत्येकत्र क्रीडिताः। तदागच्छतु महानुभावोऽस्मदुपार्जितवित्तस्य समभागी भविष्यतीति। उक्तञ्च-

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

तदागच्छतु एषोऽपि इति। तथानुष्ठिते तैः मार्गाश्रितैरटव्यां कतिचिदस्थीनि दृष्टानि। ततश्चैकेनाभिहित्तम्- अहो! अद्य विद्यापरीक्षा क्रियते। कतिचिदेतानि मृतसत्त्वस्यास्थीनि तिष्ठन्ति। तद्विद्याप्रभावेण जीवनसहितानि कुर्मः। अहमस्थिसञ्चयं करोमि। ततश्च तेनौत्सुक्यात् अस्थिसञ्चयः कृतः। द्वितीयेन चर्ममांसरुधिरं संयोजितम्। तृतीयोऽपि यावज्जीवनं सञ्चारयति तावत्सुबुद्धिना वारितः - भो:! तिष्ठतु भवान्, एष सिंहो निष्पाद्यते। यद्येन सजीवं करिष्यसि ततः सर्वानपि व्यापादयिष्यति, इति तेनाभिहितः स आह- धिक मूर्ख! नाहं विद्याया विफलतां करोमि। ततस्तेनाभिहितम्- तर्हि प्रतीक्षस्व क्षणं यावदहं वृक्षमारोहामि। तथानुष्ठिते यावत् सजीवः कृतस्तावत्ते त्रयोऽपि सिंहेनोत्थाय व्यापादिताः। स च पुनर्वृक्षादवतीर्य गृहं गतः। अत: उच्यते-

अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया।
दुर्भगाभरणप्रायो ज्ञानं भारः क्रिया विना॥

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

संस्कृतसाहित्यस्य लेखिकाः

शिवानी मेहरा
बी. ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

समाजस्य यानं पुरुषैः नारीभिश्च चलति। साहित्येऽपि उभयोः समानं महत्त्वम्। अधुना सर्वभाषासु साहित्यरचनायां स्त्रियोऽपि तत्पराः सन्ति यशश्च लभन्ते। संस्कृतसाहित्ये प्राचीनकालादेव साहित्यसमृद्धौ योगदानं न्यूनाधिकं प्राप्यते। लेखेऽस्मिन्नतिप्रसिद्धानां लेखिकानामेव चर्चा वर्तते येन साहित्यनिधिपूरणे तासां योगदानं ज्ञायेत।

विपुलं संस्कृतसाहित्यं विभिन्नैः कविभिः शास्त्रकारैश्च संवर्धितम्। वैदिककालादारभ्य शास्त्राणां काव्यानाञ्च रचने संरक्षणे च यथा पुरुषाः दत्तचित्ताः अभवन् तथैव स्त्रियोऽपि दत्तावधानाः प्राप्यन्ते। वैदिकयुगे मन्त्राणां दर्शका न केवला ऋषयः, प्रत्युत ऋषिका अपि सन्ति। ऋग्वेदे चतुर्विंशतिरथर्ववेदे च पञ्च ऋषिकाः मन्त्रदर्शनवत्यो निर्दिश्यन्ते यथा- यमी, अपाला, उर्वशी, इन्द्राणी, वागाम्भृणी इत्यादयः।

बृहदारण्यकोपनिषदि याज्ञवल्क्यस्य पत्नी मैत्रेयी दार्शनिकरुचिमती वर्णिता यां याज्ञवल्क्य आत्मतत्वं शिक्षयति। जनकस्य सभायां शास्त्रार्थकुशला गार्गी वाचक्नवी तिष्ठति स्म। महाभारतेऽपि जीवनपर्यन्तं वेदान्तानुशीलनपरायाः सुलभाया वर्णनं लभ्यते। लौकिकसंस्कृतसाहित्ये प्रायेण चत्वारिंशत्कवयित्रीणां सार्धशतं पद्यानि स्फुटरूपेण इतस्ततो लभ्यन्ते। तासु विजयाङ्का प्रथम-कल्पा वर्तते। सा च श्यामवर्णासीदिति पद्येनानेन स्फुटीभवति-

नीलोत्पलदलश्यामां विजयाङ्कामजानता।
वृथैव दण्डिना प्रोक्ता 'सर्वशुक्ला सरस्वती'।।

तस्याः कालः अष्टमशतकमित्यनुमीयते। चालुक्यवंशीयस्य चन्द्रादित्यस्य राज्ञी विजयभट्टारिकैव विजयाङ्का इति बहवो मन्यते। किञ्च शीला भट्टारिका, देवकुमारिका, रामभद्राम्बा-प्रभृतयो दक्षिणभारतीयाः संस्कृतलेखिकाः स्वस्फुटपद्यैः प्रसिद्धाः।

विजयनगरराज्यस्य नरेशाः संस्कृतभाषासंरक्षणाय कृतप्रयासा आसन्निति विदितमेव। तेषामन्तःपुरेऽपि संस्कृतरचनाकुशलाः राज्ञोऽभवन्। कम्पणरायस्य (चतुर्दशशतकम्) राज्ञी गङ्गादेवी 'मधुराविजयम' इति महाकाव्यं स्वस्वामिनो (मदुरै) विजयघटनामाश्रित्यारचयत्। तत्रालङ्काराणां सन्निवेशः आवर्जको वर्तते। तस्मिन्नेव राज्ये षोडशशतके शासनं कुर्वतः अच्युतरायस्य राज्ञी तिरुमलाम्बा वरदाम्बिकापरिणय-नामकं प्रौढं चम्पूकाव्यमरचयत्। तत्र संस्कृतगद्यस्य छटा समस्तपदावल्या ललितपदविन्यासेन चातीव शोभते। संस्कृतसाहित्ये प्रयुक्तं दीर्घतमं समस्तपदमपि तत्रैव लभ्यते।

आधुनिककाले संस्कृतलेखिकासु पण्डिता क्षमाराव नामधेया विदुषी। अतीव प्रसिद्धा। तया स्वपितुः शंकरपाण्डुरंगपण्डितस्य महतो विदुषो जीवनचरितं 'शङ्करचरितम्' इति रचितम्। गान्धिदर्शनप्रभाविता सा सत्याग्रहगीता, मीरालहरी, कथामुक्तावली, विचित्रपरिषद्यात्रा, ग्रामज्योतिः इत्यादीन् अनेकान् गद्य-पद्यग्रन्थान् प्रणीतवती। वर्तमानकाले लेखनरतासु कवयित्रीषु पुष्पादीक्षित-वनमाला भवालकर-मिथिलेश कुमारी मिश्र-प्रभृतयोऽनुदिनं संस्कृतसाहित्यं पूरयन्ति।

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।
जिसके वश में इन्द्रियाँ रहती हैं, उसकी प्रज्ञा प्रतिष्ठित होती है।
A person who has subjugated his senses has an unwavering mind.
(गीता- 2.61)

ऋग्वेद में वर्णित उषा सूक्त

रीमा हलदर
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

उषा सूक्त ऋग्वेद के उत्कृष्ट काव्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऋग्वेद में उषा देवी की स्तुति लगभग दो सौ शब्दों में हुई है। द्युस्थानीय यह देवी अपने पूर्ण प्राकृतिक रूप में वर्णित हुई है। इसमें मातृशक्ति का स्पष्ट रूप दिखाई देता है, इसलिए उदार व्यक्तियों को यह वीर संतति से युक्त यश देती है- एष धा वीरवद् यश उषो मघोनि सूरीषु। सभी जीवों को यह निमित्त गति से जगाती है, किंतु इसका आह्वान नास्तिक और आलसी व्यक्तियों को सोता हुआ छोड़कर केवल भक्तों और उदार व्यक्तियों को जगाने के लिए किया गया है- प्र बोधयोषः पृणतो मघोन्यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु। जिस प्रकार माता शिशु के लिए प्राण सम होती है उसी प्रकार उषा को भी सब का प्राण और जीवन बताया गया है। विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे। यह प्राणियों को नित्य नवीन आशा का संदेश देती है। प्राणीमात्र के लिए प्रत्येक नए दिन की सूचना देने वाली उषा पुरातन होती हुई भी नित्य नूतन है। प्रतिदिन यह निश्चित समय पर और निश्चित स्थान पर प्रकट होकर प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं करती- ऋतस्य योषा न मिनति धामाहरहर्निष्कृतमाचरन्ती। उषा का संबंध एक अत्यंत महत्वपूर्ण वैदिक शब्द ऋत से है। इस शब्द का मूल ऋ ध्वनि है, जिसका अर्थ है गति। उषा के उदय और अस्त होने की नियमितता से इसका संबंध स्वाभाविक रूप से ऋत स्थापित हो जाता है और उसे एक गुह्य काव्यमय आध्यात्मिक रहस्य बना देती है। अतः उसे ऋत का रक्षक और पत्नी भी कहा गया है।

ऋग्वेद में कहा गया है कि प्रकाश का परिधान पहने हुए यह कन्या पूर्व दिशा में प्रकट होकर अपने मोहिनी रूप को अनावृत करती है- एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात्। संभवतया इसके इस कन्या रूप के आधार पर ही स्वामी दयानंद ने इसे प्रभात वेला मानते हुए भी इसके वर्णनों को औपमिक रूप में कन्या के या अभिजात स्त्री के वर्णन माना है। बहुत काव्यात्मक ढंग से यह बताया गया है कि किस प्रकार उषा के उदय होने के साथ-साथ आयु क्षीण होती जाती है- पुनः पुनरजामाना पुरानी, मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः। जैसे कोई युवती स्नान करके प्रकट होती हुई और अधिक सुंदर रूप धारण कर लेती है, उसी प्रकार यह शुभ्रा अंधकार को दूर करती हुई प्रकाश के साथ हमारी दृष्टि के सम्मुख प्रकट होती है-

एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात्।
अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्।।

ऋग्वेद में उषा के सात रूपों का वर्णन किया गया है- 1.वेग प्रदायक, 2. ज्ञान सूर्य से संपर्क करने वाली, 3. वस्तुओं में अद्भुत ऐश्वर्य वाली, 4.ऋषियों द्वारा स्तुत्य, 4. भक्तों द्वारा स्तुत्य, 5. ऐश्वर्य प्रदायक एवं 7. तम को जलाने वाली। इसके अतिरिक्त वह रीतावरी है क्योंकि वह प्रतिदिन ठीक समय पर प्रकट होती है, पुरानी होते हुए भी नित-नूतना है। उषा पृथ्वी के पूर्व के आधे भाग को अपनी लालिमा से भर देती है उषा की किरण सूर्य का आगाज करती है और दिन निकलने की घोषणा कर देती है। देवत्व के योद्धा मानवता के कल्याण करने के लिए अपने अस्त्र-शस्त्रों को चमकाते हैं।

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते।
निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः।।

प्रकाशमान उषा सब लोकों को प्रकाशित करती है। उषा पूर्व से लेकर पश्चिम तक सभी को आनंदित करती है। उसी प्रकार गृहणी को परिवार के सभी सदस्यों को जगाना चाहिए और आनंदित करना चाहिए।

विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति।
विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः।।

अतः यह उषा नवजीवन का संचार करने वाली देवी है। जब यह प्रकाशित होती है तो पक्षी अपने नीडों से उड़ जाते हैं और मनुष्य पोषण प्राप्त करते हैं।

असतो मा सद्गमय
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

संदीप कुमारः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

परोपकाराय इदं शरीरम्

परेषामुपकारः परोपकारः इत्यभिधीयते। समाजे मानवः परस्य हितसाधनार्थं यत् किञ्चिद् वितरति, मनसा वाचा कर्मणा वा परार्थं सम्पादयति, सर्वं तत्र परोपकारो गण्यते। परोपकार एवं स गुणो येन समुत्कर्षः सम्पद्यते। जीवने सर्वेऽपि स्वोत्कर्षम् अभिलष्यन्तः स्वार्थ साधनतत्पराः, स्वानुजिघृक्षया इष्टकर्मजातं सम्पादयन्तोऽवलोक्यन्ते। यदि सर्वोऽपि लोकः स्वार्थभावनयैव प्रेरितः स्यात् तर्हि कथमिव सामाजिकी राष्ट्रीया वा समुन्नतिः सम्भाव्येत। परस्पर-सद्भावेनैव स्वार्थं विहाय परार्थसाधनेन, परदुःख-निवारणेन, लोकोपकृति-साधनेन, सर्वजीवानुग्रहेण च भौतिकोऽभ्युदयः समासाद्यते। समाजस्य स्थितिरेव परोपकाराधारा। परोपकरणं लोकानुग्रहसाधनेन परदुःखनिवारणेन च सकले लोके आत्मीयत्वं साधयति। उक्तं च यजुर्वेदे-

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः॥

परोपकारस्य महत्त्वम्- परोपकारेणैव विश्वबन्धुत्वं समाजसेवित्वं देवत्वं च सिध्यति। वेदेषु यज्ञपद्धत्या 'इदं न मम' स्वार्थपरित्याग एवादिश्यते। स्वत्व-परत्व-भाव-परित्यागेनैव उदारचरितत्वं महात्मत्वं विश्वबन्धुत्वं च संसाध्यते। अष्टादशपुराणकर्तुः व्यासस्य अभिमतम्- परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्।

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।

परोपकृतिनिरताः प्रकृत्या विनयम् आश्रयन्ति। फलागमे शाखिनोऽपि नम्रत्वं दधति। घना जलभारभरिता भृशम् अवनमन्ति। उक्तं च-

भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैर्नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः, स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

मानवस्य शरीरावयवाणां परोपकारेणैव साफल्यम्। चकास्ति जीवनं परोपकारेणैव। यथा श्रोत्रं विद्यया, तथैव पाणिर्दानेन, न तु कङ्कणेन विभाति।

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करुणापराणां परोपकारेण न चन्दनेन।

प्रकृतिश्चेद् अवलोक्यते तर्हि सर्वत्र सततं परोपकारप्रक्रियैव संलक्ष्यते। भानुर्जगदिदं द्योतपतिः, मातरिश्वा मृतप्रायेऽपि प्राणसंचारं विधत्ते, अनलः शैत्यादिकं वारयति भक्ष्यादिकं च पाचयति, सरितो जलेन मेघाश्च वृष्ट्या शस्यं जनयन्ति, वृक्षाः फलेन् क्षुधां अपहरन्ति, पशवो दुग्धप्रदानेन मानवं संपोषयन्ति, पुष्पाणि फलानि वनस्पतयश्च स्वार्थं विहाय परार्थे प्रवर्तन्ते। एवं सर्वत्रैव प्रकृतौ परोपकरणं सलक्ष्यते। उक्तं च-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।

हेमन्त कुमारः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

यक्षयुधिष्ठिरसंवादः

अयं लेखः व्यासरचितस्य महाभारतस्य वनपर्वणः संकलितः। महाभारतं संस्कृतभाषायाः विशालतमो ग्रन्थः। लक्षश्लोकात्मकः। अस्मिन् ग्रन्थे अष्टादश पर्वाणि सन्ति। तेषु वनपर्व अन्यतमम्। तत्र पाण्डवाः वने विचरन्ति। एकदा ते एकं सरोवरं गताः। तस्य स्वामी यक्षः। ये सरोवरात् जलं पातुम् इच्छन्ति, तान् स यक्षः प्रश्नान् करोति। उत्तरम् अदत्वा ये जलं पिबन्ति ते मूर्च्छिताः पतन्ति। सैव गतिः भीमस्य अर्जुनस्य नकुलस्य सहदेवस्य च जाता। अन्ततः युधिष्ठिरः तत्र गतः। स एव यक्षप्रश्नानां समुचितम् उत्तरं ददाति। प्रश्नोत्तरेषु नीतिः सदाचारश्च वर्णितौ।

यक्षः - केन स्विदावृतो लोकः केनस्विन्न प्रकाशते।
केन त्यजति मित्राणि केन स्वर्गं न गच्छति॥1॥
युधिष्ठिरः - अज्ञानेनावृतो लोकस्तमसा न प्रकाशते।
लोभात् त्यजति मित्राणि सङ्गात् स्वर्गं न गच्छति॥2॥
यक्षः - किं ज्ञानं प्रोच्यते राजन् कः शमश्च प्रकीर्तितः।
दया च का परा प्रोक्ता किं चार्जवमुदाहृतम्।।३।।
युधिष्ठिरः - ज्ञानं तत्त्वार्थसम्बोधः शमश्चित्तप्रशान्तता।
दया सर्वसुखैषित्वमार्जवं समचित्तता।।4।।
यक्षः - कः शत्रुर्दुर्जयः पुंसां कश्च व्याधिरनन्तकः।
को वा स्यात् पुरुषः साधुरसाधुः पुरुषश्च कः।।5।।
युधिष्ठिरः - क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्याधिरनन्तकः।
सर्वभूतहितः साधुरसाधुर्निर्दयः स्मृतः।।6।।
यक्षः - किं स्थैर्यमृषिभिः प्रोक्तं किं च धैर्यमुदाहृतम्।
स्नानं च किं परं प्रोक्तं दानं च किमिहोच्यते।।7।।
युधिष्ठिरः - स्वधर्मे स्थिरता स्थैर्यं धैर्यमिन्द्रियनिग्रहः।
स्नानं मनोमलत्यागो दानं वै भूतरक्षणम्।।8।।
यक्षः - कः पण्डितः पुमाञ्ज्ञेयो नास्तिकः कश्च उच्यते।
को मूर्खः कश्च कामः स्यात् को मत्सर इति स्मृतः।।9।।
युधिष्ठिरः - धर्मज्ञः पण्डितो ज्ञेयो नास्तिको मूर्ख उच्यते।
कामः संसारहेतुश्च हृत्तापो मत्सरः स्मृतः।।10।।

ओमनारायणः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणम्

अधुना वैज्ञानिके युगे यदा प्रकृतिः असन्तुलिता जाता तदा पर्यावरणस्य चर्चा भवति। कथं प्रदूषणं दूरीकरणीयम्। प्रकृतिः सन्तुलिता भवेत्, पशुपक्षिणः स्वस्वरूपेषु स्थिता भवन्तु, मानवश्च शुद्धं जलं वायुं च लभेत, जीवनं च कल्याणमयं स्यादिति प्रश्नः भूयोभूयः सर्वान् आन्दोलयति। संस्कृतसाहित्ये नेयमवस्था आसीदिति लेखेऽस्मिन् संक्षेपेण आदर्शरूपस्य पर्यावरणस्य निरूपणं वर्तते।

भूमिर्जलं नभो वायुरन्तरिक्षं पशुस्तृणम्।
साम्यं स्वस्थत्वमेतेषां पर्यावरणसंज्ञकम्॥

संस्कृतसाहित्यस्य महती परम्परा संसारस्य सर्वान् विषयानूरीकृत्य प्रचलिता। प्रकृतिसंरक्षणं पर्यावरणस्य संतुलनं वा तत्र स्वभावतः उपस्थापितमस्ति। वैदिककाले प्रकृतेरुपकरणानि देवरूपाणि प्रकल्पितान्यभवन्। पर्जन्यो वेदे इत्थं स्तूयते-

इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति।

मेघः पृथिवीं जलेन रक्षति तदा सर्वेभ्यः अन्नं भवति। एवमेव ये वनस्पतयः फलयुक्ता अफला वा, पुष्पवन्तः अपुष्पा वा सर्वेऽपि ते मानवान् रक्षन्तु, पापानि अर्थात् मलानि दूरीकुर्वन्तु-

याः फलिनी या अफलाः अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति - प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः॥

अत्र ओषधयो देव्यः स्तूयन्ते। संस्कृतकाव्येषु प्रकृतिवर्णनम् आवश्यकं विद्यते। कथ्यते यत् ऋतुः, सागरः, नदी, सूर्योदयः, सन्ध्या, चन्द्रोदयः, सरोवरः, उद्यानम्, वनम्- इत्यादीनि उपादानानि अवश्यं वर्णनीयानि भवन्ति महाकाव्ये। वाल्मीकिः सरोवरश्रेष्ठां पम्पां वर्णयति-

नाना-द्रुमलताकीर्णां शीतवारिनिधिं शुभाम्।
पद्मसौगन्धिकैस्ताम्रां शुक्लां कुमुदमण्डलैः॥

संस्कृतकाव्येषु स्वस्थपर्यावरणस्य कल्पनया स्वाभाविकरूपेण प्रवहन्तीनां नदीनां वर्णनं बाहुल्येन लभ्यते, जलप्लावनस्य वर्णनं तु विरलमेव। सूर्यतापितः ज्येष्ठमासस्य मध्याह्नः बाणभट्टेन वर्णितः। स च स्वाभाविकः। वस्तुतः स्वाभाविकरूपेण प्रवर्तमानानाम् ऋतूनां वर्णनेन पर्यावरणं प्रति कवीनामास्था दृश्यते। ग्रीष्मातपेन सन्तप्तस्य रक्षां वृक्षाः कुर्वन्ति इति प्रकृतिवरदानम्। अतएव मार्गेषु वृक्षारोपणं पुण्यमिति प्रतिपादितम्। फलवन्तो वृक्षास्तु परोपकारिणः इति कथयति नीतिकारः -

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः स्वयं न वारीणि पिबन्ति नद्यः।

नरा कन्याश्च वृक्षान् प्रति ममताशीला इति शाकुन्तले नाटके वर्ण्यते। शकुन्तला वृक्षान् जलेन तर्पयित्वैव स्वयं जलं पिबति-

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या।
वसन्ते तु सर्वा प्रकृतिः शोभनतरा भवति इति कालिदासः कथयति-
द्रुमाः सुपुष्पाः सलिलं सपद्मं, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते।

एवं प्राचीनभारते साहित्यकाराः सर्वस्यापि पर्यावरणस्य स्वस्थतां प्रति जागरूका अभवन्। कुत्रापि प्रकृतेः असन्तुलनं न भवेत् इति प्रयासशीलाः आसन्।

राजेश कुमारः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

महर्षि दयानन्दः

आधुनिकभारते समाजस्य शिक्षायाश्च महान् उद्धारकः स्वामी दयानन्दः। आर्यसमाजनामकसंस्थायाः संस्थापनेन एतस्य प्रभूतं योगदानं भारतीयसमाजे गृह्यते। भारतवर्षे राष्ट्रीयतायाः बोधोऽपि अस्य कार्यविशेषः। समाजे अनेकाः दूषिताः प्रथाः खण्डयित्वा शुद्धतत्त्वज्ञानस्य प्रचारं दयानन्दः अकरोत्। अयं लेखः स्वामिनो दयानन्दस्य परिचयं तस्य समाजोद्धरणे योगदानं च निरूपयति।

मध्यकाले नाना कुत्सितरीतयः भारतीय समाजम् अदूषयन्। जातिवादकृतं वैषम्यम्, अस्पृश्यता, धर्मकार्येषु आडम्बरः, स्त्रीणामशिक्षा, विधवानां गर्हिता स्थितिः, शिक्षायाः अव्यापकता इत्यादयः दोषाः प्राचीनसमाजे आसन्। अत: अनेक दलिता: हिन्दुसमाजं तिरस्कृत्य धर्मान्तरणं स्वीकृतवन्तः। एतादृशे विषमे काले ऊनविंशशतके केचन धर्मोद्धारकाः सत्यान्वेषिणः समाजस्य वैषम्यनिवारकाः भारत वर्षे प्रादुरभवन्। तेषु नूनं स्वामी दयानन्दः विचाराणां व्यापकत्वात् समाजोद्धरणस्य संकल्पाच्च शिखर-स्थानीयः।

स्वामिनः जन्म गुजरातप्रदेशस्य टंकारानामके ग्रामे 1824 ईस्वी वर्षेऽभूत्। बालकस्य नाम मूलशङ्करः इति कृतम्। संस्कृतशिक्षया एवाध्ययनस्यास्य प्रारम्भो जातः। कर्मकाण्डिपरिवारे तादृश्येव व्यवस्था तदानीमासीत्। शिवोपासके परिवारे मूलशङ्करस्य कृते शिवरात्रिमहापर्व उद्बोधकं जातम्। रात्रिजागरणकाले मूलशङ्करेण दृष्टं यत् शङ्करस्य विग्रहमारुह्य मूषकाः विग्रहार्पितानि द्रव्याणि भक्षयन्ति। मूलशंकरोऽचिन्तयत् यत् विग्रहोऽयमकिञ्चित्करः। वस्तुतः देवः प्रतिमायां नास्ति। रात्रिजागरणं विहाय मूलशङ्करः गृहं गतः। ततः एव मूलशङ्करस्य मूर्तिपूजां प्रति अनास्था जाता। वर्षद्वयाभ्यन्तरे एव तस्य प्रियायाः स्वसुर्निधनं जातम्। ततः मूलशङ्करे वैराग्यभावः समागतः। गृहं परित्यज्य विभिन्नानां विदुषां सतां साधूनाञ्च सङ्गतौ रममाणोऽसौ मथुरायां बिरजानन्दस्य प्रज्ञाचक्षुषः विदुषः समीपमगमत्। तस्मात् आर्षग्रन्थानामध्ययनं प्रारभत। बिरजानन्दस्य उपदेशात् वैदिकधर्मस्य प्रचारे सत्यस्य प्रसारे च स्वजीवनमसावर्पितवान्। यत्र-तत्र धर्माडम्बराणां खण्डनमपि स चकार। अनेके पण्डिताः तेन पराजिताः। तस्य मते च दीक्षिताः।

स्त्रीशिक्षायाः विधवाविवाहस्य मूर्तिपूजाखण्डनस्य अस्पृश्यतायाः बालविवाहस्य च निवारणस्य तेन महान् प्रयासः विभिन्नैः समाजोद्धारकैः सह कृतः। स्वसिद्धान्तानां संकलनाय सत्यार्थप्रकाशनामकं ग्रन्थं राष्ट्रभाषायां विरच्य स्वानुयायिनां स महान्तमुपकारं चकार। किञ्च वेदान् प्रति सर्वेषां धर्मानुयायिनां ध्यानमाकर्षयन् स्वयं वेदभाष्याणि संस्कृतहिन्दीभाषयोः रचितवान्। प्राचीनशिक्षायां दोषान् दर्शयित्वा नवीनां शिक्षां पद्धतिमसावदर्शयत्। स्वसिद्धान्तानां कार्यान्वयनाय 1875 ईस्वी वर्षे मुम्बईनगरे आर्यसमाजसंस्थायाः स्थापना कृत्वा अनुयायिनां कृते मूर्तरूपेण समाजस्य संशोधनोद्देश्यं प्रकटितवान्।

सम्प्रति आर्यसमाजस्य शाखाः प्रशाखाश्च देशे विदेशेषु च प्रायेण प्रतिनगरं वर्तन्ते। सर्वत्र समाजदूषणानि शिक्षामलानि च शोधयन्ति। शिक्षापद्धतौ गुरुकुलानां डी. ए. वी. (दयानन्द एंग्लो वैदिक) विद्यालयानाञ्च समूहः स्वामिनो दयानन्दस्य मृत्योः (1883 ईस्वी) अनन्तरं प्रारब्धः तदनुयायिभिः। वर्तमानशिक्षापद्धतौ समाजस्य प्रवर्तने च दयानन्दस्य आर्यसमाजस्य च योगदान सदा स्मरणीयमस्ति।

भारते शिक्षाप्रसारे तन्मतमनुरुध्य प्रवर्तितानां डी. ए. वी. कॉलेज-प्रभृतीनां महत्वपूर्णं योगदानम्। राष्ट्रियता-जागरणेऽपि तस्य विशिष्ट योगदानम्। 1857 ईसवीये संजातायां राष्ट्रियक्रान्तौ तस्य महर्षेः परोक्ष योगदानमभूदिति ऐतिह्यविद्भिः प्रतिपाद्यते। सत्यार्थप्रकाशे स्फुटरुपेण तेन प्रतिपाद्यते यद् निकृष्टमपि स्वराज्यं श्रेयोवहादपि परकीयाद् राज्यात् श्रेयस्करम्। उक्तञ्च-

कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह-रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। (सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास)

राकेश कुमार पालः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

कर्णस्य त्यागः

भासरचितस्य कर्णभारनामकस्य रूपकस्य भागविशेषः अयं लेखः। अस्य रूपकस्य कथानकं महाभारतात् गृहीतम्। महाभारतयुद्धे कुन्तीपुत्रः कर्णः कौरवपक्षतः युद्धं करोति। कर्णस्य शरीरेण संबद्ध कवचं कुण्डले च तस्य रक्षके स्तः। यावत् कवचं कुण्डले च कर्णस्य शरीरे वर्तेते तावत् न कोऽपि कर्णं हन्तुं प्रभवति। अतएव अर्जुनस्य सहायतार्थम् इन्द्रः छलपूर्वकं कर्णस्य दानवीरस्य शरीरात् कवचं कुण्डले च गृह्णाति। कर्णः समोदम् अङ्गभूतं कवचं कुण्डले च ददाति। भासस्य त्रयोदश नाटकानि लभ्यन्ते। तेषु कर्णभारम् अतिसरलम् अभिनेयं च वर्तते।

ततः प्रविशति ब्राह्मणरूपेण इन्द्रः

इन्द्रः - भो मेघाः, सूर्येणैव निवर्त्य गच्छन्तु भवन्तः। (कर्णमुपगम्य) भोः कर्ण! महत्तरां भिक्षां याचे।

कर्णः - दृढं प्रीतोऽस्मि भगवन्! कर्णो भवन्तमहमेष नमस्करोमि।

इन्द्रः - (आत्मगतम्) किं न खलु मया वक्तव्यं, यदि दीर्घायुर्भवेति वक्ष्ये दीर्घायुर्भविष्यति यदि न वक्ष्ये मूढ इति मां परिभवति। तस्मादुभयं परिहृत्य किं नु खलु वक्ष्यामि। भवतु दृष्टम्। (प्रकाशम्) भो कर्ण! सूर्य इव, चन्द्र इव, हिमवान इव, सागर इव तिष्ठतु ते यशः।

कर्णः - भगवन्! किं न वक्तव्यं दीर्घायुर्भवेति। अथवा एतदेव शोभनम्। कुतः -

धर्मो हि यत्नैः पुरुषेण साध्यो भुजङ्गजिह्वाचपला नृपश्रियः।
तस्मात्प्रजापालनमात्रबुद्ध्या हतेषु देहेषु गुणा धरन्ते।।
भगवन्, किमिच्छसि। किमहं ददामि।

इन्द्रः - महतरां भिक्षां याचे।
कर्णः - महत्तरां भिक्षां भवते प्रदास्ये। सालङ्कारं गोसहस्रं ददामि।
इन्द्रः - गोसहस्रमिति। मुहूर्तकं क्षीरं पिबामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।
कर्णः - किं नेच्छति भवान्। इदमपि श्रूयताम्। बहुसहस्रं वाजिनां ते ददामि।
इन्द्रः - अश्वमिति। मुहूर्तकम् आरोहामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।
कर्णः - किं नेच्छति भगवान्। अन्यदपि श्रूयताम्। वारणानामनेक वृन्दमपि ते ददामि।
इन्द्रः - गजमिति। मुहूर्तकम् आरोहामि। नेच्छामि कर्ण ! नेच्छामि।
कर्णः - किं नेच्छति भवान्। अन्यदपि श्रूयताम्। अपर्याप्तं कनकं ददामि।
इन्द्रः - गृहीत्वा गच्छामि। (किंचिद् गत्वा) नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।
कर्णः - तेन हि जित्वा पृथिवीं ददामि।
इन्द्रः - पृथिव्या किं करिष्यामि।
कर्णः - तेन ह्यग्निष्टोमफलं ददामि।
इन्द्रः - अग्निष्टोमफलेन किं कार्यम्।
कर्णः - तेन हि मच्छिरो ददामि।
इन्द्रः - अविहा अविहा।
कर्णः - न भेतव्यं न भेतव्यम्। प्रसीदतु भवान्। अन्यदपि श्रूयताम्।

अङ्गै सहैव जनितं मम देहरक्षा देवासुरैरपि न भेद्यमिदं सहस्त्रैः।
देयं तथापि कवचं सह कुण्डलाभ्यां प्रीत्या मया भगवते रुचितं यदि स्यात्।।

इन्द्रः - (सहर्षम्) ददातु, ददातु।

कर्णः - (आत्मगतम्) एष एवास्य कामः। किं नु खल्वनेककपटबुद्धेः कृष्णस्योपायः। सोऽपि भवतु। धिगयुक्तमनुशोचितम्। नास्ति संशयः। (प्रकाशम्) गृह्यताम्।

शल्यः - अङ्गराज! न दातव्यं न दातव्यम्।

कर्णः - शल्यराज! अलमलं वारयितुम्। पश्य-

शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात् सुबद्धमूला निपतन्ति पादपाः।
जलं जलस्थानगतं च शुष्यति हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति।।

तस्मात् गृह्यताम् (निकृत्त्य ददाति)।

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।
जो लोग विवेकभ्रष्ट हो जाते हैं, उनका सैकड़ों प्रकार से पतन होता है।
Hundreds of misfortunes befall unwise men.
(नीतिशतक-17)

धीरज सिंहः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

संस्कृतस्य ध्येय वाक्यानि

अस्माकं देशस्य नाम भारतवर्षः अस्ति। अस्माकं देशः अतिप्राचीनः अस्ति। उत्तरदिशायाम् स्थितः नगाधिराजः हिमालयः अस्माकं देशस्य रक्षां करोति। अस्य दक्षिणदिशायाम् सागरः अस्ति। हिन्द महासागरः भारतमातुः चरणौ प्रक्षालयति। संस्कृतभाषा संसारस्य भाषासु प्राचीनतमा। केषाञ्चित् पण्डितानां मते एषा सर्वासामेव भाषाणामुद्गमः, परमन्येषां मते एषा केवलं भारतस्यानेकासां भाषाणां जननी। एवं चापि एतस्याः गौरवम् न्यूनं नास्ति। भारतस्यानेकाः भाषाः यस्याः संस्कृतभाषायाः पुत्र्यः सन्ति, सा भारते तु महत्त्वपूर्णाऽस्त्येव। संस्कृतभाषायां संसारस्य प्राचीनतमं साहित्यमस्ति। इतिहासज्ञाः कथयन्ति यत् वेदानां साहित्यमेव सर्वेषु साहित्येषु प्राचीनतममस्ति। वेदाः च संस्कृतभाषायामेव लिखिताः सन्ति। संस्कृतभाषायाः महत्वं दर्शनार्थं संस्कृतस्य ध्येय वाक्यानि-

1. भारत सरकार- सत्यमेव जयते - सत्य की ही जीत होती है।
2. लोक सभा- धर्मचक्र प्रवर्तनाय - धर्म परायणता के चक्रावर्तन के लिए।
3. उच्चतम न्यायालय- यतो धर्मस्ततो जयः - जहाँ धर्म है वहाँ जीत है।
4. आल इंडिया रेडियो- सर्वजन हिताय सर्वजनसुखाय - सबका साथ, सबका विकास।
5. दूरदर्शन- सत्यं शिवम् सुन्दरम् - सत्य कल्याणकारी और सुन्दर।
6. नेपाल सरकार- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी - जननी (माँ) और जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं।
7. दिल्ली विश्वविद्यालय- निष्ठा धृतिः सत्यम् - निष्ठा धृति और सत्य।
8. पीजीडीएवी महाविद्यालय- असतो मा सद्गमय - हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलें।
9. संत स्टीफन महाविद्यालय, दिल्ली- सत्यमेव विजयते नानृतम् - सत्य ही सदैव विजयी होता है, असत्य नहीं।
10. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान- शरीरमाद्यं खलुधर्मसाधनम् - शरीर ही सभी कर्तव्यों को पूरा करने का साधन है।
11. विश्वेश्वरैया राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर- योगः कर्मसु कौशलम् - कर्मों में कौशल लाना ही योग है।
12. मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद- सिद्धिर्भवति कर्मजा - सफलता का मूलमन्त्र कठिन परिश्रम है।
13. बिरला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, पिलानी- ज्ञानं परमं बलम् - ज्ञान सबसे बड़ा बल है।
14. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर- योगः कर्मसु कौशलम् - परिश्रम, उत्कृष्टता का मार्ग है।
15. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई- ज्ञानं परमं ध्येयम् - ज्ञान परम ध्येय है।

16. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर- तमसो मा ज्योतिर्गमय - हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलें।

17. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई- सिद्धिर्भवति कर्मजा - सफलता का मूलमन्त्र कठिन परिश्रम है।

18. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की- श्रमं विना न किमपि साध्यम् - कोई उपलब्धि श्रम के बिना असम्भव है।

19. भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद- विद्या विनियोगाद्विकास: - विद्या-विनियोग से विकास होता है।

20. भारतीय प्रबंधन संस्थान, बंगलौर- तेजस्वि नावधीतमस्तु - हमारा ज्ञान तेजवान बनें।

21. भारतीय प्रबंधन संस्थान, कोझीकोड- योगः कर्मसु कौशलम् - कर्मों में कौशल ही योग है।

22. भारतीय प्रबंधन संस्थान, लखनऊ- सुप्रबन्धे राष्ट्र समृद्धिः - सुप्रबन्ध से राष्ट्र समृद्ध होता है।

23. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग- ज्ञान-विज्ञानं विमुक्तये - ज्ञान-विज्ञान से मुक्ति प्राप्त होती है।

24. गुरुकुल काङ्गडी विश्वविद्यालय- ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत - ब्रह्मचर्य के तप से देव लोग मृत्यु को जीत लेते हैं।

25. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय- विद्ययाऽमृतमश्नुते - विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है।

26. गुजरात राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय- आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः - हमारी तरफ सब ओर से शुभ विचार आएँ।

27. वनस्थली विद्यापीठ- सा विद्या या विमुक्तये - विद्या मुक्ति का द्वार है।

28. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्- विद्ययाऽमृतमश्नुते - विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है।

29. केन्द्रीय विद्यालय- तत् त्वं पूषन् अपावृणु - हे ईश्वर, आप ज्ञान पर छाए आवरण को हटाइए।

30. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड- असतो मा सद्गमय - हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलें।

31. प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, त्रिवेन्द्रम- कर्मज्यायो हि अकर्मण: - कर्म, अकर्म की तुलना में श्रेष्ठ है।

32. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर- धियो यो नः प्रचोदयात् - दैवीय विद्वता हमारे कर्मो को प्रेरित करे।

33. गोविंद बल्लभ पंत अभियांत्रिकी महाविद्यालय, पौड़ी- तमसो मा ज्योतिर्गमय - हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलें।

34. मदन मोहन मालवीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, गोरखपुर- योगः कर्मसु कौशलम् - कर्मों में कौशल ही योग है।

35. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, धनबाद- उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत- उठो, जागो और श्रेष्ठ लोगों से सीखो।

36. इंडिया विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय विधि विद्यालय- धर्मो रक्षति रक्षितः - जो धर्म की रक्षा करते हैं, वे धर्म द्वारा रक्षित होते हैं।

37. विश्व हिन्दू परिषद्- धर्मो रक्षति रक्षितः - धर्म की रक्षा की जाये तो धर्म भी रक्षा करता है।

38. भारतीय प्रशासनिक कर्मचारी महाविद्यालय, हैदराबाद- संगच्छध्वं संवदध्वम् - साथ चलो, साथ बोलो।

39. भारतीय सांख्यिकी संस्थान- भिन्नेष्वेकस्य दर्शनम् - अनेकता में एकता का दर्शन।

40. नेशनल कौंसिल फॉर टीचर एजुकेशन- गुरुः गुरुतमो धामः - गुरु सबसे श्रेष्ठ धाम है।

चेतनः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

अतिलोभो न कर्तव्यः

पञ्चतन्त्रं संस्कृतसाहित्यस्य अतीव लोकप्रियो ग्रन्थः। अस्य रूपान्तराणि प्राचीन काले एव नाना वैदेशिकभाषासु कृतानि आसन्। अतएव अस्य संस्कृतभाषायामपि विविधानि संस्करणानि जातानि। पन्चभिर्भागैर्विभक्तमिदम् अन्वर्थतः पञ्चतन्त्रम्। तत्र मित्रभेदः, मित्रसम्प्राप्तिः, काकोलूकीयम्, लब्धप्रणाशः, अपरीक्षितकारकं चेति पञ्च भागाः सन्ति। अन्तिमस्य भागस्यैव कथाविशेषः अस्मिन् लेखे प्रस्तुतो वर्तते। अत्र लोभाधिक्यस्य दुष्परिणाम: कथामाध्यमेन प्रस्तुतः। कस्मिन्श्चित् अधिष्ठाने चत्वारो ब्राह्मणपुत्राः मित्रतां गता वसन्ति स्म। ते दारिद्र्योपहता मन्त्रं चक्रुः- अहो धिगियं दरिद्रता । उक्तञ्च-

वरं वनं व्याघ्रगजादिसेवितं जनेन हीनं बहुकण्टकावृतम्।
तृणानि शय्या परिधानवल्कलं न बन्धुमध्ये धनहीनजीवितम्॥

'तद्गच्छामः कुत्रचिदर्थाय' इति संमन्त्य स्वदेशं परित्यज्य प्रस्थिताः। क्रमेण गच्छन्तः ते अवन्तीं प्राप्ताः। तत्र क्षिप्राजले कृतस्नाना महाकालं प्रणम्य यावन्निर्गच्छन्ति, तावद्भैरवानन्दो नाम योगी सम्मुखो बभूव। तेन ते पृष्टाः - कुतो भवन्त: समायाता:? किं प्रयोजनम्? ततस्तैरभिहितम्- वयं सिद्धियात्रिकाः। तत्र यास्यामो यत्र धनाप्तिर्मृत्युर्वा भविष्यतीति। एष निश्चयः। उक्तञ्च-

अभिमतसिद्धिरशेषा भवति हि पुरुषस्य पुरुषकारेण।
दैवमिति यदपि कथयसि पुरुषगुणः सोऽप्यदृष्टाख्यः।।

भैरवानन्दोऽपि तेषां सिद्ध्यर्थं बहूपायं सिद्धवर्तिचतुष्टयं कृत्वा आर्पयत्। आह च- गम्यतां हिमालयदिशि, तत्र सम्प्राप्तानां यत्र वर्तिः पतिष्यति तत्र निधानमसन्दिग्धं प्राप्स्यथ। तत्र स्थानं खनित्वा निधिं गृहीत्वा निवर्त्यताम्।

तथानुष्ठिते तेषां गच्छतामेकतमस्य हस्तात् वर्तिः निपपात। अथासौ यावन्तं प्रदेशं खनति तावत्ताम्रमयी भूमिः। ततस्तेनाभिहितम्- अहो! गृह्यतां स्वेच्छया ताम्रम्। अन्ये प्रोचुः - भो मूढ! किमनेन क्रियते? यत्प्रभूतमपि दारिद्र्यं न नाशयति। तदुत्तिष्ठ, अग्रतो गच्छामः। सोऽब्रवीत्- यान्तु भवन्त: नाहमग्रे यास्यामि। एवमभिधाय ताम्रं यथेच्छया गृहीत्वा प्रथमो निवृत्तः। ते त्रयोऽप्यग्रे प्रस्थिताः। अथ किञ्चिन्मात्रं गतस्य अग्रेसरस्य वर्तिः निपपात, सोऽपि यावत् खनितुमारभते तावत् रूप्यमयी क्षितिः। ततः प्रहर्षितः आह- गृह्यतां यथेच्छया रूप्यम्। नाग्रे गन्तव्यम्। किन्तु अपरौ अकथयताम्- आवामग्रे यास्यावः। एवमुक्त्वा द्वावप्यग्रे प्रस्थितौ। सोऽपि स्वशक्त्या रूप्यमादाय निवृत्तः।

अथ तयोरपि गच्छतोरेकस्याग्रे वर्तिः पपात। सोऽपि प्रहृष्टो यावत् खनति तावत् सुवर्णभूमिं दृष्ट्वा प्राह- भोः गृह्यतां स्वेच्छया सुवर्णम्। सुवर्णादन्यन्न किञ्चिदुत्तमं भविष्यति। अन्यस्तु प्राह- मूढ! न किञ्चिद् वेत्सि। प्राक्ताम्रम् ततो रूप्यम्, ततः सुवर्णम्। तन्नूनम् अत: परं रत्नानि भविष्यन्ति। तदुतिष्ठ, अग्रे गच्छावः। किन्तु तृतीयः यथेच्छया स्वर्णं गृहीत्वा निवृत्तः।

अनन्तरं सोऽपि गच्छन्नेकाकी ग्रीष्मसन्तप्ततनुः पिपासाकुलित: मार्गच्युतः इतश्चेतश्च बभ्राम। अथ भ्राम्यन् स्थलोपरि पुरुषमेकं रुधिरप्लावितगात्रं प्रमच्चक्रमस्तकमपश्यत्। ततो द्रुततरं गत्वा तमवोचत्- भोः को भवान्? किमेवं चक्रेण भ्रमता शिरसि तिष्ठसि? तत् कथय मे यदि कुत्रचिज्जलमस्ति।

एवं तस्य प्रवदतस्तच्चक्रं तत्क्षणात्तस्य शिरसो ब्राह्मणमस्तके आगतम्। सः आह- किमेतत्? स आह- ममाप्येवमेतच्छिरसि आगतम्। स आह- तत् कथय, कदैतदुत्तरिष्यति? महती मे वेदना वर्तते। स आह- यदा त्वमिव कश्चिद् धृतसिद्धवर्तिरेवमागत्य त्वामालापयिष्यति तदा तस्य मस्तके गमिष्यति। इत्युक्त्वा स गतः। अत: उच्यते-

अतिलोभो न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्।
अतिलोभाभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके।।

रंजीत कुमारः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

मूर्ख के लक्षण

महाकवि भर्तृहरि ने संसार का खूब ही अनुभव किया था और उस अनुभव के मार्मिक पक्ष के ग्रहण करने में वे सर्वथा कृतकार्य थे। जो कवि संसार के बीच रहता हुआ अपने अनुभव के बल पर उसके हृदय को समझने तथा कविता में सुचारु रूप देने में समर्थ होता है वही सच्चा लोकप्रिय कवि है। इस दृष्टि से भर्तृहरि सचमुच जनता के कवि हैं, जिनकी सूक्ष्म दृष्टि संसार की छोटी से छोटी वस्तु को निरख उससे उदात्त शिक्षा ग्रहण कराने में समर्थ होती है। प्रस्तुत है मूर्ख के लक्षण-

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति।।

प्रस्तुत श्लोक में आचार्य भर्तृहरि ने यह प्रतिपादित किया है कि अहंकार ज्ञानप्राप्ति में सर्वाधिक बाधक है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए भर्तृहरि ने संसार के सभी लोगों को तीन श्रेणी में विभाजित किया है- अज्ञानी, विशेष ज्ञानी और स्वयं को ज्ञानी मानने वाले। आचार्य का कहना है कि जो व्यक्ति कुछ नहीं जानता, उसे किसी भी बात को समझाना अत्यन्त सरल है क्योंकि उसे आप जो भी कुछ बताएंगे, अपने अज्ञानता के कारण वह आपकी प्रत्येक बात को सहजता से मानता जाएगा। इसी प्रकार जो विशेष ज्ञानी है, वह अपनी विशिष्टता के कारण आपकी किसी भी बात को संकेत मात्र से ही और भी अधिक सहजता से समझ जाएगा, परन्तु ऐसा व्यक्ति जिसे किसी विषय का ज्ञान तो अल्प है परन्तु उस ज्ञान से वह अपने को विद्वान समझने लगता है ऐसे व्यक्ति को किसी भी बात को समझाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है जिसके लिए आचार्य का कहना है कि ऐसे व्यक्ति को तो साक्षात् ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते, क्योंकि उसका अहंकार समझने में बाधा उत्पन्न करता रहेगा। इसलिए आचार्य का मानना है कि उस अहंकारी मनुष्य को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न ही नहीं करना चाहिए।

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्,
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्,
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥

प्रस्तुत श्लोक में भी कवि ने तीन असम्भव कार्यों के सम्पन्न होने की सम्भावना व्यक्त की है कि यदि व्यक्ति प्रयत्न करे तो वह रेत को भी दबाकर उसमें से तेल निकाल सकता है जो नितान्त असम्भव कार्य है। इसी प्रकार जल का भ्रम उत्पन्न करने वाली मृगतृष्णिका में भी जल प्राप्त करके अपनी प्यास बुझा सकता है। यद्यपि यह सर्वप्रसिद्ध है कि खरगोश के सींग नहीं होते फिर भी कवि ने सम्भावना की है कि सम्भवतः कहीं जंगल आदि या इधर-उधर घूमते हुए उसे खरगोश का सींग भी प्राप्त हो जाए। यद्यपि ये तीनों कार्य असम्भव हैं तो भी यदि मनुष्य प्रयत्न करे तो सम्भवतः इनमें उसे सफलता प्राप्त हो जाए परन्तु ऐसा व्यक्ति जो मूर्ख होने के साथ-साथ हठी भी है उसे प्रसन्न करना नितान्त असम्भव है।

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते,
छेत्तुं वज्रमणीञ्छिरीषकुसुमप्रान्तेन संनह्यते।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते,
नेतुं वाञ्छति यः खलान्पथि सतां सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः।।

आचार्य भर्तृहरि ने अत्यन्त सुन्दर तरीके से प्रस्तुत श्लोक में यह प्रतिपादित करने का प्रयास किया है कि अच्छी-अच्छी बातों का उपदेश देकर किसी भी स्थिति में व्यक्ति के दुष्ट स्वभाव को सज्जनता में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है, यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो वह मानो ठीक उसी प्रकार पूर्णतया असम्भव एवं मूर्खतापूर्ण कार्य करता है जैसे कमल की नाल में स्थित धागों से किसी मदमस्त हाथी को बाँधने का कार्य। कहने का तात्पर्य यह है कि मदमस्त हाथी को बड़ी-बड़ी जंजीरों के द्वारा ही बाँधा जा सकता है। कमलनाल के तन्तुओं से बाँधने का प्रयास पूर्णतया मूर्खतापूर्ण एवं असम्भव है। ऐसे ही हीरे आदि कठोर मणि को किसी कोमल शिरीष जैसे पुष्प की पंखुड़ियों से काटना नितान्त असम्भव एवं मूर्खतापूर्ण कार्य है। इसी प्रकार शहद की एक बूंद से अथाह जलराशि वाले समुद्र के जल को मीठा बनाने का प्रयास भी मूर्खतापूर्ण एवं असम्भव है। इसी प्रकार मूर्ख मनुष्यों को अमृत जैसे मधुर तथा अनमोल वचनों से भी सज्जन बनाने का प्रयास निष्फल ही होता है क्योंकि मूर्ख मनुष्य दूसरे व्यक्ति की बात सुनने को कतई तैयार नहीं होते।

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि।।

प्रस्तुत श्लोक में आचार्य भर्तृहरि ने ऐश्वर्य संपन्न स्थान पर भी मूर्ख व्यक्ति के साथ संगति को पूर्णरूपेण त्याज्य बताया है। कवि के अनुसार मूर्ख व्यक्ति की संगति से बुरा प्रभाव पड़ता है, इसलिए मूर्खों की संगति चाहे ऐश्वर्य संपन्न सुख सुविधा युक्त इंद्र के भवन में भी हो, वह त्याज्य है। इसके विपरीत यदि वनवासियों के साथ पर्वत के दुर्गम स्थानों पर कष्टपूर्वक भी भ्रमण करना पड़े तो वह अच्छा है क्योंकि ऐसी स्थिति में मूर्खों के दुर्गुणों से बचे रहेंगे।

कृतज्ञः सर्वलोकेषु पूज्यो भवति सर्वदा।

कृतज्ञ पुरुष सब लोकों में सदा पूजित होता है।

A grateful person is honoured in the every world.
(पु.सू.- 2.21.74)

मीनाक्षी
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, तृतीय वर्षम्

चत्वारो वेदाः

भारतवर्षस्य सांस्कृतिकनिधिषु वेदाः प्रधानपदं धारयन्ति। संसारस्य उपलब्धग्रन्थेषु ते एव प्राचीनतमा सन्ति। भारतीयाः सर्वेऽपि वेदसम्बन्धेन गौरवमनुभवन्ति। ज्ञानस्य पर्याय एव वेदो वर्तते। शास्त्राणि वेदानामुद्धरणैः स्वसिद्धान्तान् प्रतिपादयन्ति। प्रस्तुते लेखे चतुर्णां वेदानां स्वरूपं मुख्यं च प्रतिपाद्यं दर्शितमस्ति।

अस्माकं प्राचीना संस्कृतिर्वेदेषु सुरक्षिता वर्तते। संसारस्य च प्राचीनतमं साहित्यं वेदेषूपलभ्यते। सप्तसिन्धुप्रदेशे निवसन्तः ऋषयस्तात्कालिकं सर्वं ज्ञानं वेदरूपमधारयन्। विशेषतो यज्ञसंचालनाय एकस्यापि वेदस्य चत्वारि रूपाणि कृतान्यासन्। अतएव चत्वारो वेदाः इति परम्परा प्रवृत्ता। ते च वेदा: ऋग्वेदः यजुर्वेदः सामवेदः अथर्ववेदश्चेति सन्ति।

ऋग्वेदः प्राचीनतमान् मन्त्रान् धारयति। अतएव इतिहासस्य विद्वांसस्तस्य महत्त्वमतितरां मन्यन्ते। अयं वेदो दशसु मण्डलेषु विभक्तः। प्रतिमण्डलं च ऋक्समूहरूपाणि सूक्तानि बहूनि विद्यन्ते। सूक्तानां देवताः ऋषयः छन्दांसि च पृथक् सन्ति। सम्पूर्ण ऋग्वेदे 1028 सूक्तानि, 10552 ऋचः वर्तन्ते। ऋचः एव मन्त्राः अपि कथ्यन्ते। ऋग्वेदे देवानामावाहनार्थं मन्त्रा इति कर्मकाण्डोपयोगः।

यजुर्वेदः शुक्ल-कृष्णरूपेण द्विविधः। प्रायेण शुक्लयजुर्वेदः एव उत्तरभारते प्रचलितः। तस्मिन् चत्वारिंशदध्यायाः सन्ति। अध्यायेष्वनेके गद्य-पद्यात्मका मन्त्राः सन्ति। तेषु मुख्यतो विविधकर्मसम्पादनाय विधयो दर्शिताः। यजुर्वेदस्य अर्थ एव वर्तते यज्ञवेदः। प्रचलिते शुक्लयजुर्वेदे 1975 मन्त्रा: संकलिताः। यज्ञेष्वस्य वेदस्य व्यापकः प्रयोगः।

सामवेदः प्रायेण ऋग्वेदस्य गेयात्मकैर्मन्त्रैः संकलितः। तत्र यज्ञे समाहूतानां देवानां प्रसादनं लक्ष्यमस्ति। प्रसादनं च गानेन भवति। अतएव सामवेदस्य गायकाः उद्गातारः कथ्यन्ते। भारतीय संगीतं सामवेदादेव प्रारभते। सामवेदे 1875 मन्त्रा: सन्ति। सामवेदश्च पूर्वार्चिक-उत्तरार्चिकभागयोः विभक्तः।

अथर्ववेदः लौकिकं वैज्ञानिकं च विषयं विशेषेण धत्ते। अयं विंशतिकाण्डेषु विभक्तः। प्रतिकाण्डं च सूक्तानि वर्तन्ते, सूक्तेषु च ऋग्वेदवत् मन्त्राः सन्ति। सम्पूर्ण अथर्ववेदे 730 सूक्तानि, 5987 मन्त्राश्च विद्यन्ते। अत्र द्वादशे काण्डे भूमिसूक्तं वर्तते यत्र मातृभूमेः स्तुतिर्विस्तरेण कृता।

एते सर्वे वेदाः मन्त्राणां संकलनत्वेन सहिताः अपि कथ्यन्ते। तदनन्तरं तद्व्याख्यारूपाणि ब्राह्मणानि बहूनि वर्तन्ते कर्मकाण्डपराणि। दार्शनिकचिन्तनपराणि आरण्यकानि, शुद्धदर्शनपरा: उपनिषदश्च विकसिताः। सर्वेऽप्येते वेदसहितानां कृते पृथक्-पृथक् सन्ति। अपि च वेदानामङ्गरूपेण शिक्षा, कल्पः, व्याकरणम्, निरुक्तम्, छन्दः, ज्योतिषम् चेति षड्वेदाङ्गानि विपुलं साहित्यं प्रस्तुवन्ति। सर्वमिदं मिलित्वा विशालं वैदिकं साहित्यमिति वर्तते।

यादृशं कुरुते कर्म तादृशं फलमश्नुते।

मानव जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है।

Man reaps the fruits of his deeds as done.

(रा. उत्तर.- 15.25)

गौरव यादवः
स्नातक संस्कृत प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्षम्

उच्चारण स्थान का वैज्ञानिक आधार

1. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः - अ, कवर्ग, ह और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है।
2. इचुयशानां तालु - इ, चवर्ग य और श् का उच्चारण स्थान तालु है।
3. ऋटुरषाणां मूर्धा - ऋ, टवर्ग, र और ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है।
4. लृतुलसानां दन्ताः - लृ, तवर्ग, ल और स् का उच्चारण स्थान दन्त है।
5. उपूपध्मानीयानामोष्ठौ - उ, पवर्ग, उपध्मानीय का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
6. ञमङणनानां नासिका च - ञ, म, ङ, ण, न् का उच्चारण स्थान नासिका भी है।
7. एदैतोः कण्ठतालू - ए, ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है।
8. ओदौतोः कण्ठोष्ठम् - ओ, औ का उच्चारण स्थान कण्ठ और ओष्ठ है।
9. वकारस्य दन्तोष्ठम् - वकार का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है।
10. जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् - जिह्वामूलीय का उच्चारण स्थान जिह्वा का मूल है जो कण्ठ के निकट है। जिह्वामूलीय उसे कहते हैं जो क, ख के योग में अर्ध विसर्ग के रूप में प्रयोग की जाती है।
11. नासिकाऽनुस्वारस्य - अनुस्वार का उच्चारण स्थान नासिका है।

संस्कृत में रोजगार की अपार संभावनाएँ : वर्तमान परिप्रेक्ष्य

रोहित कुमार
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिः तथा।

संस्कृत भारतीय उपमहाद्वीप की एक भाषा है। इसे देववाणी अथवा सुरभारती भी कहा जाता है। यह विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। भारतीय भाषाएँ जैसे- हिंदी, बांग्ला, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, नेपाली, आदि इसी से उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत में वैदिक धर्म से संबंधित लगभग सभी धर्मग्रंथ लिखे गये हैं। बौद्ध धर्म तथा जैन मत के भी कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में लिखे गये हैं। डॉ. भीम राव अम्बेडकर का मानना था कि संस्कृत पूरे भारत को भाषाई एकता के सूत्र में बांध सकने वाली इकलौती भाषा हो सकती है, अतः उन्होंने इसे देश की आधिकारिक भाषा बनाने का सुझाव दिया था। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में संस्कृत को भी सम्मिलित किया गया है। यह उत्तराखण्ड की द्वितीय राजभाषा है।

संस्कृत भाषा की विशेषताएँ-

(1) संस्कृत, विश्व की सबसे प्रचीन पुस्तक वेद की भाषा है। इसलिये इसे विश्व की प्रथम भाषा मानने में कहीं किसी संशय की संभावना नहीं है।

(2) इसकी सुस्पष्ट व्याकरण और वर्णमाला की वैज्ञानिकता के कारण सर्वश्रेष्ठता भी स्वयं सिद्ध है।

(3) केवल संस्कृत ही एकमात्र भाषा है जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर नहीं किया गया हैं। संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद् नहीं थे, बल्कि महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योगशास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया है। यही इस भाषा का रहस्य है।

(4) सन्धि- संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है सन्धि। संस्कृत में जब दो अक्षर निकट आते हैं तो वहाँ सन्धि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जाते है ।

(5) इसे कम्प्यूटर और कृत्रिम बुद्धि के लिये सबसे उपयुक्त भाषा माना जाता है।

(6) शोध से ऐसा पाया गया है कि संस्कृत पढ़ने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

(7) संस्कृत वाक्यों में शब्दों को किसी भी क्रम में रखा जा सकता है। इससे अर्थ का अनर्थ होने की बहुत कम या कोई भी सम्भावना नहीं होती। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि सभी शब्द विभक्ति और वचन के अनुसार होते हैं और क्रम बदलने पर भी सही अर्थ सुरक्षित रहता है। जैसे - अहं गृहं गच्छामि या गच्छामि गृहं अहम् दोनों ही ठीक हैं।

"नासा के वैज्ञानिकों की मानें तो जब वह स्पेस ट्रैवलर्स को मैसेज भेजते थे तो उनके वाक्य उल्टे हो जाते थे इस वजह से मैसेज का अर्थ बदल जाता था। उन्होंने दुनियाँ के कई भाषा प्रयोग किया लेकिन हर बार यही समस्या आई। आखिर में उन्होंने संस्कृत में मैसेज भेजा क्योंकि संस्कृत के वाक्य उल्टे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते हैं।"

(8) संस्कृत भाषा में साहित्य की रचना कम से कम छह हजार वर्षों से निरन्तर होती आ रही है। इसके कई लाख ग्रन्थों के पठन-पाठन और चिन्तन में भारतवर्ष के करोड़ों सर्वोत्तम मस्तिष्क दिन-रात लगे रहे हैं और आज भी लगे हुए हैं। पता नहीं कि संसार के किसी देश में इतने काल तक, इतनी दूरी तक व्याप्त, इतने उत्तम मस्तिष्क में विचरण करने वाली कोई भाषा है या नहीं। शायद नहीं है।

(9) संस्कृत केवल एक मात्र भाषा नहीं है अपितु संस्कृत एक विचार है, संस्कृत एक संस्कृति है, एक संस्कार है, संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शांति है, सहयोग है, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना है।

(10) नासा का कहना है कि 6th और 7th Generation Super Computers संस्कृत भाषा पर आधारित होंगे।

(11) कर्नाटक के मट्टूर (MATTUR) गांव में आज भी लोग संस्कृत में ही बोलते हैं।

(12) अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण इस भाषा की महत्ता के कारण ही आज से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज जैसे विश्वविद्यालयों में संस्कृत विभाग खोले गये थे। आज विश्व के हर बड़े विश्वविद्यालय में एक भारतीय विद्या विभाग (इंडोलॉजी डिपार्टमेंट) अवश्य होता है, जिसमें संस्कृत भाषा सिखाई जाती है। समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति और संस्कृत के महत्त्व को इस बात से समझा जा सकता है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में 1897 ई. से संस्कृत भाषा पढ़ाई जा रही है। अमेरिका के मेरीलैंड विद्यापीठ में भी इसका इतना प्रचार है कि वहाँ के विद्यार्थियों ने संस्कृत भारती नाम से एक दल तैयार किया है। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम जब ग्रीस गए तब वहाँ के माननीय राष्ट्रपति कार्लोस पाम्पाडलीस ने उनका स्वागत संस्कृत भाषा में "राष्ट्रपतिमहाभाग: सुस्वागतम् यवनदेशे" कहकर स्वागत किया था। जुलाई २००७ में अमेरिकी सीनेट का प्रारम्भ वैदिक प्रार्थना से किया गया।

संस्कृत में रोजगार के क्षेत्र-

समाज में पूर्वाग्रह के कारण आमतौर पर यह माना जाता है कि संस्कृत भाषा का अध्ययन करने के बाद रोजगार की बहुत कम संभावनाएं शेष रहती है। यह धारणा तथ्यहीन होने के साथ-साथ समाज की अपरिपक्वता का उदाहरण भी है। संस्कृत भाषा एवं विषय के अध्ययन के पश्चात युवाओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध है, जिसके बारे में विद्यार्थियों और अभिभावकों को जानकारी होना अति आवश्यक है। तभी वे संस्कृत भाषा के अध्ययन की ओर अभिमुख होंगे। इसी दृष्टि से संस्कृत भाषा के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त होने वाले रोजगार के अवसरों की यहां पर चर्चा की जा रही है। ये अवसर सरकारी निजी और सामाजिक सभी क्षेत्रों में मौजूद है।

सरकारी क्षेत्र–

प्रशासनिक सेवा- यह सेवा भारत की सबसे प्रतिष्ठित सेवाओं में एक है, जिसके प्रति युवाओं का रुझान सबसे अधिक होता है। पद एवं वेतनमान दोनों स्तरों पर इस सेवा में उच्च स्तर तक पहुँचा जा सकता है। केन्द्रीय स्तर पर संघ लोक सेवा आयोग एंव राज्य स्तर पर राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा इसके लिए प्रतिवर्ष रिक्तियां निकाली जाती है। जो युवा संस्कृत से स्नातक, शास्त्री, आचार्य है, वे इसके लिए आवेदन कर सकते है।

सहायक व्याख्याता– देश भर के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों एवं राज्य विश्वविद्यालयों में संस्कृत का अध्यापन किया जाता है, जिसमें अध्यापन करने वाले सहायक व्याख्याताओं का चयन विश्वविद्यालय अथवा राज्य भर्ती बोर्ड के माध्यम से होता है. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं राज्य विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET/SLET) तथा कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति परीक्षा (JRF) उत्तीर्ण छात्र इसमें चयन के लिए पात्र होते हैं। 25 तथा 73 दो कोड संस्कृत विषय हेतु नेट परीक्षा का आयोजन करते हैं।

अनुसन्धान सहायक- संस्कृत में शोध कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सहायता के लिए सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र के शोध-संस्थान अपने यहाँ अनुसन्धान सहायकों की नियुक्ति करते हैं। इस पद के लिए अनिवार्य योग्यता संस्कृत विषय में परास्नातक अथवा विद्यावारिधि (Ph.D.) है। ये नियुक्तियाँ कहीं-कहीं पर वेतनमान और कहीं पर निश्चित मानदेय पर की जाती हैं।

प्रवक्ता अथावा पी.जी.टी.– देश भर में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप में संस्कृत का अध्यापन किया जाता है, जिसमें अध्यापन करने वाले प्रवक्ताओं का चयन केंद्र एवं राज्य भर्ती बोर्ड के माध्यम से होता है। संस्कृत विषय से परास्नातक (एम.ए.) परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थी इसके लिए पात्र होते हैं।

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक (टी.जी.टी.)– देश भर में माध्यमिक विद्यालयों में कहीं अनिवार्य और कहीं ऐच्छिक विषय के रूप में संस्कृत विषय का अध्यापन किया जाता है, जिसमें पढ़ाने वाले प्रशिक्षित अध्यापकों का चयन राज्य भर्ती बोर्ड अथवा केन्द्रीय विद्यालय संगठन, सी.बी.एस.ई. के माध्यम से होता है। संस्कृत से स्नातक परीक्षा (शास्त्री, बी.ए.) उत्तीर्ण और अध्यापन में प्रशिक्षण (बी.एड.) प्राप्त अभ्यर्थी इसके लिए पात्र होते हैं। इसके लिए समस्त राज्यों के शिक्षा विभाग

समय-समय पर इसकी सूचना प्रकाशित करते रहते हैं।

प्राथमिक अध्यापक– प्राथमिक स्तर पर अध्यापन के लिए देश भर में शिक्षकों की आवश्यकता रहती है, किसी राज्य में बारहवीं कक्षा तो कहीं स्नातक कक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थी शिक्षक-प्रशिक्षण के पात्र होते हैं। जिन छात्रों ने संस्कृत विषय के साथ विशारद या शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की है, वे भी इस प्रशिक्षण के लिए पात्र होते हैं।

आयुर्वेदिक चिकित्सक- वर्तमान में आयुर्वेदिक उपचार को काफी महत्व दिया जा रहा है। आयुर्वेदिक दवाई निर्माता कंपनियों की संख्या में इजाफा और विदेशों में भी इसका प्रचलन इस क्षेत्र में रोजगार के नये आयाम खोल रहा है। देश में प्रत्येक नागरिक अस्पताल में कम से कम एक आयुर्वेदिक चिकित्सक का होना अनिवार्य कर दिया गया है। आयुर्वेद विज्ञान एक अद्वितीय चिकित्सा पद्धति है जिससे न केवल रोग ठीक होता है बल्कि व्यक्ति का उपचार भी होता है। बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी (Bachelor of Ayurvedic Medicine and Surgery (B.A.M.S.) भारत में चिकित्सा की एक डिग्री है। यह १२वीं कक्षा के बाद साढ़े पाँच वर्ष की अवधि में पूरी की जाती है, जिसमें एक वर्ष का इंटर्नशिप भी सम्मिलित है। बीएएमएस डिग्रीधारी व्यक्ति भारत में कहीं भी प्रैक्टिस कर सकता है। इस पाठ्यक्रम में शरीररचना विज्ञान, शरीरक्रिया विज्ञान, चिकित्सा के सिद्धान्त, रोगों से बचाव तथा सामाजिक चिकित्सा, विषविज्ञान, फोरेंसिक चिकित्सा, कान-नाक-गले की चिकित्सा, आँख की चिकित्सा, शल्यक्रिया के सिद्धान्त आदि का पठन-पाठन होता ही है, इसके साथ ही आयुर्वेद की भी शिक्षा दी जाती है। भारत में आयुर्वेदिक शिक्षा सेंट्रल काउंसिल ऑफ इंडियन मेडिसिन (सीसीआईएम) द्वारा संचालित की जाती है। इसके लिए न्यूनतम योग्यता उच्च माध्यमिक (संस्कृत के साथ मान्य) या माध्यमिक (आयुर्वेदिक ग्रुप- भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और संस्कृत) किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से जो काउंसिल की शर्तें पूरी करता हो। बीएएमएस कोर्स के लिए न्यूनतम आयु 17 वर्ष है।

सेना में धर्मगुरु– भारतीय सेना में अधिकारी स्तर(JCO) का धर्मगुरु का पद होता है। जिन छात्रों ने संस्कृत विषय के साथ स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा निर्धारित शारीरिक मानदण्ड को पूरा करते हैं, वे इस परीक्षा में बैठने के लिए पात्र होते हैं। सेना के भर्ती बोर्ड द्वारा समय-समय पर इस पद हेतु रिक्तियां निकाली जाती हैं।

अनुवादक- सरकारी प्रतिष्ठान और सामाजिक क्षेत्र के कुछ उपक्रमों में अनुवादक का पद होता है, विभिन्न भाषाओं में आये पत्रों तथा अन्य साहित्य के अनुवाद कार्य के लिए इस पद पर नियुक्ति की जाती है। स्नातक स्तर पर संस्कृत का अध्ययन तथा अनुवाद में डिप्लोमा प्राप्त करने वाले छात्र इसमें आवेदन करने के लिए योग्य होते हैं। इस पद के लिए माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के बराबर ही वेतनमान निर्धारित होता है.

योग शिक्षक– आज दुनियाँ भर में जिस प्रकार स्वास्थ्य और योग के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, उससे योग प्रशिक्षकों की मांग भी दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। संस्कृत के जिन स्नातकों ने गुरुकुल में योग का अभ्यास किया है और योगशिक्षा में कोई उपाधि प्राप्त की है, वे इस क्षेत्र में आसानी से रोजगार पा सकते हैं। सरकारी विद्यालयों एवं गैर सरकारी उपक्रमों में योग प्रशिक्षितों के लिए पर्याप्त मात्रा में रिक्तियां निकलती रहती हैं। आजकल बहुराष्ट्रीय संस्थाएं भी योग प्रशिक्षकों की सेवाएँ लेने लगीं हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है। यह दिन वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है। पहली बार यह दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया, जिसकी पहल भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी जिसमें उन्होंने कहा-

"योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन-शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है। तो आयें एक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को गोद लेने की दिशा में काम करते हैं।" नरेंद्र मोदी, संयुक्त राष्ट्र महासभा

इसके बाद 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" घोषित किया गया। 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र में 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। प्रधानमंत्री मोदी के इस प्रस्ताव को 90 दिन के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है।

पत्रकार– पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है। भारत में यह फलता-फूलता उद्योग है, जो युवाओं के लिए न केवल रोजगार के अवसर उपलब्ध करता है, अपितु चुनौतीपूर्ण कार्यों के माध्यम से यश और प्रतिष्ठा भी प्रदान करता है। जिन छात्रों ने संस्कृत में स्नातक उपाधि प्राप्त की है तथा पत्रकारिता में प्रशिक्षण लिया है वे इस क्षेत्र में कार्य के लिए पात्र होते हैं। भाषा पर मजबूत पकड़ के कारण संस्कृत के छात्रों को अन्य प्रतियोगियों की अपेक्षा वरीयता प्राप्त होती है। सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में कार्य के अनेक अवसरों के साथ वेतन व सुविधाओं की यहाँ कोई सीमा नहीं होती है। डीडी न्यूज चैनल पर प्रतिदित संस्कृत वार्ता (समाचार) तथा विशेष कार्यक्रम वार्तावली का प्रसारण किया जाता है।

सम्पादक– किसी पुस्तक, पत्र–पत्रिका के प्रकाशन में सम्पादक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संस्कृत के साथ ही हिन्दीभाषी क्षेत्र में पत्र-पत्रिका या पुस्तकों के प्रकाशन संस्थानों में सम्पादक का कार्य करने के लिए संस्कृत के अध्येताओं को वरीयता दी जाती है। इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए सरकारी और निजी दोनों क्षेत्र में अवसर हैं, जहाँ वेतन और प्रतिष्ठा की लिए असीम संभावनाएं हैं। इलेक्ट्रोनिक मीडिया के आ जाने के बाद यह क्षेत्र बहुत ही आकर्षक और चुनौतीपूर्ण हो गया है। आज अगणित पाण्डुलिपियों पर कार्य करने के लिए संस्कृतज्ञों की आवश्यकता है।

लिपिक– सरकारी क्षेत्र (कर्मचारी चयन आयोग एवं रेलवे आदि) में लिपिक संवर्ग में नियुक्ति के लिए बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। संस्कृत के वे छात्र जिन्होंने बारहवीं या विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है, वे इस नौकरी के लिए आवेदन कर सकते हैं। पूरे वर्ष किसी न किसी विभाग में इस पद पर भर्ती के लिए रिक्तियां आती रहती हैं।

निजी एवं सामाजिक क्षेत्र–

लेखक– जिन छात्रों की साहित्य विमर्श एवं सृजन में अभिरुचि है, वे संस्कृत साहित्य से प्रेरणा लेकर लेखन कार्य कर सकते है। आजकल संस्कृत लेखन का क्षेत्र बहुत व्यापक है, जिसमें प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया, विज्ञापन, रेडियो, टेलीविज़न आदि के लिए लेखन भी आता है।

ज्योतिषी– ज्योतिषी के रुप में भी अपना कार्यालय खोलकर जीविकोपार्जन की अपार संभावनाएँ है। अथवा किसी संस्था के साथ भी जुड़ा जा सकता है।

वास्तु सलाहकार- वास्तु सलाहकार के रूप में रोजगार का एक नया विकल्प उपलब्ध है। संस्कृत के स्नातक वास्तुविज्ञान में दक्ष होकर रोजगार का अवसर सृजित कर सकते हैं। वास्तुशास्त्र में कोर्स सरकारी विश्विद्यालयों से भी किया जा सकता है।

पुरोहित– भारत जैसे देश में जन्म से लेकर मृत्यु तक होने वाले सोलह संस्कारों एवं अन्य उपासना अनुष्ठानों में पुरोहित की आवश्यकता पड़ती है। इसके विशेषज्ञ पुरोहित वर्ग के लिए रोजगार का यह एक अच्छा विकल्प है। इस क्षेत्र में भी आय अध्येता के ज्ञान और कौशल पर आश्रित है। आजकल विदेशों में भी पुरोहित की बहुत माँग है।

प्रवाचक- भारतीय दर्शन और लोक जीवन की बेहतर समझ रखने वाले संस्कृत के अध्येता इस क्षेत्र में आकर सामाजिक कल्याण के साथ आजीविका के लिए श्रेष्ठ अवसर पा सकते हैं। इस क्षेत्र में यश और प्रतिष्ठा के साथ जीवनवृत्ति की अपार सम्भावनाएं हैं।

शिक्षाशास्त्री- संस्कृत ग्रन्थों एवं भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन और उसमें निहित शैक्षिक मूल्यों की समझ रखने वाले अध्येता शैक्षिक क्षेत्र में उन्नयन का कार्य कर सकते है। नवीनतम शैक्षिक तकनीक और प्रविधियाँ के साथ बदलते समाज पर शोध और विमर्श करने वाले अध्येताओं को निजी क्षेत्र में बड़ी प्रतिष्ठा और आय के अवसर प्राप्त होते है। शैक्षिक एवं शोध संस्थानों के साथ-साथ अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए इनकी विशेष मांग रहती है।

दार्शनिक- दर्शन व्यक्ति से लेकर समाज और राष्ट्र तक की दिशा तय करता है। समाज में कुछ ऐसे प्रश्नों पर विमर्श करने, जिनके समाधान आम सामाजिक व्यवस्था और तन्त्र के पास नहीं होते हैं अथवा बदलते सामाजिक और वैश्विक परिदृश्य में परम्परागत मूल्यों के साथ नवीन जीवन दृष्टि का तालमेल बिठाने में दार्शनिकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए समाज में इन्हें सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त है। इनके लेखों और व्याख्यानों से प्राप्त होने वाली आय उच्चस्तरीय जीवनयापन के लिए पर्याप्त होती है। इसके अतिरिक्त ऐसे अध्येताओं को औपचारिक रूप से कुछ संस्थानों में सेवा करने के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

समाज सुधारक- सामाजिक समरसता की स्थापना और समाज को जोड़ने में समाज सेवकों की बड़ी भूमिका होती है। छोटे-बड़े आयोजन हों या आपदा, गरीबों की शिक्षा–दीक्षा, स्वास्थ्य हो या अन्य ऐसे कार्य जिस ओर सुविधा सम्पन्न वर्ग का ध्यान नहीं जाता है, उस ओर समाज सुधारक कार्य करते हैं। समकालीन अव्यवस्थाओं और बुराइयों से समाज को बचाकर रखना, सत्ता और धर्म की स्थापनाओं को समाज के निचले तबके तक पहुँचाने का कठिन कार्य भी इन्हीं समाज सुधारकों का है। समाज में ऐसे लोगों की बड़ी प्रतिष्ठा है। कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं ऐसे लोगों के कार्य की सराहना करतीं हैं और बड़े-बड़े पुरस्कारों से उनका सम्मान करती हैं। ऐसे लोगों की जीवनवृत्ति सञ्चालन का दायित्व समाज अथवा स्वयंसेवी संस्थाएं स्वयं अपने ऊपर ले लेती हैं।

नेता- छोटी से छोटी लोकतान्त्रिक इकाई से लेकर प्रदेश और राष्ट्र में नेतृत्व और व्यवस्था बनाने का गुरुतर दायित्व नेता के कन्धों पर होता है। नेता समाज या राष्ट्र को जिस दिशा की ओर ले जाना चाहता है, जनता उसी की ओर उन्मुख होकर चलने को तैयार हो जाती है। इसलिए किसी भी राष्ट्र में नेतृत्व का शिक्षित और संस्कारी होना अत्यावश्यक है। भारत जैसे बहुल जनसँख्या प्रधान और विशाल देश में केवल राजनीति में ही नहीं अपितु प्रत्येक क्षेत्र में कुशल नेतृत्व की आवश्यकता है। संस्कृत के अध्येताओं से ये अपेक्षा रहती है कि वे जिस क्षेत्र में जायेंगे वहाँ पूरी निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करेंगे, इसलिए उनके लिए यह क्षेत्र भी खुला हुआ है। इस क्षेत्र में पद, प्रतिष्ठा, चुनौतियाँ, अवसर और कार्यक्षेत्र की कोई सीमा नहीं हैं।

अन्वेषक– पूरे संसार में इतिहास आदि के ज्ञान का सबसे बड़ा स्रोत संस्कृत साहित्य है। वेद, पुराण, रामायण और महाभारत से लेकर संस्कृत के ललित साहित्य में तत्कालीन समाज एवं व्यवस्था का चित्रण है। इतिहास, भूगोल, शासन व्यवस्था, व्यापार, कृषि, जलवायु, नदियाँ, बादल, ग्रह-नक्षत्र सबके बारे में संस्कृत के विशाल साहित्य में चर्चा मिलती है। इन तत्वों के बारे में विमर्श करना तथा समय की आवश्यकता के अनुसार इनका विश्लेषण करना अन्वेषकों का कार्यक्षेत्र है। नासा जैसी संस्थाएं इस पर महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहीं है। भारत में भी ऐसे विद्वानों की आवश्कता है, जो तथ्यों को जुटाकर उनकी प्रामाणिकता पर कार्य करें।

उद्योगपति- भारत जैसे विशाल जनसंख्याँ वाले देश में कल कारखाने लगाना बहुत ही लाभ देने वाला रोजगार माना जाता है। संस्कृत का अध्येता उद्योग लगाकर कितना प्रगति कर सकता है, इसका अनुमान पतंजलि प्रतिष्ठान जैसे उपक्रमों से लगाया जा सकता है। खान-पान, स्वास्थ्य, सौन्दर्य प्रसाधन पूजा सामग्री आदि ऐसे अनेक क्षेत्र है, जिसमें संस्कृत का ज्ञान सहायता करता है। भावनात्मक रूप से भी लोग इस क्षेत्र में आदर प्राप्त विद्वानों के उत्पाद प्रयोग करने में आगे देखे जाते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई उद्योग-व्यापार नहीं है, जहाँ संस्कृत अध्येता के लिए अवसर न हो।

भारत स्थित संस्कृत विश्वविद्यालयों की सूची-

1. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी- 1791
2. सद्विद्या पाठशाला, मैसूर- 1876
3. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा- 1961
4. राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति- 1962
5. श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली- 1962
6. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली- 1970
7. श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी- 1981
8. नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय, नेपाल- 1986
9. श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालेडी- 1993
10. कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक- 1997
11. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर- 2001
12. श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल- 2005
13. महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन- 2008
14. कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बंगलुरु- 2011
15. महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल- 2018
16. बाबा वैद्यनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, देवघर (प्रस्तावित)- 2020

हिंदी खंड

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

विषय सूची

संपादकीय .... डॉ. वेद प्रकाश एवं डॉ. चैनसिंह मीना........ 49

पद्य खंड 50

1. ढूँढ़ लो खुद को........................ सोनिया शर्मा................ 51
2. हाँ! मैंने देखा .... सोनिया शर्मा................ 51
3. आजादी के सिपाही .... प्रखर शुक्ला................ 52
4. पनाह ली........................ सचिन गुप्ता................ 52
5. फौजी की माँ........................ रितेश कुमार पांडे........ 53
6. माँ .... रितेश कुमार पांडे........ 53
7. पर्यावरण : संरक्षण........................ अर्पित गुप्ता................ 54
8. कैडेट : एन.सी.सी........................ अर्पित गुप्ता................ 54
9. 'मेरा अनुभव : एक समझ'......... अर्पित गुप्ता................ 55
10. ऊँचे अरमान........................ कोमल रैकवार................ 56
11. मैंने देखा है उसे........................ चंदन................ 57
12. पर्यावरण........................ हिना................ 58
13. तुम चलो तो सही........................ हिना................ 58
14. हमारा हिंदुस्तान........................ सत्यम यादव................ 59
15. मॉडल जमाना........................ किशन वीर................ 59
16. संस्थान गीत........................ वर्षा मीना................ 60
17. लिखना क्या है?........................ आकांक्षा शुक्ल................ 61
18. आतंक .... शुभम शर्मा................ 62
19. अमर जवान........................ शुभम शर्मा................ 62
20. कॉलेज स्टूडेंट .... शुभम शर्मा................ 62
21. हारी नहीं हूँ मैं........................ शालू त्रिपाठी................ 63
22. कृष्णामय........................ सौरभ सक्सेना................ 63
23. कश्मीर की इस घाटी में .... सपना बडाना................ 64
24. वो गुरु हैं........................ सपना बडाना................ 64
25. मेरी कविता, मेरा सहारा........................ सपना बडाना................ 64
26. मेरे कन्हैया........................ उपासना................ 65
27. मुखौटा .... गौरव त्रिपाठी................ 65
28. सफलता .... रीटा................ 66
29. कोई युद्ध अंतिम नहीं होता........ रीटा................ 66
30. जिंदगी बचाओ........................ निशा................ 67
31. प्लास्टिक एवं प्रदूषण........................ दिव्यांशु शर्मा................ 68
32. संविधान........................ टोनी टेकचन्द................ 68
33. धर्म एकता गीत .... शाज़िया लारी 69
34. भाषाओं से मोहब्बत........................ शाज़िया लारी 69
35. भारतीय सामाजिक दर्शन........................ शाज़िया लारी................ 69
36. काँटों से भी प्यार करो........................ शाज़िया लारी................ 69
37. पेड़ .... मनीषा................ 70
38. उम्मीद .... अमर जीत वर्मा................ 70
39. शैतानी .... प्रेम राजपूत................ 71
40. सोचता हूँ कि........................ प्रेम राजपूत................ 71
41. भारत की गाथा........................ सचिन................ 72
42. 'लड़कियों की जिंदगी आसान नहीं होती' .... सौरव................ 75
43. उस छोटी–सी जगह में .... मोहित राठौर................ 75
44. अड़े रहना, खड़े रहना........................ दिव्या................ 76
45. भारत माता और राखी........................ अरूण पोसवाल................ 76
46. ओ साँवरे!........................ उज्जवल गुप्ता................ 77
47. मेरी बहना!........................ उज्जवल गुप्ता................ 77
48. मेरा फौजी महान........................ देवकी................ 78
49. दुनिया .... गुलफसा................ 78
50. परेशानियां........................ गुलफसा................ 78
51. बेटी .... दीपिका................ 79
52. कोशिश कर........................ दीपिका................ 79
53. ऐ वक्त जरा धीरे चल........................ शशि................ 80
54. मदिरा पान........................ शशि................ 80
55. आओ फिर एक बार अजनबी बन जाएँ........................ शशि................ 80

गद्य खंड 81

56. हिमाचल संदेश........................ सिमरन................ 82
57. क्लब : एक प्रयास........................ वर्षा मीना................ 83
58. एक महान व्यक्तित्व : लाल बहादुर शास्त्री........................ वर्षा मीना................ 84
59. आपसी प्रेम........................ वर्षा मीना................ 84
60. लज्जा आती है .... उपासना................ 85
61. माँ–बेटे की कहानी........................ जनू कुमार................ 85
62. पुस्तक समीक्षा........................ डॉ. रजनी जगोटा........ 86
63. गाँधी का स्वराज – 'साबरमती अभी दूर है... .... डॉ. कुसुमलता चड्ढा.. 87
64. एक थी स्टाफ एसोसिएशन ..... डॉ. बन्ना राम मीना...... 92
65. दिवंगत साहित्यकारों को विनम्र श्रद्धांजलि .... डॉ. संदीप कुमार रंजन..... 95
66. भारतीय शौर्य का प्रतीक – राष्ट्रीय युद्ध स्मारक........................ श्रीमती शीतल कुमारी.. 97

संपादकीय

"उठो, जागो और लक्ष्य पूरा होने तक मत रुको।"

सहृदयता और संवेदनशीलता सृजनात्मकता की पहली कसौटी होती है। दूसरे की वेदना के साथ खुद का तादात्मय स्थापित कर लेना ही संवेदना है, जिसके माध्यम से साहित्य की कोंपलें फूटती हैं। तभी तो छायावाद के प्रसिद्ध कवि सुमित्रा नन्दन पंत ने लिखा है– 'वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान, निकलकर नयनों से चुपचाप वही होगी कविता अनजान'। साहित्य व्यक्ति को अपने अहं से दूर करता है और उसे विश्व मानवता से जोड़ देता है जो भारतीय सनातन परंपरा में प्राचीन काल से व्याप्त रहा है। भारतीय काव्य–परंपरा की सर्वप्रथम शुरुआत वैदिक ऋचाओं से होती है जो हजारों वर्ष की लंबी यात्रा करते हुए आज अनेक संदर्भों, आंदोलनों और विचारों से जुड़ती हुई विश्व–मानवता को विस्तृत आयाम प्रदान कर रही है। आचार्य शुक्ल जिस कविता साधना को 'कर्मयोग' और 'ज्ञानयोग' के समकक्ष मानते हैं उसकी पृष्ठभूमि में गीता का उपदेश अंतर्निहित है।

राष्ट्र को मजबूती प्रदान करने में युवाओं की मुख्य भूमिका होती है। जब संवेदनशील युवा नैतिकता और आध्यात्मिकता को अपने जीवन में अपनाकर राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देंगे तभी हमारा देश फिर से अपने खोए हुए 'विश्व–गुरु' के गौरव को प्राप्त करने में सफल हो पाएगा। और इसके लिए स्वामी विवेकानंद के विचारों को अपनाकर हम आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। विवेकानंद जी ने कहा था कि 'जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते हैं तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।' स्वामी विवेकानंद हमेशा से भारतीय युवाओं के प्रेरणा स्रोत रहे हैं और आगे भी रहेंगे। उन्होंने कहा था कि यह कभी मत कहो कि 'मैं नहीं कर सकता', क्योंकि आप अनंत हैं। आप कुछ भी कर सकते हैं। उठो, जागो और लक्ष्य पूरा होने तक मत रुको। स्वामी विवेकानंद कहते है– 'एक रास्ता खोजो। उस पर विचार करो। उस विचार को अपना जीवन बना लो। उसके बारे में सोचो। उसका सपना देखो, उस विचार पर जियो। मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों, आपके शरीर के प्रत्येक भाग को उस विचार से भर दो। और किसी अन्य विचार को जगह मत दो। सफलता का यही रास्ता है'। स्वामी विवेकानंद हमें कर्तव्य के लिए प्रेरित करते है, जोखिम उठाने के लिए प्रेरित करते है। उनका यह कथन उस हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत हो सकता है जिसने जीवन में हारना नहीं सीखा और जो अपने लक्ष्य को अपनी सूझबूझ और परिश्रम से पाना चाहते हैं। 'आप जोखिम लेने से भयभीत न हो, यदि आप जीतते हैं, तो आप नेतृत्व करते है, और यदि हारते है, तो आप दूसरों का मार्गदर्शन कर सकते हैं'। निःसन्देह स्वामी विवेकानंद के विचारों पर चलकर ही हम 21वीं सदी के नायकत्व को भारत की ओर मोड़ सकते हैं।

'अंकुर' का यह अंक 'नवांकुरों' की रचनाधर्मिता से लबालब है। इनकी रचनाओं का कैनवास बहुत विस्तृत है जिसमें सहृदयता, मानवता, राष्ट्रप्रेम के साथ–साथ समकालीन तमाम समस्याओं की अनुगूँजें सुनाई पड़ती हैं। भाषा और शिल्प के स्तर पर भले ही इसमें थोड़ा कच्चापन झलक जाए लेकिन भाव में 'अनूठापन' सर्वत्र व्याप्त है। आशा है साहित्य के ये **'अंकुर'** भविष्य में पल्लवित–पुष्पित होकर विशाल वटवृक्ष का रूप धारण करेंगे।

शुभास्ते सन्तु पन्थानः!

डॉ. वेद प्रकाश
डॉ. चैनसिंह मीना

पद्य खंड

'अपने में सब कुछ भर
कैसे व्यक्ति विकास करेगा,
यह एकांत स्वार्थ भीषण है
अपना नाश करेगा।
औरों को हँसता देखो
मनु–हँसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सब को सुखी बनाओ।'

कामायनी, जयशंकर प्रसाद

"अधिकार खो कर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म हैय
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है"

****

"निज शत्रु का साहस कभी बढ़ने न देना चाहिए,
बदला समर में वैरियों से शीघ्र लेना चाहिए"

जयद्रथ वध, मैथिलीशरण गुप्त

सोनिया शर्मा
बी. ए. (प्रोग्राम)

ढूँढ़ लो खुद को

ढूँढ़ लो खुद को
किनारों में बहारों में।
फिर पानी मिले ना मिले?
हम भी बह जाऐंगे।

ढूँढ़ लो खुद को
अँधेरों में, गलियारों में।
फिर रास्ता मिले ना मिले?
हम भी 'घुमाव' बन जायेगें।

ढूँढ़ लो खुद को
लताओं में लापताओं में।
फिर मंजिल मिले ना मिले?
हम भी बिंदू पर जायेगें।

ढूँढ़ लो खुद को,
पन्नों में, उन रंगों में।
फिर वर्णो (अक्षर) के वर्ण (रंग) मिले ना मिले?
हम भी विद्वान कहलायेंगे।

हाँ! मैंने देखा

उस राह को पनाह दो,
रास्ता दो
कभी आँखे किसी को हाथों से टटोलती हैं?
हाँ! मैंने देखा!
मैंने देखा, मैंने जाना
जीवन का वह राज पुराना।
वो आँखों से बोले
क्या है तुम्हारा ठिकाना।
नयन बंद है,
पर आँखें हैं खुलीं।
उस छाँव पर भी,
धूप है उजली।
मैंने देखा, मैंने जाना,
जीवन का वह राज पुराना।
पैंरो से नापे, हाथों से टटोले,
कितनी बेसब्री।
हाँ, शायद छाँव को धूप से धोले।।
मैंने देखा।

प्रखर शुक्ला
बी. एससी. (गणित)
तृतीय वर्ष

आजादी के सिपाही

नमन है कोटि बार,
तिरंगे की शान को।
तिरंगे के लिए दी गई,
हर एक जान को।।
तुमने जो दिया है,
वो सदा याद रहेगा।
जी भर के गायेंगे,
तुम्हारे योगदान को।।
अपनी जान को ले हाथ में
सबको हिला दिया।
स्वदेशी का देकर नारा,
यूँ चरखा चला दिया।।
दौड़ भागकर के तुमने,
जो सेना बनाई थी।
टुकड़ों में बँटे खण्ड से,
भारत बना दिया।।

सचिन गुप्ता
बी. एससी. (ऑनर्स) कम्प्यूटर सांइस
द्वितीय वर्ष

पनाह ली

रिश्ता सिर्फ दोस्ती का था
मोहब्बत ने ना जाने कब पनाह ली।
उसकी बातों पर सिर्फ हँसना आता था
मुस्कुराहट ने ना जाने कब पनाह ली।
उससे बदतमीजी करना आदत थी मेरी
तहजीब ने ना जाने कब पनाह ली।
तेरी जुल्फों को बिखेरना हसरत थी मेरी
उन्हें समेटने की चाहत ने ना जाने कब पनाह ली।
पहले सिर्फ मिलने के ख्याल थे
दूरियों ने ना जाने कब पनाह ली।

पुस्तकें वे साधन हैं, जिनके माध्यम से हम विभिन्न
संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं।
–सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन

रितेश कुमार पांडे
बी.ए. (आनर्स) हिंदी
प्रथम वर्ष

फौजी की माँ

हाँ वह माँ नहीं रोती होगी
शायद रातों के अँधेरे में रोती होगी
वह माँ खुश होती हैं जिसका बेटा होता है मौज में
पर वह माँ कैसे हँसे, जिसका बेटा है फौज में
सबकी माँ देखती हैं सीरियल को
मगर फौजी की माँ देखती है न्यूज को
क्योंकि वो नहीं चाहती कि किसी न्यूज में,
उसका बेटा हो
सौ गम छुपाती है फौजी की माँ
अपना दर्द किसी को न दिखाती है वो माँ
जब देखती है सबको अपने बेटे के साथ
बस थोड़ा सा सहम जाती है वो माँ
उसकी घबराहट का कारण है बहुत बड़ा
शायद उसका बेटा खड़ा है जहाँ,
हर कोई नहीं रह सकता खड़ा
वह दिल में अपना देश लिए रखता है और
पर्स में अपना परिवार
क्योंकि हर किसी के बस की बात नहीं है
कि अकेला करोड़ों जिंदगियों की जिम्मेदारी ले रखी हो
तो ऐसा क्यों होता है कि वह खुशियों में अपनी
माँ के साथ न हो, और
वह दूर रहता है अपने परिवार से हमारे लिए
तो ये हो ही नहीं सकता, कि किसी बडे दिन
उस फौजी की बात न हो।

माँ

सदका भी दे दिया
और नजर भी उतार दी
दौलत, शौहरत, सुकून और चैन की नींद
सब मुझ पे वार दी
मैंने कल शाम बस यूँ ही कहा
कि मेरी तबियत खराब है
"माँ" ने पूरी रात
दुआओ में गुजार दी
खुशियाँ अपनी छोड़, पहले हमको खुशियाँ देती है
जन्नत की आशाएँ, कदमों में उनके होती है
एक बार को खुद भूखी रह ले,
पर हमको न भूखा रखती है
कोई और नहीं "माँ" वही होती है
जिससे कर सकते हैं दिल की बात
पर वह कभी हमसे नाराज़ नहीं होती है
ज़िंदगी के हर मोड पर जो खड़ी रही
कोई और नहीं "माँ" होती है
उसके आँचल में ममता का सागर है
जिसमें हमारी आशाएँ सोया करती है
जाने कैसे-कैसे करती है पूरे हमारे सपने
जिससे हमारे चेहरे पर खुशी रहा करती है
हर समय में, हर परिस्थिति में
हमारा साथ निभाती है
कोई और नहीं वो "माँ" कहलाती है।

मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है।
जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह स्वदेश भक्त
कहलाने लायक नहीं।

-महात्मा गाँधी

अर्पित गुप्ता
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
द्वितीय वर्ष

पर्यावरण : संरक्षण

प्रकृति का यह उपहार,
जन जीवन का अनमोल उपहार ।।
पर्यावरण का सक्रिय रूप,
जन जीवन का बनाता सुखद प्रारूप।।

वो ताजगी का पल, बहता-बहता
बताता भविष्य का कल।
प्रकृति का यह खूबसूरत अहसास,
प्रकृति की रंगत को करता
है कुछ खास।।

पेड़-पौधों, पर्वतों-पठारों, तालाबों-
नदियों, वन्य प्राणियों का
अदभुत जाल,
मानव जीवन को विकसित करता
बेमिसाल।।

पर्यावरण को संरक्षित कर करो उद्धार,
मानव जीवन का होगा समाहार।
यही हमारा जीवन है, यही
हमारा संसाधन, भण्डार,
इसी से हम जीवंत है, इसी
से बलवंत है, पर ना पड़ने देंगे
कभी ना इस पर बुरा प्रहार।।

पर्यावरण राष्ट्र का स्वाभिमान
और जान है,
यह आवश्यकताओं की पूर्ति की
दुकान है।
फल, सब्जियाँ, पेड़-पौधे जीवन
को खुशहाल बनाते हैं,
प्रकृति माता को वन्यप्राणी सुंदर
सजाते हैं।।

पर्यावरण की रक्षा करना हमारा
धर्म है,
यह, प्रत्येक नागरिक का सात्विक
कर्म है।
खेल-कूद का अदुभुत मंचन है,
यह जनता का अभिनंदन है।।

इसकी प्राकृतिक खूबसूरती की
रंगत बनाए रखना है,
विश्व को ऐसे ही सजाए
रखना है।

पेड़-पौधों का सृजन, जल
का आवरण
तभी तो कहलाएगा हमारा
राष्ट्र संपूर्ण पर्यावरण।।

कैडेट : एन.सी.सी.

एन.सी.सी. जवानों का पैगाम है
देश की सैन्य सेवा की जान है।।

मित्रों की मित्रता अनौखी होती है।।
हर दोस्त की यारी अटूट प्रतीत
होती।।

कैडेटों का रगड़ा और पगड़ा मित्रों
के साथ-साथ झेलते हैं,
खेल ही खेल में कठिनाईयों का
रूख खुशी-खुशी बाँट कर लेते हैं।।

डि: आई की जर्मन चाल,
हमारा करती है बुरा हाल।।
फिर भी चेहरे पर खुशहाली
झलकती है।।
हर कैडेट के दिल में देश भक्ति
की भावना धड़कती है।।

चलते-चलते परेड बीत जाती है,
यहीं से हर कैडेट की चाल फौजीनुमा हो जाती है।।
हर हर्षित फौजी की जान
में जान आती है
यह एन.सी.सी एक दिन
प्रत्येक खाकी की कीमत का
दाम बताती है।।
जोश और जुनुन का दीदार है,
प्रत्येक नौजवान का प्रत्याहार है।।

यही प्रत्येक खाकी वर्दी उसे
सम्मान प्राप्त करवाती है।।

अपने भाग्य के बजाय अपनी मज़बूती पर विश्वास करो।

–डॉ. भीमराव अम्बेडकर

"मेरा अनुभव : एक समझ"

जिंदगी जिया हूँ दो सिरों से,
कभी भी नहीं डरा किसी जीरो से।।

पहले तो सत्कार हुआ किताबी
कीडों से,
होशियार, और गँवार शब्दों के
दो सिरों से।।

समझा और परखा आजादी के
रंगीन दोस्तनुमा हीरो से।।

गँवार का नाम शिक्षक तंज कसके
लेता था,
हमारा अपना नियम भी शिक्षक को
फुल असुविधा देना था।।

परीक्षाओं में ध्यान अक्सर देता था,
खेल-खेल में अंग्रेंजी शब्द जमके दोस्तों
की खबर लेता था।।

यह हमेशा अनुभव रहा, किसी का
गुस्सा तो किसी का मज़ाक सहा,
दोस्तों का प्रोत्साहन परीक्षा में
फेल होने से बढ़कर रहा।।

पाँच बार फेल होकर भी कभी
हमने मुड़कर, दबाव ना देखा,

शिक्षक की सीख, कहो या डाँट,
कभी हाथ अपमान की नजरों से
ना सेका।।
दोस्तों जीवन के रंग में
कभी ऊपर नीचे का भेद मत
करना क्योंकि यही किसी
भी व्यक्ति को डुबाने में सहायक
है,
नंबरों का खेल ही इनका बेसुरा
गायक है।।

अंक केवल अव्वल करते हैं,
कला जीवन पर्याप्त व्यक्ति को सबल
करती है।।

जीवन जीना है तो कठिनाईयाँ झेलनी पड़ेंगी,
कठिन रास्तों को जीतने के लिए मेहनत
की होली खेलनी पड़ेगी।।

विद्यार्थी का जीवन परखने जैसा
होता है, जिसमें वह विकसित
होता है,
अपने तानों की धुन से जीवन
सुखद यात्रा की ओर सुनिश्चित होता है।।

दो पल की जिदंगी है
कुछ कर गुजर के खत्म करो,
किसी का क्या जाता है
लोगों को समझाने का उद्धम
करो।।

नुकसान से निपटने में सबसे जरूरी चीज़ है
उससे मिलने वाले सबक को ना भूलना, वह आपको सही मायने
में विजेता बनाता है।

–स्वामी विवेकानन्द

कोमल रैकवार
बी. ए. (प्रोग्राम)
प्रथम वर्ष

ऊँचे अरमान

बचपन से रोज़ वो दिन देखा है,
उठते, जागते-सोते बस उसकी चाह है,
दिल में भर कर उन सपनों को,
बस हासिल करना सीखा है।

सर्दी-गर्मी, धूप-छाँव,
किताबों में ही झाँका है,
दूसरों को सोता देख
बस रात भर खुद को जगाया है।

मेरे सपने केवल मेरे नहीं
सभी से जुड़े हैं, ऐसा लगता है,
इन्हीं को पूरा करने के लिए,
अँधेरों में भी पढ़ना सीखा है।

जिम्मेदारियाँ तो है बहुत,
पर सब कुछ पिता ने मुझ पर लुटाया है,
खून-पसीना बहाकर, रोज बस
मुझको इस मुकाम तक पहुँचाया है।

कहते हैं सब, सपने सच जरूर होते हैं,
बस मुझे ये तो पता नहीं,
लेकिन ऊँचे तो है मेरे अरमान,
जो होंगे एक दिन ज़रूर साकार।

पल-पल जिदंगी में,
रोज़ कुछ खोया, कुछ पाया है,
जाने-अनजाने में फुरसत से तो,
कभी खुद न आजमाया है।

समय की पाबंद होकर,
बस समय की कीमत पहचानी है,
बस कुछ तो करने की ठानी है।

दु:ख में सुख में बस खुद को खोजा,
खोज करके वो बस इतिहास रच दी,
नए भारत की शान बन गई।

टूटे पंखों के साथ भी,
मुडने की चाह है मन में,
सपने बहुत हैं पर,
पूरा करने का अरमान है मन में।।

आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते, पर
आप अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित
रूप से आपकी आदतें आपका फ्यूचर बदल देगीं।

-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

चंदन
बी.ए. (ऑनर्स) इतिहास
द्वितीय वर्ष

मैंने देखा है उसे

समाज के इस मोड़ से लड़ते।
अपनी आखों को हाथों से मलते।
वीरानी रात में, बिना किसी बसेरे के।
तलाश रहा था तो कुछ, रात के अंधेरे में।
मन को मार कर, जीते देखा है उसे।
हाँ मैंने देखा है उसे।
उसकी आँखों में एक आशा थी।
कुछ पाने की अभिलाषा थी।
भूख उसके मन को जलाती।
खाली पेट के लिए, वो लोगों के सामने हाथ फैलाता।
एक दृश्य देख में हुआ अचंभित।
जिसने कर दिया मुझे, इस समाज से परिचित।
जिसे जरूरत कुछ भी नहीं।
उसे चढ़ाते छप्पन (56) भोग
भूख से तडप रहा था वो।
कैसे मूर्ख हैं ये समाज के लोग।
सर झुका कर रास्ते पर, चलते देखा है उसे।
हाँ मैंने देखा है उसे।
अपनी किस्मत को कोसता।
भूखे पेट को पकड़ कर सोचता।
कहीं से कुछ निवाला मिल जाए।
काश कोई जिंदा दिलवाला मिल जाए।
इस समाज में बड़े दिखावे।
पत्थर को दूध पिलाते हैं।
जब मिल जाए उसका सच्चा हकदार।
उसे दुतकार के भगाते हैं।
आधा खाते आधा फेंकते।
मिल जाता है अधिक जिसे।
उस फेंके हुए को खाकर।
जाते देखा है मैंने उसे।
हाँ मैंने देखा है उसे।
हुक-दुक (रेल) में बचपन बीत रहा
बैठे लोगों का मन ठीठ रहा।
नन्हीं-से हाथों में लकीरे समेटे।
फटे पुराने से वस्त्र लपेटे
हालातों ने की उस पर कैसी चोट।
थे बिखरे बाल और सूखे होंठ।
पर उसके ह्रदय में एक संतोष था
कुछ ना पाकर भी तो मुस्कुरा रहीं,
उसकी प्यारी मुस्कान में, सच में कुछ विशेष था।
जिम्मेदारियों के बोझ से दबते देखा है उसे।
हाँ मैंने देखा है उसे
अतीत में दबे उन मजारों को।
तुम चादर से कब तक और दबाओगे?
क्या सच में जरूरत है उसे? इन चारों की।
या
क्या तुम ठंड से उसे बचाआगे?
क्या कभी गौर किया उन लोगों पर
जो तुम्हारे ईश्वर के भरोसे बैठे हैं।
ठंड की मार को झेल-झेलकर
वे खुद के पैरों को मोड़ बैठे हैं।
सनसनाती तीखी सर्द हवाओं में
ठंड से सिसकते देखा है उसे।
हाँ मैंने देखा है उसे।
जिसने इस जहां को रोशन किया
क्या तुम उसके घर को रोशन कर पाओगे?
तुम उजाले में रहने वाले
अंधेरे के डर को कैसे समझ पाओगे?
तुम हिन्दू-मुस्लिम करने वाले
क्या इन मुद्दों पर भी गौर फरमाओगे?
तुम तो मोहरे बने हो सियासत के।
सच्चाई से खुद को वाकिफ कैसे कराओगे?
सूख गए वो आँसू उसके
जो उसके आँखों से टपके थे।
अंधविश्वास के चंगुल में फँस कर
आज तक तुम भटके हो जैसे कल तक तुम भटके थे।
पर फिर भी।
मन में संतोष के भाव को लेकर।
आगे बढ़ते देखा है उसे।
हाँ मैंने देखा है उसे
हाँ मैंने देखा है उसे............

हिना
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी
तृतीय वर्ष

पर्यावरण

इंसान की सारी माया
पर्यावरण पर संकट लाया
देश को विकसित बनाया
पर्यावरण को खूब सताया

पेड़ पौधे नष्ट हो गए
पेड़ काट इंसान मस्त हो गए
अपने स्वार्थ को दिया बढ़ावा
पर्यावरण को खूब सताया

पंछी सारे लुप्त हो गए
इंसान सारे, सुस्त हो गए
इमारतें तो बहुत बनाया
पर्यावरण को खूब सताया

प्रदूषण को इतना बढ़ाया
पर्यावरण प्रदूषण की चपेट में आया
इंसानों को फिर भी समझ ना आया
पर्यावरण को खूब सताया

पर्यावरण की दुहाई
सुन लो पेड़ काटने वाले कसाई
पेड़ लगाओ, देश बचाओ
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ

तुम चलो तो सही

राह में मुश्किल होगी हजार
तुम दो कदम बढ़ाओ तो सही
हो जाएगा हर सपना साकार
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

मुश्किल है पर इतनी भी नहीं
कि तू कर ना सके
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं
कि तू पा ना सके
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा।
तुम्हारा भी सत्कार होगा
तुम कुछ लिखो तो सही
तुम कुछ आगे पढ़ो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

सपनों के सागर में कब तक गोते लगाते रहोगे
तुम एक राह चुनो तो सही
तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे
जिंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे
गिरते पड़ते संभल जाओगे
फिर एक बार तुम जीत जाओगे
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

सत्यम यादव
बी. ए. (ऑनर्स) राजनीति शास्त्र
प्रथम वर्ष

हमारा हिंदुस्तान

शक्तिशाली इन रंगों में बह रहा फौलाद है।
शक्ति ही संकल्प अपना शक्ति ही बुनियाद है।
शक्ति है, और सामर्थ्य जिसमें वह देश हमारा हिन्दुस्तान है।
धरती देखी अंबर देखा-देखा सारा जहान है
काशी, मथुरा, अमृतसर, और जहाँ चार-धाम है।
सबसे प्यारा वह देश हमारा हिन्दुस्तान है।
खेतों में किसान और सीमा पर जवान है
जिनका हमारा देश करता पूरा सम्मान है।
जहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई मिलकर त्यौहार मनाते हैं।
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा मिलकर गीत गाते हैं।
बहु संस्कृतियों वाला वह देश हमारा हिन्दुस्तान है।
हिमालय जिसका मुकुट और हिंद महासागर जिसका मान है।
राम श्री कृष्ण हनुमान जी का जहाँ जन्म स्थान है।
सबसे प्यारा वह देश हमारा हिन्दुस्तान है।
गाँधी आजाद भगतसिंह जैसे वीरों की जो भूमि है।
जहाँ के बजते गानों पर दुनिया सारी झूमी है।
जहाँ लक्ष्मीबाई की शक्ति और मीरा बाई की भक्ति है।
महाराणा और शिवाजी से जिसका स्वर्णिम इतिहास है।
सबसे प्यारा वह देश हमारा हिन्दुस्तान है।
जहाँ मेहमानों को भगवान माना जाता है
जहाँ गाय और नदियों को भगवान कहा जाता है
ऐसी सस्कृतियों और सभ्यताओं वाला
वह देश हमारा हिन्दुस्तान है।

किशन वीर
बीएससी (ऑनर्स) गणित
द्वितीय वर्ष

मॉडल जमाना

दो पन्नों की कॉपी लेकर कॉलेज पढ़ने जाते हैं।
ये ठाठ वाट उनके हैं, जो स्टूडैन्ट कहलाते हैं।।
माता-पिता के पैसे फूँके, शौक नये फरमाते हैं।
खा-पीकर पान-सिगरेट तम्बाकू, सड़कों पर शोर मचाते हैं।।
पढ़ा-लिखा नहीं खाक और पास की आस लगाते हैं।
रिजल्ट आउट होते ही वो, घर छोड़ भाग जाते हैं।।
तब होकर उदास माँ-बाप, पेपर में छपवाते हैं।
तुम जहाँ कहीं भी हो बेटा, हम तुमको पास बुलाते हैं।।
एडमिशन में चलता है, कम्पटीशन का जोर।
कम्पटीशन नहीं है अब, डोनेशन का शोर।।
यूनिवर्सिटी में लगती हैं, डिग्रियों की सेल।
पाँच हजार में फर्स्ट, तीन हजार में सैकेण्ड और मुफ्त में फेल।।
कॉलेज पढ़ने का टाईम नहीं, परीक्षा में मॉडल अपनाते हैं।
मॉडल शिक्षा, मॉडल स्टूडैंट, फिर मॉडल नम्बर आते हैं।।

हम भारतीयों के आभारी हैं, जिन्होनें हमें गिनना
सिखाया जिसके बिना किसी भी तरह की
वैज्ञानिक खोज नहीं हो पाती।

-अल्बर्ट आइन्सटीन

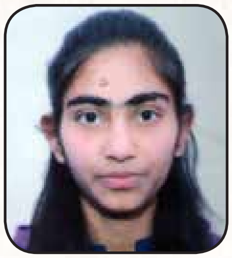

वर्षा मीना
बी.ए. (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

संस्थान गीत

वह शक्ति हमें दो दयानिधि कर्त्तव्य मार्ग पर डट जायें।
पर सेवा पर उपकार में हम निज जीवन सफल बना जायें।
रेलों के संचालन में हम निज क्षमता का उपयोग करें।
जो लक्ष्य हमारे हैं प्रभु जी उनके हित में कुछ योग करें।
सुरक्षा हित में असुरक्षित विधियों से निश दिन दूर रहें।
ग्राहक संतुष्टि के हित में मृदु वाणी का रस बरसायें।
विश्वास प्रबंधन में करके इस पहिए को गतिमान रखो।
संरक्षित कार्य प्रणाली से हम मिलकर इसकी शान रखें।
नियमों आदेशों का हमको नित ध्यान रहे अभिधा रहे ।
जिस संस्थान में आये है उसकी गरिमा का मान रहे।
हम राष्ट्र प्रेम का भाव लिये सेवा में रेल की जुट जायें।
जिस अनुशासन में ढले यहाँ की जुट जाये।
जिस अनुशासन में ढले यहाँ उससे किंचित न हट पाये।।
वह शक्ति हमें दो दयानिधि कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाये।
पर सेवा पर उपकार में हम निज जीवन सफल बना जायें।।

नोटः- ये गीत हमारे भारतीय रेलवे कर्मचारियों के प्रशिक्षण द्वारा गाया जाने वाला गीत हैं ताकि रेल कर्मचारियों को सहानुभूति मिले।

जीवन सीखने का नाम है। हम सब आखिरी साँस
तक अगर चाहें तो कुछ-न-कुछ सीख सकते हैं।
-रामकृष्ण परमहंस

आकांक्षा शुक्ल
बी.ए. (प्रो.), प्रथम वर्ष

लिखना क्या है?

लिखूँ क्या अब मैं? लिखना क्या चाहती हूँ
पता नहीं मुझे खुद को कि बताना क्या चाहती हूँ।
मंजिल भी नहीं मिलती, ना मिले कभी रास्ता
दर-दर की ठोकरें भी बढ़ा देती हैं फासला।
अनजान इस दुनिया में, बस माँ-बाप ही हैं
जो अनपढ़ होकर भी सब सिखा देते हैं।
जिंदगी तो है बहुत बड़ी, जहाँ काँटे हैं कम नहीं
करने का कुछ सोचो तो, शब्दों में वो दम नहीं।
आज भी देखती हूँ मैं, उन लोगों को जहाँ
उनकी दुनिया भी किसी बेबस से तंग नहीं।
पढ़ो मत! बस समझो, मेरे एक अल्फाज को
जो झकझोंर कर पुकारती है, हर नई बात को।
वो ताकत कहाँ आज जो पहले हुआ करती थी
यह तो घोर कलयुग है, बेईमानों के सर ताज है
और बाकी सब जनता तो, खौफ़ से ही नाराज़ है।
बात बनने की जगह और भी मुड़ती चली गई
चूड़ी इतनी पड़ गई कि, समझने की जगह
और भी बात कसती व बढ़ती चली गई।
सोचा तो है कि कुछ करना है, पर इस देश का क्या
जहाँ हजारों घुसपैठियों के साथ, ये आतंकवादी हैं।
देश द्रोहियों को तो और भी जलील करना चाहिए
शब्दों से नहीं बल्कि, तलवारों से ही मारना चाहिए।
सत्य को, करेले का रस समझकर ही पी लिया करें?
तो शायद कभी झूठ के, मीठे स्वादों को ना चखना पड़े।
वायदे तो न जाने कितने किए जाते है, पर
उनमें वह बल कहाँ, जो लौट कर फिर आते हैं।
यहाँ शादियों में भी इतना लुटाया जाता है, और
जहाँ हर गरीब मजदूर, रोटी को चिल्लाता है।
करना तो है बहुत, कुछ लेकिन, सोचकर रह जाती हूँ
कि मंजिल कहाँ और करना क्या?
सपने भी कुछ कम नहीं, पंख बनकर उड़ने को तैयार
बस मज़हब कोई बताए, फिर किसका है इंतज़ार।
प्रकृति की खूबसूरती भी, कितना अच्छा तोहफा है
वो घर ही क्या? जो बेघर होकर महका है।
वो प्यार ही क्या जो, माँ के बिना मिले
यहाँ सारा संसार तो, माँ के आंचल में खिले।
फूल बनकर खिलना है, और करना है कुछ काम
काँटों को दूर भगाकर नहीं चाहिए ये आराम।
चाँद जैसा खिलना और सितारों जैसा चमकना है
सूरज की किरणों में, इन हवाओं के संग बहना है।
ना निर्गुण ना सगुण, ये तो प्रेम की अदभुत भक्ति है
जिसमें समाई देव व माँ-बाप की संपूर्ण शक्ति है।
दुनिया वाले जो भी सोंचे, उनका काम है सोचना
हम अपने कर्त्तव्यों पर बढ़ते चलें, नहीं है अब रूकना।
नाम एक दिन जरूर हम कमाऐंगे, करके
संहार दुश्मनों का बादशाह हम कहलाएँगे।।

जिस भाषा में बहादुरी, सच्चाई और दया के लक्षण नहीं होते,
उस भाषा के बोलने वाले बहादुर, सच्चे और दयावान नहीं होते।

–महात्मा गाँधी

शुभम शर्मा
बी. ए. (ऑनर्स) हिन्दी
द्वितीय वर्ष

आतंक

पुलवामा, कश्मीर, दिल्ली, मुम्बई!
अब सहेंगे कब तक?
पल-पल बढ़ता जा रहा है,
यह आतंकी मंजर। कब थमेगा,
कब रूकेगा यह खूनी खंजर,
जलती धरती जलता जीवन जलता है संसार,
बढ़ता ही जा रहा है यह खूनी बाजार।
कब तक जाती रहेगी मासूमों की जान,
क्या?
हम यूँ ही बैठे रहेंगें मूरत के समान!
आज आतंकी खंजर से खत्म हो रहा संसार,
रोको-रोको मत बढ़ने दो ये आतंकी जाल।
जागो-जागो,
उठो देशवासियो खत्म करो आतंक,
निभाना है निभाऐंगे हम अपना मूल कर्त्तव्य
आज खाते हैं कसम न बढ़ने देंगे आतंक,
जान की बाजी लगा देंगे न पीछे हटने
देंगे कदम।
पुलवामा, कश्मीर, दिल्ली, मुम्बई
आखिर कब तक यह आतंक सहेंगे हम!!

अमर जवान

खुशकिस्मत हैं,
वे लोग जो वतन के लिए मिट जाते हैं,
मरकर भी वो लोग अपने आप को अमर
कर जाते हैं,
अपने परिवार से दूर रहकर भी, लाखों
परिवारों की रक्षा कर जाते हैं,
करता हूँ उन्हें सलाम ऐ वतन
पर मिटने वालो।
तुम्हारी वजह से ही इस तिरंगे का
सम्मान बढ़ता है।
जय हिन्द!

कॉलेज स्टूडेंट

बारहवीं की परीक्षा देकर
कॉलेज में एडमिशन की लाइन लगते हैं,
एडमिशन पाकर कॉलेज में, बड़ा इतराते हैं,
दोस्तों के बीच अपनी धाक जमाते हैं।
देखकर कॉलेज का माहौल बहुत सपने सजाते हैं
देखकर कॉलेज में लड़कियों को बहुत मस्कुराते हैं,
शुरू में टीचर के लेक्चर बहुत रास आते हैं,
थोड़े दिनों बाद ही लेक्चर बंक मार कर खूब
मजे उड़ाते हैं,
दूसरों का असाइनमेंट कॉपी कर टीचर को दिखलाते हैं,
आती है जब परीक्षा तब भगवान से गुहार लगाते हैं,
कहते है इस बार पास करा दी, अगले सेमेस्टर से पढ़ेगें,
परीक्षा खत्म हो जाने के बाद फिर वैसे ही हो जाते हैं।

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं वे
संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम मे उन्हें
सींच-सींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं।

-महर्षि अरविन्द

शालू त्रिपाठी
बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी
द्वितीय वर्ष

हारी नही हूँ मैं

संघर्षों भरा जीवन मेरा,
पर हारी नहीं हूँ मैं।।
संघर्षों में कितनी तकलीफें दर्द से भरी थी,
पर हारी नहीं हूँ मैं।
लोगों ने जकड़ा और समेट दिया अकेलेपन में,
पर फिर भी हारी नहीं हूँ मैं।।
सबने झकझोरा बोला तेरी जिंदगी है तू लड़ ले अकेले,
उनसे भी बोला, हारी नहीं हूँ मैं।
खुद को सँभाला, आगे बढ़ाया, इस अनजानी भीड़ में,
उस भीड़ में भी हारी नही हूँ मैं।।
राहें अनजान थी, जिंदगी हैरान भी, परिवार का साथ
नहीं था, अपनत्व का भाव नहीं था, किसी से पहचान
नहीं थी, इन पर इन अनजानी उम्मीदों के बाद भी
हारी नहीं हूँ मैं।
आँसुओं को रक्त की तरह बहाया, दूसरों को खुश करने
में अपने गमों का जश्न मनाया था, पर उन जश्नों में
भी हारी नहीं हूँ मैं।।
मुस्कुराहट चेहरे पर नकली हो गई, आँखें आँसुओं से
नम हो गई, परछाईयों ने भी साथ छोड़ा पर सत्य तो
यही है कि इन तमाम बुराईयों और मुश्किलों
की वजह से ही हारी नहीं हूँ मैं।।......

सौरभ सक्सेना
बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत
द्वितीय वर्ष

कृष्णामय

राधा दौड़ी-दौड़ी आयी हर घड़ी,
ज्यों गोविन्द ने बजाई बाँसुरी।

निरि गोपियाँ भी मोह में पड़ी।
ज्यों गोविंद ने बजाई बाँसुरी।

हरी-भरी कुशायें मुरली धुन से सींची जाएँ,
मुरली धुन से सींची जाएँ,

पहनकर प्रेम राग का चोला
कल्पित फोटो खींची जाएँ,
कल्पित फोटों खींची जाएँ,

अनुराग से आसक्त सखियाँ ही बढ़ी,
ज्यों गोविंद ने बजाई बाँसुरी।

कानों को मुरली की मादकता ही चढ़ी,
ज्यों गोविंद ने बजाई बाँसुरी।

यह संभव है कि हम सबके पास बराबर
प्रतिभा न हो लेकिन अपनी प्रतिभा को विकसित
करने का हम सभी के पास बराबर मौका होता है।
-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

सपना बडाना
बी. ए. (प्रोग्राम)
द्वितीय वर्ष

कश्मीर की इस घाटी में

कश्मीर की इस घाटी पर अब
झंडा हिंदुस्तान का लहराने वाला है
क्योंकि आतंकवाद का ये नाम
अब जल्द ही मिटने वाला है
हमने खोए चवालिस हैं
पर अब तुम्हारा यह
वतन ही खत्म होने वाला है
क्योंकि पीछे से किए हुए
तुम्हारे इस वार का जवाब
अब तुम्हें सामने से मिलने वाला है
अब तक बचते आए हो तुम
पर अब ईट का जवाब तुम्हें
पत्थर से मिलना है
बच न पाएंगे जो भी बैठे यहाँ
और दिया उन्हें सहारा है
कर दो शुरू उल्टी गिनती तुम
क्योंकि टाइम अब हमारा आने वाला है
और कश्मीर की इस घाटी पर
झंडा हिंदुस्तान का लहराने वाला है!!!

वो गुरु हैं

जो जिदंगी को एक
नई राह दिखा दे
और हर बुराई से
हमें बचा दे
वो गुरु हैं
हर मुसीबत को जो
आसान बना दे
और हर मुश्किल को
पार करा दे
वो गुरु हैं
जो हीरे की तरह
हमें तराश दे
और जिदंगी जीने का
एक तरीका सिखा दे
वो गुरु हैं
जो खुद कामयाब न होकर
हमें कामयाब बना दे
वो गुरु हैं!!!

मेरी कविता, मेरा सहारा

जब उदास होती हूँ
जब खुश होती हूँ
लेकर कलम लिख देती हूँ
जब दिल अकेला होता है
मन उम्मीदों से भरा होता है
लेकर कलम लिख देती हूँ
जब लोग साथ छोड़ देते हैं।
और अपने मुँह मोड़ लेते हैं
लेकर कलम लिख देती हूँ
मेरी कविता, मेरा सहारा
तुझे लिखकर
कर लेती हूँ गुजारा!!!!

जितना कठिन संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी।

–विवेकानंद

उपासना
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
प्रथम वर्ष

मेरे कन्हैया

रहमत की है लाखों पर
मेरी भी गिनती करले ना
अपनी मुरली की तानों से
मेरा भी मन तू हरले ना
रहेंगे खिदमत में खड़े हर पल
विश्वास तू प्रियतम कर लेना
स्नेह और प्यार से कान्हा
मेरी भी झोली भर देना
यकीन है हमको नहीं बिछडेंगे
बस एक बार हाथ मेरा पकड़ लेना

गौरव त्रिपाठी
बी.कॉम (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

मुखौटा

कब तक लिफाफे देख-देख कर खत को तुम पढ़ते रहोगे?
मौत के खौफ में जी कर तुम जिंदगी से डरते रहोगे?
दिख रहा है जो भी तुमको सब एक धोखा है,
सच नहीं जो तुम्हें दिखा है, ये भी एक मुखौटा है।

दिखावे की इस दुनिया में सच किसी को मंजूर नहीं है,
या इस मायानगरी में सच का कोई वजूद नहीं है।
बंद कमरे में भी रोशनी का एक झरोखा है।
सच नहीं जो तुम्हें दिखा है, ये भी एक मुखौटा है।

फरेबी की जंजीरे बाँध कर तुम पूरी शिद्दत से भाग रहे हो
झूठे सपनों में रहकर तुम रातों में जाग रहे हो
पहचानों खुद को अब भी मौका है।
सच नहीं जो तुम्हें दिखा है ये भी एक मुखौटा है।

विद्यार्थियों का जीवन-लक्ष्य न केवल परीक्षा में उत्तीर्ण
होना, स्वर्ण पदक प्राप्त करना है अपितु देश सेवा की क्षमता एवं
योग्यता भी है।

– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

रीटा
बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

सफलता

यदि विश्वास तुम्हें अपने पर,
तो तुम सब कुछ कर सकते हो
अपने साथ दूसरों के भी,
दु:ख दर्द सब हर सकते हो

जन्म सफलता का होता है,
जिस सुदृढ़ इच्छा शक्ति से
और सफलता भी मिलती है,
मेहनत लगन और भक्ति से

निश्चित सफल बनोगे तुम यदि,
पहले दृढ़ संकल्प बनाओ
इसके बाद राह तुम खोजों,
और राह पर बढ़ते जाओ

कभी-कभी आगे बढ़ने पर
असफलता भी आ सकती है
आगे बढ़ने वाले पग में
कंटक संद्यन विद्या सकती है

लेकिन ऐसा होने पर तुम,
फिर से दृढ़ संकल्प बनाओ
और बना मजबूत हृदय को,
तूफानों से जा टकराओ

जीवन को संघर्ष समझकर,
सघर्षों से मत घबराओ
जीवन भर संघर्ष करो तुम
अपना जीवन सफल बनाओ।

कोई युद्ध अंतिम नहीं होता

कोई युद्ध अंतिम नहीं होता,
न ही होती कोई शान्ति आखिरी
हर युद्ध के अन्तिम छोर पर
बंधी होती हैं।
हर लकीर शान्ति की
हर शान्ति में छुपी होते हैं
बीज युद्ध के।
कोई कर्म सम्पूर्ण नहीं
कोई प्रयत्न व्यर्थ नहीं
कोई क्रिया अन्तिम नहीं
फिर भी।
आवश्यक है अन्त तक
अंतिम क्रियाएँ भी
निरन्तर उतनी ही
जरूरी है जितना
धान का रोपना।

> मनुष्य मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोष नहीं है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिये जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम हैं वैसे ही मानसिक रूकावटों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं।
>
> -बेकन

निशा
बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी
तृतीय वर्ष

जिंदगी बचाओ

बदलें हम तस्वीर जहाँ की
सुन्दर सा एक दृश्य बनायें,
यह संदेश हम सब तक फैलाएँ
और पर्यावरण बचाएँ।

फैल रहा है खूब प्रदूषण
काट रहा मानव जंगल वन
हवा हो रही है जहरीली
कमजोर पड रहा है सबका तन,
समय आ गया है कि
मिलकर
हम सब कोई कदम उठायें
संदेश यह हम सब तक फैलाएँ।
आओ पर्यावरण बचाएँ।

प्रयोग करें गाड़ी का कम हम
पैदल चलने पर दें जोर
थैले रखें हम कपड़े के,
प्लास्टिक को दें हम छोड़।
आओ हम यह सब को समझाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

हवा चाहिए शुद्ध ही सबको
पेड़ न कोई लगाता है
अनजाने में सब रोगों को
पास में खुद ही बुलाता है,
हरियाली फैलाकर आओ
सबको अब हम स्वस्थ बनायें
संदेश यह हम सब तक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

मत व्यर्थ करो जल को
जल है तो अपना जीवन है
प्रकृति ने है जो हमको दिया?
सबको अनमोल यही धन है,
सब जीवों को मिले बराबर
इस उद्देश्य से हम जल बचाएँ
संदेश यह हम सब तक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

माता है ये धरती हमारी
हम सब इसका सम्मान करें
क्यों बिगड़ रहे हालात हैं इसके
इस बात का हम ध्यान करें,
भला हो जिससे सभी जनों का
आदत, हम सब वह अपनाएँ
संदेश यह हम सब तक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊब कर क्षण प्रतिक्षण अपने मन बदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं–उनमें आत्म–बल नहीं।

–सुभाषचन्द्र बोस

दिव्यांशु शर्मा
बी. ए. (ऑनर्स) इतिहास
प्रथम वर्ष

प्लास्टिक एवं प्रदूषण

देख तेरे संसार की क्या हालत हो गई है भगवान्
चारों तरफ प्रदूषण फैला रहे हैं इंसान।

प्लास्टिक का उपयोग करने से धरती प्रदूषित कर रहे हैं इंसान
दम घुट-घुट कर मर रहे हैं इंसान।
देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई है भगवान्
चारों तरफ प्रदूषण फैला रहे हैं इंसान।

लोगों को समझ नहीं आ रहा है इसका नुकसान
कितना घातक है इसका अंजाम,

हर जीव-जंतु मर रहा है भगवान चारों तरफ बीमार है इंसान।
देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई है भगवान्
चारों तरफ प्रदूषण फैला रहे हैं इंसान।

न ही ये मिट्टी में नष्ट होती है, न ही वातावरण को
शुद्ध करती हैं, फिर भी लोग इसका उपयोग कर रहे है भगवान्

चारों तरफ प्रदूषण कर रहे हैं इंसान।
देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई है भगवान्
चारों तरफ प्रदूषण फैला रहे हैं इंसान।

टोनी टेकचन्द
बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत
द्वितीय वर्ष

संविधान

मैं भारत का संविधान हूँ
बताता अपनी पहचान हूँ
मैं भारत का संविधान हूँ......

मैं भारत के लोगों से शुरू तो होता हूँ
मैं भारतीय तक पहुँच नहीं पाता हूँ
संप्रभु, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष और लोकतंत्र बनाना चाहा
जो भी नेता मेरी खाता वो मुझे नजर जाता

सोचा मैंने सब मिलकर भारत बढ़ाएंगे
क्या पता था अलग-अलग धर्म में बट जाएँगे

मैं बात तो सबसे हम की करता
पर हम में मेरे कोई नहीं आता

काश तुम मुझे मन से अपनाते
तो संसद के बाहर मुझे न जलाते

मैं भारत का संविधान हूँ
बताता अपनी पहचान हूँ
मैं भारत का संविधान हूँ

कवि और चित्रकार में भेद है। कवि अपने स्वर में
और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के सत्य और
सौन्दर्य का राग भरता है।

–डॉ. रामकुमार वर्मा

शाज़िया लारी
बी. ए. (ऑनर्स) हिन्दी
तृतीय वर्ष

धर्म एकता गीत

ये हिन्दू ये मुसलमान मेरे मन में नहीं विचार।
मेरा धर्म सिखाता मुझको सब धर्मों से प्यार।।

मैंने पढ़ी कुरान और है मैंने पढ़े पुराण
मेरे लिए मौलवी पंडित दोनों एक समान।।

मेरे मन में मंदिर मस्जिद दोनों का है मान।
मेरे मन में ईश्वर अल्लाह दोनों एक समान।।

मैंने ईद, दीपावली, होली, लोहड़ी यहाँ मनाई।
यहाँ हिन्दू और मुसलमान हम सब हैं भाई-भाई।।

भाषाओं से मोहब्बत

मैं उर्दू की बेटी हूँ, जिसे हिन्दी ने पाला है।
अगर उर्दू की रोटी है, तो हिन्दी का निवाला है।

मुझे हैं प्यार दोनों से मगर यह भी हकीकत है।
और जब हिन्दी से मिलती हूँ, तो उर्दू घर बुलाती है।।

यहीं की बेटियाँ दोनों, यही पर जन्म पाया।
शिकायत ये इन्हें हिन्दु और मुस्लिम क्यों बनाया है।।

मुझे दोनों की हालत एक सी मालूम होती है।
कभी उर्दू पे बंदिश है, कभी हिन्दी पे ताला है।।

भले अपमान हिन्दी का, या हो तौहीन उर्दू की।
खुदा की है कलम हरगिज शाज़िया ये सह नहीं सकतीं।।
मैं दोनों के लिए लड़ती हूँ, और दावे से कहती हूँ।

मैं दोनों के लिए लड़ती हूँ, और दावे से कहती हूँ।
मेरी हिन्दी भी उत्तम है, मेरी उर्दू भी आला है।।

भारतीय सामाजिक दर्शन

जब बनाने वाले ने बनाने में न फर्क किया।
फिर क्यों इंसान को इंसान ने बाँट दिया।।

धर्म, जाति पर झगड़ना सब बेकार की बातें हैं।
इस छोटी सी बात को क्यूँ हम समझ न पाते हैं।।

आकर इन्हीं बातों में फिर क्यूँ आपस में टकराना हैं।
बनकर इसी मिट्टी से इसमें ही मिल जाना है।।

खत्म कर इन भेदभावों को जिसने यह सब फर्क किया।
जिससे क्यों इंसान को इंसान ने ही बाँट दिया।।

न जाने क्यों लोगों ने इस फर्क को अपनाया है।
अपना जिनको बनाया था आज उनकी ही ठुकराया है।।

इन झगड़ों में पड़कर किस-किस ने क्या-क्या खोया है।
जिसको इसका हुआ अंदाज़ा वह अंदर ही अंदर रोया है।

पर अब रोने से न काम चले, हिम्मत से ही बात बने।
कर हिम्मत और दिखा दे दम, हैं एक ही हिन्दुस्तान के हम।।

अपने भेदभाव के झगड़ों से न इस धरती को बेकरार करो।
बल्कि इसकी विविधता में एकता वाली शान को बरकरार करो।।

काँटों से भी प्यार करो

तूफानों से डरना छोड़ो,
बहती नदियाँ पार करो।
दिल खोलकर पैर फैलाओ,
चादर का विस्तार करो।।
राम-रहीम, अशफाक, भगत सिंह,
हम सब हिन्दुस्तानी है।
मिलकर बैठों साथ रहो सब,
धरती काश्रृंगार करो।।
धरती-अंबर चाँद-सितारे,
उनकी कोई जात नहीं है।
छाडों सब नफरत की बातें,
खुशबू का व्यापार करो।।
हर मौसम है प्यार का मौसम,
सुख-दुख तो आते-जाते हैं।
दीप जलाओ, अमर प्रेम का,
दूर घना अंधकार करो।।
नयी चेतना नयी उमंग से,
नव युग का निर्माण करो।
फूलों की तो बात अलग है,
काँटों से भी प्यार करो।।

मनीषा
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
प्रथम वर्ष

पेड़

एक ओर थी छाया उसकी
दूसरी और धूप
पेड़ नहीं था फल का वह
पर था सबके जीवन का वह।
शाखा उसकी मोटी-मोटी
जिन पर थी झूलों की रस्सी
पर ना था झूले पर कोई
सूनेपन से मन मार गई।
गलती मेरी मैं न जानू
क्यूँ अकेला सा खड़ा हूँ।
हरा भरा तो हूँ
फिर क्यूँ अकेला खड़ा हूँ।
बच्चे आते, देखकर चले जाते
क्योंकि फलों का पेड़ उनका मन लुभाते।
किसी पेड़ में फल लगे थे किसी में लगे फूल
मुझसे लगी हरी पत्तों की बेल।

अमर जीत वर्मा
बी.ए. (प्रोग्राम)
तृतीय वर्ष

उम्मीद

बड़ा ही पक्का शब्द है उम्मीद,
किसी सुत पर किसी पिता का,
किसी शिष्य पर किसी गुरुवर का,
बड़ा ही आज वाला शब्द है उम्मीद।

किसी प्रेमी का प्रेम-विश्वास है उम्मीद,
कहीं बहन की रक्षा का सूत्र है उम्मीद,
कहीं दोस्ती की कसौटी है उम्मीद,
बड़ा ही तेज वाला शब्द है उम्मीद।

किसी की ममता का पर्याय है उम्मीद,
कहीं अनजान से पहचान है, कशमकश है उम्मीद
कहीं बिछड़ों के मिलन की उम्मीद।
बड़ा ही ऊर्जा वाला शब्द है उम्मीद

किसी के घाव पर मरहम लगाती है उम्मीद,
कहीं बारिश वाली सोंधी खुशबू है उम्मीद,
कहीं वृद्धों-अनाथों की उठती चीख पुकार है उम्मीद,
बड़ा ही संकटमोचन वाला शब्द है उम्मीद।

किसी के मन में चली बारिश की फुहार है उम्मीद,
कहीं भरी-दुपहरी में दूर से दिखती छाँव है उम्मीद,
किसी की उम्मीदों पर पूर्णतः विराम लगाती है उम्मीद,
बड़ा ही मेहनत कराने वाला शब्द है उम्मीद।

कर्मभूमि पर फल के लिए श्रम सबको करना है,
रब सिर्फ लकीरें देता है, रंग हमको भरता पड़ता है।
-गुरूनानक देव

प्रेम राजपूत
बी. एससी. (ऑनर्स) गणित
द्वितीय वर्ष

शैतानी

विद्यालय में पढ़ते थे, तब हम पर भी, शैतानी थी।
माता-पिता समझाते रहते, एक बात नहीं मानी थी।।
हाथ में मोबाइल-आँखों पर चश्मा, मुख में पान दबाते थे।
सीधे-साधे छात्रों पर असल से रोब जमाते थे।।
टीचर, चपरासी सब हमसे घबराते थे।
देख लड़कियों के झुण्डों को उल्टी सीटी बजाते थे।।
फैशन में मतवाले रहते, आई नयी जवानी थी।
विद्यालय में पढ़ते थे...................................
माता-पिता से पैसे माँगे, विद्यालय का नाम किया।
बीड़ी पान सिगरेट तम्बाकू सबका ही सम्मान किया।
बीच रोड़ पर खड़े हो गये तो बिल्कुल चक्का जाम किया।।
रोजाना की दिनचर्या में अपनी यही कहानी थी।
विद्यालय में पढ़ते थे................................
हाथ मिलाकर करी दोस्ती, बड़े-बड़े शैतानों से।
कभी लैक्चर सुने नहीं थे, टीचर के, इन कानों से।।
हर घण्टे अनुपस्थित रहते, फुरसत नहीं फिल्मी गानों से।
परीक्षा में भी रहे झाँकते, मॉडल रोशनदानों से।
विद्यार्थी जीवन की महिमा कभी नहीं पहचानी थी।।
विद्यालय में पढ़ते थे................................

सोचता हूँ कि........

सपनों का घर कुछ ऐसा हो मेरा,
हे प्रभु! जिस पर हर वक्त साया हो तेरा
माँ-बाप को कुछ खुशियाँ दे सकूँ
और ज्यादा नहीं मॉगता मैं, तुझसे
कि शाम को अपने घर आ सकूँ
कुछ ज्यादा नहीं मॉगता मैं, तुझसे
कि शाम को अपने घर आ सकूँ
कुछ पल अपनो के साथ बिता सकूँ
जिन्दगी निकल जाती है तुम्हारे लिए
करते-करते माँ-बाप की,
सोचता हूँ कुछ हाथ मैं भी उनके साथ बँटा सकूँ
हर माँ-बाप की कुछ उम्मीदे होती है अपने बच्चों से,
सोचता हूँ शायद कुछ फर्ज में भी अपना निभा सकूँ.......

साहित्य के अंतर्गत वह सारा वाङ्मय लिया जा सकता है जिसमें अर्थ-बोध के अतिरिक्त भावोन्मेष अथवा चमत्कारपूर्ण अनुरंजन हो तथा जिसमें ऐसे वाङ्मय की विचारात्मक समीक्षा या व्याख्या हो।

-रामचंद्र शुक्ल

सचिन
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति शास्त्र, प्रथम वर्ष

भारत की गाथा

1.) भारत का इतिहास हूँ मैं, एक कहानी कहता हूँ।
एक भारत था राजा जिसके नाम पर मैं भारत हूँ।।
2.) राम कृष्ण की पावन भूमि, शास्त्रों की गाती गाथा
जीवन उसका सहज हो जाए, वेदों का जो ज्ञान यात्रा।।
3.) सिंधु-घाटी की संस्कृति, उत्कृष्ट और खुशहाल थी
सुलभ जहाँ की सभ्यता, सुनियोजित संग विशाल थी।।
4.) शीलं परमं भूषण, योग, कर्मेषु कौशलम
जहाँ की सूक्ति दिशा दिखाए, वसुधैव कुटुम्बकम्।।
5.) मेरी ही धरती पर कितने वीरों ने लिए जनम्
वीरगति की शौर्यगाथा, बतलाते जिनके करम्।।
6.) इस पावन धरती पर जन्में, चन्द्रगुप्त और अशोक महान
जिनके बारे में ही पढ़ना मिलता है खुद को सम्मान।।
7.) अशोक ऐसा राजा था इतिहास जिसने रच दिया
सारनाथ स्तूप धर्म की गाथा का प्रचार किया।।
8.) गुप्त काल में युग स्वर्णिम का भारत में जब आया था
सोने की चिड़िया बसती है, जन-जन को बतलाया था।।
9.) नौ ग्रह होते हैं नभ में, दुनिया ने ये अब जाना
यहाँ युगों से होती पूजा, कहाँ किसी ने पहचाना ।।
10.) दुनियाँ सीख रही थी जीना, (भारत) सबको सिखा रहा था
अतिथि देखो भवः की बातें भारत सबको बता रहा था।।
11.) दर्शन, सांख्य, शल्य, चिकिस्सा, का जहाँ रहता सिलसिला
विश्व को ये सिखला रहे थे, नालंदा और तक्षशिला।।
12.) इसके बाद शुरू हुआ था, भारत में ऐसा चरण
मुहम्मद बिन कासिम और, इस्लाम धर्म का आगमन।।
13.) इस्लाम धर्म अब फैल रहा था, कासिम लेकिन चला गया
बहुमूल्य हीरे जवाहरात आधा भारत तो लूट लिया।।
14.) कासिम के जाने के बाद महमूद गजनवी आया था
महाचोरों का चोर था जिसे भारत ही मन भाया था।
15.) सोने-चाँदी, हीरे लूटे, ऐसा ये लुटेरा था
अफगानों का सुल्तान था ये, गज्जन इसका डेरा था।
16.) सत्रह बार आक्रमण करके भारी क्षति पहुँचायी थी
सोमनाथ मन्दिर लूटा कत्ले-आम करवाया था।।

17.) इसने अंतिम आक्रमण मुल्तान के जाटों पर किया
जल में जाट डुबो दिए और बच्चों को कैद किया।।
18.) हाय लगी भारतीयों की अब मृत्यु को वो प्राप्त हुआ
भारत में अब थोड़ा आक्रमण, गजनी का शांत हुआ।।
19.) बख्तियार खिलजी एक तुर्की, आततायी शासक था
विश्वविद्यालय नालंदा का, सबसे बड़ा विनाशक था।।
20.) तीन महीने जली पुस्तकें, लाखों के भण्ड़ार में
हजारों भिक्षु शहीद हुए थे नालंदा संहार में।।
21.) अब समय आ पहुँचा दिल्ली सल्तनत के विस्तार का
कुतुबुद्दीन ऐबक से कुतुबमीनार के निर्माण का।।
22.) कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुमिश, रजिया और बलबन ने
प्रसार किया था दिल्ली का विस्तार किया था खिलजी ने।।
23.) तुगलक वंश के शासन में दिल्ली पहुँचा तैमूर था
डाँके डालना लूट मारना, ऐसा इसका दस्तूर था।
24.) गाँव शहर को लूट-लूट के, कर दिया वीरान था
तुगल वंश के पतन का कारण तैमूर का अभिमान था।।
25.) 1526 ई० में पानीपत संग्राम हुआ
इब्राहिम लोधी बाबर में शुरू यहाँ कोहराम हुआ।।
26.) मुगलों की विजय पताका भारत में अब आ चुकी थी
इब्राहिम को फिर धूल चटाकर किस्मत उनकी जाग चुकी थी।।
27.) बाबर का पुत्र हुमायुँ अगला मुगल शासक था
विपदाओं से भरा हुआ इसका तो जीवन शासन था।।
27.) अगला मुगल बादशाह अकबर वीर महान था
पूरे भारत हिन्द देश का इकलौता सुल्तान था।।
28.) एक कहानी कैसे छोड़े महाराणा प्रताप की
शान-ए-हिन्द मेवाड़ की खातिर अकबर के संताप की।।
29.) अकबर ने अपना संदेशा राणा को भिजवाया था
गुलाम बनाकर राणा को मेवाड़ अपनाना चाहा था।।
30.) मगर गुलामी कहाँ से भाती शान-ए-हिन्दुस्तान को
हल्दी घाटी पहुँचा वीर बचाने स्वाभिमान को।।
31.) राणा और मुगलों के बीच महाघोर संग्राम हुआ
हल्दी घाटी युद्ध का कितना, दुर्बल सा परिणाम हुआ।।
32.) हार हुई महाराणा की नत मस्तक न वो वीर हुआ
इतने मुश्किल संकट में वो वीर न गम्भीर हुआ।।
33.) रोटी खाई घासों की जंगलों में भटके बारम्बार
किया प्रयास पुनः फिर आकर कर लिया मेवाड़ अधिकार।।
34.) इसके बाद चलो हम चलते शाहजहाँ के काल में
जहाँ हुआ निर्माण महल का, ताज महल की आन में।।
35.) सात अजूबों में ताज शान-ए-हिन्दुस्तान है
संगमरमर की सुंदरता, और प्रेम की जो आन है।।
36.) आलमगीर बन बैठा था मुगलों के जब पतन का कारण
वीर शिवाजी बन रहे थे भारत की नैय्या के तारण।।

37.) उथल-पुथल से भरा रहा था भारत का यह मध्य काल
तभी फिरंगी आ धमके थे, लेकर अपनी गन्दी चाल।।
38.) अंग्रेजी शिक्षा नीति की मैकाले ने नींव थी डाली ले
सबसे कहता फिर रहा था भारत का इतिहास है जाली।।
39.) जहाँ गुलामी की बेड़ी में हर देशी को जकड़ा था
शोषित हो रही नारी थी, हर बच्चा, बूढ़ा पकड़ा था।।
40.) बड़ा-चढ़ा कर कर लादना अंग्रेजी की रीति थी
घर से बेघर होते लोग विस्तारित वो नीति थी।।
42.) दूर भगाने अंग्रेजों को नाना साहब जाग चुके थे
लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे वीर रण में कूद चुके थे।।
43.) विधि का विधान विधाता जाने, क्रांति की क्यों हार हुई
जागृत हुआ था देश यहाँ से, हर कोने में ललकार हुई।।
44.) शोषण करता भारत का वह गोरे रंग का दानव था
मजदूरों की रोटी छिनती बेबस हर इक मानव था।।
45.) लाचारी बेरोजगारी भूखा सबको छोड़ दिया
बिना कफन के मरते लोग ऐसा जीवन मोड़ दिया।
46.) लालच की आँधी में अंधा कोड़ों की देता था मार
भूखे उठना भूखे सोना सूने सारे थे त्यौहार।।
47.) जलियावाला हत्याकांड की वो घटना मर्म थी
बच्चा, बूढ़ा, औरत मारे डायर को कहाँ शर्म थी।।
48.) भगत, शेखर, अशफाक, ऊधम सिंह वीरों के अवतार हुए
अंग्रेजों की जड़ें हिलाने बिस्मिल से हथियार हुए।।
49.) आजादी की पुण्य लड़ाई पूरा भारत लड़ रहा था।।
लाला जी नेताजी का, हर बार भारी पड़ रहा था।
50.) गाँधी जी, नेहरू जी संग हर हिन्दुस्तानी चलता था
इक दिन हम आज़ाद होंगे ऐसा खाब पलता था।
51.) न गिन सके इतनी कुर्बानी भारत भूमि ने खोई थी
हर घर से एक शहीद निकलता माटी कितनी रोई थी।।
52.) आखिर विधि ने हार मान ली भारत के बलिदान के आगे
आर्यावर्त्त के दो टुकड़े कर गोरे फिर ब्रिटेन को भागे।।
53.) एक पिता के दो बेटे थे दोनों अब दुश्मन से बन गए
गोरों ने जो चाल चली थी उसकी ये कठपुतली बन गए।।

जिस विद्या में कर्त्तव्य शक्ति नहीं, स्वतंत्र रूप से सोचने की बुद्धि नहीं,
खतरा उठाने की वृत्ति नहीं, वह विद्या निस्तेज है।

-विनोबा भावे

सौरव
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
प्रथम वर्ष

"लड़कियों की जिंदगी आसान नहीं होती"

- जब माँ बाप घर से कुछ दूर हो तो
  भाई को बाप और बहन को माँ बनकर है समझती।
- उनकी हर फरमाइश को पूरा करने की हर संभव कोशिश है करती, किसी बड़े के घर पे न होने से, उसे नींद की एक झपकी तक नहीं आती, पर अपने भाई को "मैं हूँ ना" का आश्वासन दे उन्हें चैन की नींद है सुलाती।
- भाई की बेरोजगारी और बाप के कमजोर कंधों को सहारा देने के लिए, खुद नौकरी करने की हसरत है वह बनती।
- और जितना हम सोचते हैं लड़कियों की जिंदगी उतनी आसान नहीं होती।
- अपनी हर ख्वाहिश को दरकिनार कर,
  परिवार वालों की हर फरमाइश को पूरा करने की ज़िद है बनती।
- बाप, जवान भाई के घर में होते हुए घर की लड़की इतनी रात को जॉब से क्यों है आती?
- समाज के इन तानों को सुन अपने जज़्बातों को काबू नहीं कर पाती।
- अपनी जुबाँ पे मुस्कुराहट का भंडार लिए, अपने जज़्बातों को, अपनी आँखों से ही बयाँ कर जाती है।
- और जितना हम सोचते हैं, सब लड़कियों की जिंदगी उतनी आसान नहीं होती।।

मोहित राठौर
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी
तृतीय वर्ष

उस छोटी-सी जगह में

आज भी जिंदा है तू, कहीं उस छोटी-सी जगह में।
कभी मुलाकात नहीं हुई तो क्या,
महसूस करते है तुम्हें उस छोटी-सी जगह में।
माना रूबरू होने की हममें हिम्मत नहीं,
लेकिन मिलते रोज है उस छोटी-सी जगह में।
छोड़ कर जायेंगे तुम्हे इस साल,
लेकिन साथ तुम्हें भी ले जायेंगे उस छोटी-सी जगह में।
हो सकता है बुरे है, तुम्हारी नजर में,
लेकिन सफाई रखते है तुम्हारी उस छोटी-सी जगह में।
सच है सो नहीं पाते हम रातों में,
लेकिन संग तुम्हें भी जगाते हैं उस छोटी-सी जगह में।
माना तुम्हें बोलने के लिए शब्द नहीं ढूँढ पाते।
लेकिन शोर बहुत करते है उस छोटी-सी जगह में।
दिखाया नहीं कभी तुम्हें।
लेकिन प्यार बहुत करते है तुम्हें उस
छोटी-सी जगह में।
आज भी जिंदा है तू कहीं उस छोटी-सी जगह में।

अनुभव, ज्ञानोन्मेष और वयस् मनुष्य के विचारों को बदलते हैं।
-हरिऔध

दिव्या
बी.ए. (प्रोग्राम)
द्वितीय वर्ष

अड़े रहना, खड़े रहना

(जब एक सिपाही/फौजी सीमा पर लड़ने जाता है तब उसकी पत्नी उसे कुछ इन शब्दों से विदा करती है)

मत लौटना तुम दिवाली पर,
मत लौटना तुम होली पर,
ईद के चाँद का दीदार भी तुम वहीं से कर लेना,
और करवा चौथ पर भी चाँद को देख बस मुस्कुरा देना,
भले ही ना लौटना तुम गुड़िया की सालगिरह पर,
ना लौटना तुम उन यादों के याद आने पर,
भीगी हुई पलकों को समेट कर
खुद में तुम उन गद्दारों के लिए सैलाब समेट लेना।
बन जाना तुम आँधी, बन चट्टान तुम खड़े रहना,
गर याद आए हमारी और सुकून हो सीमा पर
तो एक बार फोन उठा कर बता देना।
और मुस्कुराते हुए कुछ लफ़्ज़ सुना देना।
मत आना तुम दिवाली पर, ना होली पर,
ना ईद पर, ना चौथ पर,
बस चट्टान की तरह खड़े रहना,
कुछ इस तरह अड़े रहना,
और, और इक बार बस चाँद को देख मुस्कुरा देना।।

अरूण पोसवाल

भारत माता और राखी

सरहद पर राखी से पहले बातें चल रही थी
धीरे-धीरे रात भी ढ़ल रही थी।
सोचा इस बार हाथ में राखी महसूस ही होगी।
बॉर्डर पर तनाव है। छुट्टी कहाँ से मिलेगी?
फिर क्या।
घर की गली याद आने लगी।
पिछले साल जब बहन राखी लाई थी,
देर शाम तक उसने थाली सजाई थी।
मैंने पूछा क्या उपहार दूँ?
बोली बस, तिरंगा फहराकर भारत माँ को जगा देना,
जरूरत पड़ने पर, वतन पर जान भी लुटा देना,
आज फिर,
राखी के सम्मान में हिमालय-सी, चौड़ी-छाती
लिये खड़ा हूँ।
100 करोड़ राखी सलामत रहे! मेरे प्रभु!
इसलिए सरहद पर खड़ा हूँ।
जय हिन्दुस्तान!
भारत की ताकत 'सेना' को समर्पित।

वास्तव में वही जीवन स्वतंत्र है जो अपने पर शासन करता है
और कष्ट सहता है।

–बुल्वर

उज्जवल गुप्ता
बी. एससी. (ऑनर्स)
कम्प्यूटर सांइस, प्रथम वर्ष

ओ साँवरे!

ओ साँवर! ओ साँवरे!
मंजिल तक पहुँचने दे
राहों में खडे है हम जरा सहारा दिला दे

ओ साँवरे! ओ साँवरे!
खुद से तू मिला दे
हमको देख तू जरा सा बस मुस्कुरा दे।

रूह रूह में बसता तू है
रूह रूह को संभाले तू है
तू ही बिगाडे, तू ही संवारे
मेरा हाथ तू ही थामे।

ओ साँवरे! ओ साँवरे!
तेरे बिना ना कुछ भी अच्छा
मुझको लगे अब सब अधूरा
ओ साँवरे! ओ साँवरे!

ना जाना ना समझा कभी इस दुनिया को,
बस बेबस हुई हर बार जब देखा इसे तो
कैसे कहूँ वह बात जो मालूम नहीं मुझको
खुदा की राहों पर अब कुछ दिखता नहीं मुझको।

मेरी बहना!

इनकार चाहे कितना करले
सच न बदल पाएगा
किस्मत में जो लिखा है उसे तू जा मोड़ पाएगा
यह साजिश है उस खुदा की
तू ना समझ पाएगा
उसकी इस जिंदगी का एक मोहरा बन कर रह जाएगा

हाथ भी पीले होंगे उसके
दुल्हन बनकर भी वह सजेगी
रोऐंगे हम सारे यार
जब याद उसकी आएगी।
चाहे कहते हो मुँह पर कुछ भी,
दिल से अपना कहते हैं,
ना रूठने देंगे उसको कभी
यह वादा भी हम करते हैं
ना आने देंगे एक आँसू भी!
ऐसे उसको हम निभाऐंगे
हर झूठ को उसके
सच मान जाऐंगे
इसी तरह हम अपना दिल अब कहलाऐंगे
हर मुसीबत में उसकी
हाथ हम ही थामेंगे,
चाहे ले लो वादा अब हमसे
यह करके हम दिखाऐंगे।
दिल में वह रहती हैं,
आँखों में बहती रहती हैं,
रूबरू न हो पाती है,
बहन यह मेरी कहलाती है।
प्यार वह जताती हैं,
मेरे लिए दुनिया से लड़ जाती है,
मुझे आगे बढ़ना भी वह सिखाती है,
हर परेशानी में साथ खड़ी हो जाती है,
बहन वह मेरी कहलाती है!
रूठ जब वो जाती है,
हक मनाने का मुझे ही दे जाती है,
बहन वह मेरी कहलाती है!

बच्चे का भाव सदैव उसकी माँ की कृति है।
–नैपोलियन

देवकी
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
प्रथम वर्ष

मेरा फौजी महान

हाँ वह फौजी है!
मेरे देश की सरहद की जो रक्षा करता है, दिन रात
कभी न थकता है
ऐसा वह वीर जवान है
हाँ वह वह फोजी है
चैन की नींद हम सो सकें
बिना किसी डर के
कहीं भी घूम सकें,
वह अपने सपने त्याग कर,
सीमा पर खड़े रहकर,
रातों में जागकर,
हमें सुरक्षित होने के एहसास दिलाता है।
हाँ! ऐसा वह फोजी है।
माँ अपने बच्चे को दुलार सके,
उनकी खुशियों को बाँट सके,
इसलिए वह अपनी माँ की आँखों में आसू देकर,
अपने परिवार से विदा होकर, महीनों के लिए घर
से दूर चला जाता है।
हाँ ऐसा वह फौजी है।
हर माँ उसकी माँ है
हर बहन उसकी बहन है
हर भाई उसका भाई है
उसने भारत माँ की रक्षा की कसम जो खाई है।
अपना कर्त्तव्य निभाते हुए
सरहद पर जो शहीद हो जाता है
घर में सबसे जवान होते हुए भी
बूढ़े कंधो की बाधों पर श्मशान जाता है
ऐसा वह फौजी है!
हाँ! वह मेरे देश का फ़ौजी है,
आओ मिलकर करे प्रणाम,
दें उनको भरपूर सम्मान,
वह मेरे देश का फौजी है,
हाँ! वह ऐसा फौजी है।
जय हिन्द।

गुलफसा
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
द्वितीय वर्ष

दुनिया

याद आ रही है कुछ बीती हुई बातें ।
वे बचपन के दिन, वो मस्ती भरी रातें।
पता नहीं कहाँ गई वह हमारी छोटी-सी दुनिया?
न जाने क्यों इतनी बड़ी हो गई ये दुनिया?

कल हमको न थी फिक्र कोई
अब केवल कल के लिए ही है, सोच
इधर जाएँ या उधर पता नहीं मंजिल है किधर?

लोग लगते हैं अनजाने से इस आधुनिक दुनिया में,
अपने गुम हो गए इस पराई-सी दुनिया में।

लोग कहते हैं नहीं आते वे बीते हुए दिन,
लेकिन कोशिश करते रहेंगे हम,
पता नहीं किसने कहा है यह शब्द?
फिर भी है इसमें हार को जीत जाने वाला सब!
याद आ रही है! कुछ बीत हुई बातें!

परेशानियां

पंख दिया है, तो मुझे उड़ने दो।
कैद में क्यों रखते हो?
रोज ध्यान से
समय पर दाना-पानी देते हो।

इतने अच्छे हो तो रिहा कर दो,
पिजंडा खोलने से क्यों डरते हो?
कदम तो दहलीज से बाहर रखने दो।

मुझे करने दो मेरे मन की
उड भी जोन दो।

न डरो मेरी फिक्र करके,
तुम्हें भी उड़ना सिखाऊँगी,
बस पिंजडे से रिहा कर दो,
मैं बहुत कुछ करके दिखाऊँगी।

दीपिका
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
तृतीय वर्ष

बेटी

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात ही बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नये-नये रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी,
बार-बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास नहीं है बेटी।

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध
मरूस्थल से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर पौधों को पानी दें
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिन्दा रख, दिल में उम्मीदों को
गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमा सा, चल निकलेगा।

संस्कृति की चाहे कोई भी परिभाषा क्यों न हो, किंतु
उसे व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र की सीमाओं में
बाँधना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है।

–पं. जवाहरलाल नेहरू

शशि
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
द्वितीय वर्ष

ऐ वक्त जरा धीरे चल

ऐ मेरे वक़्त जरा धीरे चल
अभी सांझ न होने दे
डर लगता है, डर लगता है
तुझे इतने जल्दी खोने में
ऐ मेरे वक़्त जरा धीरे चल
अभी सांझ न होने दे
जी लेने दे इन लम्हों को
इक दूजे का हमें होने दे

मदिरा पान

अपने भूले बिसरे ख़्वाबों को याद कर लो
जीवन में बचे लम्हों में कुछ ख़ास कर लो
उस जननी के सबसे बड़े डर
"उससे पहले उसके बेटे की साँसें न थम जाए"
इस बात का जरा सा ख़याल कर लो
अब ! मदिरा के अगले घूँट के स्वप्न को तार तार कर दो
अपने भूले बिसरे ख़्वाबों को याद कर लो
जीवन में बचे लम्हों में कुछ ख़ास कर लो

आओ फिर एक बार अजनबी बन जाएँ

आओ फिर एक बार अजनबी बन जाएँ
न हम देखें तुम्हें, न तुम देखों हमें
और ना ही हो कोई प्यार का अफ़साना
बस उस अंनत आकाश में हो दिलों का टकराना
आओ फिर एक बार अजनबी बन जाए।
चलो बंद कर दें ये छुपना छुपाना
तुम्हारा छुप कर वो मुझे साइकिल पर घुमाना
मेरे उदास होने पर तुम्हारा मुझे यूँ मनाना और
खुस होने पर मार-मार कर रुलाना
चलो बंद कर दें ये दिलों को मिलाना
आओ फिर एक बार अजनबी बन जाएँ
न हम देखें तुम्हें, न तुम देखों हमें
और ना ही हो कोई प्यार का अफसाना
बस उस अनंत आकाश में हो दिलों का टकराना
आओ फिर एक बार अजनबी बन जाएँ
ना ही हो कोई रूठना मनाना,
तुम्हारा वो स्वीट लव लिखा हुआ प्यार का नज़राना
और प्यार से बाते करते हुए तुम्हारी मम्मी का आ जाना
और उन्हें देख कर तुम्हारा यूँ अपनी पलकों को झुकाना
चले बंद कर दें ये दिलों को मिलाना
आओ फिर एक बार अजनबी बन जाएँ
न हम देखें तुम्हें, न तुम दखों हमें
और ना ही हो कोई प्यार का अफ़साना
बस उस अनंत आकाश में हो दिलों का टकराना
आओ फिर एक बार अजनबी बन जाएँ

> जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति व मिले, हममें गति और शांति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य-प्रेम न जाग्रत हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।
>
> –प्रेमचंद

गद्य खंड

हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में पहुँचकर साहित्य सृजन की प्रेरणा बनती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न जाग्रत हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

प्रेमचंद

'प्रगतिशील लेखक संघ' के प्रथम अधिवेशन 1936 में सभापति पद से दिया गया भाषण।

सिमरन
बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी
प्रथम वर्ष

हिमाचल संदेश

देवी-देवताओं की भूमि हिमाचल अर्थात् बर्फ के पहाड़ों से घिरा स्थान। हिमाचल प्रदेश भारत के राज्यों में से एक राज्य है। हिमाचल को अनेकानेक प्रसिद्ध मंदिरों के लिए खूब जाना जाता है। इन मंदिरों की जब बात आती है। सबसे पहले नाम शक्ति पीठों का आता है। कुल मिलाकर 51 शक्ति पीठ हैं। जिनमें 5 हिमाचल में स्थित हैं। जितना हिमाचल प्रदेश में हरियाली है उतने ही वहाँ मंदिर स्थित है। हिमाचल और हिमाचल का इतिहास काफी प्रसिद्ध रहा है। क्योकि यहाँ हुई काफी घटनायें मुगलों से भी जुड़ी तथा ब्रिटिश शासन से भी। जहाँ हिमाचल को खुबसूरती के लिए जाना जाता है, वहीं स्थानीय लोगों के लिए भी। हिमाचल प्रदेश से कई कलाकार, खिलाड़ी, नेता आदि ऐसे निकल कर आये जिन्होंने हिमाचल का नाम रोशन किया। ट्रान्सपेरेन्सी इंटरनेशनल के 2005 के सर्वेक्षण के अनुसार हिमाचल प्रदेश देश में केरल के बाद दूसरा सबसे कम भ्रष्ट राज्य था। सन् 1950 में इसे केन्द्र शासित प्रदेश बनाया गया तथा बाद में 25 जनवरी 1971 को भारत का अठारहवाँ राज्य बना। राज्य पर्यटन विकास निगम राज्य की आय में 10 प्रतिशत का योगदान करता है। जब हिमाचल प्रदेश के पर्यटन स्थलों का नाम आता है, तो उसमें हिमाचल के 20 हिल स्टेशन विख्यात हैं। हिमाचल प्रदेश की सुंदरता उसके स्थान तथा स्थानीय लोग हैं। हिमाचल प्रदेश एक और चीज के लिए भी जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश का जिला चंबा तथा इसका एक स्थान खज्जियार 'छोटे स्विटजरलैंड' के रूप में विश्व विख्यात है।

श्रद्धा मनुष्य की आनंदपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ पूज्य
बुद्धि का संचार है।

– रामचंद्र शुक्ल

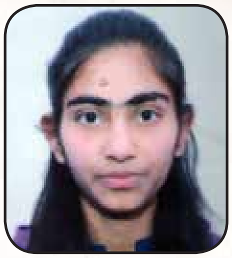

वर्षा मीना
बी.ए. (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

क्लब : एक प्रयास

वर्तमान समय में छात्रों पर परीक्षा, गृहकार्य और अधिक अंक लाने का दबाव है। इस दबाव से कुछ छात्रों के मन में न तो जिज्ञासा है और न ही प्रश्न । केवल एक लक्ष्य है रटकर परीक्षा पास करना। उन्हें अपने आस-पास घट रही घटनाओं प्राकृतिक बदलावों, सामाजिकता, तीज त्यौहारों को समझने-सहेजने का न तो समय है और न ही स्वतंत्रता। उनकी आँखों में न तो सौन्दर्य बोध है और न ही लोक साहित्य के प्रति संवेदना और अनुराग। हमारी शिक्षा प्रणाली बच्चों को उच्च शिक्षा तो देती है लेकिन सुखपूर्वक जीवन जीने की कला नहीं सिखा पाती। कुछ वर्ष पूर्व तक बच्चे अपने आस-पड़ोस में खेलकूद एवं सामूहिक क्रियाकलापों के माध्यम से 'सामाजिकता का पाठ' स्वयं ही सीख जाते थे। परन्तु अब इन गतिविधियों से दूर होने के कारण वे एक व्यक्तिवादी सोच के साथ बड़े हो रहे हैं। बच्चों की इस सोच को बदलने के लिए एक प्रयास किया जा रहा है जिसे नाम दिया गया है क्लब।

क्लब का अर्थ है सभा या समूह। जहाँ व्यक्ति आपस में मिलकर किसी विषय पर अपने विचारों को व्यक्त करें। क्लब के माध्यम से विद्यालयों में बच्चों को सामाजिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक परिवर्तनों, सौन्दर्य बोध के चिन्तन मनन के अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं। विद्यालयों में संगीत, साहित्य, विज्ञान, तकनीकी, खेल इत्यादि के क्लब का संचालन बच्चों द्वारा ही किया जा रहा है। इस तरह विश्वविद्यालयों में भी क्लब का संचालन किया जा रहा है। जिससे बच्चों में चुनौतियों का सामना करने, लक्ष्य प्राप्त करने के लिए रणनीतियों का चुनाव करने, असफलता स्वीकार करने, सामाजिक साहित्यिक सौन्दर्य बोध इत्यादि गुणों का समावेश हो। बच्चे केवल पुस्तकीय ज्ञान ही प्राप्त न करें अपितु व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करें। क्लबों में होने वाली क्रियाओं के माध्यम से बच्चों में छिपी प्रतिभाओं का विकास होता है। मिलकर समूह में कार्य करते हुए उन्हें सहयोग और एक दूसरे की संस्कृतियों को समझने के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में क्लब संचालन द्वारा शिक्षा के साथ-साथ तर्कशील, खुली सोच युक्त विवेकवान पीढ़ी के निर्माण का प्रयास किया जा रहा है।

विश्वास उन शक्तियों में से एक है जो मनुष्य को जीवित रखती है,
विश्वास का पूर्ण अभाव ही जीवन का अवसान है।

-विलियम जेम्स

एक महान व्यक्तित्व : लाल बहादुर शास्त्री

किसी महान पुरुष ने कहा था–''यदि कोई एक व्यक्ति भी ऐसा रह गया जिसे किसी रूप में अछूत कहा जाए तो भारत को अपना सिर शर्म से झुकाना पड़ेगा।'' ऐसे मनुष्य के आत्मविश्वास और दरियादिली का अंदाजा इसी वाक्य से लगाया जा सकता है। यह व्यक्ति और कोई नहीं भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री है।

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 02 अक्टूबर, 1904 मुगल सराय (उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे दिखने में तो साधारण थे परंतु चट्टान जैसी दृढ़ता और शेर जैसे निर्भीक व्यक्तित्व के मालिक थे। परिवार में सबसे छोटे होने के कारण उन्हें सब नन्हें कहकर पुकारते थे। दुर्भाग्यवश जब नन्हें बहुत छोटे थे तो उनके पिताजी का निधन हो गया। उसके बाद वे अपनी माता जी के साथ उनको ननिहाल चले गए। कुछ समय बाद उनके नाना जी की भी मृत्यु हो गई। पर फिर भी, ऐसी विकट परिस्थिति में भी, जब नन्हें पूरी तरह बिखर गए थे उनके मौसा जी रघुवेंद्र प्रसाद ने उनकी माता जी को सहयोग दिया। ननिहाल में रहते हुए उन्होंने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद की शिक्षा उन्होंने हरिश्चंद्र हाई स्कूल और काशी विद्यापीठ में प्राप्त की । यही वजह थी जब उन्हें 'शास्त्री' की उपाधि मिली और उन्होंने अपने जाति सूचक 'श्रीवास्तव' को हटाकर 'शास्त्री' को अपने नाम से जोड़ लिया।

शास्त्री सच्चे गाँधीवादी थे तथा उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज के हित एवं कल्याण के लिए लगाया। शास्त्री जी के राजनीतिक गुरुओं में से प्रमुख पंडित जवाहर लाल नेहरू थे। कहा जाता है कि शास्त्री जी के प्रधानमंत्री बनने में उनके नेहरू जी के साथ अच्छे संबंधों की बहुत बड़ी भूमिका रही। नेहरू जी के प्रधानमंत्री काल के दौरान अकस्मात मृत्यु के बाद देश को जरूरत थी एक अचल, अटल और निर्भीक स्वभाव के मार्गदर्शन की, जो देश को नई ऊँचाइयों तक लेकर जाए। देश की इस जरूरत को पूरा किया लाल बहादुर शास्त्री ने। लाल बहादुर शास्त्री ने देश का ऐसा नेतृत्व किया जो शायद बहुत कम लोगों ने किया होगा।

अगर देखा जाए तो शास्त्री जी का कार्यकाल बेहद कठिन था। यही वह समय था जब दुश्मन देश पाकिस्तान ने मौका देखकर भारत पर आक्रमण कर दिया पर जिस तरह से शास्त्री जी ने इन मुश्किल परिस्थितियों का सामना किया, वह बेहद सराहनीय था। उन्होंने देश का मनोबल बढ़ाने तथा देश की एकता को बनाए रखने के लिए 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया। देश को देखकर पाकिस्तान के छक्के छूट गए। चीन और भारत के पूर्व युद्ध के बाद पाकिस्तान ने यह सोचा भी नहीं था कि भारत इस तरह जवाब देगा। यह सब शास्त्री जी के करिश्माई नेतृत्व-कला का परिणाम था परंतु रूस और अमेरिका ने मिलकर शास्त्री जी को बहला-फुसलाकर ताशकन्द समझौते के लिए रूस बुला लिया। वही ताशकन्द समझौते के कुछ घटों के बाद उनकी रहस्यमयी मृत्यु हो गयी और भारत ने अपने एक अनमोल रत्न को खो दिया।

पर लोग, समाज उन्हें इस जीत और कुशल कार्यकाल से भी ज्यादा उनकी सादगी, उनकी ईमानदार बेदाग छवि ओर देश-भक्ति के लिए सम्मान देते हैं।

इतने गुण होने के बावजूद उनमें अंहकार का अंश मात्र भी नहीं था। शायद इसलिए कहते हैं कि जो पेड़ जितना फलों से भरा होता है, उतना ही झुका हुआ रहता है।

आपसी प्रेम

दो भाई समुद्र के किनारे टहल रहे थे। दोनों में किसी बात को लेकर बहस हो रही थी। अचानक बड़े भाई ने छोटे भाई को थप्पड़ मार दिया। छोटे ने कुछ नहीं कहा सिर्फ रेत पर लिखा ''आज मेरे भाई ने मुझे मारा'' अगले दिन दोनों फिर समुद्र के किनारे घूमने निकले छोटे भाई ने पत्थर पे लिखा– ''आज मेरे बड़े भाई ने उसे बचाया। बड़े भाई ने मुझे बचाया''। बड़े भाई ने पूछा– जब मैंने तुम्हें मारा तो तुमने रेत पर लिखा और जब मैंने तुम्हे बचाया तो पत्थर पर लिखा। ऐसा क्यों? विवेकशील भाई ने जवाब दिया-जब हमें कोई दु:ख दे तो रेत पर लिखना चाहिए। ताकि वो जल्दी मिट पाए परंतु जो मिटने न पाए और हमेशा के लिए यादगार बन जाए उसे पत्थर पर लिखना चाहिए।

लज्जा आती है

उपासना
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
प्रथम वर्ष

जिस देश में नारी के दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती रूपों को पूजा जाता है। जहाँ पहाड़ों पर चढ़ते-उतरते लोग जय माता दी बोलते है। उसी देश में माता का बलात्कार कर उसे जिंदा जला दिया जाता है। ऐसे देश में पैदा होने पर मुझे लज्जा आती है। रावण के घर से पवित्र लौट आने पर भी आग में झोंक दिया समाज ने सीता को। ऐसे समाज पर भी मुझे लज्जा आती है। अपने महान देश में नारी की ऐसी दुर्दशा पर मुझे लज्जा आती है।

माँ-बेटे की कहानी

जनू कुमार
बी.कॉम. (प्रोग्राम)
द्वितीय वर्ष

यह कहानी एक ऐसे घर की है जिसमें माता है पिता भी है। जब बच्चा छोटा होता है तो उसमें एक पवित्र सी हँसी और मुस्कुराहट होती है। जब बच्चा रोता है तो उसकी माँ समझ जाती हैं कि उसको भूख लगी है या प्यास। धीरे-धीरे बच्चा बड़ा होता है तब वह बच्चे को समाज में प्रस्तुत करती हैं और उसको पहला कदम स्कूल में रखवाती है।

जब बच्चा स्कूल की पढ़ाई पूरा कर लेता है तब कॉलेज में एडमिशन लेता है तब भी वह माँ के आँचल को नहीं भूलता न जाने उस आँचल में कौन-सी जादुई ताकत हैं जो उसको अपनी ओर खींच रही होती है। न जाने क्यों उस आँचल में ऐसी कौन-सी सुगन्ध है जो आजकल के कीमती से कीमती इत्र से भी कई गुना महँगी हैं।

मैं एक बात यह रखना चाहता हूँ कि जब भी माँ अकेले बैठी हो उसकी गोद में सिर रखकर सो जाना। आप देखेंगे कि आप कितनी भी मुश्किल में हो या कितने भी थके हुए हों आपकी थकान और सभी मुश्किलें सच में छू मंतर हो जायेगी। तो अब बेटा बड़ा हो गया है और शादी करके "विदेश" में नौकरी कर रहा है और अपनी बीवी के साथ वहीं रहता है। वह माँ हर दिन अपने बेटे से उसके हाल-चाल पूछा करती थी। एक-दिन उसकी माँ बीमार पड़ जाती हैं और अस्पताल में भर्ती हो जाती हैं। जब डॉक्टर उसके बेटे को फोन करते हैं तो वह फोन उठाकर पूछता है कौन? "डॉ० कहते है कि आपकी माँ अस्पताल में भर्ती है, आप जल्दी यहाँ आ जाइए"। उस माँ का बेटा 4-5 दिन के बाद आता है। जब वह आता है तो डॉ० से पूछता है कि इन्हें क्या हुआ है? अचानक उसकी माँ को होश आ जाता है और बेटे को देखकर, जैसे बच्चा कराहता हैं वैसे ही उसकी माँ कराहती हैं और आँखों से आँसू आ जाते है। तब बेटा कहता है कि "नर्स ये मेरी माँ क्या कह रही है? तब नर्स कहती हैं। अब तुम इनकी भाषा भी नहीं समझ पा रहे हो। जब तुम छोटे था तब तुम्हारे रोने या हँसने पर तुम्हारी माँ समझ जाती थी कि तुम्हें भूख या प्यास लग रही है। तेरे एक इशारे पर माँ ने तुम्हें खुश रखा हैं। जब तुम छोटे थे तो खुद गीले में सोकर तुम्हें सूखे में सुलाती थी, खुद भूखी रहकर पर तुम्हें मनपसंद खाना खिलाती थी आज तुम इनकी भाषा समझ नहीं पा रहे हो?

नर्स कहती है कि ये पूछ रही है कि "तू कैसा है?" इतनी बीमार होने के बावजूद मेरा हाल पूछ रही है? यह बात सुनकर बेटे की आँखों में आँसू झलक आए।

विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान ही संस्कृति है।
-मैथ्यू आर्नोल्ड

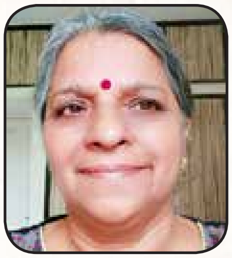

डॉ. रजनी जगोटा
प्राध्यापिका, वाणिज्य विभाग

पुस्तक समीक्षा

'तीस प्रतिनिधि कहानियाँ' शिवशंकर अवस्थी द्वारा सम्पादित पुस्तक है। कहानी संग्रह का शीर्षक उपयुक्त है। सभी कहानियाँ प्रतिनिधित्व करती हैं किसी विशेष पहलू का। अधिकतर कहानियाँ रोचक हैं और मन को छूती हैं।

कुछ कहानियों का मुख्य भाव मिलता जुलता है जैसे कि 'सगे संबंधी' (द्रोणवीर कोहली) 'गुल्ल की बत्रो' (धर्मवीर भारती) एवं 'कोना' (गोविन्द मिश्र) रिश्तों की सच्चाइयों से अवगत कराती हैं। इन कहानियों का शृँखला में एक निश्चित स्थान पर रखा जाना नीरसता नहीं आने देता।

'औरत' (कृश्न चंदर), 'लाल पान की बेगम' (फणीश्वरनाथ रेणु) 'आमस्टर्डम का हार' (मन्मथनाथ गुप्त), 'औरत का दर्द' (इन्द्रेश राजपूत) खंजन (सवितृ) सभी नारी से संबंधित हैं। औरत अमूमन अधिकतर कहानियों में उपेक्षित दिखाई पड़ती है और पाठकों की सहानुभूति बटोर लेती है-परन्तु कहानी 'औरत' के अंत का पूर्वानुमान संभव नहीं है। औरत के इस रूप से वितृष्णा होती है। यहाँ पराजय की परिभाषा का अलग ही चित्रण है। पर शायद यह भी एक सच है। इस कहानी का सच माँ के प्रेम के आगे हारता दिखाई देता है। कहानी 'आमस्टर्डम की हार' में, जहाँ माँ की सुंदर दिखने की चाह पुत्री-प्रेम के आगे घुटने टेक देती है।

मुंशी प्रेमचन्द की कहानी 'मंदिर' जाति भेदभाव की समस्या का दर्पण होने के साथ माँ के असीम प्रेम को भी दर्शाती है।

कहानी 'शरणदाता' (सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय') विभाजन के समय की होने के बावजूद मौजूदा, हालात में भी अत्यंत प्रासंगिक है जो 'इन्सान को इन्सान' रहने की प्रेरणा देती है। कहानी निरूत्तर (पुत्री सिंह) समाज के दोहरे मापदंडों का प्रतिबिम्ब है जहाँ पुरूष चरित्रहीनता को मर्दानगी का नाम दिया जाता है। 'धानी का दोस्त' (अभिमन्यु अनंत) में मुख्य पात्र द्वारा समापन वाक्य में दी 'दोस्त' की परिभाषा नारी के मजबूत पक्ष को जीवंत रूप देती है। जहाँ कथाकार कुछ शब्द कहकर ही अनेक विवरणों को उनमें समेट लेता है।

'इतिहास कथा' (कमलेश्वर) कहानी में खाली रात की कीमत चुकाना दिल को चीर देता है और अजीब सी कड़वाहट का अहसास होता है। 'फिर चाँद कब डूबा' (राजेन्द्र अवस्थी), आदमी की छाया में ही फुफकार है मुख्य पात्र की ऐसी मनः स्थिति भय उत्पन्न करती है।

कहानी 'धंधा' (शिवशंकर अवस्थी) के मुख्य पात्रों का भोलापन और सच्चाई मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। पतंग के लुटेरे (श्री लाल शुक्ल) की कुछ पंक्यिाँ तो जहन में बस जाती है।

'फर्श पर बैठी गौरेया' (खुशवंत सिंह) जी की बहुचर्चित एवं बहुप्रशंसित लघु कथाओं में से एक है।

कहानी की विविधता सराहनीय है एवं पाठक को बाँधे रखती हैं।

डॉ. कुसुमलता चड्ढा
प्राध्यापिका, राजनीति विज्ञान विभाग

गाँधी का स्वराज – 'साबरमती अभी दूर है...'

गाँधी के अनुसार स्वराज व्यक्ति और समाज की आध्यात्म में अवस्थित एक स्वाभाविक स्थिति है। उन्होंने 1920 में प्रकाशित अपने लेख में लिखा था —'Swaraj is the state of being of individuals And society'।

'स्वराज' की संकल्पना गाँधी की मौलिक संकल्पना नहीं है। गाँधी से पहले भी कई विद्वानों ने 'स्वराज' के विषय में अपने विचार व्यक्त किये थे। स्वामी दयानंद सरस्वती ने पहली बार 'भारत, भारतीयों के लिए' के रूप में इसे परिभाषित किया था। अरबिंदो घोष ने अपने 'जुगातर' के क्रांतिकारी और फिर आध्यात्मिक अवतारों में इसका 'स्वतंत्र भारत' और 'आत्मनियंत्रण' के अर्थ में क्रमशः प्रयोग किया था। वहीं तिलक द्वारा किया गया 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे अवश्य प्राप्त करूंगा 'मराठी में उद्घोष भी इसी सिलसिले की एक कड़ी है। गाँधी ने इन सभी विचारों को अपनी 'स्वराज' की संकल्पना में समेटते हुए 'स्वराज' को एक बहुआयामी लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया जिसमे उनके अनुसार विदेशी शासन से मुक्ति, लोकतंत्र, आर्थिक स्वराज, आत्मनियंत्रित व्यक्तियों द्वारा निर्मित एक सामाजिक समरसता से युक्त समाज का निर्माण शामिल हैं।

'हिन्द स्वराज' में गाँधी ने सर्वप्रथम **'स्वराज'** की संकल्पना की थी। तत्पश्चात उन्होंने कई मंचों पर इस संकल्पना का विस्तार किया। यह माना जाता है कि **'हिन्द स्वराज'** जहाँ स्वराज का खाका (Blueprint) प्रस्तुत करता है वहीं उनका **'रचनात्मक कार्यक्रम'** (Constructive Programme) उसका व्यवहारिक स्वरुप।[1] 'हिन्द स्वराज' में गाँधी चर्चा करते हैं कि वे किस प्रकार का 'राज्य' भारत में भविष्य में देखना चाहते हैं वहीं 'रचनात्मक कार्यक्रम' वे 'राज्य' के कार्यक्रमों की एक विस्तृत सूची तैयार करते हैं। इन दोनों के अतिरिक्त गाँधी राज्य, और विशेष रूप से स्वराज, के विषय में चर्चा अपने द्वारा **प्रकाशित या सम्पादित मुखपत्रों** 'हरिजन' (अंग्रेजी), 'हरिजन सेवक' (हिंदी), 'हरिजनबंधु' (गुजराती) एवं 'यंग इंडिया' (अंग्रेजी) में भी करते रहे हैं। इस सन्दर्भ में 1935 में गठित **कांग्रेस सरकारों को उनके द्वारा दिए गए प्रशासन सम्बन्धी 'निर्देश'** भी उल्लेखनीय हैं, जिनकी चर्चा नीचे की गयी है। भारत के विभाजन के बाद, विशेष रूप से **प्रार्थना सभाओं** के माध्यम से भी (जिसका आल इंडिया रेडियो के द्वारा सीधा प्रसारण होता था) गाँधी स्वराज सम्बन्धी अपने विचार सांझे करते रहे। इन सभी का संकलन **गाँधी वांग्मय** में उपलब्ध है।

स्वराज के बहुआयामी विचार के विभिन्न पक्षः

विदेशी शासन से मुक्त भारतः

विदेशी शासन से मुक्ति के रूप में 'स्वराज' की संकल्पना का ऐतिहासिक सन्दर्भ था जिसका वर्णन गाँधी अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में तुलसीदास को उध्दृत करते हुए कहते हैं 'पराधीन सपनेहु सुख नाही'। भारत को अपनी सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप बनने के लिए स्वंतंत्र होना होगा, विदेशी शासन के अधीन यह संभव नहीं। इस स्वतंत्रता की प्राप्ति अहिंसक सत्याग्रह से ही हो सकती है क्योकि। 'साधन' और 'साध्य' में अटूट सम्बन्ध है। स्वतंत्रता जैसे पवित्र साध्य को प्राप्त करने के लिए हिंसक आन्दोलन उचित साधन नहीं है। इसके अतिरिक्त हिंसक आन्दोलन में कुछ ही लोग हिस्सा ले पाएंगे। बच्चे, बूढ़े और महिलायें – या कहें तो साधारण लोग – इस महायज्ञ में सम्मिलित नहीं हो पायेगें। जो समूह आजादी दिलाएगा वही इसपर अपना हक जमाएगा, इटली के तानाशाही शासन के अंत करने वाले आन्दोलन के नेताओं का उदहारण देकर गाँधी यह समझाते हैं। गाँधी का विचार है कि

1 Anthony J.Parel (ed) Hind Swaraj and other Writings, CUP, 1997, p170

स्वतंत्रता प्राप्त करने से भी अधिक महत्वपूर्ण है उसे बनाये रखना अतः यदि स्वतंत्रता हिंसा से प्राप्त होगी तो उसे हिंसा के सहारे ही कायम रखा जा सकता है हिंसा की स्वाभिक प्रकृति ऐसी है कि यह उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है जो समाज के लिए हानिकारक है। दूरदर्शी गाँधी यहाँ यह भी चेतावनी देते हैं कि भारत के स्वतंत्र हो जाने के बाद 'राष्ट्रहित' की आड़ में किसी की स्वतंत्रता नहीं ली जा सकती!

गाँधी पश्चिमी और भारतीय दर्शन के अच्छे ज्ञाता थे। 1924 में, अपने मुखपत्र **'यंग इंडिया'** में लिखते हुए उन्होंने स्पष्ट किया था–

मेरा 'स्वराज' हमारी सभ्यता की विशिष्टता को संजो के रखने वाला स्वराज है। मैं कई नयी इबारतें लिखना चाहता हूँ, परन्तु वे सभी भारतीय स्लेट पर लिखी जायेंगी। मैं पश्चिम से तब उधार लूँगा जब उसे सम्मानजनक ब्याज के साथ लौटा सकूं।[2]

स्वराज का राजनीतिक पक्षः

लोकतंत्र के पश्चिमी विचार में 'सहभागिता' व 'जिम्मेदारी' के तत्वों को एक ओर स्वीकारते हुए गाँधी उसमें निहित 'बहुसंख्यवाद' की आलोचना करते हैं। 'हिन्द स्वराज' में ब्रिटिश संसद की तीखी आलोचना करते हुए उन्होंने 'अल्पसंख्यक' अथवा एक अकेले व्यक्ति के विचार को भी ध्यान से सुनने की अपील की। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में अधिकारों को सराहते हुए उन्होंने साथ ही कर्तव्यों का महत्त्व बताया और दोनों को साथ–साथ निबाहने की सलाह दी। लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ, मीडिया के बारे में भी उनके विचार ध्यान देने योग्य हैं। 'हिन्द स्वराज' में उन्होंने ब्रिटिश मीडिया की निष्पक्षता पर प्रश्नचिन्ह उठाए। स्वयं कई पत्र–पत्रिकाओं के संपादक और लेखक होने के नाते गाँधी पत्रिकारिता के उच्च आदर्शों के समर्थक थे। वे मानते थे की पत्रों को अपने आप को निष्पक्ष रखने के लिए आवश्यक है कि वे विज्ञापन न स्वीकार करें। गाँधी का कहना था कि समाचार पत्रों का उद्देश्य है की जनता से सम्बंधित समस्याओं को वे प्रकाशित करें और जनता को भी सही जानकारी दें।[3] हिन्द स्वराज में गाँधी के ये शब्द अभी भी प्रासंगिक हैं। गाँधी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था।

'...अखबार का एक काम तो है लोगों की भावनाएं जानना और उन्हें जाहिर करना, दूसरा काम है लोगों में अमुक जरूरी भावनाएं पैदा करना और तीसरा काम है लोगों में दोष हों तो चाहे जितनी मुसीबतें आयें, उन्हें बेधड़क दिखाना'[4]।

गाँधी के अनुसार पश्चिम के द्वारा दिया गया लोकतंत्र में सहभागिता का विचार और भी अर्थपूर्ण हो सकता है यदि उसे शक्ति के विकेंद्रीकरण से जोड़ा जाए। उनका विश्वास है कि विकेंद्रीकरण राज्य के वर्तमान जनविरोधी स्वरुप का अंत कर 'स्वराज' की दिशा में ले जा सकता है। हरिप्रसाद व्यास अपने द्वारा किये गए गाँधी के ग्राम स्वराज से सम्बंधित लेखों के संकलन 'ग्राम स्वराज' के प्राक्कथन में इस सन्दर्भ में कहते हैं गाँधी राज्य के झड़ जाने में नहीं, बल्कि उसके 'बिखर जाने' में विश्वास रखते थे। (Gandhi did not believe in the 'withering Away' of state but of 'scattering of the state') ।[5]

गाँधी के राजनीतिक विकेंद्रीकरण की योजना की सबसे निचली इकाई ग्राम था। वे ग्राम स्वराज्य चाहते थे जिसमे ग्राम सभा अपने क्षेत्र के विकास के लिए पूर्ण रूप से स्वायत्त व आत्मनिर्भर हो। इसी तरह का क्रम जिला और राज्य से होते हुए संसद तक हो। सभी संस्थाएं अपने कार्यक्षेत्र में स्वायत्त हों।

ग्राम स्वराज की बात करते हुए गाँधी गाँव में प्रचलित पुरानी पंचायती व्यवस्था को जस का तस नहीं लाना चाहते थे। वे स्वराज की सबसे निचली इकाई के रूप में आधुनिक ग्राम का विकास चाहते थे। उन्होंने इस विषय में विस्तार से चर्चा की थी।

गाँव का प्रशासन एक पंचायत के द्वारा चलाया जायेगा जिसका चुनाव ग्रामसभा करेगी। परन्तु पंचायतों को फौजदारी मामलों, सामाजिक बहिष्कार व शारीरिक दंड देना का अधिकार नहीं होगा। उसके कार्य ग्राम स्तर पर भोजन, जानवरों की रखवाली, मनोरंजन की व्यवस्था, खेल के मैदानों का रखरखाव, शिक्षा, स्वच्छ जल की व्यवस्था, सफाई, स्वस्थ्य सेवाएँ मुहैय्या करने का होगा।[6]

दूसरे शब्दों में, गाँधी राज्य की शक्तियों को इतना विकेन्द्रित करने के पक्ष में थे कि एक केन्द्रित, एकाधिकार युक्त संस्था के रूप में उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाये।

2 Young India, 26.6.1924, p.210 "My Swaraj is to keep intact the genius of our civilization. I want to write many new things, but they must be written on the Indian slate. I would gladly borrow from the West when I can return the amount with decent interest."

3 हिन्द स्वराज,पृष्ठ 1.

4 हिन्द स्वराज,पृष्ठ 1.

5 H.M Vyas, Preface to Village Swaraj, 22.11.62

6 हरिजन, २६.७.४२, pp-238

1942 में अपने मुखपत्र 'हरिजन' में लिखते हुए उन्होंने स्पष्ट किया:

'हम जिस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं वह है पूर्ण मानसिक और नैतिक विकास के साथ–साथ लोगों की खुशी। मैं 'नैतिक' को 'अध्यात्मिक' के पर्याय के रूप में प्रयुक्त करता हूँ। इस उद्देश्य को हम विकेंद्रीकरण के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं। केन्द्रीकरण अहिंसक समाज की संरचना के साथ मेल नहीं खाता।'[7]

गाँधी का पूरा विश्वास था कि विकेंद्रीकरण ही अहिंसक और आध्यात्मिक समाज के निर्माण की क्षमता रखता है। राजनीतिक व आर्थिक विकेंद्रीकरण जहाँ व्यक्ति में स्वाभिमान की भावना जगाता है, वहीं सामाजिक विकेंद्रीकरण सामाजिक स्तर पर समानता लाने में सहायक होता है और मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करता है। आध्यात्मिक विकेंद्रीकरण 'स्वत्व' को नष्ट कर व्यक्ति को 'मैं' भाव से मुक्त कर उसकी आत्मा को विस्तार देता है, उसे सभी के साथ मिलजुलकर प्रेम भाव से रहना सिखाता है। इस तरह विकेंद्रीकरण एक बाहरी शक्ति–अर्थात राज्य– की आवश्यकता को ही समाप्त कर देता है क्योंकि समाज पूर्ण रूप से आत्मनियंत्रित हो जाता है।

राजनीति को वे लोक भलाई का साधन मानते थे, न कि सत्ता प्राप्त करने का। 1935 के भारत सरकार कानून के अंतर्गत राजनीतिक स्वायत्तता की व्यवस्था की गयी थी और 1937 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी को 7 राज्यों में सरकार बनाने का मौका मिला। गाँधी जो 1934 से कांग्रेस की सदस्यता छोड़ चुके थे कांग्रेस सरकारों को सलाह देने का लोभ संवरण नहीं कर पाए। अखबारों ने उनके द्वारा लिखे गए सलाह सम्बन्धी लेखों को 'आदेश पत्र' ('Intruments of Instructions') की संज्ञा दी जबकि गाँधी ने इन्हें 'नम्र निवेदन' ('Humble Notes') कहा। उन्होंने अपने मुखपत्र 'हरिजन' के माध्यम से लेखों की एक श्रृंखला शुरू की जो नए शासकों की 'राजनीतिक शिक्षा' के बारे में थी। उन्होंने मंत्रियों के निजी व्यवहार के लिए किये लिए भी कुछ आचार के नियम निर्धारत किये जैसे मंत्रियों को रेल यात्रा थर्ड क्लास में करनी चाहिए, खादी वस्त्र धारण करने चाहिए और सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए। मंत्रियों को सभी समुदायों की देखभाल करनी चाहिए और जनता के द्वारा दिए गए वोट का सम्मान करना चाहिए। सरकारी कर्मचारियों के लिए गाँधी के निर्देश थे कि वे अपने दायित्वों को उचित प्रकार से निभायें। गाँधी ने जनता को गैरजिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ शिकायत करने के लिए और उसका समाधान प्राप्त करने के लिए अधिकार देने की बात भी की।[8] प्रशासन को चेतावनी देते हुए गाँधी ने लिखा कि प्रशासन लोक भलाई की आड़ में हिंसा अथवा शारीरिक बलप्रयोग नहीं कर सकता। राज्य की शक्ति असीमित और निरंकुश नहीं हो सकती।[9]

राजनीति में शुचिता के विषय में और भ्रष्टाचार के खिलाफ उनका कहना था सरकारी पद के साथ मोह नहीं होना चाहिए ('offices Are to be held lightly] not tightly')[10] लोगों को सरकार की गलत नीतियों का विनय सहित विरोध करने का अधिकार होना चाहिए। इस प्रकार गाँधी स्वतंत्र भारत में भी सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ सत्याग्रह के समर्थक थे। राजनीतिक स्वराज के अंतर्गत वे अंतरात्मा को अस्वीकार्य कानूनों और सरकारी आदेशों के खिलाफ सत्याग्रह को अधिकार के साथ साथ कर्त्तव्य मानते हैं।

आर्थिक स्वराजः

गाँधी ऐसी गरीबी के खिलाफ थे जिससे व्यति की स्वतंत्रता छिन जाती हो (free of freedom & denying poverty) अपनी इच्छा से यदि व्यक्ति सादा और बिना ऐशो–आराम का जीवन जीना चाहता है तो वह इसके लिए स्वतंत्र है परन्तु यदि गरीबी के कारण वह अपनी अन्य अधिकारों का प्रयोग करने में अक्षम हो तो यह स्वराज नहीं है।हर व्यक्ति को 'अवसर की समानता' मिलनी चाहिये और उसकी मूल आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपडा और मकान की पूर्ति होनी चाहिए। हरेक व्यक्ति को अपने श्रम के फल पर अधिकार होना चाहिए– ऐसा नहीं होना चाहिए कि मेहनत कोई करे और उसका फल कोई और भोगे।

गाँधी निजी संपत्ति के अधिकार के समर्थक नहीं थे। इस सन्दर्भ में उनके द्वारा दिया गया 'ट्रस्टी शिप' का विचार सराहनीय हैं। पूंजीपति जिस पूंजी पर अपना अक्षुण्ण अधिकार समझते हैं, गाँधी के अनुसार वे उस पूंजी के मालिक नहीं बल्कि 'संरक्षक' (Trustee) हैं। गाँधी के अनुसार अमीरों की पूंजी को निर्माण में मजदूरों और समाज का भी योगदान रहा है। अतः उन्हें अपने गुजारे भर धन रखने के पश्चात् बाकि धन मजदूरों में और सामाजिक भलाई के कार्यक्रमों में

7 Harijan, 18.1.42 p.5 the end to be sought is human happiness combined with full mental and moral growth. I use the adjective moral a synonymous with spiritual. This end can be achieved under decentralization. Centralization as a system is inconsistent with a nonviolent structure of society.

8 Harijan,24.7.37, CWMG, LXV,pp.431-33

9 वही

10 "Not a Prize", Harijan, 7.8.37, CWMG, LXVI, pp.16-17

व्यय कर देना चाहिए। इस प्रकार समाज में सौहार्द भी रहेगा और समाज शिक्षित, कुशल और धनाढ्य व्यक्तियों के व्यवसाय कौशल से भी लाभ उठा सकेगा।

रस्किन के विचारों से प्रभावित होकर गाँधी ने उनकी पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' का गुजराती अनुवाद अपने अखबार 'इंडियन ओपिनियन में छापा था। रस्किन ने आर्थिक क्रियाओं में आत्मा, आनंद और गरिमा पर बल दिया था। गाँधी ने कुटीर उद्योगों, विशेषकर चरखे और खादी का प्रचार इसी सन्दर्भ में किया था

आर्थिक स्वराज का एक पक्ष लोगों में ऐसे कौशल निर्माण से संबधित था जिसके द्वारा गरीब और बेरोजगार गरिमापूर्ण जीवन यापन के लिए कर सकें। गाँधी मशीनीकरण के विरुद्ध नहीं थे परन्तु वे चाहते थे कि प्रौद्योगिकी की सुविधा हर व्यक्ति को उपलब्ध हो– गरीब हो या अमीर। गाँधी का विश्वास था कि 'शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति शारीरिक श्रम से होनी चाहिए न की बुद्धि से'[11] वे हर व्यक्ति को किसी न किसी शारीरिक श्रम के कार्य अपने जीवन में शामिल करने को कहते थे। सूत कातना भी ऐसा ही श्रम था जिसे वे विशेष रूप से प्रस्तावित करते रहे। उनके अनुसार एक किसान की मेहनत उतनी ही गरिमापूर्ण है जितनी एक डॉक्टर या इंजिनियर की मेहनत। किसी प्रकार के कार्य को दूसरे से कमतर नहीं समझना चाहिए। इस प्रकार गाँधी उस सामाजिक भेदभाव की ओर संकेत कर रहे थे दो शारीरिक श्रम को निम्नकोटि का समझता था। अपने आश्रम में वे इस विषय में बहुत सख्त थे। उनके आश्रमवासी अपने सभी काम स्वयं करते थे। गाँधी ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ को भी शान्ति निकेतन में छात्रावासों से रसोइयों को हटा कर छात्रों को अपना भोजन स्वयं बनाने के लिए कविवर को निर्देश देने के लिए सिफारिश की थी।

गाँधी अन्धाधुंध औद्योगीकरण के सख्त खिलाफ थे। उनके अनुसार अधिक उत्पादन के लिए मशीनों का प्रयोग व्यक्ति को उपभोक्तावादी संस्कृति की ओर धकेलता जिससे है दोनों पक्ष प्रभावित होते हैं– उपभोक्ता भी और मजदूर भी। पूरे दिन मशीन पर काम करते करते मजदूरों का जीवन नीरस हो जाता है और उनका मन अपने काम के साथ जुड़ नहीं पाता। गाँधी मशीनों का उस हद तक ही प्रयोग चाहते थे जिससे व्यक्ति अत्यधिक श्रम से बच सके। मशीनों के लिए अँधश्रद्धा में उनका विश्वास नहीं था। भारत के लिए वे 'उचित प्रौद्योगिकी' (appropriate technology) में यकीन रखते थे। वे ऐसा इसलिए भी चाहते थे क्योंकि वे जानते थे कि मशीन भारत में कइयों का रोजगार छीन सकती है। शूमाकर नामक ब्रिटिश अर्थशास्त्री ने गाँधी की इस विषय में सराहना करते हुए अपनी पुस्तक Small is Beautiful (1973) में लिखा है कि भारत जैसे देश के लिए मध्य स्तरीय प्रौद्योगिकी उचित है जो 'जनता द्वारा उत्पादन, (production by masses) पर बल दे न कि 'थोक उत्पादन' (mass production) पर।[12]

1934 में अपने छुआ–छूत विरोधी यात्रा के दौरान गाँधी को गाँव की गरीबी को करीब से देखने का अवसर मिला। उन्होंने ने यहाँ तक कहा की शहर के लोगों के लिए ग्रामीण 'अछूत' के सामान ही हैं।[13] 1934 में गाँधी ने अखिल भारतीय ग्रामीण उद्योग संघ की स्थापना की, उसके सही कार्यान्वयन के लिए प्रशिक्षण पुस्तिका जारी की। ग्रामीण उत्थान का उद्देश्य गावों में सफाई, स्वस्थ्य और रोजगार के अवसर की व्यवस्था करना था।

सामाजिक पक्षः

गाँधी भारत में रहने वाले विभिन्न समुदायों के अस्तित्व से भली–भांति परिचित थे। और जानते थे कि इनमे आपसी मेलजोल अति आवश्यक है। सामजिक स्तर पर गाँधी सांप्रदायिक सद्भाव के समर्थक थे। इसके लिए वे कहते हैं कि भा रत में रहने वाले दोनों मुख्य समुदायों– हिन्दुओं और मुसलामानों को एक दूसरे की धार्मिक भावनाओं का सम्मान स्वेच्छा से करना चाहिये। यदि आपसी विश्वास दृढ हो तो कोई भी बाहरी शक्ति उसे तोड़ नही सकती। घड़ा यदि कच्चा हो तो मामूली ठोकर से टूट जाता है, परन्तु यदि उसे आग में पकाया जाये तो उसे तोड़ पाना आसान नहीं होगा।[14]

उनके अनुसार संगठित धर्मों से ऊपर एक धर्म है जो सामजिक आचार विचार के नियम पर आधारित है। हर धर्म, अर्थात सम्प्रदाय को, तर्क (reason) और करुणा (compassion) की कसौटी पर कसा जाना चाहिए क्योंकि हर धर्म एक ऐतिहासिक और सामाजिक परिपेक्ष्य में जन्म लेता है और इंसानों के माध्यम से समाज में पहुँचता है अतः उसमें सुधार या परीक्षण की गुंजाइश हमेशा रहती है। स्पष्टतः गाँधी एक धर्मनिरपेक्ष के स्थान पर एक सर्व धर्म समभाव पर

11 हिन्द स्वराज, 'हिंदुस्तान की दशा– वकील',अध्याय 11,पृष्ठ 37
हरिजन, 26.7.42, pp.238
Bunch of Old Letters, 1958, pp.506-7, Harijan,29.6.35 ,p.156

12 Small is Beautiful, p.128
13 हरिजन , 30.11.34 CWMG LIX, p.414
14 हिन्द स्वराज,पृष्ठ 35

आधारित राज्य की कल्पना करते थे क्यों उनके अनुसार धर्म व्यक्ति का अत्यंत निजी मामला है, उसके और उसके निर्माता के बीच का विषय।[15] राज्य या राज्य प्रतिनिधिओं को न तो किसी धर्म का विरोध करना चाहिए और न ही किसी धर्म विशेष की हिमायत।

गौ हत्या के संवेदनशील विषय पर गाँधी का मत था कि वे गाय की रक्षा के लिए अपना जीवन दांव पर लगा सकते हैं परन्तु किसी व्यक्ति को गौ हत्या के कारण जीवन से वंचित नहीं कर सकते![16] स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर 'गौ हत्या' का मुद्दा फिर से गरमा गया जब कई हिन्दू संगठनों ने संविधान में गौ हत्या पर रोक लगाने से सम्बंधित प्रावधान शामिल करने को कहा और इसके लिए एक अभियान छेड़ दिया था। इस अभियान को डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद का भी समर्थन प्राप्त था। गाँधी का स्पष्ट मत था– 'भारत में गौ हत्या को समाप्त करने के लिए कानून नहीं बनाया जा सकते। मैंने हमेशा के लिए गौ सेवा का प्रण लिया था पर किस प्रकार मेरा धर्म बाकी सभी भारतीयों का धर्म हो सकता है? ऐसा करना उन भारतीयों के साथ जबरदस्ती होगी जो हिन्दू नहीं हैं।[17]

जाति के आधार पर छुआछूत भी गाँधी के स्वराज में कोई स्थान नहीं रखता। गाँधी इसे हिन्दू धर्म पर कलंक के रूप में मानते हैं।[18] 1934 के बाद से उन्होंने इसे अपने स्वतंत्रता आन्दोलन के केंद्र में रखा और इसे जड़ से उखाड़ने की मुहीम चलायी, धर्म के विद्वानों से इसके धार्मिक आधार पर स्वीकृत नहीं होने की घोषणा करवाई।[19] पंडित मदन मोहन मालवीय और रामानुज अयंगार जैसी नेताओं के विरोध के बावजूद गाँधी छुआ–छूत कानूनी रूप से समाप्त करने और मंदिरों में तथाकथित अछूतों के प्रवेश सम्बन्धी आंदोलनों की हिमायत की। बड़े कड़े शब्दों में उन्होंने कहाः मैं यह सौवीं बार कह रहा हूँ कि मंदिरों में प्रवेश कानूनी अवरोध है जो हिन्दुओं द्वारा किये गए किसी समझौते से दूर नहीं हो सकती। कानून अवरोध को विधायी कानून के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।'[20] गाँधी ने छुआ–छूत को समाप्त करने में लोगों को शिक्षित करने के लिए 1934 'हरिजन', 'हरिजन बंधु' और 'हरिजन सेवक' नामक तीन पत्रिकाएँ क्रमशः अंग्रेजी, गुजराती और हिंदी में आरंभ की। उन्होंने 'हरिजन सेवक संघ' नाम की संस्था का गठन भी इस वर्ग के लोगों के उद्धार के लिए किया और भारत के कोने–कोने में लोगों में जागरण फैलाने के लिए, हरिजन यात्राएं कीं।

महिलायों के सम्मान और अधिकार के लिए गाँधी के स्वराज में उचित स्थान है। बाल विवाह, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों के वे विरुद्ध थे। उन्हें सामाजिक व राजनीतिक आंदोलनों में हिस्सा लेने के लिए आह्वान करते थे और समानता के अधिकार के समर्थक थे।

अध्यात्मिक स्वराजः

गाँधी के स्वराज का अंतिम लक्ष्य राज्य व उससे सम्बंधित हिंसक संस्थाओं की आवश्यकता को समाप्त करना है। गाँधी का विश्वास था कि समाज में कानून और व्यवस्था लाने के लिए पुलिस जैसी संस्थाओं की आवश्यकता इसलिए पड़ती है क्योंकि व्यक्ति में आत्मसंयम और भाईचारे की भावना का अभाव है। व्यक्ति अपने–आप को समाज के अन्य अंगों व व्यक्तियों से बंधा हुआ अथवा उनपर निर्भर नहीं देख पता और एकाकीपन में रहता है।

गाँधी इस तरह की सोच के लिए शिक्षा व्यवस्था को जिम्मेदार मानते हैं जो व्यक्ति को अक्षरज्ञान से अधिक कुछ भी नहीं देती। विद्यार्थी की याददाश्त की परीक्षा ली जाती है उसे जीवन के लिए तैयार नहीं किया जाता, उसके अध्यात्मिक विकास पर तो बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया जाता। गाँधी ऐसी शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं जिसमे विद्यार्थियों को श्रम का महत्व समझाया जाए, उसे जीविकोपार्जन के लिए कोई हुनर को सिखाया जाये। गाँधी सभी धर्मों की शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहते थे ताकि लोगों में सर्व धर्म समभाव की भावना जागृत हो और धर्म के आधार पर वैमनस्य दूर हो।

स्वराज की गाँधी की संकल्पना अभी अधूरी है। दिवंगत पत्रकार प्रभाष जोशी ने 'हिन्द स्वराज' के शताब्दी समारोह (2009) के एक आयोजन में कहा था 'भारत अभी गाँधी के स्वराज की संकल्पना से कोसों दूर है। संभव है हम भविष्य में उनका सपना पूरा कर पायें'। 15 अगस्त 1947 को जब उनके एक साथी ने उनकी एक प्रतिज्ञा याद दिलाई थी कि भारत के स्वतंत्र होने पर वे साबरमती आश्रम लौट आयेंगे तो उन्होंने दुखी स्वर में कहा था 'साबरमती अभी दूर है, नोआखाली पास है' – उन दिन वे नोआखाली में पदयात्रा कर वहां लगी सांप्रदायिक आग को बुझाने की कोशिश में लगे थे।

15 CWMG,Vol.XX,p.159

16 'Cow slaughter and manslaughter, in my opinion are two sides of the same coin."CWMG,XXV,p519

17 Prarthana Pravachan-I, pp. 260-3, CWMG,LXXXVIII, pp.375-6

18 गांधीजी, ,''अस्पृश्यता का अभिशाप", संग्राहक, आर के प्रभु,मेरे सपनों का भारत, पृष्ठ संख्या 265

19 'QUESTIONS FOR SHASTRI PARISHAD', **The Hindustan Times,** 27.12.32, CWMG,LII,p265; Statement on Untouchability in Hindu Shastrs to the Press, **The Hindu,** 4.1.33, CWMG, LII, pp.347-50.

20 'Agreeing to Differ" Harijan, 18.2.33, CWMG, LIII, p.334.

एक थी स्टाफ एसोसिएशन

डॉ. बन्ना राम मीना
अध्यक्ष, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज स्टाफ एसोसिएशन
(14 फरवरी 2018 से 14 फरवरी 2020)

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज के इतिहास में पहली बार दो रात और तीन दिन के लिए स्टाफ एसोसिएशन की तरफ से दिल्ली से बाहर स्टाफ को यात्रा पर ले जाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। दरअसल, अब तक चलन था कि एक दिन दिल्ली के आस–पास सुबह जाकर शाम को लौट आते थे। अधिकतर शिक्षक साथी लीक से हटकर दिल्ली से बाहर जाना चाह रहे थे! यकायक दिल्ली से बाहर की यात्रा पर सर्वसम्मति बनी। ऐसे सफर की योजना बनाने के लिए, उसे व्यवहारिक बनाने के लिए व्यक्तिगत स्तर की कोशिशों के साथ–साथ सामूहिक स्तर के प्रोत्साहन की भी जरूरत होती है। सामूहिक सहयोग व प्रोत्साहन के बिना इस दिशा में सोचा भी नहीं जा सकता था। इस दिशा में हमारे वरिष्ठ सहयोगियों (विशेष रूप से कुसुम कौशिक और रेनू कपूर मैम) के निरंतर बिना शर्त समर्थन सहयोग और प्रोत्साहन के चलते हमें स्टाफ एसोसिएशन की तरफ से कॉलेज में एक नई परंपरा शुरू करने के लिए प्रेरित किया। मिलनसार व्यक्तित्व रेनू कपूर मैम से बात करना मन को एक नए उत्साह से भर देता है और कुसुम कौशिक मैम बहुत ही स्पष्ट तौर पर बात रखने वाले लोगों में से हैं। जिंदगी को जीते हुए सही–गलत का परिप्रेक्ष्य जानकर स्टैंड लेना इन दोनों से बखूबी सीखा जा सकता है। ऐसे व्यक्तित्व के साथ काम करना उनका सहकर्मी होना सौभाग्य और गर्व का विषय है। अपने वरिष्ठ सहयोगियों के अलावा शिक्षक साथी मुकेश बैरवा, सुनील कुमार, हीरा सिंह बिष्ट, नितिन कुमार, दिनेश कुमार तथा युवराज की सहायता और सहयोग से हम इस विचार को बड़ी सफलता के साथ व्यवहारिक धरातल पर संभव बनाने में सफल रहे।

28 अप्रैल, 2019 की सुबह जिसमें हमारे शिक्षक साथी रोजमर्रा से अलग हटकर पहले से ज्यादा खिले–खिले,तीन दिवसीय यात्रा को लेकर खुश और उत्साह से भरे जान

पड़े।ऐसे में आप अगर अपने सहकर्मियों को पहले से ज्यादा खुश और उत्साह से भरा देखे तो आपकी खुशी तो अपने आप ही बढ़ जाती है। गार्जियन के तौर पर संस्थान के प्राचार्य मुकेश अग्रवाल जी भी यात्रा को लेकर काफी उत्साहित नजर आये। सात बजे कॉलेज से रवाना हुए। बस में गाने बजाते हुए, अंताक्षरी करते तथा बाहर की दुनिया देखते हुए, हम सब एक दूसरे का सम्मान करते गानों की धुन पर नाचते–गाते नाश्ते के निर्धारित स्थान पर पहुँचे। यहाँ शुद्ध स्वादिष्ट साफ सुथरा

ताजे लूण्या घी के साथ नाश्ता किया। इसके बाद शाम को जिम कॉर्बेट पहुँचे। रिर्जोट में आंशिक रूप से आराम करने के बाद शिक्षक साथी कोसी नदी के पास प्राचीन मंदिर में दर्शन करने गये तथा बाद में सभी ने वहाँ नदी के किनारे खूब मस्ती एवं गपशप की। दिल्ली विश्वविद्यालय में दर्जनों ऐसे कॉलेज व वहाँ के शिक्षक साथी है जो संस्थान में काम करने वालों के साथ सामूहिक रुप से ऐसे टूर (Tour) का सपना तो देखते है परन्तु ऐसा व्यवहार में नहीं कर पाते है क्योंकि बौद्धिक तबकों में जहाँ पर अहंकार है, नफरत और दूसरों को नीचा दिखाने की जिद रहती है। जिसके भीतर साझापन नहीं, सनक घुस आती है तो वहाँ बहुत कुछ चाहते हुए भी ऐसा संभव नहीं हो पाता है। शुक्रगुजार हूँ कि हमारे यहाँ सहकर्मी साथियों को अहसास है कि मनुष्य महज कमाऊ मशीन नहीं बल्कि जिंदगी को सलीके के साथ जीने वाला भी है। हम अकेले या परिवार के साथ तो अक्सर जाते रहते हैं किन्तु हम जिस संस्थान में काम करते हैं वहाँ का सामूहिक टूर (Tour) भी जिन्दगी में बहुत अहम होता है।

देखते–देखते यात्रा के समय सबकी अपनी–अपनी एक छोटी सी दुनिया बन गई। इस दुनिया के कई रंग और पक्ष है। कॉलेज के शिक्षक साथियों ने अपनी पंसद के साथियों के साथ समूह में ग्रुप बना लिये। इन पलों ने यह अहसास भरा कि वास्तव में,जिन्दगी बेहद खुबसूरत है और उसकी खूबसूरती इन सामूहिक पलों से भी है। शाम को रिजोर्ट लौटते हुए देखा कि रास्ते में हल्की हलचल के बीच एक तरह का सन्नाटा यहाँ छाया रहता है। चारों तरफ हरियाली के बीच दरख्तों पर बैठे परिंदे की कुहक–कुहक वाली ध्वनि सुनाई पड़ रही है।

अगले दिन 29 अप्रैल की सुबह नैनीताल के लिए हम सब सात अलग–अलग गाड़ियों में रवाना हुए। घुमावधार रास्तों से नैनीताल की प्राकृतिक झीलों को निहारते हुए पहुँच गये नैनीताल! यहां सांस लेने में दम नहीं लगाना पड़ रहा। धूप के लिए बालकनी के साथ पॉलिटिक्स नहीं करनी पड़ रही। यहाँ चारों तरफ धूप पसरी है। हवा में हल्कापन है और आसमान इतना साफ कि आप नजर उठाओ तो एचडी, एलइडी स्क्रीन सा सब साफ दिखे। शाम के वक्त हल्की ठण्ड रही। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता देखकर इस अहसास से बचा नहीं जा सकता कि भारत की महानगरीय संरचना में एक ओर व्यस्तताओं का बवंडर है तो दूसरी ओर महत्वाकांक्षाओं की आँधी। और इससे जुड़े हम प्राकृतिक हवा, पानी, धूप से अलग होकर यांत्रिक दृष्टि से वातानुकूलित होने के चक्कर में अपने स्वाभाविक राग, रंग मिठास, आल्हाद, उत्साह और उमंग से परिपूर्ण वाली संस्कृति की ख़बर लेना भूल रहे हैं। शाम को वापस अपने रिजोर्ट लौटे। इस दिन अच्छा और उत्साहवर्धक यह रहा कि सभी शिक्षक साथी बिना थके, बिना ऊबे या खीझे नैनीताल में घुमने बोटिंग करने आदि में व्यस्त रहे।

शाम के वक्त रिजोर्ट में हम सब के चेहरों पर मुस्कुराहटें झलक रही है। सभी को वहाँ की व्यवस्था खूब रास आ गई। चारों तरफ जंगल और उसके बीच में सुन्दर शांत जगह पर रिजोर्ट जहाँ टाइगर की गर्जना से लेकर पक्षियों तक की चहचाहट सुनाई पड़ रही है। सभी के चेहरे पर सामूहिक रूप से खुशी के भाव झलक रहें है। हमारे जीवन में अक्सर ऐसे बहुत से दृश्य होते हैं जिन्हें देखकर हम कह पाते हैं कि यदि आपके हिस्से में सामूहिक खुशी पर खुश होना शामिल नहीं है तो यकीं मानिए आपके हिस्से की खुशियां नोटबंदी के बाद पुराने नोटों की तरह बेकार हो जाएँगी। आपके पास खुश होने के बहाने तो होंगे, आप खुश नहीं होंगे। इसमें कोई दो राय नही कि रोजमर्रा के जीवन से थोड़ा हटकर कुछ ऐसे लम्हें जिन्दगी का एक्यूप्रेशर हुआ करती है। अगर हम अपने व्यक्तिगत जीवन में सकारात्मक भाव वाले व्यक्तित्व है तो सदैव उत्साहित आंन्दित रहते हैं। जाहिर सी बात है शिक्षक जो

आपके भीतर जीवन रस पैदा करे। रोजमर्रा के जीवन को उत्सव की तरह जीना सिखाए, ऐसा करने के लिए जरूरी है कि शिक्षक खुद भी ऐसा जीवन जीता हो। नहीं तो इस बात पर भी पचासों पीपीटी मिल जाएंगे। लेकिन जीवन पीपीटी से नहीं, जीने से संवरता है।

अगली 30 अप्रैल की सुबह जल्दी जिम कॉर्बेट नैशनल पार्क के लिए सभी अलग–अलग सफारी में रवाना हुए। यह जगह वाइल्ड लाइफ लवर्स के साथ ही नेचर लवर्स के लिए भी एक परफेक्ट डेस्टिनेशन है। हमारे साथी रोमांच के साथ–साथ जोश और उत्साह का भी अनुभव करना चाहते थे इसी उम्मीद में हम भी समय पर पहुँच गए जिम कॉर्बेट। यहाँ हमें थोड़े इंतजार के बाद अंदर जाने की अनुमति मिली। 520 स्क्वेयर किलोमीटर इलाके में फैला यह पार्क 4 अलग–अलग जोन्स में बंटा हुआ है– बिजरानी, धिकाला, झिरना और दुर्गादेवी जोन। पीक सीजन के वक्त हर साल करीब 70 हजार टूरिस्ट्स देश ही नहीं बल्कि दुनियाभर से जिम कॉर्बेट आते हैं। सभी शिक्षक साथी अपनी–अपनी सफारी जीप में फोटो खींचते एवं वहाँ दिखाई देने वाले पक्षियों को निहारते हुए प्रकृति की अहमियत समझ रहे हैं।

वहाँ के स्थानीय निवासी की माने तो जिम कॉर्बेट स्थित 'टाइगर रिजर्व कॉर्बेट नैशनल पार्क' देश के सबसे पहले वाइल्ड लाइफ रिजर्व पार्क्स में से एक है जिसकी स्थापना 1936 में हुई थी। पहले इसका नाम रामगंगा नैशनल पार्क था लेकिन बाद में शिकारी से संरक्षक बने प्रसिद्ध जिम कॉर्बेट के नाम पर इस पार्क का नाम जिम कॉर्बेट नैशनल पार्क कर दिया गया। प्रॉजेक्ट टाइगर की शुरुआत जिम कॉर्बेट से हुई थी और देश के 9 टाइगर रिजर्व्स में से एक टाइगर रिजर्व जिम कॉर्बेट में है। रास्तों से गुजरते हुए हम वहाँ के जानवरों की बात करें तो वहाँ टाइगर के अलावा हाथी, चीतल, सांभर, नीलगाय, घड़ियाल, किंग कोबरा, जंगली सूअर, कांटेदार जंगली चूहा, उड़ने वाली लोमड़ी और भारतीय गिरगिट जैसे कई जानवर और जीव–जंतु दिखे। इसके अलावा बहुत सी रंग बिरंगी चिड़ियों की भी प्रजातियां दिखी। यहाँ हम देर तक घूमते हैं, देखते हैं। धीरे–धीरे हम सब रिजोर्ट की तरफ लौटते हैं।पिछले दो दिनों तक नैनीताल की खूबसूरती, जिम कॉर्बेट की सैर में खोए थे। दिल्ली को जैसे भूल ही गए थे। रिजोर्ट का हिसाब करने के बाद हम सब अपनी बस में बैठते हैं और जिम कार्बेट को अलविदा कहते हैं।

ऐसे सामूहिक सफर मे कुछ यादगार लम्हें होते हैं जो सदैव आपकी यादों में टहलते रहते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि रोजमर्रा के जीवन से थोड़ा हटकर कुछ ऐसे लम्हें जिन्दगी का एक्यूप्रेशर हुआ करते हैं। आज भी स्टाफ एसोसिएशन की तरफ से तीन दिन की यादगार यात्रा हम सभी की स्मृतियों में टहलती रहती है। तीन दिनों के सफर को याद करते हुए शिक्षक साथी सहसा कह देते है 'एक थी स्टाफ एसोसिएशन'।

दिवंगत साहित्यकारों को विनम्र श्रद्धांजलि

डॉ. संदीप कुमार रंजन
प्राध्यापक, हिंदी विभाग

कृष्णबलदेव वैद

कृष्णबलदेव वैद ने एक लंबी जीवन यात्रा व्यतीत करते हुए 6 फरवरी, 2020ई. को अमेरिका के न्यूयार्क शहर में अंतिम साँस ली। उनकी लेखन यात्रा लगभग सात दशकों की रही। इस दौरान उन्होंने कथा, काव्य, नाटक और डायरी विधा में लगभग 40 से अधिक रचनाओं का लेखन किया। आधुनिक हिंदी कथाकारों में उनका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। उनके उपन्यासों तथा कहानियों का अनेक भारतीय भाषाओं सहित अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, जापानी और रूसी आदि विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनके पहले उपन्यास 'उसका बचपन' का अंग्रेजी अनुवाद 'Steps in Darkness' और 'बिमल उर्फ जाएं तो जाएं कहाँ' का अंग्रेजी अनुवाद 'Bimal in Bog' शीर्षक से हुआ है। 'उसका बचपन' हिंदी का एक क्लासिकल उपन्यास है। अपने समकालीन लेखकों के बरक्स उन्होंने लेखन की एक नई शैली अपनाया, जिसमें भाषा को विशेष महत्त्व दिया गया है। उनकी भाषा हिंदुस्तानी जबान के ज्यादा करीब है। अपनी रचनाओं में वैद जी ने उन लोगों के लिए सहानुभूति प्रकट की है जिन्हें जीवन, समाज और नैतिकता के हाशिए पर धकेल दिया गया है। उन्होंने भारत–पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी को भी अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। उन्होंने स्वयं विभाजन की त्रासदी को झेला था। यही वजह है कि उनकी रचनाओं में रिश्तों और स्थानों में एक नया घर खोजने का आग्रह दिखाई देता है और उसकी परिस्थितियाँ बेचैनी पैदा करती रहती हैं। वैद जी की रचनाओं में उत्तर–आधुनिकता की प्रवृत्तियाँ भी चित्रित हुई हैं। पलायनवादी प्रवृत्ति उत्तर–आधुनिकता की प्रवृत्तियों में से एक है। धार्मिक ढोंग और दिखावेपन से विरक्त होकर लोग धर्म से पलायन कर रहे हैं। 'बिमल उर्फ जाएं तो जाएं कहाँ' उपन्यास में ऐसी ही प्रवृतियों को सायाश देखा जा सकता है। वैद जी एक बेहतरीन कवि भी थे। अशोक वाजपेयी के शब्दों में कहें तो वे अतिश्योक्ति, आक्रामकता और विडंबनाओं के कवि थे।

वैद जी की डायरियाँ बेहतरीन हैं। उनका गद्य लाजवाब है। उनके शीर्षक भी अत्यंत आकर्षक हैं– 'ख्वाब है दीवाने का', 'शम' अ हर रंग में', 'डूबोया मुझको होने ने', 'अब्र क्या चीज है?', 'हवा क्या है?' इत्यादि। इनको पढ़कर खुद के अंदर झाँका जा सकता है। खुद से होकर गुजरा जा सकता है।

वैद जी ने उच्च कोटि के अनुवाद का कार्य भी किया है। 1968ई. में उन्होंने सैमुअल ब्रेख्त के नाटकों 'Waiting for Godot' और 'Endgame' का हिंदी में अनुवाद किया। उन्होंने न सिर्फ अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया, बल्कि हिंदी से अंग्रेजी में भी अनुवाद किया है। हिंदी साहित्य के दो बड़े रचनाकारों निर्मल वर्मा और श्रीकांत वर्मा की रचनाओं 'वे दिन' और 'दूसरी बार' का अंग्रेजी अनुवाद उन्होंने क्रमशः 'Ve Din' और 'Doosari Bar' शीर्षक से किया है। ये दोनों ही रचनाकार वैद जी के घनिष्ठ मित्र थे। वैद जी ने मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' का भी अंग्रेजी अनुवाद 'In the Dark' शीर्षक से किया है।

कृष्णबलदेव वैद का जन्म 27 जुलाई, 1927 ई. को डींगा में हुआ था। डींगा वर्तमान में पाकिस्तान का हिस्सा है। विभाजन के समय वह रिफ्यूजी के रूप में भारत आए थे। वैद जी ने भारत तथा अमेरिका में शिक्षा ग्रहण की। 1966ई. में वह अमेरिका गए और वहीं से उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से अंग्रेजी भाषा में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। बाद में उनके पीएचडी की थीसिस हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रेस से 'हेनरी जेम्स की कहानियों में तकनीक' शीर्षक से प्रकाशित हुई। कृष्णबलदेव वैद ने दिल्ली विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय और स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, पोट्सडैम में अध्यापन का कार्य किया। पोट्सडैम विश्वविद्यालय से ही अंग्रेजी के प्रोफेसर के रूप में वह रिटायर हुए। जीवन पर्यंत उन्होंने अंग्रेजी विषय में अध्ययन और अध्यापन का कार्य किया, परन्तु लेखन का कार्य उन्होंने हिंदी में ही किया। यह हिंदी भाषा के प्रति उनके अतिशय अनुराग का ही प्रतिफल है।

वैद जी की पत्नी चंपा थीं। उनसे उनका अत्यधिक अनुराग था। कहानियों से लेकर डायरियों तक में चंपा जी के प्रति उनका अनुराग बिखरा हुआ है। उनकी तीन बेटियाँ हैं– उर्वशी वैद, ज्योत्सना वैद और रचना वैद। तीनों ही बेटियाँ अमेरिका में रहती हैं।

प्रो. गंगाप्रसाद विमल

23 दिसम्बर 2019 की रात दक्षिणी श्रीलंका में एक सड़क दुर्घटना में अ–कहानी आंदोलन के प्रणेता साहित्यकार और अनुवादक प्रो. गंगाप्रसाद विमल का देहांत हो गया। अ–कहानी आंदोलन मूलतः नयी कहानी के वैचारिकता के क्षरण और राजनीति के निषेध वाले दृष्टिकोण का विकास था। प्रो. गंगाप्रसाद विमल की मृत्यु एक उच्च कोटि के साहित्यकार के साथ–साथ एक बेहतरीन इंसान और अध्यापक की मृत्यु है। यह घटना हर उस व्यक्ति के लिए हृदयविदारक है, जिन्होंने प्रो. विमल की एक झलक देखी हो या उनसे परिचित रहा हो। वह सबके हृदय में वास करने वाले इंसान थे। एक सरल और सौम्य स्वभाव के व्यक्ति। विनम्रता और मानवता उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। यदि यह कहें कि प्रो. विमल सिर से लेकर पाँव तक विनम्रता और मानवता से सरोबार थे, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। सही मायने में वे इंसानियत के ऐसे पुतले थे, जिसने सबको प्रभावित किया।

मैनेजर पांडेय के अनुसार वह अजातशत्रु थे। उनका कोई दुश्मन नहीं था और हो भी नहीं सकता था, क्योंकि बिना किसी सरोकार के उनके व्यवहार में नाम के अनुकूल ही निश्छलता थी। उनके व्यक्तित्व में हर व्यक्ति को आकर्षित करने वाली सादगी थी। वे हर किसी से जुड़े रहने वाले व्यक्ति थे। 'बंधु' उनका प्रिय सम्बोधन था। बड़े हों या छोटे वह सभी को 'बंधु' शब्द से ही पुकारते थे और न ही बड़े–छोटे में भेद रखते थे। केदारनाथ सिंह उन्हें हमेशा 'बच्चा' कहकर ही बुलाते रहे। वास्तव में प्रो. विमल के अंदर एक बच्चे और बुजर्ग दोनों की विशेषताएँ एक साथ समाहित थीं। यही नहीं जिंदादिली शब्द उनके व्यक्तित्व से जुड़कर ही सार्थक होता है।

उनका व्यक्तित्त्व विद्वता के साथ–साथ और उदार होता गया। 80 वर्ष की अवस्था में भी वे इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के पुस्तकालय प्रतिदिन जाते रहे। उनसे मेरा पहला परिचय भी इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में ही हुआ। पहली मुलाकात में ही ऐसा अनुभव हुआ जैसे वे बहुत पहले से मुझे जानते हों। उसके बाद वह हमेशा एक अभिभावक की तरह रहे। उनकी मित्र मंडली सिर्फ साहित्यिक लोगों तक सीमित नहीं थी बल्कि साहित्येतर क्षेत्र के विद्वानों से भी उनका परिचय था। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर जाने पर अक्सर वह साहित्येतर क्षेत्र के विद्वानों से सहज परिचय करा देते थे।

प्रो. गंगाप्रसाद विमल का जन्म 3 जुलाई, 1939 ई. को उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में हुआ था। उन्होंने हिंदी साहित्य की अधिकतर विधाओं में लेखन का कार्य किया है। वे एक सफल कवि, कथाकार, नाटककार, समीक्षक और बेहरीन अनुवादक थे। उन्होंने संपादन का कार्य भी किया है। 30 से अधिक रचनाओं का उन्होंने मौलिक लेखन किया है। प्रो. विमल की रचनाओं में उत्तराखंड के लोगों की पीड़ा अभिव्यक्त हुई है। वहाँ के लोगों की यातनाओं का चित्रण हुआ है। यही नहीं उनकी रचनाओं में उत्तराखंड की अनूठी सामाजिक–सांस्कृतिक परंपरा और उसकी सनातनता को बचाए रखने की छटपटाहट भी दिखाई देती है। इस संदर्भ में उनका आखिरी उपन्यास 'मानुषखोर' अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचना है। पहाड़ों से उनका विशेष लगाव था। वे पहाड़ों के चितेरे कवि भी हैं। उनका मानना है कि पहाड़ों के स्वरूप को बचाकर ही हिमालय की संस्कृति को बचाया जा सकता है। व्यक्तिगत जीवन में भी वह अक्सर यह उल्लेख किया करते थे कि 'मैं पहाड़ों का ब्राह्मण हूँ'। उनकी कविताओं में उत्तराखंड की खुशबू भरी पड़ी है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केंद्र में अध्यापन के साथ–साथ प्रो. विमल ने भारतीय भाषा केंद्र में अनुवाद में शोध की शिक्षा को एक नया रूप प्रदान किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज और ओस्मानिया विश्वविद्यालय में भी अध्यापन का कार्य किया था। वे केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक भी रहे। भारतीय भाषा पुरस्कार और संगीत अकादमी पुरस्कार सहित अनेक भारतीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से वे पुरस्कृत हुए थे।

परिवार के सदस्यों में पत्नी कमलेश अनामिका और उनकी दो संतानें आशीष और कनुप्रिया हैं, परन्तु यह अत्यंत दुःखद है कि सड़क दुर्घटना में प्रो. विमल के साथ उनकी पुत्री कनुप्रिया और नाती श्रेयस की भी मृत्यु हो गई।

भारतीय शौर्य का प्रतीक – राष्ट्रीय युद्ध स्मारक

श्रीमती शीतल कुमारी
प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग

भारतीय शौर्य का प्रतीक–राष्ट्रीय युद्ध स्मारक देश की राजधानी दिल्ली अपने ऐतिहासिक महत्त्व के लिए जानी जाती है। यहाँ लालकिला, कुतुबमीनार, लौह स्तंभ, इंडिया गेट, संसद भवन से लेकर कई पुराने किले पहले से ही पर्यटकों को आकर्षित करते रहे हैं। इसी कड़ी में फीरोजशाह कोटला, तुगलकाबाद का किला, हौज खास और लोधी गॉर्डन भी शामिल है। परंतु, बारीकी से देखा जाए तो ये सारे किले या स्तंभ या तो मध्यकालीन बाह्य आक्रांताओं द्वारा निर्मित हैं या अंग्रेजों द्वारा खड़े किए गए हैं यह अलग बात है कि स्थापत्य के ये सारे नमूने भारतवर्ष के संसाधनों से ही निर्मित हैं तथा हमारी विरासत के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। हालांकि आज भी मध्यकालीन सोच रखने वाले कुछ लोग इन ऐतिहासिक विरासतों को अपने मजहब और पूर्वजों से जोड़कर देखते हैं। ऐसी गुलाम मानसिकता वाले लोगों के लिए सिर्फ यही कहा जा सकता है कि उनके तथाकथित पूर्वजों को अपने मूल स्थान पर अपना कीर्ति–स्तंभ स्थापित करने से किसने रोका था। खैर! बात यदि 'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' के संदर्भ में की जाए तो यह जानकर आश्चर्य होगा कि अभी तक दिल्ली में र्सिफ एक ही युद्ध स्मारक 'इंडिया गेट' था और वह भी प्रथम विश्वयुद्ध और अफगान की लड़ाई के दौरान शहीद हुए 84 हजार सैनिकों की स्मृति में अंग्रेजों द्वारा बनवाया गया था। ऐसे में, भारतीय स्वतंत्रता के लगभग 70 वर्षों के बाद ही सही 'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' का बनना भारतीय स्वाधीन चिंतन की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है।

'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली के 'इंडिया गेट' के आसपास के क्षेत्र में अपने सशस्त्र बलों को सम्मानित करने के लिए बनाया गया एक महत्त्वपूर्ण स्मारक है। 1960 ई. में पहली बार भारतीय सेना द्वारा एक राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का प्रस्ताव रखा गया था, जिसे मूर्त रूप दिया भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 में ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस स्मारक के निर्माण हेतु संकल्प लिया था जो लगभग 76 करोड़ रुपये की लागत से वर्ष 2019 में बनकर तैयार हुआ। 'इडिया गेट' के समीप 44 एकड़ क्षेत्र में बने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक (National War Memorial) को प्रधानमंत्री ने 25 फरवरी 2019 को राष्ट्र को समर्पित किया।

'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' का मुख्य वास्तुकार वीबी डिजाइन लैब (We Be Design Lab) चेन्नई के योगेश चन्द्रहासन है। वेब डिजाइन लैब को वास्तुशिल्प डिजाइन की अवधारणा के लिए और परियोजना के निर्माण के समन्वय के लिए चुना गया था। इतना ही नहीं इसे लिए एक वैश्विक डिजाइन प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसका परिणाम अप्रैल 2017 के आरंभ में घोषित हुआ और चेन्नई स्थित आर्किटेक्ट्स We Be Design Lab के प्रस्ताव को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के लिए स्वीकृत किया गया।

वास्तव में, 1947-48, 1961 में गोवा मुक्ति आंदोलन, 1962 में चीन से युद्ध, 1965 में पाक से जंग, 1971 में बांग्लादेश निर्माण, 1987 में सियाचिन, 1987-88 में श्रीलंका और 1999 में कारगिल में शहीद होने वाले सैनिकों के सम्मान में इसे बनाया गया है। इसके सुरक्षा चक्र में 600 पेड़ हैं जो देश की रक्षा में सतत तैनात जवानों के प्रतीक हैं। इसके समीप ही 21 परमवीर चक्र पुरस्कार विजेताओं की कांस्य–निर्मित प्रतिमाएँ भी लगाई गई हैं। इसके अलावा इलेक्ट्रिक पैनल के जरिए भी जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है तथा शाम के समय रंग–बिरंगी लाईटें जलती हैं।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक की मुख्य संरचना को सशस्त्र बलों के विभिन्न मूल्यों को दर्शाता है। चक्रव्यूह की संरचना से प्रेरणा लेते हुए इसे बनाया गया है। इसमें चार वृत्ताकार परिसर हैं- अमर चक्र, वीर चक्र, त्याग चक्र और रक्षा चक्र। अमर चक्र 15.5 मीटर ऊँचा स्मारक स्तंभ हैं, जिसमें अमर ज्योति जलती है। सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि आजादी के बाद शहीद हुए 25,942 भारतीय सैनिकों के नाम यहाँ पत्थरों पर लिखे गए हैं।

'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' बनने के बाद अब शहीदों से जुड़े कार्यक्रम अमर जवान ज्योति के बजाए यहीं पर होंगे। इस स्मारक में जाकर दर्शक करने के लिए कोई शुल्क नहीं है लेकिन मुख्य क्षेत्र और परम योद्धा स्थल के लिए समय निश्चित किया गया है।

कुल मिलाकर यदि कहा जाए तो 'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' आजादी के बाद भारत के त्याग, संघर्ष और शौर्य का प्रतीक है। प्रतीक राष्ट्र की अस्मिता को संजोकर कर रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे में, 21वीं सदी का भारत कब तक औपनिवेशिक प्रतीकों पर इठलाता रहेगा। आवश्यकता है अपने स्वाधीन प्रतीकों से प्रेरणा लेने की और इस दिशा में 'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है।

English Section

असतो मा सद्गमय

Index

S.No.	Topic		Page No.
1.	Editorial	Dr. Mukesh Kumar Bairva	100
2.	Crying In Unison With Rain	Kalika	101
3.	O Pride	Hritika Lamba	101
4.	History is not past and past is not history	Anannya Saraswat	102
5.	Emotions	Asad Rahman	103
6.	Waiting for someone	Shaurya Dev	103
7.	Maa	Kanika kataria	104
8.	Kaala	Kartik Gupta	105
9.	The beach-kids are not alright	Isha Gupta	106
10.	Duniya Ki Reet Hai	Anubhav Tekwani	107
11.	Humanity: Hoax or Real?	Anubhav Tekwani	108
12.	It's easy to make her laugh	Brinda Sarma	109
13.	Ye shehar nahi, mehfil hai mere yaar.	Bhavya Sinha	110
14.	Hair	Bhavya Sinha & Sara Haque	111
15.	A Healing Journey	Kartikey Malviya	112
16.	A barb wire's love song	Christ Keivom	113
17.	WE.	Pearl Mittal	114
18.	HOPE.	Pearl Mittal	114
19.	Challenging Civilizational Hierarchy — Things Fall Apart: A Review	Kusum Lata Chadda	115
20.	Old age homes: boon or bane	Arpit Shakya	117
21.	Would you?	Abhinav Singh	118
22.	'Okay, I will tell you what happened'	Abhinav Singh	118
23.	Change your mind	Shivani	119
24.	Now I see through the glass eye	Aman Kumar Shrivastava	119
25.	Liar Drugs	Suchit Rajvanshi	120
26.	RARE	Barenya Tripathy	120
27.	Purple Flower	Drishti Verma	121
28.	The touch I never asked for	Srishti Garg	122

Editorial

The journey from school to college is full of excitement, optimism and aspirations. College life has its unique trajectory in this existential odyssey. Students undergo a gamut of experiences which propel them to learn, relearn and, at times, unlearn many things. This experience shapes their understanding, opinion and perceptions about the world. Here, they learn to theoretically make sense of their encounter with uncertain and complex society. This stage is the most unforgettable phase in one's life. One tries to decipher the world around and one's self vis-à-vis the world. Students possess immense potential and thus they are always on the look out for avenues to actualize their latent talent. It would be fair to say here that in these students we come across budding poets, philosophers, critics, debaters, writers and leaders, actors and artists. The multiple cultural and academic forums in the college groom and help them show their creativity.

John Keats' beautiful line "Heard melodies are sweet, those unheard are sweeter" has a universal appeal. No doubt, the creative expressions published here are more harmonious and aesthetically alluring than the articulations we generally come across. It is indeed heartening to see that students are showing profound interest in the issues confronting the world these days. They are so prolific that they comfortably travel across the genres to vocalize themselves. Their creative-critical articulations on the questions shaping the world constitute a significant intervention. The insightful reflections of the poems published in this magazine convince us against Jean Paul Sartre's assertion that poetry just puts forth the poet's internal economy of the world. In fact, one can easily discern the blurring of the line between the political and the aesthetic in these creative expressions.

In the world dominated by consumerism and individualism; the modern individual feels alienated and uprooted due to collapse of the traditional support system, art can be an emotionally fulfilling and intellectually stimulating realm. The aesthetic of the market economy is squeezing the space for the flourishing of art and literature. The critical hermeneutic immanent in the creative expressions of the students who have contributed to this magazine is a radical gesture which destabilizes the post-political zeitgeist underpinning the neoliberal aesthetic. In the poems and articles, one can discern a new language of empathy which underscores the desirability of the ideas of inter-subjectivity and inter-dependency to create a possibility of *Begumpura* (a land without sorrow, this term was used by Indian Saint Ravidas in his poem titled "Begumpura" to signify a 'happy world').

Though the world is full of plethora of opportunities for the creative minds to express their creativity, college magazine is an easily available site to creatively engage with various ideas, themes and issues. Through the college magazine, students can share their hitherto unexpressed and unrepresented musings on life. Writing is not an ordinary act; while writing one can overcome spiritual dissonance caused by the world. One learns to connect with oneself and with world. William Wordsworth aptly defined poetry as "spontaneous overflow of powerful emotions, it takes its origin from emotions recollected in tranquility". Poetry can be deemed as the first and the most natural expression of human beings. People can easily relate to poetry. It has enormous power to capture people's imagination. Gayatri Chakravorty Spivak in *An Aesthetic Education in the Era of Globalization* observes that globalization has permeated every corner of our life yet it can never affect the "sensory equipment of the experiencing being" in a major way. A flicker of hope emerges from the fact that the poetic self remains impervious to the corrosive effect of globalization. While reading poems, articles and other write ups published in the magazine, I was amazed to see how these contributions do a wonderful job of undoing the hegemonic aesthetic.

-- Dr. Mukesh Kumar Bairva

Kalika
B. A. (Hons) English II year

Crying In Unison With Rain

It was all still.
Then it moved a bit and started raining.
And It has to rain.
The holding inside was so good,
clouds all dark gray,
suppression and guilt that you call peace.
Could've stared at it all day,
why did it rain?
Because it has to rain.
I know you wanted to take more pictures of the sky.
I've been holding in the pain and you loved its smell,
If I'll bring it to my eyes you'll fall,
on your knees to adjust the angle and take a photo.
I thought it's dark, for you it's art.
I carry the darkness underneath my both eyes, darling do you love that too?
The sudden dance of rain is harsh against my bare skin,
It give me chills and I shiver.
But at least I don't scream,
only feeling it in my throat is harsh,
but to my ears it's peace.
It's cold when it rains.
But it has to rain.
I don't wanna stay inside anymore,
I'd rather go lay on the roughly made roads,
Bones visible through the drenched tunic,
around me pink fallen patels covered in mud,
the hairs on my head soaked it all but the eye lashes didn't.
Thankfully the lump is gone.
The town is red and so is my face.
But it has to rain.

Hritika Lamba
B.A (hons) English I year

O Pride

O Pride! you are Arsenic ;
You devour those who embrace you
O Pride! you are Acid;
You torch the possessions one hold dear
O Pride! you reduce the stature of the High borne; you turn the Kings to Slaves, Affluents to Beggars, Beauties to Ugliness, Intellects to Fools.
O Pride! you are a Traitor ;
You betray your own masters mercilessly
O pride ! you are a Parasite, you suck lives out of your hosts.
We say Rama, but it was you who killed the great sage, mighty king Ravana;
We say Krishna, but it was you who killed the high personage called Kansa ;
We say Bheema, but it was you who killed the great warrior Duryodhana.
You cause Destruction ;
You cause Anguish;
You cause Agony;
You cause Death
You spoil, You kill, You abandon, You lie, You deceive;
O pride, you are a Devil, you pervade Darkness.

History is not past and past is not history

Anannya Saraswat
B.A (Hons) English III year

For a layman, History and Past may be the same thing but for a well-read person or an expert, these terms, in no condition can overlap each other. To define, History is the 'record' of the Past, whereas Past is what has 'occurred'. History is plainly a narrative and not some kind of mirror of the past reality. Why history is confused with the past is because it is the only evidence, we have of the events that happened and that is why we believe the historians' description of the past. To differentiate between History and Past it is first important to understand that History is always for someone, it always has a purpose, and is always about power. The past, which is gone can only be brought back to us by the historians in the form of books, articles, documentaries, etc, but not as actual events. And therefore, we as audiences tend to believe what we read and see in those historical records. Second, history is a limited form of knowledge of the past that only scrapes its surface. Only a very tiny fraction of what has happened can ever be recounted. This is because of the immensity of the past, the gulf between the past events and account of those events and an inescapable bias. Third, history is deeply reliant on memory. Most memories perish with their holders, but histories long outlive their writers. But what separates history from memory is that, history is less open to alteration than memory. Last, history extends and enriches through records and relics. The lack of written history does not mean that pre- literates had no past. Wordless nature is historical too. Stones, trees, and animals have a knowable past but no history because no conscious purposes animated that past.

The logic of history is not discovery but of construction, construction of the past events based upon the pieces of evidence that are left. History carries within it its author's philosophy or 'take' on present, past and future. French critic Roland Barthes called this the 'reality effect'. We can only represent the past through the form we give to its reality. History and Past are therefore two individual concepts that cannot be mingled with each other.

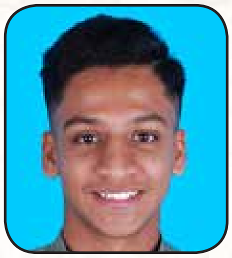

Shaurya Dev
B.A. (hons) Political Science
I year

Waiting for someone

In this murky world of fear and terror,
where people have turned blind in error.
Massacre, death, destruction is bound,
diminishing hope and losing will all around,
yet, we are waiting for someone...

Where family and kin are no more our own,
petty homes and their dreams are blown.
Children wander without any care,
today life has become scarce and death is everywhere.
Yet, we are waiting for someone...

Someone who will bring a new dawn upon all humanity,
with a ray of light, hope and sanity.
Someone who will lead us on the way,
towards a better planet and brighter day.

Someone who will bring peace and fame,
ending the long drawn despair and shame.
we are waiting for someone with optimism and hope,
who will save us all from the falling slope.

We are waiting for someone,
we are waiting....

Asad Rahman
B.A (hons) English III year

Emotions

Thoughts are trembling, urging me to burst,
Like a pollen grain, quenching a seed's thirst.
They do tell me, to open up, to open it all:
and let the sparkling effects of emotions,
shower upon every bower.
With Styx's holiness they will be granted Immortality,
And HERA'S jealousy will find them a soul, merged in tranquillity.
But Oh! Vengeful Arch angel,
how will thee! stop those eyes,
eyes-looking for passion,
As these are the ones, embodied by spleen,
creating emotions.

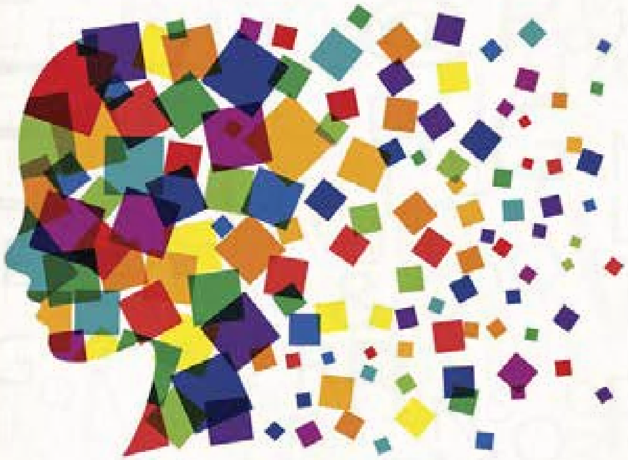

Kanika kataria
B.A (hons) English III year

Maa

Maa, I chose the jeans-top over the one piece that I wished to wear for the party.
Maa, I didn't stay up till late,
left exactly at the hour you told me to.
Maa, I chose soft drinks over tequila and vodka,
remembering what you told me about the dark hours in this city.
Maa, I didn't hang out with boys on the road while leaving the party,
recalling what you told me about the crowd of this city after sunset.
Maa, I didn't wait for any public transport and took the cab you booked for me,
recalling your lessons about the threats to girls in this city.

Maa, I tried my best to lower my head and avoided even the slightest eye contact with those boys standing on the crossroads where the driver dropped me.

Maa, I tried to walk as fast as possible, trying not to look scared, while fear was gripping me up with every inch that I moved towards them.

Maa, I ignored all the comments they passed while I was just yards away from them.

Maa, there were four of them, in their comfy shorts, all drunk and they smelled of cheap alcohol with each step that they took towards me.

Maa, I tried to run, and with the fullest of my might tried to escape from the clutches of one of them who held me by the hair.

Maa, their grip was too tight, their eyes devoid of any shame, their words too humiliating, and their appearance too scary.

Maa, I'm your strong daughter, daddy's little princess. Trust me, I fought- every last second till I could. I tried to run, to push them away- as their hands lingered on my waist. I tried to scream- but they got my mouth shut. I even pleaded with them to let go, but they were too extra in their evilness that they shouldn't even be called human.

Maa, I lie here, on this roadside heap of hay, tears roll down my eyes as I can't even call out your name, as I can't even call Papa for my rescue, I lie here, when pain grips me inside-out.

Maa, I cry tears of blood, as I lie here half dead, watching them retreat their steps away from me, happy as they earlier were. Enjoying their drinks back in their place, as if they're tired of playing with me as a doll and now revert back to have some rest.

Maa, I didn't stay up till late,
avoided the dress I bought for the party,
I didn't drink or hang out with my friends on the roadside,
I took the cab you booked for me,
Still, Maa, look what they've done to me,
Look Maa, I've got no one to wipe my tears,
or understand my pain as I lay here,
half-dead and full-naked,
on this heap by the dustbin.

Kartik Gupta
B.A (hons) English
III year

Kaala

When the world was young,
And trees were wide,
Everywhere only darkness reside.
Though nothing could rival Earth's beauty,
But she must lay hidden was darkness' duty.
Back then, all creatures strolled in black space,
At that time doomed was every known and unknown race.
God wanted to reveal His creation
The miracle which had taken a long duration.
In a conundrum God got struck,
What was it that darkness couldn't suck?

God upheaved earth and sky,
In search of something through which darkness could die.
Galaxies He travelled and back He came
Only his feet were weary; rest, the same.
No equal of Kaala existed, of this He was sure,
Yet for this mishap, He must find the cure.
Besides Himself, Who could keep Kaala at bay
For He had many concerns far-far away.
Thought and thought the sole almighty being,
Years turned into decades yet no solution could be seen.
Finally, God created something which could fight,
She could keep Kala away and He named her light.

The arrow was ready but there was no Archer,
Who could hold the light, God had no answer.
In the mind of the ultimate, one such Archer came,
Vibrant and enchanting, Surya was his name.
The Supreme being asked Surya for this eternal penance,
For to possess light for earth was of great importance.
Dreadful and delighted did Surya feel,
Delighted but dreadful to God he revealed-
To serve the supreme soul ever delighted was Surya,
But he will have to part from his love, Soma.

The creator thought, came to the conclusion, and was filled with mirth
For He now knew the solution and took vanity,
The lovers had to sacrifice for all humanity.
Surya-Soma must part but shall have one day for fusion.
Forever and ever, the Earth should stay bright,
But on a certain day, Surya-Soma must unite,
Kaala shall take over and the Earth shall have no light.
That day the God named eclipse,
When the lovers shall make love and merge their lips.
The pact was made, the terms agreed.

Surya-Soma bowed low and received the Divine grace,
More mesmerizing than nature was their last embrace.
The lovers parted, Surya held the mighty light and like a fireball he glowed;
To reflect that very fire and never tire, Soma vowed.
Seeing them part, the Supreme being cried,
He showered his love upon the Earth and smiled.
Surya radiated throughout the day,
Soma took charge of the night.
As light ran everywhere, God heard the creation's laughter,
Surya-Soma's sacrifice lit the Earth happily ever after...

Isha Gupta
B.Com Hons
III year

The beach-kids are not alright

because there wasn't anything else left
to do, we hiked up our pants and
went a little further down the beach,
further down the beach there are
people who are not scared of anything
but we were not one of them, we hid
behind each other and exchanged our
towels for curtains and we went
down the beach but we buried ourselves
in sand, sad little group of people
made alien only because of the same
technicalities which made people down
the beach fearless, gave them weapons
we refused to wield, exchanged conscience
for ruthlessness, when we look at them
we see mouths but no eyes, hands but no
arms, ribs pointed outwards by the force
of an amateur escape artist, we took one
look at them and undid the hem of our pants,
empty shells make for a good knife but a
terrible arrow, we learnt everything too fast
but not soon enough and the reality of that
terrified us, made us bury our faces headfirst
into the sand like an ostrich but gave us none
of its ferocity, none of its kill, all of its instinct,
we pulled our pants low enough to cover our
grey, cover our blue, cover all of our skin,
if we couldn't see us maybe they wouldn't
see us and maybe then we'd be safe,
on the tip of our toes but safe, burning
in the hot part of the beach but safe,
far from the water and further from our
dignity but safe, safe, safe enough to
know why we might never risk sand again.

Anubhav Tekwani
B.A (hons) English III year

Duniya Ki Reet Hai

I have a woman. Sometimes.

Which is to say that she's always gone too long anytime she goes away, which is to say that sometimes, I'm the buttered up purple-hued charmer with the universe in my mouth and other times, I'm his half-brother. Which in itself is to say that I have the name of a God in my name but that's about it.

I have a woman. Sometimes.

Last week, she carved a lion out of marble, donned a red dress so red it'd make Lenin make a double take and placed the broken head of one of her 'guddas' near one of the lion's paws. Said she had a sudden craving for some dhol and thought she smelt flowers in her barren garden.

I have a woman. Sometimes. She says I don't listen.

She's disgruntled at having to read up on the Watergate scandal for me to ask about Reaganomics. She's spent hours waxing eloquent about how Monica Lewinsky would have been 5 when Bill Clinton was 27, and age is not just a number, it is a measure. But I didn't listen and so the only words I caught were "fellatio", "mess dress" and "bad wife".

I have a woman. Sometimes. She says I don't take her out enough.

Just two months ago, she missed a Pride March to accompany me to the Red Fort and marvel at our struggles against colonisers in a fort that housed a foreign king's throne and his favourite diamond. She scribbled, "let's go to the land where they cook Rajma with vegetables and pork with soup" in a rough notebook between a lecture on diaspora but I'd already booked a trip to the land of the mountaineers so she had to make do with dumplings and momos. I told her it was the same thing anyway.

I have a woman. Sometimes. She says I don't pay her attention.

"Look here," she says, "I got my first fracture when I ran too wild and hit my toes on the marble slab, so keep an eye on me." Last night, she carved a riveting tale of Russian men, followed by Russian tanks, followed by beards followed by tunics, all of them with a sole purpose of putting up curtains and shredding books. I was busy in at the Tueadsy house party, stashing away drinks and Icebursts.

I have a woman. Sometimes. She says I don't give her enough pleasure with my mouth.

Her throat is still sore from chanting for a royal death at the Jumeirah Beach so after she's done with the cough syrup, I put my lips to hers and trace the alphabet in reverse but there isn't as much pleasure as you'd expect. She mumbles in half voice about the press rankings looking like a solid ODI century but the Christmas celebrations at the Atlantis are frivolous for drowning out voices. So she turns her back to me and sleeps to dreams of driving to the neighbouring country.

I don't have a woman. Sometimes.

She says I read too much into metaphors and way too less into the themes. She says that she says a lot more than I give her credit for, that sometimes, I should swallow the universe just so I can come back to Earth. She said that spending our schooldays in a perpetual game of tag and people smashing our initials together for hashtags aren't reasons enough for us to not lord over different domains.

But this house just ain't no home everytime she goes away.

My mother told me I should stick two pairs of feet outside the door of my bedroom and wait for her term-end holidays.

Humanity: Hoax or Real?

The morning of 19th December, 201X came with windows draped with frost and an important headline splashed across the newspaper that had teacups shattering on the marble floors of crested red sickles.

'God has disappeared.'

Pandemonium struck the streets to the heights that would leave the architect, Mulciber awestruck. Fliers were posted around every corner, saffron brick walls almost invisible beneath the white pamphlets. Interestingly most of these harboured no pictures on them since no one had any idea what God looked like. Sure the Christians had pictures of Jesus, the Muslims of the Prophet Mohammed, the Sikhs of their Guru, the Buddhists of Gautam Buddha, the Jews of Moses but no one had the exact picture of God, not even a physical description of Him. The Hindus had no luck either, people crowded the mandirs yet whenever the purohits tried to utter any mantra to any god, only static noise would reverberate there, bouncing off of the walls, bells and statues.

By the evening, news channels visited the Satanist and Pagan cults to hear if there was any response from their side. Perhaps, the End of Days had arrived? Were the dark creatures of Hell were soon to pounce upon us and tear off our flesh from our bones and feast upon them as the night reigns over the world till our broken get encased underneath a layer of soil to become fossils unearthed by a different species borne of evil?

Nothing of the sort happened, apparently, even Satan or any other Pagan deity hadn't corresponded for months now. They had gone silent even before God.

Philosophers anticipated the end of civilizations. For absolute anarchy to erupt and disrupt society. Clarion calls to beware "the beast within" circulated all over the world. Initially, it was the fear of the human potential that held people back from committing crimes, from doing injustice to others. Observation of such situations in society led to doctrines coming up on how overarching social codes perhaps emanated from innate human morality. Hope rose within the masses, God had created us in His image, and in that encrypted in us His moral code, His very goodness, and perhaps he disappeared because He assumed that we were capable of handling ourselves now or maybe he took a short sojourn and on returning he would love to see us all flourishing.

Gradually, about five or six generations later, seeds of doubt were planted, watered, giving life and growth to resentment. Resentment over the responsibility of ethics, of maintaining and defining ethical standards by ourselves. If there was no divine punishment waiting for us, no God to strike us down, no Satan to drag us back to hell: why should we not give in to our desires? What good will being in society bring? Why should anarchy and doom be seen with negative connotations if they're a primal instinct that resides in us? The term 'Humanity' or 'Humane' had always described something good, something civil, some act that was done without seeking any reward. But shouldn't the two primal desires within us: hunger and sex be what defines us? Do-gooders, as they were called later, would say that rationality, the idea of order and seeing order through rational thinking and thus applying ethics is what differentiates us from the rest of the animals that occupy the planet, but the very idea of assuming superiority over any being: doesn't that go against the practise of not indulging in the seven sins? Pride leads to an assumption of superior status, of picking the mantle of being the governing species over others.

Another sect, relating to Nietzschean philosophy, putting their basis of the idea of Übermensch, said now with God gone, we shall dictate the morals of the society, we no longer need to adhere to any other doctrine that was directed from the heavens above. It is us, that decide the rules. We can change the very notion of physics and reality at a whim. Seeds of

anarchy and giving in to the primal instinct did drive this thought but the idea of governing and dictating still was very strong within them. Demagogues rose all over the world, states were established and society still remained, changing it design but the foundation remained intact.

It didn't take long to observe that society hasn't changed by much. With or without Gods and Devils. The same atrocities continue with different names. Miracles prop up under the name of human potential defying laws and get accused of being mere propaganda. Which begs the question:

Was God ever really there?

Or were we playing God all along?

Brinda Sarma
B.A (Hons) English III year

It's easy to make her laugh

When every morning feels
like the final 10 days of the battle of Ilium culminating
her soft giggle emanating from the dredges of a weary sigh
is a relief from Aphrodite's blessed curse.
It's a respite from the Mea Culpa! of the heart,
A simple act of a mouth opening and air gushing outside
as melodious as the softening clangs of miniature wind chimes
that a twenty rupee note dangled from her ear.

Her laugh is an entity of its own
a lucifer on the perch of his fall,
an arrow strung tight in some bowstring; heightened passions and
deja vu's to emotions on the polar extremes.

Like a ripened mango calling out for the tongue's caress
yet living for the brazen display of its decadence;
complicated metaphors weave a terrible lie.
The truth is simple; her laughs make it easier for life to get by.

Perhaps Orpheus had written these notes
And it's that music that fled from Keats when Bacchus made love to Poesy
Beauty never aimed kept her lustrous eyes
she lifted into the air her voice and it drifted
from the nightingale twittering to her short snorts
into my ears where it has reclaimed it's Eden.

She never walks in Beauty
After all she lingers beside me
A battlefield cowering from the ruins surely forthcoming.
My personal dryad divorced from any myth or history
God willing, she is just she.
A glory only I encapsulate in privacy, like Sisters weaving scarves next to each other
She stitches the scenery, I knit down our initials and prick myself,
We are home, where that healing balm of air resides.

Bhavya Sinha
B.A (Hons) English III year

Ye shehar nahi, mehfil hai mere yaar.

I'm from Bihar and there, we majorly have only two options after our higher secondary studies.

One, UPSC , second, coming to Delhi to either study something else or prepare for UPSC.

I initially thought that it would be very hard for me to like Delhi, to fall in love with the metro lines, old historical monuments and the plethora of cultures but I feel quite different now.

Delhi for me is like the lover you always want to return to. But there's this one thing that has been bothering me for a long time now.

You know that gut sinking feeling you get when you spend hours at the airport in case you miss your flight, or , waiting for someone at the railway station for a long -long time ?

It's because you're not supposed to be there. Those are places where you either go to go somewhere else or leave for a different destination. Delhi, is like the station you cross to go where you are destined to. Everyone belongs to Delhi but Delhi belongs to memories. Imagine how strong a city would be which was destroyed and rebuilt a million times over, fought over, went through several rulers and still stands as the place continuously populated. As I speak, many have left the city and many have entered only to fall in love with it.

People come, leave a part of themselves, mending the broken walls of those monuments, taking something away with them. They come from everywhere around the world and take to Delhi like an unloved child.

You find mohabbat here, red like the fort, you find Aslam ki gali and a Bittu Sharma somewhere dancing to her dreams.

Delhi doesn't make you a person, it makes you your person, makes you fall in love with the fact that you can stand alone, makes you your own hero.

When you leave this place, as I am about to after three years of studying, not studying, falling in love ,falling out of it, occasionally wondering if I'd die when the city decides to wear a mask of pollution, you don't leave like the person who came here. You don't leave as a person who belongs to a particular religion or a culture , you leave as fragments of everything unified into one beautiful self. You leave as a part of Delhi, with it's ishq-mohabbat-pyaar.

I know, there are things you would say I didn't talk about. Like it's skin burning summers and bone shivering winters, it's very frequent strikes but that's all I did these three years.

Along with becoming a person with a spirit that contained the Old Delhi dill-i, I fought against it. Tried to understand why it is what is it and I'm glad I did.

It's a city for lost people, finding people, themselves and learning to live.

While I sound like an ambassador for Delhi, let me also add that if you're planning to come here, buy a mask and get used to narrow congested streets smelling of the best delicacies.

Toh, kabhi toh aao Delhi me and like my friend once said, "Zindagi jeeni hai toh Mumbai jao, agar zinda hona hai toh Dilli."

Bhavya Sinha & Sara Haque
B.A (hons) English III year.

Hair

There's a hair for every eye
one for every jibe
A hair for everytime a girl is burned
hair that is too exciting-
A few hairs in the paper next day writing about this shame.
a hair for everytime the body is shamed
hairy or clothed.

Hairs left in a hurry because it's too dark
Careful!
The wolves might find you out.
Some hair for not fitting into your kurta
some for your husband left near the sink
Hair for each pimple in your face
for the shadows under your eyes,
hair as thin and dark as your skin.
A hair for each millilitre of blood you shed
There are a few hairs for your mother-
from your mother.

For your father's ire
Hairs for your tongue that could be cut off
Hairs for your land that could be seized
There's a hair for every hair
for every hair there's a voice telling you to stop losing hair.

A hair on your head that stands out
A hair on your head that's a broken scout
A few for when you cry and descry a figure by the wall
A wall made of grey hairs collected over a few years
A wall, it's a wall.

Hairs for no one to climb up
Hairs to climb down.
Hairs that go down-
down,down by your legs wrapping like cellophane.
Hairs that fly, hairs that make your wings
Things, around things.

They belong to you,
Belong to your hair,
they be long,short.

Hairs around nails if you dig too much,
Dig too much, brown hair
muddy hair,
muddy they-describe-hair
on the corner of the roads,
hair thrown.

For every hair you lose,
You've been told,stepping on it is bad luck,
Step on it.

Kartikey Malviya
B.A (Hons) English III year

A Healing Journey

It takes 1 hour from my place to reach my nani's village.

It's a pilgrimage of mental health,

With every rotation of my car's tyres, I lose a pinch of anxiety and mark my way, just to pick it up while returning.

The Shastri bridge stands still, on the skeleton of culturally and physically overused land left behind by chemically polluted Ganga.

It's a scene of a mess after Kumbh here as if every person who came in search of Golden ticket to heaven left the carcass of their sins behind to get washed away in the upcoming flood season.

After a few pics and snaps, I go ahead.

As I cross the definite border between districts, the indefinite amount of loneliness I have stays on the city side, I know it will get on board while returning.

The road is now clear and few motorcycles and trucks are only seen while on both the sides of road mustard flowers bloom and call for a DDLJ pose pics.

After all the clicks and risks of forgetting the path, I reach my stop.

A mansion in the middle of a fenced ground large enough to practice driving, I know because I did it years ago while it was all a fun game and auditing was part-time.

I get out of my car, ring the bell and say a little prayer of thanks to the heavens for letting me have such a place to escape.

My nani opens the door, she looks weary and her wrinkles more prominent, maybe nana's death last year affected her more than she shows us.

I bow down but before I touch her feet she hugs me and tags me along with her smiling like she never does now, I know because my mami is jealous of the fact and she verbalises it frequently.

After a long chat and gossip session when I lay down for rest, for the first time in months I do rest.

You see after losing anxiety, heavy loneliness, other negative thoughts and getting 'ghar ka khana' it's like I am healing.

After getting up and listening to all the precautions my Nani tells me to take while living in Delhi, as I start my car again, she comes to the window of car and hugs while crying and simultaneously blessing me.

She slides a 500 rupees note in my pocket while saying, take it, it is my ashirwaad, it will help.

I dry my eyes to smile at her, finally, I am back on the road again, this time purer and happier than last time, an after effect of pilgrimage.

I drive slow trying to extend happy hours, but sure after 45mins loneliness gets back on the car smiling at me while I pick up all the pinch of anxiety I dropped.

I again cross the bridge, 20mins later than expected.

I come back home 2 hours after I left my nani's place, exhausted, I lay down but can't rest, still, I smile while shedding tears, maybe it's her blessings putting all of their strength to curve up my lips.

It takes 1 hour from my place to reach my nani's village but months to get over this smiling after effect.

Christ Keivom
B.A (hons) English III year

A barb wire's love song

i've been living on this tongue
behind the teeth, where all thunderbirds
of choir & hymns parch my throat
& a little gold pendant gleams
there, flecked with your songs.
stretched from your cramped limb

that has sapped into my tongue
i worship what I can taste ----
your name and call it a love letter.

i cut my bloated tongue and release
your fluid name, to where you laugh
like a room full of women

are you alone?
can you hear me?

the boughs of august are laden with
your forbidden fruits. I smell the flower
of whatever garden God you are

& dear, I've brought a guest ---
my life, who shares a twin death.
we both call as mine. So,

if I ask for love, kiss me
if I say forever, say you'll remember

comes the night; burial of the sun.
conjures the twilight's screws, turning
my head. you enter like a germ, with a
dream that dreams with a dream beyond
the sleep.

return now, to never leave again.

the city becomes an open field. it's
music for you. listen to the lampposts
winded by lighting strokes of the stars.

how, without the watchmen's nightly
whistle, they cannot breathe. hear ----
the seated abandoned bus stops, where

you should have been. when I alone pay
the toll to enter in the past, where
you reside & in the future where
i look for you.

if I ask to live, i mean now
if I say together, say you'll surrender.

Pearl Mittal
B.Sc. Mathematical Science
IIIrd Year

WE

When stepping into college journey,
I was choked with many fears.
I got some people, who always cheer.
And now, they are very near to me.

They know my flaws better than me,
I always find their hug and love to my side
Very soon they became my soul partners and my pride
Now our friendship has no I, no you, but we.

Whenever I am lost somewhere,
They bring me back to my right place.
Because you people are my life's ace
I wish of you in all my prayers.

HOPE

So, I failed one of the placement interview,
And for me , that is something not new.
As, I have seen many failures since birth.
Sometimes it appears I m losing my worth.

So one day at stroke of midnight
I was thinking for me what is right.
Again I started chasing my ambitions
And, I tried handling all the tough situations.

though it didn't end up like complete success
But a step towards my vision has relieved my stress
in this battle, I have learnt many thing,
And am restoring hope, to attain all my dreams

Dr. Kusum Lata Chadda
Associate Professor, Dept. Of Political Science

Challenging Civilizational Hierarchy— Things Fall Apart: A Review

When I selected 'Things Fall Apart' a novel by the Nigerian writer Chinua Achebe, to read this summer, I had no inkling as to what I was in for. Achebe is a master story-teller and it is amazing that he wrote this novel at the young age of 28, way back in 1958. At that time Nigeria was poised for its independence from the British colonial rule. In a bold statement expressing the mood of independence the writer chose to write his story in the form of a 'novel'- a genre that did not belong to the Nigerian culture- and, in a foreign language, that is, English --to give glimpses of the rich culture of Nigeria thereby busting the myth of the superiority of the western culture over the so called 'savage' traditions of his country.

The setting of the novel is a province of pre-colonial Nigeria of the late nineteenth century till the coming of colonists. The novel is divided into three parts. The tribal society, its different traditions are described vividly in the first section of the novel. The author deliberately employs the traditional style in this section where stories and proverbs form a major part of the narrative. In the second part where the colonists start impacting the locals by converting them to Christianity, proverbs are used less frequently, and so are stories to help the narrative move forward. In the final section when the colonists have spread their tentacles in the religious life of the locals, questioned their traditions, replaced their legal system and commercial practices with those of the colonist, proverbs vanish. Some kind of George Orwell's dystopian language of *Nineteen Eighty-four* comes into existence where the relationship between language and human emotions, that hold society together, vanish, and eventually things falls apart.

Things Fall Apart is the story of Okonkwo the leader of one of the nine tribes in southern part of Nigeria He has earned his leadership by defeating a wrestler in a match and hence treated as a powerful man. He lives with his three wives and several children. In contrast to this hyper-masculine Okonkwo is his father, a good for nothing fellow with a fondness for playing the flute. Though appearing only briefly in the story, the father is always present in the narrative as a foil to the ambition of his 'successful' son who makes every effort not to be like his father.

The even keel of the life in the village is disturbed when a woman of Okonkwo's tribe is killed by a member of another tribe. To escape war, in which there was no chance of success and more misery, the other tribe sends a virgin and a boy- the son of the murderer- as penalty. The boy stays in the chieftain's house till the final judgment is delivered three years later. Meanwhile Okonkwo develops fatherly feelings

for the boy, and has great difficulty in carrying out the last piece of judgment which is to kill the boy. It would be 'womanly', he believes, to be soft in such matters, so he kills the boy with his own hands. His biological son, whom Okonkwo does not give much importance to, comes to know of the killing, grieves about the loss of someone he thought of as his brother and grows resentful of his father's ways.

In the second part of the story, Okonkwo accidently kills the son of one of his clan group. As per the custom of the tribe, Okonkwo is pronounced guilty of a 'feminine' crime (since it was accidental) and is banished from the village for seven years with his family. Curiously, while 'masculinity' is expected of a tribal chief he is sent to his mother's family village because 'Mother supports all' is another principle followed in the tribe. He goes with his family to the village of his mother where his maternal uncle and his family help him settle down in his new life. Okonkwo is a beaten man now but the most tragic blow comes when his eldest son , who resented his father's cruel actions, converts to Christianity. He is devastated for he foresees that now his place among ancestors is also doomed as there would be no son to perform the last rites properly! In anger he disowns his son. The tragedy of Okonkwo's life is that he tries his best not to be like his own father and now has a son who is like his grandfather, and, the honour of his clan pushes him to kill a boy who was in real image of the son he always wanted! Okonkwo also loses the opportunities provided by fate to redeem himself and finally meets a tragic end. There is also some kind of poetic justice for the poor boy who was earlier killed by him

The third section of the novel is about the return of Okonkwo to his village after seven years of banishment. He is full of hope that he would be able to regain his prosperity, status and leadership position unaware of the inroads the colonists had made in his hometown. Most of his kinsmen had converted to Christianity, convinced that their way of living was outdated, resigned to the power of the rulers and were in no mood for any clash with the new dispensation. Okonkwo tries to motivate them but comes into direct conflict with the authorities when he kills a messenger of the government. His people refuse to support him. Heartbroken, he commits suicide. As per the custom of his tribe, his clan -men refuse to touch his body as suicide is treated as an abomination by the tribals. In a cruel twist of faith, like his father, Okonkwo is not buried as per the clan's customs and his body is taken by the authorities.

On the face of it, the story sounds simple but as a matter of fact this simplicity is misleading. Achebe gives out layers of messages in one go. The title of the novel borrowed from WB Yeats famous poem 'The Second Coming' is full of foreboding. 'Things fall apart and the center cannot hold.... ' and ends with 'mere anarchy is loosed upon the world' --which is what happens towards the end of the story.

The influence of Yeats is more than just in the title of the novel. Achebe actually demonstrates through his writing what Yeats talked about on the destruction of civilization in his celebrated work ' The Vision'. According to Yeats civilization cannot survive if the people are inflexible about changing with the times. Civilizations end if the evolutionary process is disturbed by external forces. The protagonist stuck to the old redundant beliefs about 'masculinity vs. feminism', and, kinship being more important than practical issues of life.

In the course of his narrative Achebe also questions the idea of civilization coming from the colonists based on greed and illegality. There are very powerful pictures of the indigenous people giving more importance to their words than caring for their safety. By this the author almost rubbishes the claim of superiority of culture and civilization tom-tommed by the West and tries correcting the image of Africa which in the western literature was painted as the 'Dark Continent', peopled by savages!

Arpit Shakya
BA Hons Hindi III year

Old age homes: boon or bane

Old age is considered the second childhood because of the fact that people depict similar behaviour in these stages of life. Childhood and old age are two stages of life where a person needs support physically, mentally and socially. The children who have their parents with them are considered to be very blessed and fortunate. Old people want love and respect from their children in their last phase of life.

No doubt our parents have shouldered their responsibility very well. They have introduced us to the world, taught us different aspects of life, showed the right direction whenever needed. Now when it comes to us why are we running away from our responsibility of caring and loving them back? When we were small, taking care of us was the primary concern of our parents, but we also prioritise other things over them. People have become so busy in their hectic life that they don't even have time to spend with their parents.

People are so occupied with their life that they send their parents to old age home. Isn't it shameful for us? Undoubtedly, in this era of westernization, we have adopted new ways of life but this does not mean that we forget our roots. Earlier old age home was an alien concept, but nowadays this has increased many folds. It is seen as an easy way to escape the responsibility of taking care of their elders. Most of the cases it turns out to be a bane, of course, there are many cases where it has turned out to be a boon. For instance, if the old people have lost their loved ones, for example, their children and family, they can go to the old age home live the rest of their life.

Our parents are second Gods, we should always give them the first position in our hearts and lives. Elders should not be considered as a burden, rather it becomes our moral duty to love them and take care of them.

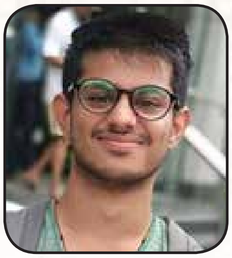

Abhinav Singh
Bcom Program, Section B 1st year

Would you?

I know we both have two different ways
but I just want you to stay?
You know every moment I spend with you is like a dream come true?
I love you not because what you are
But what I become when I am there with you?
Didn't want to fall in love but
Your smile blew it?
How about making some beautiful
Memories just you and me?
Maybe I am late to be your first but right now I am preparing myself to be your last?

'Okay, I will tell you what happened'

It takes a lot of courage for a hurt person to say this line, OKAY I WILL TELL YOU. When you become that person to whom this line is said, you have got to understand that they feel secure with you and they hope that you will understand their pain. The basic necessity of such a person is to be heard and not to be replied. So when you become that person, remind yourself that you are trusted and that's why you must listen. All of the anxiety one has is because they have been keeping it all inside of them for so long and it has started to become poison. A poison that is ruining their mental wellness. So, here's the thing we must do, LISTEN WITHOUT INTENT TO REPLY and give them the opportunity to get it all out. To listen without judgement and without saying that you can feel it, because you will never know how someone else is feeling. Everybody suffers differently and everyone has a different way of healing. Listen to them, it's just their own phase, they are more than this, much more and better. This will help them to talk to others. We can't imagine how much of a help we can be to such a person just by listening to them. We must make this place, a place where everyone will feel heard. Can't you be that person in life who helped them when they thought all was over?

Try being that person and you will not only lift them up but you will be lifted more than them. Helping others never goes in vain and kindness is the only thing which helps us to make this place worth living, otherwise who knows when can World War III happen?

Shivani
B.A (hons) Hindi I year

Change your mind

May it be a girl or a boy
A man or woman
For equal right do what you can
Open the gates of freedom
Ah it is just felt by some
Change the world
Change the mind
Why a girl's dream and
Hopes are covered by lids
Early marriage break their hopes
Limits their life with kitchen and soaps
People deny growth to their thoughts
Everyone closes the doors
Trapping them inside four walls
No one hears their daughters
Cries and calls
Why cannot we stand up
Educate girls and fulfil their dreams
Make them what they want
Let them stand on their feet.

Aman Kumar Shrivastava
B.A (Hons) Hindi I year

Now I see through the glass eye

Now I see through the glass eyes
The eyes which can only capture some megapixels
The eyes which can scratch or break
But I thank the technology that now I have eyes
Now I think through a brain
The brain with some limited power
The brain with some limited capability to store information
The brain which can lag or hang sometime
But I thank the technology that I have a brain now
Now I also have lots of friends
The friends which might be not real
The friends which will never be with me
But I thank the technology that I have the friends now
Now I also have a body
The body which is slim and small
The body which can't move
The body which needs charge every hour
The body which look like a dead body
But I thank the technology that now I have the body
I thank the technology I have a life
A life which is better than the god's one
A life which I see through the glass eye.

Suchit Rajvanshi
Maths Hons II year

Liar Drugs

Started as a joke, in the title of trying
Tried too many times, and then I was flying
Soon enough they told me, without them I'd be dying
But little did i know, those drugs were lying
Inhaled, injected, absorbed, consumed and smoked
Dissolved under the tongue and my voice was croaked
Like shooting bullets straight to the lungs, all broke
Building the body hollow, life full of smoke
Time was consuming, hiding from myself
Couldn't face the truth, ruining my mental health
Reduced me to tears and everything below the belt
Ecstasy in guilt was all I had felt
Quite a battle it had been
Coming out of it all clean
Realising there's nothing more high and keen
As being healthy and lean.

Barenya Tripathy
B.A (Hons) English II year

RARE

Cloudless skies, fallen stars
They haven't gone down so deep as us.
In culture, we're gorgeous
Only briefly, forming freckles on vales of skin.
We are mirrors of emotion,
Insanity has infected every chaotic curl that
Has hushed down whispers every time
We kissed someone.
We bake leaves in circles; our lives,
Watch them turn orange—
Raw, half-cooked & burned, an entity becomes us.
Freefall into flaws, make flower crowns
Then wear them.
Our bodies immortalize into the naked arms of love,
Last words always structure into
What we call loving ourselves.
Skins of porcelain;
They are saved by quick reflexes and one word
Of appreciation floating before your reflection.
Utopia inside crooked teeth and almond eyes,
Sakura blooms in a sad girl's music.
We are moon landers on the black sands,
Draw our bodies into shape of hearts
And color ourselves in rainbow.
We are world-adorned gold stamps,
Like a pattern of a fingerprint: solely lone.
Earth is writing a story,
And the persons who know they are beautiful
Are you and I.
We are art, then suddenly
Humans.

Drishti Verma
BA (hons)History I year

Purple Flower

I found the colors that I had forgotten in my crayons and my sketch book where I drew my rainbow.

The rainbow was composed of different colors, with a pencil drawing the arcs as if it couldn't define itself, the colors ran into each other and she who drew the most beautiful flowers in the class came to tell me it looks like a dream

I drew her and me under the rainbows, the stars and the skies lying in the green grasses but I hid it, hid it under my bed cause people clad in shirts that showed colors of rainbow were the ones who burnt them flags

I found my words that I had forgotten in my letters and my diary where I wrote about her.

The writings were composed of different entries, with the letters merging into juxtaposition as if they couldn't define themselves,the words grew into the beautiful colors of flower & she drew in her notebook

I wrote about me and her on a motorcycle, the highways running to infinity under the moon but I scribbled it, scribbled over because people who taught me to write were the ones who shunned people from the rainbow land

I found my stories in mythology books that she had hidden in her cabinet

The story read of apollo and hyacinthus who loved each other but because of the angry west winds, apollo made hyacinthus his flower by his blood

I tore their illustrations and hung it on my wall,

Apollo made flowers for his love, then she wrote letters,drew skys and she was taken over by the men, the women, the older men, the younger women they took her in cause she fell, fell for a girl who had magic in her veins and love for a woman

This was the last chapter of dark matter eating two flowers one by one.

Srishti Garg
B.A.(hons) English II year

The touch I never asked for

Still thinking about my childhood education, never was I told about the bad or a good touch. I wish I would have known all this, so I could distinguish the things even better.

Like every woman realises a touch which is not normal, a touch which is stealing her morality similarly a small girl also held that insight. Childhood doesn't teach suspicion, ravish and molestation. Even after this a small girl, a mature lady or an old woman can sense malicious purposes.

This is a touch which comes from a very unexpected source. The source which we consider to be the purest. What when your soul and body is in threat by the ones you expected to protect it?

Everyone fantasises many childhood games to play with all the cousins gathered at a family event. Who thought it would not be the decent play. An imitating and acting game would become a nightmare for a young girl.

On every stage of the game, she was quietly feeling each cold shriek running across her body one after another. She could estimate the hand span by the way it felt on her each body part. She was unaware of the growing world and the changes it could bring to her. The only thing she knew was that he was meant to be part of her family. He was there to protect her and not to trouble her.

Hands didn't stop, neither his desire for more. The cold shriek kept on exploring all her body.

Like everything which cannot stretch more than the limit, there was a point of resistance. There was a freezing point when her body didn't allow her to get a show of it. She kept on feeling the touches getting closer to her body as the layers of clothing were getting thinner. All the fingerprints were in friction with the grooves of her body.

She many times decided to stand against it with all the efforts. When no layer could be felt, she was determined to confront. Many of the barters and fake assurances were provided to her as bait. All the efforts were in vain.

Many would say, those were the bad days for her. But every day shows its brighter side. The girl looked at the door as a feeling of hope. She ran towards it with all the power she carried. Buttoning herself from one hand she stretched her small body to reach the doorway. It was the only edge to seek an escape. This time it was the turnover. She pushed him finding a correct timing. The tables were turned against him. The demon pleaded to keep this in the dark. A small girl who was now well aware of his desires which he told himself. She experienced all the knowledge which must be provided in a verbal manner. The small girl who was once ready to surrender cried out the bitter words to the boy. She shouted to reveal his acts immediately. These words came from nowhere. It was astonishing to see a young girl speaking the words of courageous women. She was ready to put out every truth to everyone without even knowing the intentions of the act. But when she reached to the laps of her mother and was ready to burst out all the courageous words she gathered, all the maturity went off. She was not able to adduce a single word of the story.

She was carrying the load of the events who took her trust and belief from childhood and the ethics she was told. Much years later, she recapitulated the events, formed a row. It was then she was able to understand that what were the intentions, what it could do to her and from what she has saved herself from unknowingly.

College Societies

HYPERION (CULTURAL SOCIETY)

Report of Cultural Society 2019-2020

P.G.D.A.V. College has a legacy of nurturing art and a vibrant cultural environment through its cultural society Hyperion. This society's pursuit is to nurture its students to bring out the best in them. The Hyperion team has worked to the grind throughout the year to ensure that 2019-20 was as successful as it was earlier. There has been a constant communication within the core Hyperion team, various society heads and the faculty members.

The year started with the admissions and the college auditions for freshers. A brief introduction of the societies and a colourful performance for freshers at Orientation Program marked the onset of yearly activities. Starting with Exploranza, Hyperion then organised a variety of competitions and events throughout the year such as the collaborations with Central Bank of India. To cap off the year, Hyperion organised a successful and much-appreciated edition of the annual fest, Aaghaz the onset of Nirvana 2020 (henceforth Nirvana 2020). The students brought a lot of laurels to the college throughout the year and the list is given at the end of this report. Following is a brief of various activities and achievements of the various societies.

Music surpasses the barrier of language and binds humans together. The music societies of PGDAV college yet again proved music's power by enrapturing the hearts of everyone.

Raaga, the Indian Music Society, is led by the talented team of President Rajat Dhingra, Vice President Ajay Narayanan and Coordinator Rahul Chaudhary. The hours of practice and training have paid off for Raaga and it shows in the year they've had. Raaga, the Indian Music Society of PGDAV college specialises in classical Indian music. This year they created new landmarks by winning prizes in Gargi and JDMC. They lived up to their name by successfully organizing three live musical events. Their impeccable sound arrangements and hospitality impressed the participants and audience alike.

Conundrum, the Western Music Society, beloved by all, regaled with their music and vibes. President Pranjal Sharma, Vice President Lucky Choudhary and Coordinator Archit Taneja mobilised their efforts throughout the year to ensure a great term. Conundrum, the fusion band, opened new avenues in their music by experimenting with different genres such as funk, alternative, progressive music etc. They have prepared two ORIGINAL COMPOSITIONs

namely 'VYOG' a progressive song and 'LOST MY WAY' a funk rock song, which proves their vocal intrepidity. Conundrum won the third prize in St. Stephens' Battle of Bands and numerous prestigious others in solo singing competitions. They hosted two events in Nirvana 2020; the Battle Of Bands, and "Fantasia" (the Western Solo Singing Competition) where they showcased their terrific skills in hosting musical events.

Rapbeats is one of the extremely few hip-hop music societies in the university. Led by President Vinay Kumar, Vice President Monu and coordinator Shrinkhala Shrivastava, this year, too, they strived to show why they're the trailblazers in this arena. Rapbeats achieved its goal of imprinting its name to be repeated in the history of hiphop circuit. Rapbeats won events in renowned institutions such as RDIAS, Shiv Nadar University, and IIT Bombay. They were also invited as guests to perform in DTU, and Ramanujan college. Rapbeats organized Rap Battle and Beatbox Battle in Nirvana 2020, which ended up as an amazing timestamp in their chronicles.

"A beautiful body perishes, but a work of art does not".

Art remains the flagship of Hyperion which embodies the spirit of our college. Impressions, the Fine Arts society, was last year's best society. Under the leadership of President Muskaan Sawhney, Vice President Mili Sachdeva, and Coordinators Neha Mann and Sanjoli Kanodia, this year, they once again put their best foot forward. They gave a tribute to Dr. Sarvapalli Radhakrishnan on the auspicious occasion of Teachers' day through a live art show. Impressions displayed its vibrant artistry throughout the academic year in various hues. They displayed their rich artistic expressions and won prizes in IIT Bombay and other national level competitions. They added the much-needed charisma to Nirvana 2020, with their wonderful exhibits. Impressions members – Suchit Rajvanshi, Manish Chaudhary, Daksh Aggarwal and Bhavesh Haldwani – made sketches of the Hindi poets who came for Kavya-samelan during Nirvana 2020. In addition, they organized a Sketching competition, Best out of waste, Monochrome painting and an Art Exhibition which further showcased their capabilities. Impressions got an opportunity from ATKT where five of its members (Muskaan Sawhney, Mili Sachdeva, Sanjoli Kanodia, Esha Sati and Pallavi Singh) got the opportunity to make OFFICIAL LOGO OF JAWA NOMADS for their tour of Punjab.

"The intellect perpetuates the worldly life".

Chanakya, the Intellectual society, owes its successful year to the efforts of its members and its heads. With the help of President Anubhav Tekwani and Vice President Brinda Sarma, its sub-societies have made waves throughout the college and country. There are four societies which come under the flagship of Chanakya and are coordinated by extremely talented people: Buzzer led by Md. Saalim;

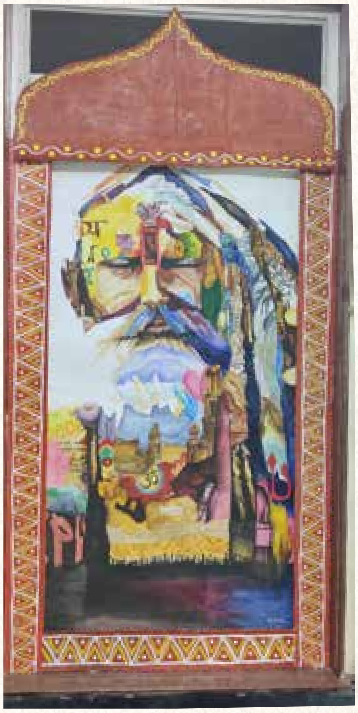

Qaafiya led by Isha Gupta; Grey Matter by Arjun Chaudhary, and Spectrum by Arsha Goswamy.

Buzzer, the Quizzing society of PGDAV college proved its intellectual prowess by dominating the quizzing circuit. Buzzer won prizes in national and regional level competitions comprising of different formats. With the introduction of new steps, like "The Buzzer Quiz League" intra-society competition and regular practice sessions increased, which further resulted in more participation of students in quizzes. Buzzer organized their annual flagship India Quiz "Acche Din" at the annual fest Nirvana 2020 which further proved their stupendous capabilities.

Qaafiya, the poetry and creative writing society of PGDAV college has had a brilliant academic session. Qaafiya won over 50 national and regional prizes in various competitions held at institutions like IIT Roorkee, IIT Delhi, AIIMS and BITS Pilani, Hyderabad, successfully showcasing their deep attachment with narratives. Apart from that, the society's members were published in online magazines, featured in poetry shows, and called for judging poetry events. Qaafiya also successfully organized its annual slam, Poesies, as a part of Nirvana 2020.

Spectrum, the Anchoring society of PGDAV college coordinated with all the major and minor events of the college with utmost ease. Events like The Cultural Society GBM, Exploranza, the Freshers Talent Hunt Competition, and the annual college fest Nirvana 2020, were coordinated outstandingly well. Spectrum energised the crowd by their mesmerizing anchoring skills. Grey Matter, the Debating Society of PGDAV college has had a tremendous academic session which brought in prizes from both National and regional competitions in Delhi. The list comprises of national prizes at IIT-Roorkee, and BITS-Hyderabad. Grey Matter stood out by successfully organising, There's a Dispute, it's annual conventional debate competition as a part of Nirvana 2020.

"Capturing photos is capturing objects bursting into life. "

Iris, the photography society, helmed by President Hanan Irfan and Vice President Anisha Gupta, has had a brilliant year. Iris took huge strides and excelled at various platforms this year. Iris has expanded from just a photography society to a multi-disciplinary society that spans across all kinds of digital content. In addition to this, they have also kept their bars high by winning accolades in IIT Roorkee and other regional competitions. Iris also successfully conducted the second edition of it's annual fest Ebullience this year. Iris proved it's tremendous growth and capturing the college's history.

To be able to survive in today's society, you don't just need wits but technical knowledge that supports your claims.

Techwhiz, the IT society of PGDAV college proved its technological strength under the direction of Kartikeya, President and Saurabh, Vice president. It further moved forward under the various coordinators for specific areas: Vaishnavi, Coding Coordinator; Akash, Graphic Design Head, and Subhodeep, Gaming & Quiz Head. Techwhiz, the IT society of PGDAV college has had a phenomenal run this year. Techwhiz collaborated with Hansraj and KMC, to facilitate a better environment for coding. They proved their technical expertise by winning prizes in VIPS, Kalindi, CVS, and by maintaining the college website seamlessly. They brought in huge numbers for their various events in coding, gaming and web development in Nirvana 2020. Techwhiz have put

tremendous efforts for technical development in the college and will continue to do it further.

Acting out emotions is giving life to the pages of books in a visual form which appeals to everyone. Acting is not just a skill to be showcased but the rawest form of bravery.

Navrang, the Stage Play Society of PGDAV college has turned heads and gained appreciation from everyone. The heads of Navrang, President Kumar, Vice President Abhay Jain, and coordinators Yuga Sharma and Asra Khatoon, have put in all their efforts to their society and it shows in its performance this year. Navrang gained a diverse range of experiences in the academic session. Their self-directed play won second prize at AIIMS and hearts of many from IIT Roorkee and IIT Bombay. Their annual fest Abhivyakti'20 was a huge success where they were praised for their hospitality. Navrang is giving its best in every field and is living up to their legacy.

Rudra, the Street Play Society of PGDAV college deserves all the applause in the house because of its sterling presence. Rudra continues to grow stronger under the leadership of Ankita Mamgain and Saurabh Bassi who share the president post. The Vice President Aayushi Saini, Coordinator Muskaan Seth and Treasurer Aayushi Aggrawal are the reason behind Rudra's staggering growth. Rudra is one of the most reputed street play societies in the circuit. Their annual production, 'Meri Khwaish' based on the theme of prostitution has brought in laurels from IHE, IBS Gurgaon, and MSIT. Rudra also performed at the National School of Drama, Manthan International theatre fest, and won several best music awards. Rudra was lauded by the audience and participants for their annual fest "Shor" which showed their excellent organisation skills.

Dance is more than moving bodies in sync to the beats. It embodies the spirit of humans and how far they have evolved.

The dance society of our college lives up to its name, Diversity and apprises us of various cultures. Diversity, headed by President Parul Gupta, Co-President Manpreet Walia and Vice President Vaishali, consists of three sub-societies, all of which have done amazing this year. Three societies which come under Diversity are Spunk led by Ritu, Jalsa led by Tushar Singh and Natraj by Ishani Nag.

Jalsa, the Folk Dance Society of PGDAV college made a strong impact in the dance circuit. Their moves are refreshing to watch, they can easily be nicknamed as the vitamins of the college. In addition to their name, they won laurels in MDI Gurgaon, Aravalli and Lingayas. Manpreet and Muskan have done the society proud by being the lead dancers in the Punjabi Music Video of the famous singer Sukhshinder Shinda. In Nirvana 2020, Jalsa organized Jashan, the folk dance

competition which sported remarkable performances by students. Jalsa continues to abide by its rich legacy and moves ahead with their powerful moves.

Spunk, the Western and Street Dance Society of PGDAV college is extremely popular for their experimentation in various dance styles such as hip hop, waacking, house, dancehall etc. Spunk began to battle in street dance battle this year onwards and is an integral part of the circuit now. Spunk won multiple prizes in various colleges such as GL Bajaj, Delhi Metropolitan Education. Their Western Group Dance event and Street Dance competition at Nirvana 2020 enthralled the audience and warmed hearts of participants by their warm support.

Natraj, the Indian Classical Dance Society of PGDAV college is one of the finest societies in the circuit. The members are well trained in varied art forms such as Bharatanatyam, Kathak and Mohiniyattam. The members of Natraj actively participate in competitions and have brought laurels to the college. They also successfully organized the NRITYANGANA- the Solo Indian Classical dance event at Nirvana 2020 which exhibited the devotion to various art forms from history. Natraj continues to grow forward with history leading their way.

Cultural Committee consisted of faculty of our college and they were - Dr. Ankit Agrawal (Convenor), Dr. Veenu Bhasin (Co-Convenor), Dr. Pinki Punia, Dr. Pardeep Singh, Awadhesh Kumar Jha, Dr. Abhishek Srivastava, Dr. Bhawna Kohli, Kirti Yadav, Dr. Paramanand Sharma, Dr. Prabhat Srivastva, Dr. Pramita Mishra, RVS Chuimila, Suchitra Mehta and Nagendra Kumar

The Hyperion core team consisted of student office bearers and they include, Bharat Gupta- President, Daksh Kr. Vig- Executive President, Apoorva Yadav- Vice President, Aditya Bhuker – Secretary, Akshat Agarwal - Joint Secretary, Nidhi Singh – Treasurer, Pranav Sharma - Co-treasurer and Garima Payla - Coordinator

S. No.	Society	Name	Course	Year	Date	Organizing Institution	Name of the Competition	Prize/ Position
1	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III	17/09/2019	AIIMS	Extempore	1
2	Chanakya	Brinda	B.A. (Hons.) English	III	17/09/2019	AIIMS	English Poetry Recitation	3
3	Chanakya	Payal	B.Com. (Hons.)	II	18/09/2019		British Parliamentary Debate	2
4	Chanakya	Adarsh	B.A. (Prog.)	III	18/09/2019		British Parliamentary Debate	Best Adjudicator Award
5	Chanakya	Vishal singh	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II	20/09/2019	CBI India	Online Poster Making	1
6	Chanakya	Mridu	B.Sc. (Hons.) Statistics	I	20/09/2019	CBI India	Speech Making	1
7	Chanakya	Salim	B.A. (Prog.)	III	20/09/2019	CBI India	Speech Making	2
8	Chanakya	Bhavya Sinha	B.A. (Hons.) English	III	20/09/2019	CBI India	Essay Writing	1
9	Chanakya	Drishti Verma	B.A. (Hons.) History	I	20/09/2019	CBI India	Essay Writing	2
10	Chanakya	Drishti Verma	B.A. (Hons.) History	I	23/09/2019	Kirori Mal College	Creative Writing	2
11	Chanakya	Sreeram	B.Com. (Hons.)	I	26/09/2019	JDMC, University of Delhi	General quiz	2
12	Chanakya	Salim	B.A. (Prog.)	III	10-01-2019	Aurobindo College, University of Delhi	Quiz	3
13	Chanakya	Anushka	B.A. (Prog.)	III	10-01-2019	Aurobindo College, University of Delhi	Quiz	3
14	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III	10-04-2019	IIT Delhi	Word Games	3

S. No.	Society	Name	Course	Year	Date	Organizing Institution	Name of the Competition	Prize/ Position
	Chanakya	Sara	B.A. (Hons.) English	III	10-04-2019	IIT Delhi	Word Games	3
15	Chanakya	Saurabh	B.Sc. Mathematical Science	II	16/10/2019	CVS, University of Delhi	Fandom Quiz	2
16	Chanakya	Arjun	B.A.(Hons.) Political Science	II	19/10/2019	IIT Roorkee	Spelling Bee	1
17	Chanakya	Deepali	B.A. (Hons.) English	II	19/10/2019	IIT Roorkee	Word Games	3
18	Chanakya	Deepali	B.A. (Hons.) English	II	19/10/2019	IIT Roorkee	Anonymity	2
19	Chanakya	Isha	B.Com. (Hons.)	III	19/10/2019	IIT Roorkee	Letter Writing	3
20	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III	19/10/2019	IIT Roorkee	Pictionary	1
	Chanakya	Isha	B.Com. (Hons.)	III	19/10/2019	IIT Roorkee	Pictionary	1
	Chanakya	Deepali	B.A. (Hons.) English	III	19/10/2019	IIT Roorkee	Pictionary	1
21	Chanakya	Arjun	B.A.(Hons.) Political Science	II	20/10/2019		Nerdybate Competition	1
22	Chanakya	Arjun	B.A.(Hons.) Political Science	II	20/10/2019		Creative Writing	3
23	Chanakya	Utkarsh	B.A.(Hons.) Political Science	II	23/10/2019	SVC	Slam	2
24	Chanakya	Utkarsh	B.A.(Hons.) Political Science	II	24/10/2019	SGTB Khalsa College	Slam poetry	1
25	Chanakya	Utkarsh	B.A.(Hons.) Political Science	II	11-05-2019	Gargi College, University of Delhi	Slam Poetry	2
26	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III	11-07-2019	Department of History, PGDAV	Debate Competition	1
27	Chanakya	Pushkar	B.A.(Hons.) Political Science	III	11-07-2019	Department of History, PGDAV	Debate Competition	2
28	Chanakya	Utkarsh	B.A.(Hons.) Political Science	II	11-08-2019	JDMC, University of Delhi	Poetry	2
29	Chanakya	Utkarsh	B.A.(Hons.) Political Science	II	11-11-2019	Miranda House, University of Delhi	Slam Poetry	2
30	Chanakya	Isha	B.Com. (Hons.)	III		BITS Pilani, Hyderabad (Delhi Regionals)	Slam poetry	Invited to Judge
31	Chanakya	Utkarsh	B.A.(Hons.) Political Science	II		BITS Pilani	Slam Poetry	2
32	Chanakya	Richa	B.A. (Hons.) English	III		BITS Pilani	Debate Competition	3
33	Chanakya	Drishti	B.A. (Hons.) History	I		BITS Pilani	Creative Writing	1
34	Chanakya	Utkarsh	B.A.(Hons.) Political Science	II		BITS Pilani	Slam Poetry	1
35	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III		NSS PGDAV	English Slam Poetry	1
36	Chanakya	Purvanshi	B.Com. (Hons.)	I		NSS PGDAV	Hindi Poetry Slam	1
37	Chanakya	Palak	B.Com.(Prog.)	II		NSS PGDAV	Hindi Poetry Slam	2
38	Chanakya	Purvanshi	B.Com. (Hons.)	II		Shivaji College, University of Delhi	Creative Writing	1
39	Chanakya	Deepali	B.A. (Hons.) English	II		Shivaji College, University of Delhi	Creative Writing	2
40	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III		JMC, University of Delhi	Slam Poetry	2

S. No.	Society	Name	Course	Year	Date	Organizing Institution	Name of the Competition	Prize/ Position
41	Chanakya	Isha	B.Com. (Hons.)	III		Daulat Ram College	English Poetry Slam	Invited to Judge
42	Chanakya	Isha	B.Com. (Hons.)	III		Enactus, Ramjas College		Invited Performance
43	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III		Enactus, Ramjas College		Invited Performance
44	Chanakya	Salim	B.A. (Prog.)	III		Geo-Crusaders, PGDAV	quiz	2
45	Chanakya	Mridu	B.Sc. (Hons.) Statistics	I			Essay Writing	2
46	Chanakya	Drishti	B.A. (Hons.) History	I		Mata Sundari	Creative Writing	1
47	Chanakya	Mrinal	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I		Aryabhatta College	Marvel Themed Quiz	1
48	Chanakya	Sreeram	B.Com. (Hons.)	I		Commercium PGDAV	General Quiz	2
49	Chanakya	Drishti	B.A. (Hons.) History	I		Aryabhatta College	Creative Writing	1
50	Chanakya	Aarti	B.A. (Prog.)	III		BITS Pilani	Slam Poetry	3
51	Chanakya	Brinda	B.A. (Hons.) English	III			Litgleam feb edition	Poem Published
52	Chanakya	Mrinal	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I		Shaheed Bhagat Singh College	Meme making Competition	2
53	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III		PGDAV, University of Delhi	Marvel Mayhem Quiz	1
54	Chanakya	Harshvardhan	B.A. (Prog.)	II		PGDAV, University of Delhi	Marvel Mayhem Quiz	1
55	Chanakya	Arjun	B.A.(Hons.) Political Science	II		PGDAV, University of Delhi	Marvel Mayhem Quiz	1
56	Chanakya	Purvanshi	B.Com. (Hons.)	I		PGDAV, University of Delhi	Hindi Creative Writing	2
57	Chanakya	Aarti	B.A. (Prog.)	III		ANDC, University of Delhi	Creative Writing	2
58	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III		PGDAV, University of Delhi	Slam Poetry	3
59	Chanakya	Drishti	B.A. (Hons.) History	I		MLNC	Creative writing	2
60	Chanakya	Anubhav	B.A. (Hons.) English	III		Dyal Singh	Slam Poetry	2
61	Chanakya	Isha	B.Com. (Hons.)	III		Dyal Singh	Slam Poetry	2
62	Chanakya	Anushka Rai	B.A. (Prog.)	III		SGGSCC	Treasure Hunt	1
63	Chanakya	Harshvardhan	B.A. (Prog.)	III		SGGSCC	Treasure Hunt	1
64	Chanakya	Payal				Venkateshwar College	Extempore Debate Competition	Special Mention
65	Chanakya	Aarti	B.A. (Prog.)	III		Shaheed Rajguru College	Slam Poetry	Special Mention
66	Chanakya	Isha	B.Com. (Hons.)	III		JMC, University of Delhi	Poetry Slam	special mention
67	Conundrum	Team				St. Stephens College	Battle of bands	3
68	Conundrum	Pragya Bhardwaj				Lady Irwin	Western Solo Singing	2

S. No.	Society	Name	Course	Year	Date	Organizing Institution	Name of the Competition	Prize/ Position
69	Conundrum	Payal				ARSD, University of Delhi	Western Solo Singing	3
70	Conundrum	Pragya Bhardwaj				PGDAV EVENING	Western Solo Singing	2
71	Conundrum	Lucky Choudhary				Maharaja Agrasen College	Western Solo College	2
72	Hyperion	Nidhi	B.Com. (Hons.)	II	11-01-2019	CBI India	Debate Competition	1
73	Impressions	Yash Vardhan	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I	27/08/2019	ARSD, University of Delhi	Pot Decoration	1
74	Impressions	Esha Sati	B.A. (Hons.) English	II	09-08-2019	Miranda House, University of Delhi	Fabric Painting	2
75	Impressions	Esha Sati	B.A. (Hons.) English	II	17/09/2019	AIIMS	Face Painting	3
76	Impressions	Vishalakshi	B.A. (Hons.) Hindi	II	17/09/2019	AIIMS	Face Painting	3
77	Impressions	Bhavesh	B.Com. (Hons.)	III	20/09/2019	AIIMS	Poster making	3
78	Impressions	Neha	B.Com. (Hons.)	III	20/09/2019	CBI India	Offline Poster Making	1
79	Impressions	Suchit	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II	20/09/2019	CBI India	Offline Poster Making	1
80	Impressions	Sanjay	B.A.(Hons.) History	I	20/09/2019	CBI India	Offline Poster Making	2
81	Impressions	Sanjoli	B.Com. (Hons.)	III	27/09/2019	Rajdhani College, University of Delhi	Painting	2
82	Impressions	Priya	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II	10-01-2019	Kalindi College, University of Delhi	Face Painting	2
83	Impressions	Babita	B.Com. (Hons.)	II	10-01-2019	Kalindi College, University of Delhi	Face Painting	2
84	Impressions	Bhavesh	B.Com. (Hons.)	III	10-03-2019	Kalindi College, University of Delhi	Rangoli making	1
85	Impressions	Mansi	B.Com. (Hons.)	III	10-03-2019	Kalindi College, University of Delhi	Rangoli making	1
86	Impressions	Manisha	B.Com.(Prog.)	III	10-03-2019	Kalindi College, University of Delhi	Rangoli making	1
87	Impressions	Sanjoli	B.Com. (Hons.)	III	10-03-2019	Kalindi College, University of Delhi	Rangoli making	1
88	Impressions	Sanjay	B.A. (Hons.) History	I	16/10/2019	NSS PGDAV	Poster making	1
89	Impressions	Bhavesh	B.Com. (Hons.)	III	18/10/2019	Rajguru College, University of Delhi	Brushless Painting	1
90	Impressions	Mansi	B.Com. (Hons.)	II	18/10/2019	Rajguru College, University of Delhi	Best out of waste	1
91	Impressions	Pallavi	B.Com. (Hons.)	III	18/10/2019	Rajguru College, University of Delhi	Best out of waste	1
92	Impressions	Shefali	B.Sc. Mathematical Science	I	18/10/2019	Rajguru College, University of Delhi	Best out of waste	2
93	Impressions	Mili	B.Com. (Hons.)	III	23/10/2019	Satark PGDAV	Best out of waste	2
	Impressions	Muskan	B.Com. (Hons.)	III	23/10/2019	Satark PGDAV	Best out of waste	2
94	Impressions	Suchit	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II	23/10/2019	Satark PGDAV	Best out of waste	Consolation Prize
	Impressions	Anuj	B.A. (Prog.)	II	23/10/2019	Satark PGDAV	Best out of waste	Consolation Prize

S. No.	Society	Name	Course	Year	Date	Organizing Institution	Name of the Competition	Prize/ Position
95	Impressions	Yash Vardhan	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I	11-04-2019	KNC, University of Delhi	crafting	2
	Impressions	Medha	B.Com.(Prog.)	II	11-04-2019	KNC, University of Delhi	crafting	2
96	Impressions	Sanjoli	B.Com. (Hons.)	III	11-04-2019	DTU	Large Canvas	1
	Impressions	Esha	B.A. (Hons.) English	II	11-04-2019	DTU	Large Canvas	1
	Impressions	Priya	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II	11-04-2019	DTU	Large Canvas	1
	Impressions	Bhavesh	B.Com. (Hons.)	III	11-04-2019	DTU	Large Canvas	1
	Impressions	Manisha	B.Com.(Prog.)	II	11-04-2019	DTU	Large Canvas	1
97	Impressions	Neha	B.Com. (Hons.)	III		JMC, University of Delhi	Glossy Craft	2
98	Impressions	Sanjoli	B.Com. (Hons.)	III	31/10/2019	Satyawati College	Poster making	Consolation Prize
99	Impressions	Neha	B.Com. (Hons.)	III		IIT Delhi	Graffiti Competition	1
	Impressions	Daksh	B.Com. (Hons.)	II		IIT Delhi	Graffiti Competition	1
	Impressions	Esha	B.A. (Hons.) English	II		IIT Delhi	Graffiti Competition	1
	Impressions	Bhavesh	B.Com. (Hons.)	III		IIT Delhi	Graffiti Competition	1
100	Impressions	Priya	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II		NSS PGDAV	Face Painting	1
	Impressions	Vishalakshi	B.A. (Hons.) Hindi	II		NSS PGDAV	Face Painting	1
101	Impressions	Mansi	B.Com. (Hons.)	II		NSS PGDAV	Waste to Wonders	1
	Impressions	Shefali	B.Sc. Mathematical Science	I		NSS PGDAV	Waste to Wonders	1
102	Impressions	Anuj	B.A. (Prog.)	II		Aurobindo College, University of Delhi	Crafting Competition	2
	Impressions	Suchit	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II		Aurobindo College, University of Delhi	Crafting Competition	2
103	Impressions	Manisha	B.Com.(Prog.)	II		Zakir Hussain, University of Delhi	Art Marathon	2
	Impressions	Daksh	B.Com. (Hons.)	II		Zakir Hussain, University of Delhi	Art Marathon	2
	Impressions	Yash Vardhan	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I		Zakir Hussain, University of Delhi	Art Marathon	2
	Impressions	Priya	B.Sc.(Hons.) Mathematics	I		Zakir Hussain, University of Delhi	Art Marathon	2
104	Impressions	Neha	B.Com. (Hons.)	III		Zakir Hussain, University of Delhi	Painting Competition	2
105	Impressions	Neha	B.Com. (Hons.)	III		ANDC, University of Delhi	Graffiti	2
	Impressions	Esha	B.A. (Hons.) English	II		ANDC, University of Delhi	Graffiti	2
106	Impressions	Sakshi				ANDC, University of Delhi	Best out of Waste	2
107	Impressions	Pallavi	B.Com. (Hons.)	III		ANDC, University of Delhi	Best out of Waste	2

S. No.	Society	Name	Course	Year	Date	Organizing Institution	Name of the Competition	Prize/ Position
	Impressions	Mansi	B.Com. (Hons.)	II		ANDC, University of Delhi	Best out of Waste	2
108	Impressions	Yash Vardhan	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I		ARSD, University of Delhi	Collage making	1
109	Impressions	Bhavesh	B.Com. (Hons.)	III		Khalsa College	Coffee painting	2
	Impressions	Akshita	B.Com. (Hons.)	II		Khalsa College	Coffee painting	2
110	Impressions	Bhavesh	B.Com. (Hons.)	III		Dyal Singh College, University of Delhi	Coffee painting	3
111	IRIS	Hanan	B.A. (Hons.) English	III	20/09/2019	CBI India	Filmmaking competition	1
112	IRIS	Team			19/10/2019	IIT Roorkee	Filmmaking competition	2
113	IRIS	Shivansh	B.A. (Prog.)	I		NSS PGDAV	On Spot Photography	3
114	IRIS	Sukarman	B.Com.(Prog.)	I		World Photographer Club	Camera Tricks Competition	2
115	IRIS	Laksh	B.Com. (Hons.)	I		Aurobindo College, University of Delhi	Spot Photography	1
116	IRIS	Team				Shaheed Rajguru College	Film Making Competition	1
117	Jalsa	Team				MDI, Gurgaon	group dance competition	1
118	Jalsa	Team				Aravali College of Engineering and Managing		1
119	Jalsa	Team				Lingayas		1
120	Navrang	Team			22/09/2019	AIIMS	Stage Play	2
121	Navrang	Udit	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II	11-11-2019	Vartika	Ad-mad	2
	Navrang	Mukul	B.Com.(Prog.)	I	11-11-2019	Vartika	Ad-mad	2
	Navrang	Manoj	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II	11-11-2019	Vartika	Ad-mad	2
122	Navrang	Kanika	B.A.(Hons.) Hindi	II		JDMC, University of Delhi	Ad-mad	2
	Navrang	Udit	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II		JDMC, University of Delhi	Ad-mad	2
	Navrang	Manoj	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II		JDMC, University of Delhi	Ad-mad	2
	Navrang	Yuga	B.A. (Hons.) English	II		JDMC, University of Delhi	Ad-mad	2
123	Navrang	Himanshu	B.Sc. (Hons.) Statistics	I		JIIT	Stand up Comedy	1
124	Navrang	Manoj	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II		PGDAV Evening	Ad-mad	1
	Navrang	Kanika	B.A. (Hons.) Hindi	II		PGDAV Evening	Ad-mad	1
125	Navrang					Zakir Hussain, University of Delhi		Best Costume award
126	Navrang	Manoj	B.Sc.(Hons.) Mathematics	II		MLNC	Ad-mad	1
	Navrang	Kanika	B.A. (Hons.) Hindi	II		MLNC	Ad-mad	1
	Navrang	Yuga	B.A. (Hons.) English	II		MLNC	Ad-mad	1

S. No.	Society	Name	Course	Year	Date	Organizing Institution	Name of the Competition	Prize/ Position
127	Navrang	Krishna	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II		MLNC	Ad-mad	3
	Navrang	Udit	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II		MLNC	Ad-mad	3
128	Raaga				13/08/2019	ABVP, DUSU	Group Singing Competition	2
129	Raaga	Rajat	B.Sc. (Hons.) Statistics	III		JDMC, University of Delhi	Hindustani Classical Competition	3
130	Raaga	Ajay	B.A. (Hons.) English	III		Gargi College, University of Delhi	Semi-Duet Competition	2
	Raaga	Sahil	B.A. (Prog.)	I		Gargi College, University of Delhi	Semi-Duet Competition	2
131	Raaga	Team				Lady Hardinge Medical College	Indian Classical	2
132	Rapbeats	Harsh	B.Com. (Prog.)	III	16/09/2019	AIIMS		3
133	Rapbeats	Vinay Kumar	B.A. (Hons.) English	III	20/09/2019	CBI India	Rapping Competition	1
134	Rapbeats	Sarthak	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I	10-04-2019	Deen Dayal College	Open mic	1
135	Rapbeats	Monu	B.Com.	III	18/10/2019	Gargi College, University of Delhi		2
136	Rapbeats	Vinay	B.A. (Hons.) English	III		Shiv Nadar University		3
137	Rapbeats	Monu	B.Com. (Hons.)	III		Rukmani Devi College		1
138	Rudra	Team			24/10/2019	IHE	Goonj	2
139	Rudra	Aakash	B.A. (Prog.)	II	24/10/2019	IHE	Goonj	Best Actor
140	Rudra	Sreeram	B.Com. (Hons.)	I	11-01-2019	CBI India		3
141	Rudra	Vaishnavi	B.A. (Hons.) English		11-01-2019	CBI India		2
142	Rudra	Team				MSIT	Street event	2 (Best Actress)
143	Spunk	Team				DME		3
144	Spunk	Team				GL BAJAJ		1
145	Techwhiz	Vishal Kumar	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II	28/09/2019	IITM	Code Golf	2
	Techwhiz	Himanshu Sharma	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I	28/09/2019	IITM	Code Golf	2
146	Techwhiz	Vishal Kumar	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II	28/09/2019	IITM	Sudoku	1
147	Techwhiz	Tarun	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II	28/09/2019	IITM	Sudoku	2
148	Techwhiz	Saurabh	B.Sc. Mathematical Science	II	30/09/2019	Kalindi College, University of Delhi	General quiz	1
149	Techwhiz	Pulkit	B.Sc.(Hons.) Computer Science	III	30/09/2019	Kalindi College, University of Delhi	Web Designing	2
150	Techwhiz	Mayank	B.Sc.(Hons.) Computer Science	III	30/09/2019	Kalindi College, University of Delhi	Web Designing	3
151	Techwhiz	Kartikeya	B.Sc.(Hons.) Computer Science	III	30/09/2019	Kalindi College, University of Delhi	Coding	1

S. No.	Society	Name	Course	Year	Date	Organizing Institution	Name of the Competition	Prize/ Position
152	Techwhiz	Vaishnavi	B.Sc. (Hons.) Statistics	II	30/09/2019	Kalindi College, University of Delhi	Coding	3
153	Techwhiz	Vishal Kumar	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II	10-04-2019	NSS PGDAV	Online Digital Poster making	1
154	Techwhiz	Akash	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II	10-04-2019	NSS PGDAV	Online Digital Poster making	2
155	Techwhiz	Vaishnavi	B.Sc. (Hons.) Statistics	II	16/10/2019	CVS, University of Delhi	Blind Coding	2
	Techwhiz	Varsha	B.Sc.(Hons.) Computer Science	II	16/10/2019	CVS, University of Delhi	Blind Coding	2
156	Techwhiz	Himanshu Tiwari	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I		IMS Ghaziabad	Markfest	3
157	Techwhiz	Himanshu Sharma	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I		Ram Lal Anand, University of Delhi	Web Designing	2
158	Techwhiz	Himanshu	B.Sc.(Hons.) Computer Science	I		Hansraj College, University of Delhi	Quiz-o-Mania	2
159	Techwhiz	Kartikeya	B.Sc.(Hons.) Computer Science	III		ARSD, University of Delhi	Hack d Code	3
160	Techwhiz	Shubham	B.Sc. Mathematical Science	II	03-03-2020	Aryabhatta College,University of Delhi	Quiz	3
161	Techwhiz	Manish Bisht	B.Sc.(Hons.) Computer Science	III	22/10/19	VIPS, Pitampura	TechQuiz	1
		Aman Sejwal	B.A (Hons.) History B.Sc.(Hons.) Computer Science	III	22/10/19	VIPS, Pitampura	TechQuiz	1
162		Harshita		III	18/09/2019		British Parliamentary Debate	2
163		Riya	B.Com.(Prog.)	II	20/09/2019	CBI India	Online Poster Making	2

NCC

This year 160 boys and 48 girls were enrolled in our 3 PGDAV Company. Under the guidance of Lt. Renu Jonwall and Lt. Hari Pratap and leadership of SUO Akshat Dwivedi and SUO Riya Mishra.

Our 5 boys and 2 girls cadets participated in Republic Day Camp 2020, 2 girls and a boy cadets participated in Thal Sainik Camp 2019, 1 boy cadet participated in Para Basic Course 2019, 1 boy and 1 girl participated in Special National Integration Camp, 3 girl cadets participated in PM's Rally 2020, 1 girl cadet participated in AJJ camp 2019 , 14 boy cadets participated in CM Rally, 14 cadets participated in EBSB Camps and learnt academic subjects of the army enthusiastically. Through out the year cadets participated in various programs like "International Yoga Day", "Flag Day", "Youth Day", "Water Conservation Day", "Swawchta Mission " etc with zeal and discipline. Cadets of 3PGDAV Coy. successfully performed Nukkhad Natak at India Gate and marked the ending of Swatchhta Pakhwada 2019 in the renowned presence of Hon'ble Raksha Rajya Mantri, Shri Shripad Naik and Director General of NCC Lt. General Rajiv Chopra.

During the year many cadets attended, more than 15 state and national level camps and won prizes in National Integration Awareness Program, drill, dance, singing, rangoli making, poster making, and basketball competitions . In September 2019 we organized Rank Ceremony, and beholded our cadet with responsibility. In inter-college competitions our 3 PGDAV Company won prizes in Quarter Guard, Squad Drill, Best Cadet and poster making competitions. The training year 2019-20 was given a stupendous pause with the Annual NCC fest, PRABAL with Col. Sonam Wangchuck, Maha Vir Cahkra recipient presiding as chief guest for the occasion.

SUO Riya Mishra won Delhi Best Cadet award in the year of 2019.

We are proud that 11 of our girl cadets and ANO Lt Renu Jonwall, volunteered and opted to step out and help the nation in these difficult times of Covid 19 global pandemic. Out of them SUO Riya Mishra and Cdt Aditi got the opportunity to help the Delhi government with Data management and monitoring.

Cdt Jyoti, Cdt Mansi, Cdt Hema and Sgt Aarti served uniquely by making 132 home- stitched masks and distributing to the needy and poor. These volunteers are ready for any unforeseen service to the nation keeping their self interest far behind.

महानिदेशक राष्ट्रीय कैडेट कोर
द्वारा प्रशंसा

नं० : डीएल/17/एसडब्ल्यूए/919550 रैंक : एसयूओ
नाम : रिया मिश्रा
यूनिट : 3 दिल्ली (गर्ल्स) बटालियन एनसीसी
वर्ष : 2019

में सेवा करते हुए, अत्यंत सार्थक कर्तव्य-निष्ठा एवम् कार्य-कुशलता का परिचय देते हुए आपने जो सराहनीय योगदान दिया है तथा दूसरों के लिए जो अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है, उस पर समस्त राष्ट्रीय कैडेट कोर को और मुझे अत्यंत गर्व है।

नई दिल्ली
31 दिसम्बर 2019

राजीव चोपड़ा
लेफ्टिनेंट जनरल
महानिदेशक राष्ट्रीय कैडेट कोर

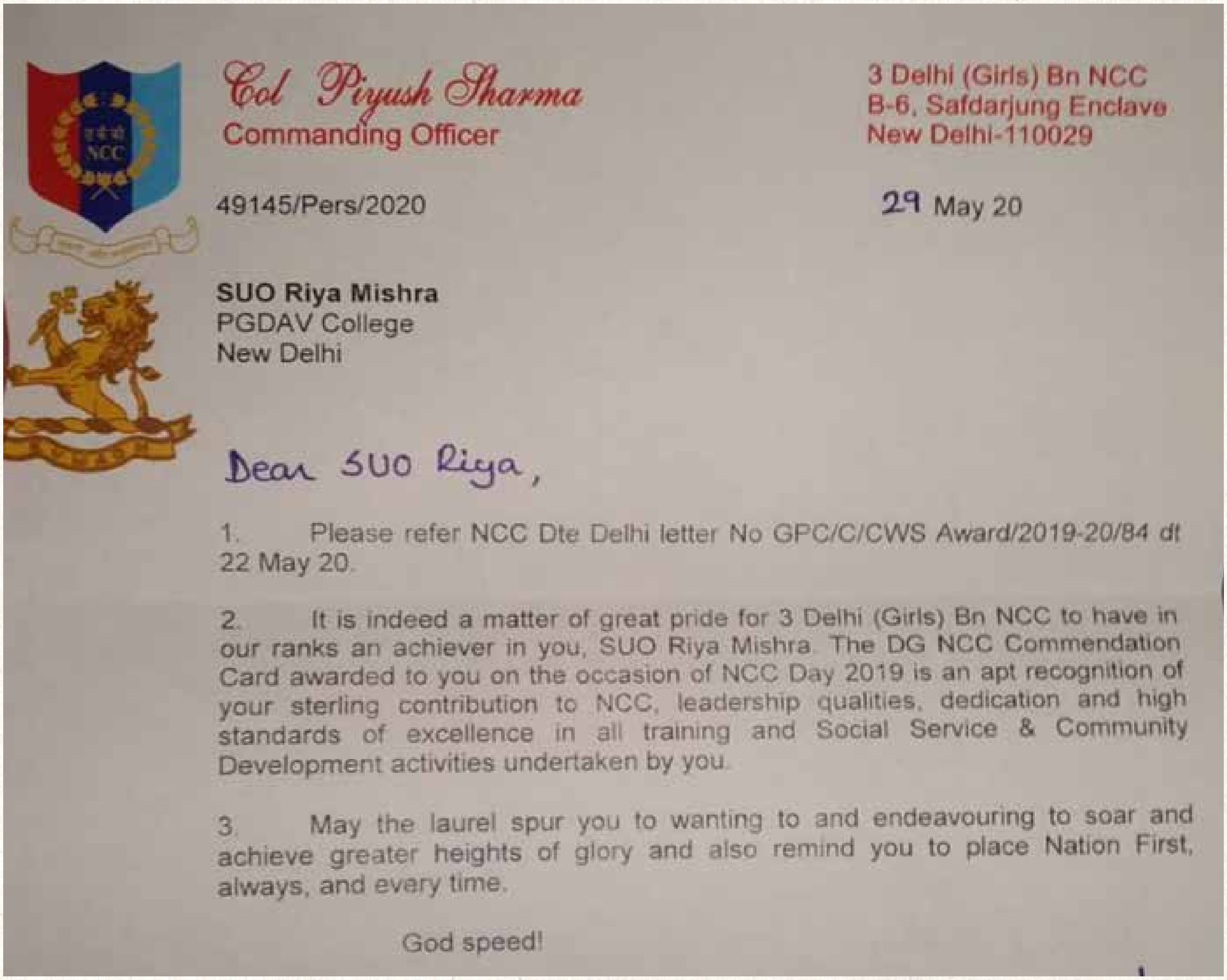

Col Piyush Sharma
Commanding Officer

3 Delhi (Girls) Bn NCC
B-6, Safdarjung Enclave
New Delhi-110029

49145/Pers/2020

29 May 20

SUO Riya Mishra
PGDAV College
New Delhi

Dear SUO Riya,

1. Please refer NCC Dte Delhi letter No GPC/C/CWS Award/2019-20/84 dt 22 May 20.

2. It is indeed a matter of great pride for 3 Delhi (Girls) Bn NCC to have in our ranks an achiever in you, SUO Riya Mishra. The DG NCC Commendation Card awarded to you on the occasion of NCC Day 2019 is an apt recognition of your sterling contribution to NCC, leadership qualities, dedication and high standards of excellence in all training and Social Service & Community Development activities undertaken by you.

3. May the laurel spur you to wanting to and endeavouring to soar and achieve greater heights of glory and also remind you to place Nation First, always, and evary time.

God speed!

PGDAV college girls NCC unit is also awarded for their contribution towards spreading awareness during "Swachta Pakhwada". Lt Renu Jonwall received award on behalf of SWs PGDAV team.

Lt Renu Jonwall receiving a token of appreciation for the wonderful work done by SWs of PGDAV during Maha Swachhta Pakhwada 2019-20

N.S.S. ACTIVITIES DURING 2019-20

The N.S.S. unit of P.G.D.A.V. College has been highly active during the session trying its best to make a change for the better. Small acts of kindness when done together by a huge and able team go a long way in transforming the lives of the underprivileged. With the motto 'Not Me But You' as the guiding principle and motivation, N.S.S. is a unique platform for students to contribute towards nation-building along with a sense of contentment arising from the welfare work that they undertake. It helps one to understand the hardships that many people are going through and to develop empathy towards them. It motivates one to do every possible act to ameliorate the lives of the underprivileged.

Under the guidance of the Programme Officer, Dr. Chander Pal Singh and Co-Programme Officer, Dr. Aparna Pande, the aim of N.S.S. unit is to bring a constructive and affirmative .change which is much needed in today's society. This year has been tremendously fruitful. It witnessed the inspiring presence of Smt. Chandro Tomar, the 'shooter dadi' on whom the superhit Bollywood movie 'Saand ki Aankh' has been created and the founder of Sakaar NGO, Shri. Shailesh G. Pandey at the orientation ceremony as well as the launch of the new initiative of the unit, PRATIBHASHAKTI (the Women Development Cell) keeping with the aim of our N.S.S. unit to continuously strive for taking up various socially sensitive issues like women empowerment, child education, rural development and over all well-being of the society around us.

In addition to the fully functional departments like ASTITVA (Child Education Department), Rural Development Department, PWD department, etc. there were numerable workshops and seminars organized on various issues like climate change, road safety, disaster management, no-tobacco campaign, cancer prevention, compost making, etc. Our unit has celebrated important days like Constitution Day, World Mental Health Day, N.S.S. day, etc. Other initiatives like *Pahal Khushiyon ki* where N.S.S. volunteers spend their Diwali week with under-privileged and marginalised; Blood Donation Drive in collaboration with Red Cross Society with a collection of more than 100 units of blood, flood relief collection drive, multiple cleanliness drives under *Swachchata Pakhwara* etc. were undertaken by the N.S.S. while striving to reach the goal of providing a dignified life to all.

And to end the session, the annual social fest SEVAARTH was organized on 20 January 2020 with the theme of "*Zariya* - Redefining Destinies". The fest saw a footfall of more than 1000 students from in and around Delhi. The highly acclaimed chief guests of the day were Mrs. Richa Kapoor, Mr. Himanshu & Mr. Rahul Sing with various competitions like Enact-Stage play competition, Matka painting by women of Pratibhashakti, Rangoli making competition by women of Pratibhashakti, Waste-to-Wonder, Samarth, Sangharsh-N.S.S. unit competition etc., the spirit of teamwork was encouraged and the day was filled with a myriad of activities and fun. The most awaited event was the dance by students from ASTITVA and women from PRATIBHASHAKTI which turned out to be a pleasure to watch. The committed team worked day and night to make this event successful.

Sakshi Fartyal, one of the office bearers of our team, was selected to represent Delhi University at National Youth Festival held at Lucknow from 12th January to 16th January 2020.

N.S.S. P.G.D.A.V. college has always put their best foot ahead and has always worked hard for the betterment of our society. At N.S.S. our only motive is to bring a smile on the faces of everyone and work for the upliftment of everyone. By undertaking these tasks, we believe we are doing our bit towards the society.

STUDENTS' UNION REPORT 2019-2020

The students'union of our college exists to represent the students at large, to protect their interest and to look into their grievances. It also helps the students to hone their leadership qualities. The union organizes various activities including debates, lectures and the college cultural festival Aaghaz the onset of Nirvana 2020. The academic staff of the college nominates advisors to the union. For this academic session, the union advisors are Dr. Ankit Agrawal, Ms. Rimpy, Dr. Varun Bhusan and Ms. Kiran Yadav. The union functions through its elected office bearers. The following office bearers were elected this year-

President :- Yogesh Verma

Vice President :- Naveen Baisla

Secretary :- Kshitiz Sharma

Joint Secretary :- Prashant Singh

Central Council Member :- Sarvang Awana

Central Council Member :- Himanshu Chechi

PLACEMENT CELL

The Placement Cell of our college is characterised by an unparalleled zeal to help students secure jobs after graduation and assist students to get internships in various profiles and companies. With the combined knowledge, experience and enthusiasm of faculty and students from various departments, the Placement Cell is well equipped to put their resources together for the benefit of their students.

The job scenario today is facing the onslaught of ground breaking competition from all fields; and employment into good companies and organizations has become a daunting task. So, for the benefit of its students preparing to face the job market, The Placement Cell has risen to the occasion and has successfully aided in providing opportunities and employment to its outgoing students.

In our desire to be the best, we believe in building everlasting bonds with our corporate partners. We ensure to impress the recruitment team of the companies, to hire students from our college as a part of their yearly calendar, thereby creating a legacy. A great number of new as well as regular companies visited our college for Placement this year. It started off in August with EY GDS being the first, followed by companies such as Tata Consultancy Services, TresVista, Wipro, Amazon, Deloitte, PWC, FIS Global, Teach for India,Amazon and many more. We have placed 250+ students and still counting through on campus drives and off campus interviews from various departments. This year's highest package was CTC 12.5 LPA offered by Jaro Education.

We have our team working to get various internship offers for first and second year students and we have successfully placed our students in various reputed companies like EY GDS, EY India, Mazaars UK and Decathlon with highest stipend being ₹20,000 offered by Lido Learning.

The Placement cell has been set up in the college for the benefit of the students. Primary objective of the cell is to provide the much needed life skills to students and help them to find job placements and internships. To keep pace with the present stiff competition, the placement cell has undertaken several measures like organizing seminars, mock interviews and group discussions, soft skills, communicative skills, personality development, corporate culture/etiquette and leadership skills to the students.

The Placement Cell, PGDAV College organised a orientation in the starting of the session, DR S.C Makani embraced his presence and spoke about 'How to crack Interviews and Group Discussions'.

To hone the skills of the students, cell also organise various seminars and workshops in collaboration with various organisation primarily by Indian School of Business, thinking bridge in collaboration with eminent strategy, prominent professionals and even by alumni. These seminars tends to help the students by providing tips for cracking personal interviews, groups discussions and provide an insight about the corporate world.

The Placement Cell reaches out to the students via its Facebook page, LinkedIn, newsletter which provides with the monthly report and the blog which was introduced this year 'Corporate Catena' aims to bridge the gap between the corporate world and students via alumni with an added benefit of making long term network with them.

With the constant hardwork of the team, we jumped from 10th position to 5th position according to the Top 10 Ranking of The Placement Cell issued by DU Assassins.

We at the Placement cell aspire to provide the students with the best of the opportunities, and so on this note we organised our Annual Internship fair Converge'20 presented by Evelyn Learning. The event was organised on 4th March,2020 with an ultimate aim to provide a healthy platform to the students. Converge, as the name suggests, aims to provide an excellent platform to students across Delhi NCR to create networks and grab an internship to work and learn . Leading to a footfall of 1600+ candidates. With a record of 450+ students placed in various companies last year, we hosted a successful fair with greater enthusiasm this year. From 37 companies last year, this year we have on board 50+ companies offering 60+ profile including photography, derivative research, public relations and graphic designing.

With the relentless support of the staff and the students associated with the placement cell and most significantly Dr Sonia Sabharwal at the helm, we strive to reach a step closer to our ultimate goal of 100% placements for our students.

The Placement Cell hopes to continue the efforts and rise to new heights with guidance and support of our faculty and students.

KAIZEN - THE CAREER COUNSELLING CLUB

Kaizen, the Career Counselling Club Report(2019-2020) (Established 2015)

- Aim: To prepare and counsel students for different careers
- New Initiatives: Launched 'Kaizen Times', a capsule of current events &'Kaizen Outreach' a blog post
- Facebook and Instagram page: kaizenofficialpgdav

Student Office Bearers: Pushkar Pandey(President), Samta Sudisksha(Vice-President), Nancy Gandhi(Secretary), Palak Gambhir & Anshu(Jt. Secretary), Krishna (Treasurer),Sahil Choudhary (Media-Head) and Sarthak Arora(Current Affairs Head) : **Teacher Conveners**: Dr Kusum Lata Chadda and Dr Rajni Jagota.

Special Sessions and Events:

Date	Sessions/ Workshops/Activities
6.9.2019	Workshop on '**Communication Skills and Resume Writing**'by Ms Sadaf Taher, Sponsored **by ITM, Mumbai**
23.9.2019	Session on **'Why to Study Law?'** Bibhuti Bhushan, Advocate, Delhi High Court
30.9.2019	'Living Gandhi' Cleanliness Drive
18.10.2019	Session on **'Yoga and Meditation'**, by Nikhil Yadav, Vivekanand Kendra, Delhi
24.10.2019	Session on **'How to write a Research Paper'** by Dr. Monika Saini
8.11.2019	Session on 'How to write examination paper' by Dr Kusum Lata Chadda
24.1.2020	Student interaction on 'Know Your Republic'
4.2.2020	Workshop on **' Career Opportunities in the Banking Sector'** by Vijay Anand, Manager, RBI Mumbai

Regular Events: Activities

Date	Book- Reviews	Personality-Sketch	Vocabulary	Current Affairs/Quz	Miscellaneous
23.8.19	***The Tempest*** by William Shakespeare presented by Kritika Priya	Jack Ma Presenter: Sarthak Arora	Presenter: Anshu		Poetry by Naryayan General Awareness by Palak Gambhir
16.9.19			Nancy Gandhi	Sarthak Arora	Poem: Komal About **Ikigai**: Stanzin **Humayun's Tomb** : Dheeraj
4.10.19	***The Colour Purple*** by Alice Walker presented by Nitin	-	Varsha	Quiz: Mohini and Iti	Poetry by Radhika **'Network Marketing'** by Khushi **Case study on Entrepreneurship** by Manilal Gupta
18.10.19			Karanjeet	Quiz: Anushka	**'Single Use Plastic'**-Amarjeet **'Insolvency and Bankruptcy Code**: Samta
5.11.19			Karanjeet	Quiz: Mohini	**'Inferiority Complex'** : Krishna '**My Success Story'**: Monika Rana, Sportsperson
10.01.19	***Gandhi Before India*** By Dr Kusum Lata Chadda		Samta	Quiz: Pushkar	'**Importance of Reading Books'** by Yash
31.01.19	***My Gita*** by Devdutt Patnaik by Karanjeet; ***Life is What You Make It*** by Preeti Shenoy, presenter: Anushka		Saalim	Pushkar	'**Forms of Business Organization** By Dr. Rajni Jagota

Compiled by Palak Gambhir, Secretary, Kaizen

ENACTUS

Enactus PGDAV is a non-profit organisation, a unit of the global organization of Enactus which aims at improving sustainable development through entrepreneurial actions rendered to the underprivileged sections of the society. We aim to empower this section socially as well as economically.

1. *Project Korakagaz*- Enactus Pgdav had launched its first project in 2015 named Project KORAKAGAZ, which aims to provide employment opportunities to the women living in slum areas of Srinivaspuri who have emerged as the survivors of male dominance. The project involves the production of spiral bound notebooks by these women in exchange for wages, which includes notebooks with customised, gloss laminated covers as well. So far we have been able to sell 2000+ notebooks and diaries. To expand our project further we launched spiral bound diaries as our new product which was recieved very positively by a large number of people and to provide these women with many more such opportunities we are surveying market to embellish them with our products. Our remarkable achievements include the entrepreneurial debut of Ruksaar, who under the constant guidance of our members became efficient enough to start her own business and made us immensely proud.

2. *Project Nistaaran*- Enactus PGDAV launched its new, waste management project, PROJECT निस्तारण, where we team up with the 34 waste pickers of Defence colony to clean it of the heaps of garbage and start our journey towards a cleaner society. The Project involves the sale of organic manure to cut down the use of fertilizers in plantation units. It aims at making wonders out of waste and at the same time helping the community of waste pickers that earn a living out of this waste collection, by upgrading their work to a greener job, make their jobs safe, respected, recognized and clean for them while simultaneously reducing the current dependency on land to dispose off the waste naturally.The compost is made in the most natural ways and is packed in cotton recyclable bags, adding a plus point to our eco-friendly product. The project is already a success with more than 70 kgs being sold within a month of launch.

3. *Project Sugandh*- Our third super innovative project which was launched this year itself, named Project SUGANDH, aims at increasing the sanctity of houses under sheer environment friendly methods. Agarbatti, which is an integral part of any Hindu ritual, is an essential during performing rituals. It not only spreads mesmerizing aroma but also piety. Keeping this in view, we launched our eco-friendly venture, which manufactures incense sticks made purely out of cow dung. Our incense sticks are handrolled by the women of vulnerable sections of the society. Incense Sticks made out of Cow Dung increases the organicity of the product and minimises the pollution caused by the ordinary ones. Cow dung Agarbatti provides a naturally aesthetic and spiritual environment. Due to the uniqueness of our product, we have been able to sell more than 200 agarbattis on its launch day itself, and the number is increasing everyday!

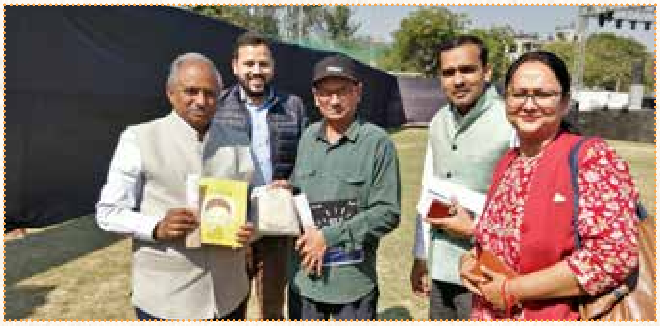

SATARK- THE CONSUMER CLUB

Annual Report- 2019-2020

It is rightly said that "Arriving at one goal is the starting point to another."

Taking the same spirit forward, Satark- The Consumer Club of PGDAV College completed another session successfully and is all desirous to achieve many such milestones. The **Orientation Program** was held on 3rd September followed by a **Poster- Making competition** for members of Satark, to tickle their creativity. Keeping in mind the adverse climate situation in which urgent action is required, the team chose 'NO PLASTIC IS FANTASTIC' as the topic for the competition.

Satark not only aims at spreading awareness at the college level but also spread it far and wide. The **inter-college 'Best Out Of E-Waste' Competition** was organised on 23rd October 2019, where 11 teams participated. Besides this, our day to day **E-Waste Collection Drive**, as the tradition of last years, continued. This year Satark team installed two giant boxes in the library and in the staff room to facilitate collection of E-Waste.

To add a brick to the wall of creativity, Satark organised an **Online Poetry Writing Competition- Kavyanjali**, **"Dharti ki ab yahi pukar, plastic mukt karo har haal"**, in the month of January. We received around 120 entries from students across and beyond the DU circuit.

The great growling engine of change is technology. Hence, to enhance the knowledge of the students and to spread awareness globally, Satark has its **Instagram page and it's blog.** The blog is updated every Thursday with various topics of consumer's interests. The content department also started **Satark's Monday Update** on its

Instagram page to create an online platform to share recent happenings about consumer's interests.

Knowledge Sharing Sessions have always been an indispensable part of Satark. We organised 4 Knowledge Sharing Sessions in this session.

It is rightly said that today's students are tomorrow's citizens. Hence, to spread awareness regarding **online fraud**, the team of Satark went to **Shaheed Hemu Kalani Government S.V.P.** which is the first government pilot school.

For the very first time, **Satark had its own stall** in the college fest- Aaghaz- the onset of Nirvana '20. We saw a huge crowd in our stall in the two days of the fest. Through this, Satark marched to another level to build an aware society.

Last but not the least, Satark in collaboration with Consumer's Forum celebrated **World Consumer Rights Day** on 26th March by organising an **Inter-college Ad Mad show competition** on the topic **'Alternatives to plastic'**.

Every session is a blank canvas for us to paint it with a plethora of colors. This year, the entire team of Satark worked really hard to paint the canvas with the brightest colors possible. Hence, we concluded this session with the hope that the next session will be much better and brighter than the session of 2019-20.

Team Satark 2019-2020

Founder Convener - Dr Vandana Agrawal
Advisor - Dr Anuradha Gupta
Convener - Ms Sakshi Verma
Faculty Members - Ms Megha Mandal, Ms Nisha Goel, Dr Ritu Tanwar, Ms RVS Chuimila

President - Manaman Kaur
Vice President - Kanishka Madaan
Secretary - Shikha Yaduvanshi
Joint secretary - Harsh Goel
Treasurer - Yash Dugar
Technical Head - Piyush
Organising and Promotion Head - Neha Bhatia and Deepak Rana
Fine Arts Head - Tanya Kashyap
Anchoring and Debating Head - Kanika Kataria
Content Head - Preeti Deepa Dash
Executive Members - Pratibha, Kartik, Mohd Rizwan, Rohit, Manish, Deepali, Vanshika.

NORTH EAST CELL

PGDAV College (M)
University of Delhi

The North East Cell of our College was established in the year 2016. Ever since it's inception, the Cell has been engaging students hailing from the North East in academic and extra curricular activities that specially focus on topics befitting the interests of the students.

The academic year began on a high note with a victory at the Rajiv Gandhi Memorial Football Tournament organized by NSUI on 2nd September 2019. Our students won the runners up trophy which carried with a cash prize of Rs. 10000/-

North East Cell conducted the Freshers Welcome on 11th September 2019. Seventeen students from various states across the North east were welcomed in a cheerful function. Most of these students have come to the city for the first time, and special care was given to ensure their adjustment to college as well as city life.

On 13th February, the annual Academic Talk was held in the College. Dr. Arvind Kumar, Associate Professor, Department of Economics, Lady Shri Ram College was invited to give a lecture on Corporate Social Responsibility in North East India. Dr. Kumar enlightened students hailing from multiple disciplines the concepts and laws of CSR, and the scope and success of various initiatives undertaken in the North east. He also emphasized the need for the

dynamic recommendation from the local population itself on how to strategize and sustain development plans for the success of these undertakings. He urged the students to excel in their respective fields of study so that they can become this crucial link in connecting the companies and the needs of the people.

For it's annual cultural fest called Heritage, North East Cell organized a workshop on Mental Health for all the students of the College. The College counsellor, Dr. Himanshi Khanna, guided students in a comprehensive understanding of mental health and discussed ways in which students could take care of themselves and others around them.

North East Cell is ever thankful for the guidance of the Principal and the support of his benevolent staff for the success of another year of events catered towards the holistic development of the North east students.

LAWN AND GARDEN COMMITTEE

P.G.D.A.V. College has enriched its environment through its lawns, assorted plants, flowers and trees. It comprises of one herbal garden at the back of the staff room and a lawn in front of the new building.

These lawns and gardens of the college are maintained by malis namely Sh. Shiv Saran, Sh. Sambhu Saran and Smt. Kusum Devi. The pruning of trees in the college lawns was handled, by personally taking up the matter with "Horticulture Department of South Delhi Municipal Corporation".

The lawn and garden committee of the college organized a talk cum demonstration on "Let's learn to turn garbage into compost" by Ms. Nandini Diesh, Floriculture Society, Noida on 13th Nov 2019. Ms. Nandini had an interactive session with faculty and gardeners of the college in which she provided her valuable inputs on the formation of compost.

This year, for the first time, college participated in the "62nd Annual Flower Show" held on 29th Feb 2020. Sh. Sambhu Saran Ji got best mali award at the flower show.

These efforts were made possible under the dynamic and visionary leadership of principal sir, Dr. Mukesh Aggarwal and constant support of convener, Dr Ritu Jain and members of the lawn and garden committee.

भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर स्मृति व्याख्यानमाला–2019

प्रत्येक वर्ष की भांति, इस वर्ष भी हमारे महाविद्यालय द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर के जन्मोत्सव को मनाने की श्रंखला में 10 अप्रैल, 2019 को भारत रत्न 'डॉ. भीमराव अंबेडकर स्मृति व्याख्यानमाला' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला के अंतर्गत 9 अप्रैल, 2019 को विद्यार्थियों के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन और कार्यों पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें सफल विद्यार्थियों को तीन पुरस्कार प्रदान किए गए, जिसके अंतर्गत प्रथम पुरस्कार के रूप में ₹ 2500, द्वितीय पुरस्कार ₹ 1500 व तृतीय पुरस्कार में ₹ 1100 की धनराशि व एक स्मृति चिन्ह और प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के विद्यार्थियों के अलावा अन्य विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया।

इस व्याख्यानमाला के अंतर्गत 10 अप्रैल को **'Approaching Ambedkar in Academics'** विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के प्रोफेसर विवेक कुमार जी को आमंत्रित किया गया। जिन्होंने अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के योगदान और अध्ययन पद्धति से विद्यार्थियों को अवगत कराया, उन्होंने बताया कि डॉ. भीमराव अंबेडकर के अध्ययन और अध्यापन की पद्धति सिर्फ कोरी कल्पना पर आधारित न होकर तथ्यों पर आधारित थी साथ ही जब भी वह किसी विषय का अध्ययन करते थे तो वह अध्ययन तुलनात्मक पद्धति पर आधारित होता था। प्रोफेसर विवेक कुमार जी ने विद्यार्थियों को इसी प्रकार की अध्ययन पद्धति अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के सफल संचालन में सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों का सहयोग सराहनीय रहा, विशेष रूप से कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल जी का सहयोग और प्रोत्साहन इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण रहा जिनके सहयोग के बिना इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संपन्न हो पाना असंभव था।

Departmental Activities

COMMERCIUM - DEPARTMENT OF COMMERCE

The Department of Commerce of PGDAV College is always abuzz with a plethora of activities and become a dynamic venue where brilliant minds of faculty members and students converge and share their enormous reserves of knowledge and skills. The department organises various activities such as Faculty Development Programs, Workshops and Seminars both for its students and staff. The commerce department jointly with IQAC PGDAV, TLC Ramanujan College & Ministry of HRD organised one-week Faculty Development Programme on "Accounting Standards" from August 06, 2019 to August 12, 2019. The FDP was in collaboration with Indian Accounting Association, NCR Chapter. The resource persons of FDP were CA Sanjiv Singh, CA Gopaljee Aggarwal, Dr.D.S.Rawat, CA (Dr) Pankaj Jain and CA Anil Gupta. The programme focussed on the practical aspects of disclosure requirements in accounting.The erstwhile Finance Cell of Commerce Department organized a talk on "Financial Technology" on 17th September, 2019. The speakers for the session were Mr. Nitish Sarabhai from Accord Fintech Private Limited and Mr. Rishi Taparia from Bajaj Capital Group. The session enlightened the students about the enthralling crossover of finance and technology.

Commercium: The Commerce Department Society

Commerce department society is the largest department society of the college with more than 130 members. The interview for the selection of team was conducted on 30th July, 2019. Student Executive team consists of following nine members:

President: Abhishek Gandhi, Vice President: Aaditya Kumar, Secretary:Radhika Sardana, SonuTewatia, Soumya Lokhande, Joint Secretary:AseemKukreja,Ruchika Singh, Swetank Sharma and Treasurer:Yamini Singh.

Commercium started this year's journey by organising "Freshie Enthusia'19", the official Fresher's Party for the students. Rajat Sood (Stand-up Poemedian as well as a Comedian) and Digital Gandhi(TEDx Speaker) performed for the audience on the event.

The Investiture's Ceremony was organised on 13th September, 2019 and the Executive Team Members were felicitated with badges. The society also celebrated Teacher's Day to acknowledge the efforts put in by the teachers in development of the students. Mr. Kulldeep Singh, Co-founder of "Team India Vidyarthi" was invited as guest for the occasion.

Commercium organized "**YOUTH CONCLAVE 3.0**" on 1st October 2019. The Commercium Team worked hard and tirelessly to not only make it a "**Self-Funded Event"**but also generated surplus resources for their future events**.** The Session speakers were: Raj Shamani (TEDx Speaker& Industrialist), Viraj Ghelani(Content Creator at Filter Copy), Ankush Bhardwaj(First Runner-up of Indian Idol), Rahul Makin(Rj at 9 FM Radio), SuyashJhadav(Indian Para Swimmer). They all inspired students and faculty members

with their success stories, life experiences and challenges.

The society organized various seminars, talks, sessions throughout the year to improve the students' inter personal skills and for their all-round development.

Carrying the same spirit of enthusiasm and success, the society organized its Annual fest, COMMQUEST on7th February 2020. The event was inaugurated by Dr. Mukesh Agarwal, our Principal Sir, esteemed chief guest Mr. Anshuman Tiwari (Editor, India Today, New Delhi) and faculty members of the commerce department.The theme of the fest was "ECONOMIA FLORENZA: Flourishing $5 trillion economy dream", which highlights the dream India wish to achieve and challenges involved in achieving this ambition. Our chief guest addressed the audience by giving some facts & figures on Indian's dream of becoming $5 trillion economy.

The Creative Department of COMMERCIUM did a tremendous job in decorating the college and displaying the theme of the event through creativity. A total of 658 teams participated in 10 enthusiastic events consisting of certificates and prizes upto Rs 2 lakhs. Students from various colleges affiliated to University of Delhi, GGSIPU etc came and competed with each other. The fest had following sub events:

MOCK STOCK: Stock Trading Competition

A total of 30 teams participated and the competition consisted of 3 rounds. The prelims round consisted of a quiz about economy and stocks. 20 teams participated in the second round- Trade War. 15 teams participated in the third round- Trading Arena. The team with the maximum profit was declared as the winner.

CORPORATE ROADIES:

The event witnessed participation from 14 teams and comprised of 4 rounds. The contestants enthusiastically participated in the prelims and the lock and key game which helped them to display their intellectual skills in the quiz and interview round.

BID BOWLED: Bidding Competition

A total of 30 teams came to participate in the auction consisting of 3 rounds. The first round tested their knowledge about the world of cricket while the second and third round required the players to bid for the best players to form their dream team.

GANGSTER VEGAS: Black Marketing

A total of 23 teams participated and the event consisted of 4 rounds. The prelimround was a quiz round. The next 3 rounds were based on dealing of items.

QUIZ FIESTA: Quiz Competition

35 teams took part in this event and played a total of 3 rounds. All the teams put on their thinking caps and actively participated in the Quiz Round, Pounce and Bounce Round and the Buzzer Round which tested their presence of mind and knowledge about commerce.

AD-MAD: Testing the qualities of an astute marketer.

13 teams participated in this event with 3 rounds. After the quiz round, marketing skills of the participants were tested in the 1st round where they showed creativity in the final round by preparing an advertisement.

INTERNATIONAL MONOPOLY: Exchange of foreign currencies

The event witnessed participation from 19 teams and it consisted of 2 rounds. Maximum of 20 items were to be collected as a part of the prelim round.Currency exchange round, on the basis of fluctuations shown by volunteers was the final round.

TREASURE HUNT: Hunting the treasure by collecting a series of clues.

A total of 40 teams participated in this event and played through 2 rounds. The prelims round was Beg, Borrow and Deal and the final round-The Final Destination, which required the participants to solve various riddles and finally reach the treasure box to become the winner.

ESPRIT DE CORPS: Performing tasks which require a blend of team work and presence of mind.

20 teams came to participate in this event comprising of 4 rounds. Each round added a different fun element to the event and tested their coordination &unity. The team which successfully performed all the tasks was declared as the winner.

WAR OF WORDS: Debate Competition

A total of 30 teams debated in this event which was followed by 4 rounds. After the quiz round, the teams debated in favour or against a certain topic and the team with highest marks was declared as the winner.

In the closing ceremony, the faculty members of the commerce department felicitated the winners with certificates, Prize &gift vouchers. The young millennials enjoyed a lot and dispersed with a sincere hope that more such events would be organized in future giving the students a chance to display their talents. The success of the event is attributed to the combined efforts of student Executive team,Event Heads, Volunteers and faculty team including Dr. Shuchi Pahuja (Teacher in charge),Ms. Monika Saini (Convener), Ms. Neerza (Co convener) Dr. Atul Kumar (Co convener), Mrs. Ritu Gupta& Ms. Gitu Nijhawan (Teacher co-ordinators).

Monika Saini

Convener, Commercium (2019-2020)

DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE

Department of Computer Science is one of the main constituents of our college. We envision the holistic development of our students into vibrant professionals having good knowledge, skills and attitude in the field of Computer Science.

To keep abreast in the field of technology by providing competitiveness, and wholesome development, the department keeps on organizing various technical and non-technical activities such as an interactive session was held by ***Dr. Pratibha Tiwari,*** certified NLP master and practitioner, life and success coach, hypnotherapist, career counselor and healer, on the topic ***"How Emotional Balance Can Bring Successful Results in Students Life",*** on 13th September 2019.

On 25th July, 2019 Orientation program was organized to help new students to have a successful time in college by making them aware of rules and regulations and also help them with initial anxiety on joining college.

A ***Paper Presentation Competition*** was successfully carried out on 23rd January, 2019 based on Computer Science and Science in general. The department also conducted a four-hour ***Graphic Designing workshop*** to teach the various features of Adobe Photoshop for designing posters and also held a competition at the end for the same.

Parikalan – The Computer Science society selected its office bearers by organizing presentations and interviews. This year's core team includes Gauri Nagpal as President, Rajanish Sharma as Vice President and Nitish Gupta as Secretary. The Teacher In charge for the session is Dr. Arpita Aggarwal.

Parikalan comprises of five activity clubs: Code Bots, Quiz Bots, Netweavers, E.W.S. (Elocutions, Workshops, and Seminars) and Projects. The society organized Fresher's Party on 19th August, 2019 to give a heartwarming welcome to the juniors. The E.W.S. Club conducted ***seven weekly huddles,*** carried out by a spectrum of speakers, like ***Gauri Nagpal*** spoke on ***"How to manage your studies along with college societies", Dr. Charu Puri*** on ***"Role of Mathematics in Computer Science". Krishna Khushlani*** expressed his views on ***"Never Underestimate Yourself", Dr. Veenu Bhasin*** on ***"How to deliver a Presentation".*** An online discussion on ***"Shadow IT"*** on facebook page of Parikalan was conducted along with a tech based ***"JAM (Just a Minute) competition"*** on 5th September, 2019.

Quizbots arranged an interactive session where three speakers Ankit Kumar, Himanshu Tiwari and Ansh Rastogi shared their knowledge on the topics, ***"Augmented and Virtual Reality", "Science Behind Chandrayan-2"*** and ***"Dark Web".***

Projects Club has been working on an ***Arduino*** controlled car that avoids obstacles. Coding club has conducted many learning programs and online competitions in different programming languages for students. Net-Weavers team is developing a website on a "Fan theory and reviews" where fans get a chance to describe their views on their favourite movies and artists.

The results of our efforts become visible when our students win competitions at intercollege level. ***Himanshu Tiwari*** of BSc (H) CS, 1st year secured 3rd position in Brand Lens Competition at IMS Ghaziabad. ***Vishal Kumar*** of BSc (H) CS, 2nd year participated in Coding and Sudoku competitions at IINTM. ***Himanshu, Yamini*** and ***Nishtha*** secured 2nd position in Quiz-O-Brainia at Hansraj College. ***Kartikeya***, BSc (H) CS, 3rd year secured 2nd position at ARSD College in the HackDCode Competition. ***Tarun Chawla***, BSc(H) CS, 2nd year got 2nd position in TechSudoku in IINTM. ***Ansh*** and ***Nishtha*** secured a 2nd position in a quiz competition in Aryabhatta College.

Like every other year we are going to organize ***XENIUM – The Annual Technical Fest of P.G.D.A.V. College.*** It is the plethora of technical events such as Technical Quiz, Coding, E-Tambola etc. that promote the technical acumen and knowledge among the students. Students across different colleges of University of Delhi and other universities participate in the events of the fest.

ECONOMICS DEPARTMENT REPORT- ECOLOBRIUM

The Ecolibrium

Economics Society of PGDAV College, University of Delhi

Ecolibrium, the Economics Society of PGDAV College organizes various academic and non-academic activities outside the classroom with a dual purpose of involving students with real-life economic issues and providing them a platform for personality development.

FRESHERS

On 20th August 2019, a Freshers' Welcome Day was organised by the society.

The day was filled with joy music and happiness. The day began with lamp lighting by all the dignitaries and was followed by the Principal's welcome address. A delightful and high spirited speech was given by Dr Ashwani Mahajan Sir.

The event was filled with singing and dancing performances. The event ended with presenting titles of Mr. Fresher and Ms.Fresher and a vote of thanks was given by the second and third year students.

The event was a beautiful and warm way to kick start the academic year for the students.

ECONQUEST

Ecolibrium – the economics society of Pgdav College organised an unconventional debate forum on 4th of February which was a great success. The Agenda before the house was Unemployment and the road ahead. The participants were given different allotments by us and according to the allotments they were divided into two blocks, the first block represented the government officials while the other the block represented the citizens of various states and the different stakeholders of the entire population of the country. The idea behind the distribution was to bring the opinions of the civil society and the government together and find the middle ground. The discussion drew many innovative opinions and solutions which benefitted both audience and the participants.

Newsletter

Ecolibrium is an economics newsletter published annually by the economics department of PGDAV College. It covers a wide range of topics related to the field of economics. It includes articles from eager writers and researchers from various colleges. Every year we select a number of relevant topics and ask students to send in entries on the same. This year, our focus was on topics related to the current economic scenario. We got rather interesting entries. Our team has now decided to include more articles than before and thus making our newsletter very engaging. The growth of our team of editors has been extraordinary. Being fresher, the concept of editing and researching was very new to many. The process of learning the skill was really enriching for them as they learned a lot about the subject as well. The newsletter has been existing for more than 3 years now and has been a huge success. We are planning to make it even bigger and better this year.

Fest

Ecolibrium, the Economic Society of PGDAV will organise its Annual Cultural Festival- Ecoligence'20 on the 31st of March 2020. The event will host a huge number of participants who will take part in a variety of five different events. The events that are going to take place are Mock Stock, case study, IPL Auction, quiz and a debate competition. We have also invited a very well celebrated personality, Mr. Sanjeev Sanyal, the Principal Economic Advisor for the Indian Government as well as co chair of the Framework of Working Group of the G-20 as the chief guests. The fest is going to be an amalgamation of academic and creative events which will result in students challenging themselves to think out of the box and bring out innovative opinions for all those present. To conclude, the society is working very hard to make the year in addition to the fest a huge success for the department, participants and for the college.

Team Ecolibrium

President - Apoorva Nautiyal
Vice President- Ishaq Aman
Vice President- Tanya Yadav
Secretary- Avantika Chauhan
Secretary- Arpita katiyar
Joint Secretary- Ayushi Gupta
Marketing Head- Gaurang Gera
Marketing Head- Manisha Gupta
Treasurer- Raghav Arora
Senior Technical Head- MD Ayaz
Technical Head- Arvind Chipa
Newsletter Team
Editor-in-chief - Shriya Duggal
Junior Editor- Harsh Ajay
Junior Editor- Mallika Arora

ECLECTICA- THE ENGLISH LITERARY SOCIETY

Annual Report 2019-20

Eclectica is the English Department Society of PGDAV College. We boast of being a very vibrant and creative society, with writers, poets, and creators from both the English faculty and the students, coming together as a team. We organise yearly inter and intra college events like poetry and creative writing competitions, paper presentations, movie screenings, debates and discussions, on a plethora of topics related to literature and society. Eclectica organised the first International Conference on Women in Delhi University circuit, where renowned national and international scholars, along with students engaged in paper readings and open sessions.

Year 2019-20 was cumulative of several interesting events that brought together a lot of creativity and led to the formation of a lot of significant interpersonal relationships.

The core came into being on 10th August,2019 and immediately after on 11th August, the official instagram page of Eclectica was launched.The core consisted of 7 members and two faculty teachers.

The first Eclectica event of the year was the fresher's programme thrown for the first year students on 20th August. We had 'Bohemian' as our theme. We conducted a talent hunt followed by a literary quiz. A few performances by the seniors were also a part of the programme. Two first years were chosen as the Mr. and Ms. Fresher's. The same day we also launched our official Eclectica logo.

On 25th August, 2019, Eclectica's official blog was launched on WordPress for all the literary enthusiasts of our department. The blog has been publishing fiction,non-fiction and poetry pieces submitted by students from all three batches of the department.

The next major Eclectica event was held on 30th of September. The Eclectica annual poetry and slam composition with self composed poetry from students within the college. The judges for the event were Aashna Bhargava, an alumni of the college and the ex-coordinator of the poetry and creative writing society of the college, Qaafiya and Simran Singh, a prominent performer and judge in the Delhi poetry circuit. There were two winners each from the poetry and the slam competition.

On the same day, we also had the BYOB event where people could exchange one book for the other at no cost, open to everyone in the college.

We also got the department merchandise which was a t-shirt in the colour purple representing royalty, nobility, ambition and the eye to appreciate all good things in life with the pun, "Donne do drugs Keats".

On 17th October, 2019, Eclectica held a talk show with Ms. Devapriya Roy, a successful, popular author known for her books, "Friends from College", "Indira" and "The Heat and Dust Project". The talk was called "The writing life: A Conversation".

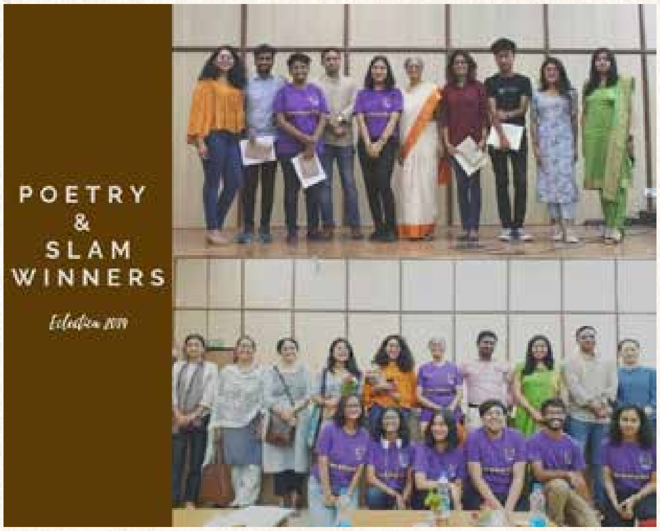

the future batches will continue in this endeavor and work towards making Eclectica an even more inclusive and representative literary space.

Our team of this year consists of the following members:

President - Sara Haque (3rd Year)
Vice President - Bhavya Sinha (3rd Year)
Secretary - Kartikey Malviya (2nd Year)
Joint Secretary - Vrinda Parwal(1st Year)
Treasurer - Harshita Singh (3rd Year)
Technical Head - Kartik Gupta (3rd Year)
Creative Head - Pragati Kathuria (3rd Year)

Department advisors - Dr. Vandana Agarwal (Convener) and Mr. Nitin Kumar

The talk attracted a total of almost 100 students and all the faculty teachers of the department.

The final Eclectica event of the session 2019-20 was held on 11th February,2020. We held a screening of Gurinder Chada's, "Bride and Prejudice". It was followed by a discussion by Ms. Urvashi Sabu, in which the teachers and students both participated and outlined certain key features of the movie from it's identity crisis and stereotyped representations of different cultures, to the fidelity discourse with Austen's Pride and Prejudice.

With that, we concluded a very successful and productive academic year with Eclectica. We hope that

DEPARTMENT OF ENVIRONMENTAL SCIENCE - GEO-CRUSADERS

The mission of Geo-Crusaders; The Environmental Society, is to create awareness and motivate students towards the conservation of environment and sustainable utilization of natural resources.

The major activities conducted by Geo-Crusaders in the year 2019-20 were-

➢ The society celebrated World Ozone Day on 16 September, 2019, where an awareness march was conducted in the college campus, raising slogans for the Preservation of the Ozone Layer and its importance for the living beings.

➢ The society celebrated Wildlife Week 2019 in first week of October, to arouse the general awakening among the students towards the protection and conservation of wildlife.

➢ The society showcased some short movies and lectures on environment and water crisis and their management.

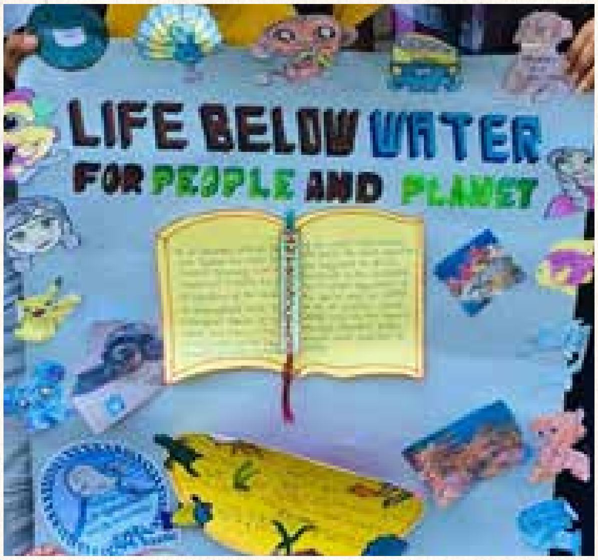

- The society also organized several cleanliness drives in and around the college campus during the current academic year.

- A Field visit was organized to Yamuna Biodiversity Park on 4th February 2019, to raise the awareness of biodiversity and importance of the biodiversity parks.

- The society celebrated World Wetlands Day, on 6th February, 2019 to spread the knowledge about the water and wetlands. Some competitions were also conducted by the society on the theme of Wetlands i.e. essay writing competition, poster making competition and Quiz on wetlands.

'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा

वार्षिक रिपोर्ट, 2019-2020

7 अगस्त, 2019 को हिन्दी विभाग की **'चिंतन'** समित की कार्यकारिणी का गठन किया गया। समिति के परामर्शदाता हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ० मनोज कुमार कैन हैं। समिति में निम्नलिखित पदाधिकारी हैं :-

(1) अर्पित शाक्य - **अध्यक्ष**
(2) आकाश, अमीना - **उपाध्यक्ष**
(3) शशि - **सचिव**
(4) आँचल - **सह-सचिव**

19 अगस्त, 2019 को समिति द्वारा प्रथम वर्ष के नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। प्राचार्य डॉ० मुकेश अग्रवाल जी ने अपने वक्तव्य में सभी छात्रों शुभकामनाएं दी एवं नवागंतुक छात्रों का स्वागत किया तत्पश्चात डॉ. अवनिजेश अवस्थी और डॉ. कृष्णा शर्मा ने सभी छात्रों को सफलता के मार्ग पर चलने और भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन 'चिंतन' साहित्य समिति के परामर्शदाता डॉ. मनोज कुमार कैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन आकाश नारायण और शशि द्वारा किया गया।

19 सितंबर, 2019 को 'चिंतन' द्वारा निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अनेक विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। नामदेव, अमरजीत, मनीषा ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए।

06 फरवरी, 2020 को 'चिंतन द्वारा 'मध्यकालीन संतों की देन' शीर्षक पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई थी। संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता 'हिन्दुस्तान अकादमी प्रयागराज' के अध्यक्ष प्रो. उदय प्रताप सिंह थे। संगोष्ठी का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। हमारे महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ० कृष्णा शर्मा द्वारा प्रो. उदय प्रताप सिंह का परिचय दिया गया।

तत्पश्चात् संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो. उदय प्रताप सिंह ने बताया कि हिन्दी साहित्य के सभी कालों में भक्तिकाल ही मात्र ऐसा एक काल है जो व्यक्ति को भौतिकता से दूर नैतिकता की ओर बढ़ने का उपदेश देता है। भक्तिकाल में शुरू हुआ भक्ति आंदोलन एक आंदोलन न होकर धर्म और संस्कृति का प्रस्थान बिंदु था। प्रो. उदय प्रताप ने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए मध्यकालीन संतों की प्रासंगिकता समझाते हुए कहा कि संत साहित्य हमें सनातन धर्म की ओर ले जाता है, हमारे आदर्शों को याद दिलाता है। संत साहित्य असमानता को नष्ट कर स्वस्थ सुंदर समाज बनाने, समरसता, एकता भाव को पैदा करने का उपदेश देता हैं। यही कारण है कि आज भी मध्यकालीन संतो की साधना की बात की जाती है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्णा शर्मा जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल जी ने किया।

DHAROHAR – THE HISTORY SOCIETY

INTRA-COLLEGE PAPER PRESENTATION COMPETITION

Dharohar- The History Society organized its first academic event of this year, a Paper Presentation Competition that was held on 24th September 2019.

The competition, anchored by Trisha and Shubham, began with a general introduction of the topics for the paper presentation. It was followed by the introduction of the learned judges; Dr. Pinki Punia from the Political Science Department and Dr. Kapil Nishad from the Hindi Department. The competition commenced with the presentation by Salim; B.A. Programme, 3rd Year, on the topic 'History is not Past and Past is not History'. The papers on the same thoroughly explained the paradoxes between the two; 'History' and 'Past'.

The other two topics covered in the papers were 'Cinematic Representation of History' and 'Monuments and their Multiple Narratives'. Papers presented on the former focused on bringing out the specific themes that have been used in the Hindi Cinema to reflect or depict the society and it's realities. The papers on the latter,i.e.; 'Monuments and their multiple narratives' elaborated the various facets of monuments in particular contexts and also unraveled many unheard and interesting narratives about the mega marvels of the past. The listeners buzzed with curiosity and numerous important questions were raised by the audience.

The final presentation by Prateek was then followed by the enlightening and intriguing sum up of the papers by Dr.Kapil Nishad. Dr. Nishad explained the inter-dependence between 'History' and 'Past' by equating these two with one's left and right foot. He gave an insight into the complexities of cinema and his experiences of a famous monument he once visited and narrated the legends associated with it. Dr. Punia appreciated the History Department for effectively organizing the competition and for ensuring diverse participation. She then announced the results of the competition and applauded the winners for their thorough research and efficacious presentation as well as the participants for their hard work and commitment.

The first prize went to Amarjeet Verma; B.A. Programme, 3rd year. Neeshu; B.A. Programme, 3rd year secured the second position and was followed by Rabia, B.A.(H) History, 3rd year, who got the third highest score. The winners were awarded with cash prizes and certificates. Sonal Verma, the Vice-President of 'Dharohar' concluded the even with the 'vote of thanks'.

The event was highly successful and one to remember.

INTRA – COLLEGE DEBATE COMPETITION

"You can sway a thousand men by appealing to their prejudices quicker than you can convince one man by logic."

Dharohar- The History Society has set the benchmark for conducting activities in such a way that the students not only enjoy but also enrich their intellect from it. With the same perspective in view, 'Dharohar' organized an Intra-College Debate Competition on 7th November 2019.

The competition, anchored by Anchal, began with a brief introduction of the topic for the debate. It was followed by the introduction of the accomplished and learned judges; Prof. Mukesh Bairva from the English Department and Prof. Priyanka Chanana from the History Department.

With the topic chosen for the debate competition being 'Are Culture and Modernity one and the same?', 15 participants from various courses contended for establishing their viewpoints for or against the motion. All the competitors were well-prepared as they used various skills like overstatement, definition, rhetoric, irony etc. to persuade the audience. The participants exhibited great oratorical skills before the audience and the eminent jury members. The competitors left no chance to debacle their opponents and came up with sharp interjections in between the debate. The audience also praised the unique 'fun-debate segment' organized by Drishti and Shubham.

At the end of the tempestuous but enthralling debate, Prof. Mukesh Bairva gave a conclusive summary of the various viewpoints put forth by the debaters. Prof. Mukesh explained how mutually exclusive yet similar 'culture' and 'modernity' are to one another. Prof. Priyanka appreciated the History Department for cogently organizing the debate competition and ensuring commendable participation from various courses. She then announced the results of the competition and congratulated the winners and also applauded other participant for their tremendous hard work.

The first prize went to Anubhav Tekwani; B.A.(H) English, 3rd year. Pushkar Pandey; B.A.(H) Political Science, 3rd year secured the second position and was followed by Prateek Kumar, B.A.(H) History, 3rd year, who got the third-highest score. The winners were awarded with cash prizes and certificates. Other participants were also provided with food coupons. Sonal Verma, the Vice-President of 'Dharohar' concluded the competition with the 'votes of thanks'.

The event was remarkably outstanding and unforgettable.

MATHS DEPARTMENT REPORT- ANANT

Department of Mathematics, PGDAV College, University of Delhi organized a "National Conference on Advances in Mathematical Analysis and its Applications (NCAMAA-2019)", during November 8- 10, 2019 .

In this conference: more than 100 participants participated & 25 lectures delivered.

SANKHYAKI - STATISTICS DEPARTMENT REPORT

"Sankhyiki" the Statistics Department Society, organizes departmental festival 'Skewsion' every year. It is an amalgamation of academia and some exciting events. This year we have organized the paper presentation event for 'Young Researchers Forum'. Dr. Anish Sarkar, an eminent scholar from ISI, Delhi is coming to deliver a lecture in our departmental festival. We have also planned a plethora of fun filled activities and events like Stat-wars, Code-o-fiesta, Fun game booth, Bamboozled, De-moivre's mystery etc. for this year's festival.

DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION AND SPORTS SCIENCES

REPORT 2019-2020

The department's first major activity for the year 2019-2020 commenced with the selection trials in Volleyball for admission to various colleges of Delhi University under Sports Quota. The Sri Kalkaji Temple run, the official commencement of sports for the year was held on 29th July 2019. With that the practice sessions in different sports and games started.

On 17th august 2019, the third edition of the PGDAV College Diamond Jubilee Commemoration Volleyball Tournament was inaugurated by Dr. Mukesh Aggarwal, Principal of the college. A total of 22 teams, combining both men and women sections, participated in the tournament.

During the year the college organized several tournaments in association with outside agencies for school and college students.

Due to the unprecedented conditions caused by Covid 19, the Annual Sports Day was not celebrated this year.

The following are the achievement of the college for the year 2019-2020.

List of Achievement in the year 2019-20.

S.NO	NAME	GAME	LEVEL	ACHIEVEMENT
1.	Preeti Kumari	Athletics	1. Delhi State Championship- 800m 2. LSR Inter College Sports Fest – 800m 3. LSR Inter College Sports Fest – Discuss throw	Bronze Silver Bronze
2.	Kajal	Athletics	1. LSR Inter College Sports Fest – Long Jump 2. LSR Inter College Sports Fest – 100m 3. Delhi State U18 Championship- long Jump 4. North Zone Inter college Championship, Punjab - Long Jump	Gold Bronze Silver Bronze
3.	Kashish Kumar Sharma	Athletics	1. Asian Bossiness School Inter college Sports fest- Athleema 2. LSR Inter College Sports Fest – 100m	Gold Gold
4.	Ajay Rathod	Athletics	Indraprastha Inter College Marathon- 8KM	Silver
5.	Randeep	BOXING	1. 48th Youth Men Boxing Championship, Haryana 2. Open National Boxing Championship, Haryana 3. 41th Elite Men State Boxing Championship, Delhi 4. Delhi University Inter- College Boxing Championship	GOLD GOLD Silver Silver
6.	Shivam Pawar	Boxing	1. Delhi University Inter- College Boxing Championship 2. Delhi State Boxing Championship 3. National Boxing Championship 4. Khelo India Youth Games	Silver Gold Bronze Bronze
7.	Kunwar Bidhuri	Cricket	Domestic first-class cricket championship	Ranji Trophy Delhi State
	Prince Choudhary	Cricket	1. Men's U23 One Day Trophy 2. North Zone Inter- University Championship 3. All India University Championship	U23 Delhi State Delhi University Vizzy trophy
	Yogesh Sharma	Cricket	Men's U23 One Day Trophy	U23 Delhi State
	Dhruv Ghai	Cricket	Men's U23 One Day Trophy	U23 Delhi State
	Aditya Sharma	Cricket	Men's U23 One Day Trophy	U19 UP State
	Aman Bhati	Football	North Zone Inter- University Championship	Delhi University
	Roshan singh Chauhan	Football	North Zone Inter- University Championship	Delhi University
	Karan Yadav	Football	North Zone Inter- University Championship	Delhi University

S.NO	NAME	GAME	LEVEL	ACHIEVEMENT
	Kartik Bisht	Football	North Zone Inter- University Championship	Delhi University
	Paramveer Singh	Football	1. I League football Championship 2. Inter FCI Tournament	2nd Division Team Gold
	Kashish	Handball	6th Student Olympic National Games	Gold
	Jai Singh	Taekwondo	1. Delhi state Teakwondo Championship 2. Delhi University Inter College Championship	Silver Bronze
	Shriyansh Tater	Taekwondo	Delhi University Inter College Championship	Silver
	Chinmay	Taekwondo	Delhi University Inter College Championship	Silver
	Sagar	Taekwondo	Delhi University Inter College Championship	Silver
	Shagun	Taekwondo	Delhi University Inter College Championship	Bronze
	Nazreen	Taekwondo	1. Delhi State Taekwondo Championship- Poomsae Team 2. Delhi State Taekwondo Championship- Poomsae Pair 3. Delhi State Taekwondo Championship	Gold Gold Bronze
	Deepak Sangwan	Volleyball	1. North Zone Inter- University Championship 2. Asian Business School Inter college Sports fest- Athleema- **Shotput** 3. LSR Inter College Sports Fest- **Shotput**	Delhi University Silver Silver
	Hemant Kumar	Volleyball	Delhi Youth State Volleyball Championship	Gold
	Nisha Joshi	Volleyball	EBSB National Camp, NCC	Gold
	Hans Chaprana	Wrestling	1. Delhi University Inter College Championship 2. All India Inter – University Championship 3. District Championship, Faidabad 4. Delhi State Wrestling Championship	Gold Delhi University Gold Silver
	Muskan	Yoga	1. Delhi State Yoga Championship 2. National Yoga Championship- Rthymic 3. National Yoga Championship- Individual 4. Inter College Annual fest Kalindi College	Gold Gold Silver Silver
	Ashu Gupta		1. Delhi State Yoga Championship 2. National Yoga Championship- Rthymic 3. National Yoga Championship- Individual 4. Inter College Annual fest Kalindi College	Gold Gold Silver Silver
	Munni	Yoga	1. Delhi State Yoga Championship 2. National Yoga Championship- Rthymic 3. National Yoga Championship- Individual 4. National Yoga Championship Arya Samaj	Gold Gold Bronze Silver
	Cricket Team		1. Inter College League, Noida 2. Asian Business School Inter college Sports fest- Athleema 3. Inter College League RED BULL	Winner Winner Runner Up
	Football		1. Asian Business School Inter college Sports fest- Athleema 2. Delhi University Intercollege Championship	Winner Runner Up
	Volleyball(W)		1. Asian Bossiness School Inter college Sports fest- Athleema 2. NDIM Inter College Sports Fest 3. IMS Engineering College Sports Fest- Chakravyuh 4. LSR Inter College Sports Fest	Runner Up Runner Up Runner Up 2nd Runner Up
	Volleyball(M)		1. Asian Bossiness School Inter college Sports fest- Athleema 2. NDIM Inter College Sports Fest 3. LSR Inter College Sports Fest	Winner Winner Runner Up

SAMVAAD - POLITICAL SCIENCE DEPARTMENT

REPORT: DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE (2019-20)

'Samvaad', the Political Science Society opened the 2019-20 session with an inspiring and useful lecture on '**Transition of Indian Bureaucracy from Steel Frame to Babudom'** by **Ms Saandhay Deep Das, IRAS** and former Advisor and Chief Accounts Officer with Indian Railways, on 5th September, that also is celebrated as Teachers Day . After the lecture and the Q and A session the students felicitated the teachers of the department with tokens of their love and songs. The freshers' party held on 20th September was combined with a talk on **'career choices for students'**. On 1st October a **cleanliness drive** was held as part of Swachh Bharat campaign at Vinoba Puri followed by a lecture on the theme **'Gandhi as a Journalist'** by Dr Kusum Lata Chadda. Weekly discussions featured discussions on the **Citizenship Amendment Act and the Abrogation of Article 370** where all aspects of the Acts were discussed. An educative-cum-awareness program was the next event held on the occasion of the Republic Day.

AWAM-E-AAWAZ, the inter-college annual festival of the Department was organized on the theme of **'Pillars of Democracy'** with the keynote address by Sh. **Sudhanshu Ranjan, a senior journalist with DD News and a columnist.** The address was followed by quiz on **'Know Your Cosntitution'**, debate on '**Populism Wins Elections'** and novel contest on **TRP in Media.**

'Samvaad' also **Daily Samvaad Magazine** that aims at spreading awareness on topical themes along with putting up a **display board outside department room with important news clippings** Our ex-students have once again made us proud with Gaurav Verma qualifying for the legal profession and Shreyas joining the prestigious Azim Premji University.

An excursion to Jaisalmer was organized in the month of October and another educational trip to witness the Parliament session is in the pipeline.

The faculty complemented these achievements with the publication of two books, *Political Process in Contemporary India* and *Constitutional Government and Democracy in India* co-authored by Dr. Abhay Prasad Singh. Dr Yuvraj Kumar's 'Bharatiya Dalit Chintak' book is new addition to his already numerous publications.

संस्कृत–समवाय

संस्कृत–समवाय पीजीडीएवी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की अकादमिक परिषद् है, जिसके तत्वावधान में 20 सितंबर 2019 को वेद व्याख्यान मञ्जरी श्रृंखला के अंतर्गत नाट्यशास्त्र की वेदमूलकता विषय पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। इस व्याख्यान में दिल्ली विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मीरा द्विवेदी ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि आचार्य धनञ्जय ने दशरूपक में कहा है– 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्'। अर्थात् अवस्थाओं का अनुकरण ही नाटक है। उन्होंने कहा कि नाट्यशास्त्र को पञ्चम वेद भी कहा जाता है। एक कथा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि सभी देवता भगवान इन्द्र के नेतृत्व में ब्रह्मा जी के पास गए और उनसे निवेदन किया कि मनोरंजन के लिए कोई व्यवस्था कीजिए तो ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य सामग्री, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से संगीत और अथर्ववेद से रस को लेकर नाट्यशास्त्र नामक पञ्चम वेद की रचना की और मृत्युलोक में प्रचार–प्रसार के लिए आचार्य भरत को प्रभारी बना दिया। संस्कृत नाट्यशास्त्र में वस्तु (कथा), नेता (नायक) तथा रस नाटक के प्रधान तत्व माने गए हैं। छात्रों को समझाते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत नाटक की कथावस्तु ऐतिहासिक या पौराणिक ही होगी, काल्पनिक नहीं।

इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने कहा कि हम सब का सौभाग्य है कि डॉ. मीरा द्विवेदी मैम हमारे आग्रह पर महाविद्यालय में आयीं और नाट्यशास्त्र जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अपना व्याख्यान दिया। अतिथि एवं मुख्य वक्ता डॉ. मीरा द्विवेदी का स्वागत करते हुए संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. दिलीप कुमार झा ने कहा कि मैम का नाट्यशास्त्र पर बहुत ही गंभीर अध्ययन है। पिछले वर्ष नाट्यशास्त्र पर एक प्रसिद्ध और लोकप्रिय पुस्तक 'संस्कृत नाट्य : अभिनय एवं पटकथा लेखन' नाम से प्रकाशित हुई है, जो छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है और आज के व्याख्यान से भी छात्र अत्यधिक लाभान्वित हुए होंगे ऐसी आशा करता हूँ।

संस्कृत विभाग द्वारा संस्कृत–समवाय के तत्वावधान में 27 फरवरी 2020 को संस्कृत गद्यवाचन, पद्यगायन एवं प्रश्नमञ्च प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बी.ए. ऑनर्स एवं बी.ए. प्रोग्राम के छात्रों के साथ–साथ अन्य विभागों के छात्रों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन मंगलाचरण से हुआ, जिसको सौरभ और पीयूष ने किया। तदुपरान्त संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. दिलीप कुमार झा ने कहा कि इस तरह के प्रतियोगिता से विषय को समझने में सहूलियत होती है। गद्यवाचन से उच्चारण में शुद्धता आती है और भविष्य में प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से भी संस्कृत साहित्य में प्रश्नमञ्च प्रतियोगिता उपयोगी होगी। इस अवसर पर विभाग के अध्यक्ष डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने कहा कि मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि इतने सारे छात्रों ने इसमें भाग लिया। बी. ए. प्रोग्राम के छात्रों के प्रदर्शन से मैं अत्यधिक प्रसन्न हूँ। कई छात्रों के प्रदर्शन ने मुझे चौंकाया भी, मैं उनको शुभकामनाएँ देता हूँ, तथा यह भी कहता हूँ कि दो श्लोक या दो गद्यांश का पाठ नियमित रूप से करें और अगर कहीं कोई असुविधा हो तो अपने शिक्षकों से सहयोग भी ले सकते हैं।

DEPARTMENTAL WEBINAR

DEPARTMENT OF ENGLISH

During the lockdown, the Dept of English conducted a webinar on Stress Management, on 14th April, 2020. Guest Speaker was Ms Himanshi Khanna, Visiting Psychologist, PGDAV College. It was attended by students and faculty members of the English Dept. Ms Khanna addressed issues such as depression, low self esteem, mental and emotional abuse, claustrophobia, negative emotions, relationships, time management etc.

DEPARTMENT OF SANSKRIT

संस्कृत विभाग
वेबिनार रिपोर्ट
संस्कृत-समवाय

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की अकादमिक समिति "**संस्कृत-समवाय**" के द्वारा ″**वर्तमान सन्दर्भ में संस्कृत का पठन-पाठन एवं परीक्षा की तैयारी**″ इस विषय पर 28 अप्रैल 2020 को एक वेबिनार आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने कहा कि आज के नए अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य में साइंस टेक्नोलॉजी के माध्यम से ही आगे बढ़ा जा सकता है। हम सबको अपना जीवन समृद्ध बनाने के लिए नए रास्ते बनाने ही पड़ेंगे। कोरोना की त्रासदी के बाद स्थिति ऐसी बनने वाली है जिसमें कमजोर वर्ग कष्ट पाएंगे। विश्वविद्यालय में संस्कृत जैसे विषयों के समक्ष चुनौतियाँ आने वाली है। अब भविष्य की दृष्टि से प्लानिंग करनी पड़ेगी। क्योंकि आने वाली परिस्थितियाँ सुविधा सम्पन्न विभाग के लिए होंगी। समाज और सरकार का ध्यान भाषा, साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में कम होगा, भूमिका संकुचित कर दी जाएगी, इसलिए अपने आप को समाज में कैसे उपयोगी होना है यह सोचना पड़ेगा। संस्कृत में गुरु-शिष्य आमने सामने बैठकर ही अध्ययन अध्यापन करते हैं क्योंकि हमारा शास्त्र टेक्स्ट बेस हैं।

प्रो. भारद्वाज ने आगे कहा कि मार्च में हम सबको अचानक कक्षा बंद करना पड़ा जबकि उस समय पढ़ाई पूरे जोर-शोर से चल रही थी। फिर लॉकडाउन में हम लोगों ने अध्ययन-अध्यापन के लिए ऑनलाइन माध्यम अपनाया। संस्कृत-समवाय द्वारा यह वेबिनार मुख्यरूप से छात्रों के लिए था जिसमें सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया। छात्रों को संबोधित करते हुए प्रो. रमेश भारद्वाज ने कहा कि मैं लॉकडाउन को अच्छा मानता हूँ।शास्त्रों में कहा गया है- **शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।** इसमें शरीर और स्वास्थ्य का ध्यान कर सकते हैं। दिनचर्या को निश्चित कर सकते हैं, स्वाध्याय के माध्यम से पढ़ सकते हैं, अपने प्राध्यापकों से पूछ सकते हैं। हम सबका उद्देश्य ऐसा होना चाहिए कि साइंस टेक्नोलॉजी के माध्यम से समाज को उपकृत करें,क्योंकि उसी शास्त्रों ने हजारों सालों से समाज को एक दृष्टि दी है, परन्तु 70-80 साल से पाश्चात्य विकास मॉडल ने मानवीय सम्बन्धों से लेकर पर्यावरण तक को चुनौती दे रहा था जो कोरोना की विषम परिस्थिति में टूट-टूट कर विखंडित हो रहा है। अब संस्कृत के विद्यार्थियों के पास एक बड़ा अवसर है,जो अपनी परम्परागत ज्ञान से मानवता का मार्गदर्शन कर सकता है।

इस अवसर पर संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने कहा कि साइंस टेक्नोलॉजी के नए युग में आयोजित इस वेबिनार से हमारे छात्र बहुत ज्यादा लाभान्वित हुए हैं, परीक्षा को लेकर छात्रों के मन में बहुत ज्यादा शंका थी जिसका समाधान आज सर ने कर दिया है। इस वेबिनार का समापन धन्यवाद ज्ञापन से हुआ जो कि संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. दिलीप कुमार झा ने किया। डॉ. दिलीप झा ने कहा कि भारद्वाज सर का बहुत बहुत आभार जिन्होंने हमारे छात्रों को जूम एप के माध्यम से मार्गदर्शन एवं शंका समाधान किया। संस्कृत का विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यमों का ज्यादा अभ्यस्त नहीं है लेकिन यह माध्यम समय की जरूरत है। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के सभी प्राध्यापक उपस्थित थे।

DEPARTMENT OF STATISTICS

Department of Statistics organized a webinar on 'Statistical Data Analysis: From Heuristics to Analytics 'on 15 April,2020 .The webinar was conducted by Dr. Debasree Goswami, Associate Professor, Department Of Statistics , Hindu College ,University of Delhi. He gave a very informative lecture on Big data and various statistical methods used for handling such data. It was a very interactive session with nearly 60 participants including our faculty members and students of B.Sc (H) Statistics. The session was highly appreciated .We owe the success of our webinar to Principal sir and all the participants.

LIBRARY: PGDAV COLLEGE

PGDAV College library has a very rich collection of more than one lac books on various subjects and disciplines. It subscribes around 70 periodicals and 19 newspaper for the knowledge and reading pleasure of students and faculty alike. We aim to provide comfortable and peaceful reading ambience that facilitates students to enhance their concentration while studying for long hours. Thus the library is fully computerised, air-conditioned and Wi-Fi enabled with High Tech CCTV surveillance to ensure conducive and pleasurable reading environment. Library provides free access to both conventional as well as electronic resources like N LIST and Delhi University Library system e resources to its registered users.

College Library extends support to needy students through book bank facility. Needy and meritorious students can borrow books for the entire semester related to their course.

Library serves its differently abled students through various assistive devices and technology. We have a dedicated lab for accessing Braille library resources, Sugamya Pustakalaya and reading & recording of other resources for visually impaired students. Students are supported for learning and reading through various softwares like JAWS and devices like ANGEL DAISY Reader, MP3 recorder, Net books, Zoom X Instant Text Reader, Lex Portable Camera etc.

ACADEMIC ACHIEVEMENTS OF FACULTY MEMBERS

DEPARTMENT OF COMMERCE

Dr. Shashi Nanda

She has been awarded Ph.D. Degree titled, "THE IMPERATIVE OF SERVICE QUALITY DIMENSIONS ON CUSTOMER SATISFACTION: A COMPARATIVE STUDY OF FULL SERVICE RESTU ARANTS AND QUICK SERVICE RESTAURANTS" at the convocation held at Amity University, Sector 125, Noida.

Ms. Renu Jonwall

- Attended three-month PRCN Course at Officers Training Academy, Gwalior and completed it with "A" grade and was commissioned as Associate NCC officer with a rank of Lieutenant.
- Participated in Asian Waterbird Census 2020 in the month of January.

Dr. Mussarat Ahmad

He was awarded Ph.D. in the academic session 2019-2020 on the topic "Determinants and effects of Innovation in hotels of Kashmir Valley" from the University of Pondicherry.

Dr. Akanksha Jain

She was awarded Ph.D. in the academic session 2019-2020 on the topic "Attrition in the Indian BPO sector: Analytical framework based on Herzberg's Two-Factor Theory".

Ms. Khushboo Aggarwal

- Participated and presented a paper titled "**Growth and Unemployment Scenario in India: An Econometric Analysis**" in International Conference on "**Management Imperatives for Sustainable Growth-Transformation through Technology**" organized by ICFAI BUSINESS SCHOOL, GURGAON on 24th August, 2019.
- Participated and presented a paper titled "**Day of the Week Effect in BRICS Stock Markets**" in the International Conference on "**Recent Advances and Challenges in Finance and Marketing for New India @2022**" organized by Department of Commerce, Mata Sundri College for Women, University of Delhi on 6th -7th September, 2019.
- Presented a paper titled "**Calendar Anomalies in Indian Stock Market**" and participated as a discussant too in the **World Finance & Banking Symposium** held on 19-21 December, 2019 in New Delhi, India.

Ms. Ritu Gupta

Publication:

Title: **"The impact of anthropomorphism on purchase intention of smartphones: A study of young Indian consumers"**

Author: Ritu Gupta & Kokil Jain
Journal: Indian journal of marketing (scopus)
May 2019, volume 49 issue 5.

DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE

Ms. Purnima Khurana

Publications:

The following paper was published in the conference proceedings and was presented at the conference:

Bedi, P., Khurana, P. (2020). Sentiment Analysis Using Fuzzy-Deep Learning. In Proceedings of ICETIT 2019 (pp. 246-257). Springer, Cham.

DEPARTMENT OF ECONOMICS

Dr. Varun Bhushan

Publications:

Published paper titled "Can India Capitalize the benefits of Demographic Dividend? in Indore Management Journal (IMJ) in Vol. 11 Issue 2 (July- December 2019).

Published paper titled "Demographic Dividend in India: A State Level Analysis in the book titled Business, Economics & Sustainable Development by Prof. Manipadma Datta (Bloomsbury publication).

Published paper titled "Impact Analysis of the SHG Bank Linkage model on empowerment of women in Dehradun" in Arthshastra Indian Journal of Economics and Research Volume-8, Issue number 3, (Bi-monthly), May-June, 2019.

Papers presented

Had participated as a Delegate and presented four research papers

- Was awarded with Best Paper Award for the paper titled "Quantifying the Demographic Dividend in India: A State Level Analysis of Health, Education and Employment" presented in the Conference on Emerging Trends in Management Practices 2019, organized by Rukmini Devi Institute of Advanced Studies. *(The research paper got published in the conference proceedings.)*
- Presented a research paper titled "Demographic Dividend in India: Opportunities and Challenges in the International Conference on Business and Management, Delhi School of Management, Delhi Technological University held on 29-30 March, 2019.
- Presented a paper titled "CAN INDIA CAPITALIZE THE BENEFITS OF DEMOGRAPHIC DIVIDEND?" at 10th Conference on Excellence in Research and Education (CERE 2019) held at Indian Institute of Management Indore from May 03-05, 2019.
- Presented a paper titled "THE YOUTH DEMOGRAPHIC DIVIDEND IN INDIA: OPPORTUNITIES AND CHALLENGES" in the 7th PAN IIM WORLD MANAGEMENT CONFERENCE held by IIM Rohtak during December 12-14, 2019.

Ph.D. awarded

He was awarded Ph.D. in Economics on the thesis titled 'Demographic Dividend in India: Regional Variations' from IGNOU New Delhi.

DEPARTMENT OF ENGLISH

Dr. Urvashi Sabu

Publications:

Full length book **Women, Literature, and Society; Discovering Pakistani Women Poets**: Rawat Publications, Jaipur, 2020

Resource Person at workshop on **Shakespeare and Cinema,** organized by Sophia Girls College (Autonomous), Ajmer Rajasthan, August 2019

Dr. Mukesh Kumar Bairva

- He was awarded Ph.D. degree in November 2019, for the thesis titled as "Dalit Discourse in Modern Indian Literature: Reading the Dalit Novel as Counter-Discourse", from the Department of English, University of Delhi.
- Participated as a panelist in an International Webinar on "Idea of Care and Civil Society in Ambedkarian Discourse" organized by Vivekananda College on May 8, 2020, University of Delhi.
- Completed Two–Week FDP on "Managing Online Classes and Co-Creating Moocs" from April 20- May 06, 2020, conducted by Ramanujan College, University of Delhi

Department of Environmental Science

Dr. Pardeep Singh

A. Edited Books

1. Pardeep Singh, Ajay Kumar, Anwesha Borthakur (Ed) (2019). "Abatement of Environmental Pollutants" Trends and Strategies, 1st Edition UK: Elsevier. ISBN: 9780128180952
2. Pardeep Singh, Anwesha Borthakur Dhanesh Tiwari Pradeep Kumar Mishra (Ed) (2019). "Nano-Materials as Photocatalysts for Degradation of Environmental Pollutants", UK Elsevier ISBN: 9780128185988

B. Presentations to peer-reviewed, internationally established conferences,

1. Title of the paper: "The Pre-mature Demise of the Smartphones and Its Implications in the Electronic Waste Menace" Presented at Nordic science and technology studies conference 2019, Tampere Finland
2. Title of the paper: "How E-waste is perceived in contemporary urban India: An in-depth Analysis of publics' understandings and awareness Presented at: 7th international conference on sustainable solid waste management 2019 Greece
3. Title of our paper: Indigenous and traditional knowledge systems for addressing key environmental and agricultural concerns: some experiences from India. Presented at: 2nd International Conference "ADAPT to CLIMATE" 2019 Greece.

C. Project Sanctioned .

As Co – Principal Investigator Title: CO -CH4 oxidation catalysts for CNG emissions abatement.

Sanctioned Amount: 10,87000.

DEPARTMENT OF HINDI

Dr. Banna Ram Meena

1. 'हिन्दी कथा का वन प्रदेश' नामक पुस्तक प्रकाशित।
2. ''आदिवासियत'' के आईने में अक्स की पड़ताल' नामक रिसर्च पेपर यूजीसी के रैफर्ड जर्नल "परिशोध" में प्रकाशित।

Resource Person

1. केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय में "21वीं सदी का हिन्दी साहित्य और विविध विमर्श" नामक विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (27–28 फरवरी 2020) में "मुख्य वक्ता/विषय विशेषज्ञ" के रूप में आमंत्रित किया गया।

Dr. Kapil Dev Prasad Nishad

- Completed Two–Week FDP on **"Managing Online Classes and Co-Creating Moocs"** from April 20- May 06, 2020, conducted by Ramanujan College, University of Delhi

Dr. Ved Prakash

- He awarded Ph.D. degree for the thesis titled as **"Hindi Ki Stri Aur Dalit Atmankathaon Ka Tulnatmak Adhyayan"** from Jamia Milia Islamia University.

Dr. Bharat Pawar

- He was awarded Ph.D. Degree in the current academic session (2019-2020 from the Department of Hindi, University of Delhi under the supervision of Dr. Krishna Sharma and topic of his research is **"Lokpriya Hindi Upanyason Ke Charitron Ka Samajshastriya Adhyayan"**.

Dr. Alok Deepak Upadhyay

प्रकाशनः

1. मोदी ही जरूरी क्यों– अप्रैल 2019, युगांतर टुडे
2. अपराजेय राष्ट्रनीति – सितम्बर 2019, युगांतर टुडे
3. बह प्रकाश पुज – अक्टूबर 2019, युगांतर टुडे
3. भारत में सब अच्छा है – दिसम्बर 2019, युगांतर टुडे
4. जय पराजय के ऊपर राम – जनवरी 2020, युगांतर टुडे

DEPARTMENT OF MATHEMATICS

Mr. Vinod Kumar

List of Papers:

V Kumar, M Ahmad, D Mishra, S Kumari, MK Khan, "RSEAP: RFID based secure and efficient authentication protocol for vehicular cloud computing", Vehicular Communications, Elsevier, SCI, **IF: 3.530**, 22, 100213, 2020, DOI:10.1016/j.vehcom.2019.100213

AA Khan, **V Kumar**, M Ahmad, S Rana, D Mishra, "PALK: Password-based anonymous lightweight key agreement framework for smart grid", International Journal of Electrical Power & Energy Systems, Elsevier, SCI, **IF: 4.483,** 121, 106121, 2020, DOI:10.1016/j.ijepes.2020.106121

D Mishra, **V Kumar**, D Dharminder, S Rana, "SFVCC: Chaotic map-based security framework for vehicular cloud computing", IET Intelligent Transport Systems, IEEE Xplore, SCI, **IF: 2.05** 14 (4), 241-249, 2020, DOI: 10.1049/iet-its.2019.0250.

V Kumar, M Ahmad, A Kumari, S Kumari, MK Khan, "SEBAP: A secure and efficient biometric-assisted authentication protocol using ECC for vehicular cloud computing", International Journal of Communication Systems, Wiley, SCI, **IF: 1.432**, 1 – 21, 2019, DOI:10.1002/dac.4103

A. Kumari, M. Yahya Abbasi, **V. Kumar** and A A Khan, "A secure user authentication protocol using elliptic curve cryptography", Journal of Discrete Mathematical Sciences and Cryptography, SCIE and Scopus, 22 (4), 521-530, 2019, DOI:10.1080/09720529.2019.1637155

A Kumari, S Jangirala, MY Abbasi, **V Kumar**, M Alam, "ESEAP: ECC based secure and efficient mutual authentication protocol using smart card", Journal of Information Security and Applications, , Elsevier, SCIE, **IF: 1.56,** 51, 102443, 2020, DOI:10.1016/j.jisa.2019.102443

Full Length Conference Proceeding

1. **V Kumar**, AA Khan, M Ahmad, "Design Flaws and Cryptanalysis of Elliptic Curve Cryptography-Based Lightweight Authentication Scheme for Smart Grid Communication", Advances in Data Sciences, Security and Applications, 169-179, 2020, DOI:10.1007/978-981-15-0372-6_13
2. A Kumari, MY Abbasi, **V Kumar**, M Alam, "Design Flaws and Cryptanalysis of a Standard Mutual Authentication Protocol for Cloud Computing-Based Healthcare System", 99-109, 2020, DOI:10.1007/978-981-15-0372-6_8

Paper Presented:

Presented paper entitled **"ECC based authentication framework for cloud medical system"**, in the national conference "Emerging Trends in Mathematical Sciences for Industry and Environment: Use of Technical Hindi Terminology", organized by Shaheed Bhagat Singh College, University of Delhi, Jan 27-29, 2020

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Ms. Anamika

Paper Publications:

- Russian Policy towards China: The Yeltsin and Putin Periods, Nam Today, (ISSN NO 2347-3193), Vol. 7, year 2017.
- "Russia-China Relations in the Emerging International System" in International research journal of Commerce Arts and science (ISSN 2319-9202), Vol. 7, issue 1, year 2016.
- "Russia's Political Strategy – A view From China" in International Research journal of Management Sociology and Humanities (ISSN 2277- 9809(0) 2348-9359(P), Vol. 7, issue 2, year 2016.

Papers Presented/Participated in Conferences/ seminars & Workshops:

- Presented a paper on "**BRICS: Emerging as a Counter to Unipolarity**" in international seminar on "Global Politics and Governance in 21st Century: Emerging Trends and Global Concerns" organized by department of Political Science, School of Ambedkar Studies, BBAU, Lucknow, March 2014.
- Presented a paper on "**India's Growing Interest in Russia: Implication for Energy Security**" in international seminar on "21st Century India: Interrogating Social, Economic, Political and Environmental Process" organized by B.A (Prog) Society, Satyawati College (Eve), University of Delhi, 24 & 25 April, 2018.
- Presented a paper on "**PPP model in PM. Modi's era and its importance and future prospects**" in Sixth Northern Regional Social Science Congress on "Intellectual History and Changing Realities : India in 21st Century" organized by Northern Regional Centre , ICSSR New Delhi and Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth , Udaipur Rajasthan, 18 -20 January 2019.
- Organized and participated in International Conference, "Re-imagining Global Orders: Perspective from the South" organized by School of International Studies, JNU, Dec 2013.
- Participated in a Workshop on "Planning and Preparing to publish for early career researchers" organized by Centre for South Asian Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.
- Organized Participated in International Conference, "Twenty five Years of Post –Soviet Experience: perspective on Nation Building and Democratization in Eurasia" organized by Centre for Russian and Central Asian studies, School of International Studies, JNU, Dec November 2016.

Dr. Yuvraj Kumar

Publications of Two Edited Books:

1. Indian Dalit Thinker's, Sage Publication, Delhi, 2020
2. Bhartiya Shasan Evm Rajniti, Oriental Black Swan, Delhi, 2020. (Revised)

DEPARTMENT OF STATISTICS

Dr. Mithilesh Kumar Jha

- Participated in the Research paper presentation (Paper titled "***Growth and Unemployment Scenario in India: An Econometric Analysis***") in the **International Conference** on "**Management Imperatives for Sustainable Growth – Transformation through Technology**" organized by ICFAI BUSINESS SCHOOL, GURGAON on August 24, 2019.
- Participated in the Research paper presentation (Paper titled "***Day of the Week Effect in BRICS Stock Markets***") in the **International Conference** on "**Recent Advances and Challenges in Finance and Marketing for New India @ 2022**" organized by Department of Commerce, Mata Sundri College for Women, University of Delhi, during September 07-08, 2019.
- Participated in the Research paper presentation (Paper titled "***Calendar Anomalies in Indian Stock Market***") in the **World Finance & Banking Symposium** - New Delhi – India, during December 19-21, 2019.

DEPARTMENT OF LIBRARY

Garima Gaur Srivastava

Librarian

- Co- Authored a book titled **Academic Libraries.**

  Published a research article on **Plagiarism Awareness: A Study of Jamia Millia Islamia** in *Journal of Library and Information Science*, vol.43.1
- Published a paper title **Recent Trends in Marketing of LIS Products and Services in University Libraries** in an 8th International Conference on Library and Information Professionals Summit (I-LIPS 2019) held in Lucknow.

IQAC : TORCH BEARER OF QUALITY

Education is a fundamental right to be enjoyed by each Indian citizen. Quality education opens up all vistas for the have nots as much as for the privileged. Education is the only equalizing force in this highly inequitable world. It is educational institutions, including our own, that are adding to global human capital and to the might of India by providing quality, affordable education to the vulnerable. Generation Y is the entrepreneurial age, imbued with implosion of knowledge and skills keenly awaiting expression and application. This generation wishes to act as change agent, eager to apply its learning for transforming economy, polity, and society. It is Generation X, our generation, which has the task and responsibility to, with in quotes, 'educate' today's youth so as to transform them into valuable human assets. Our college-through Internal Quality Assurance Cell(IQAC)-has been trying to consistently create multidimensional experiences for the stakeholder-students, teachers, and administration-aiming towards creating quality professional assets who would contribute in every sphere of our being right since their admission into our college, during their productive career, and beyond. It has the vision to transform PGDAV College into a leading educational institution that contributes to the development of economy and society by sharpening latent leadership, entrepreneurship, and intellectual talent. IQAC seeks to foster a worldview that promoters diversity, inclusion, and ethical participation in the inter connected world. IQAC is committed to promote a culture of academic excellence bench marked to the best institutions among our peers.

To achieve all this IQAC acts as planner, creator, facilitator, and regulator of quality in all sphere of functioning of college-academic, administrative, financial, co-curricular, and extra-curricular. It provides avenues of learning, further education, and training to all-students, teachers, and administrative staff-by having a calendar full of events throughout the year. To mention just a few through IQAC support more than 120 lectures were organized for our students on topics of varied interest, mainly focussing on building of academic process and enhancing their employability on the other. Nearly 8-10 members of administrative staff were sent for advanced training in behavioural skills and ICT. Likewise nearly 70 odd faculty members attended various conferences, FDPs, etc. IQAC itself organized various activities, including an FDP.

Shri Triloki Nath Chaturvedi

(18 January 1928 – 5 January 2020)

5th January brought sad news about the passing away of Shri Triloki Nath Chaturvedi, the illustrious Chairman of the Governing Body of P.G.D.A.V. College. Soon a pall of gloom spread across the country. His demise brought curtains to a brilliant career in public services spanning six decades.

He completed his school education at Tirwa and Kannauj in Uttar Pradesh. He pursued graduation at Christ Church College, Kanpur and post-graduation at University of Allahabad. In 1950, At the age of twenty-two, he joined Indian Civil Service where he held many important positions such as the post of union home secretary. He was a mentor to many young civil servants who remember TNC sir as compassionate, soft-spoken, well read and a thorough professional.

Trilokinath Chaturvedi worked as Comptroller and Auditor General (CAG) of India from 1984 to 1989. It is righty said that his tenure as CAG gave a new meaning and significance to this important constitutional position. While as CAG, he prepared a report in 1989 that found irregularities in the purchase of the Bofors gun by then Congress government led by Rajiv Gandhi. Bofors scandal eventually brought down the Rajiv Gandhi government.

After his retirement in 1989, Shri Chaturvedi led a very active public life. In 1989 he contested Lok Sabha election from Kannauj but lost. He was elected to Rajya Sabha in July 1992 where he was re-elected in July 1998. As a member of Rajya Sabha he was a member of a number of parliamentary committees.

He was appointed as the Governor of Karnataka in 2002 by the Atal Bihari Vajpayee Government. When in 2004, NDA government was defeated, Trilokinath Chaturvedi readied to relinquish his office in the best traditions of democracy. But such was his stature, such his reputation for impartiality that he was requested to stay on and retained the office of Governor till 2007.

He was awarded Padam Vibhushan in 1991.

'A scholar in bureaucracy and politics', wrote Gopal Krishna Gandhi who was junior to Trilokinath Chaturvedi in civil services and also a fellow Governor. 'He had one partiality. For books and people who wrote and read books. He had lasting friendships with men of letters belonging to different political ideologies.' To say that he was widely read would be an understatement. His collection of books grew so much that he had to maintain two personal libraries one at Jaipur and the other one at his Noida residence.

He wrote several books. He was the editor of Indian Journal of Public Administration for 28 years from 1970 to 1998. In recognition of his scholarly pursuits he was awarded Honorary Doctorate (D. Litt.) by Punjab University, Chandigarh and Lal Bahadur Shastri Sanskrit Vidyapeeth, New Delhi.

With his passing away, not only P.G.D.A.V. College has lost its head of the family but the country has lost a scholar administrator of great eminence.

विश्व योग दिवस (21 जून, 2020)

मुस्कान (बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष)
मुन्नी (बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष)
आशु (राजनीति विज्ञान (विशेष), तृतीय वर्ष)

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों
इस दीये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

मेरे सीने में नहीं तो, तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

कैसे आकाश में सूराख़ नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीअ'त से उछालो यारो।

– दुष्यंत कुमार

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065

Jaina Offset Printers: 9873149889, 9811269844